ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

5

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

ख़ुत्बात

ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी मुजद्ददी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

फ़हरिस्त-मज़ामीन

विषय-सूची

❋ ❋ ❋

सब्र की बरकतें

इस्लाम और मग़रिबी (वैस्टर्न) समाज

❋ ❋ ❋

तहज्जुद की पाबंदी

❋ ❋ ❋

मज्ज़ूबों की पुर-असरार (राज़ भरी) दुनिया

❋ ❋ ❋

शर्म व हया

❋ ❋ ❋

तीन बड़ी नेमतें

❋ ❋ ❋

हुक़ूक़ुल इबाद

❋ ❋ ❋

इल्म, अमल और इख़्लास

दिल पज़ीर नसीहत

❋ ❋ ❋

पेश लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی اللّٰہ تعالٰی علٰی خیر خلقہ سیدنا محمد وعلٰی الہٖ واصحابہٖ اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबा किराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتديتم﴾ कि बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं कि वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामत बरकातुहुम हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है कि हाज़िरीन के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह

जज़्बा पैदा हुआ कि उनके ख़ुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे ख़ुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद न सिर्फ़ उनको सही किया बल्कि उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामत बरकातुहुम का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको पन्नों पर लाते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि मैं भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। यह ख़ुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु
एम०ए०बी०एड०
मौज़ा बाग़, झंग

शुक्र-ए-इलाही

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمن الرحيم o

لئن شكرتم لا زيدنكم ولئن كفرتم ان عذابى لشديد. وقال الله تعالى

فى مقام اخر وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها. انالانسان لظلوم كفار.

وقال الله تعالى فى مقام اخر لقد كان لسبا فى مسكنهم اية. جنتن عن

يمين وشمال. كلوا من رزق ربكم واشكروا له. بلدة طيبة ورب

غفور. وقال الله تعالى فى مقام اخر وضرب الله مثلا قرية كانت امنة

مطمئنة ياتيها رزقها رغدا من كل مكان فكفرت بانعم الله فاذاقها الله

لباس الجوع والخوف بما كانو يصنعون. سبحن ربك رب العزة عما

يصفون o وسلام على المرسلين o والحمد لله رب العالمين o

अल्लाह तआला की कारीगिरी का नमूना

इंसान तमाम मख़्लूक़ से अशरफ़ है और अल्लाह रब्बुइलइज़्ज़त की कारीगिरी का नूमाना है। रब्बे करीन की हम पर कितनी मेहरबानी है कि उस परवरदिगारे आलम ने हमें इंसान बनाया। अगर वह कोई जानवर बना देता तो उसको हक़ था। मान लो अगर वह बंदर पैदा कर देता तो किसी ने नाक में नकेल डाली होती और हम गलियों के अंदर नाचते फिरते, वह गधे की शक्ल

में पैदा कर देता तो किसी ने पीठ पर बोझ लादा होता और हम डंडों पर डंडे खा रहे होते और फिर हमें इसके बावजूद भी ज़बान से शिकवा करने की इजाज़त न होती। अल्लाह का शुक्र है कि परवरदिगारे आलम ने हमें इंसान बनाया। हमने इसके लिए कोई दरख़्वासत तो न दी थी।

ईमान की दौलत एक बड़ी नेमत

दूसरा एहसान यह हुआ कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हमें नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उम्मत में ईमान के साथ पैदा किया। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इतनी बड़ी नेमत है कि हम उसका शुक्र भी अदा नहीं कर सकते। दुनिया में वे भी लोग हैं जो इस उम्मत में पैदा हुए मगर उनको कुफ़्र का माहौल मिला, उनके माँ-बाप ने उन्हें यहूदी और ईसाई और काफ़िर बना दिया। हमें अल्लाह तआला ने ऐसे माँ-बाप के घर में पैदा किया कि जब हम छोटे थे और माँ दूध का फ़ीडर लगाती थी तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करती थी, वह हमें सुलाती थी तो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के तराने सुनाया करती थी, वह पालना हिलातती थी तो 'हस्बी रब्बी जल्लल्लाह' के गीत सुनाया करती थी। अभी हम छोटे और ना समझ थे कि वह हम से अल्लाह, अल्लाह के लफ़्ज़ के साथ बातें किया करती थी। अभी हम छोटे थे कि उसी माँ और बाप ने हमारे एक कान में अज़ान दिलवाई और दूसरे कान में इक़ामत, उस छोटी उम्र में जब हमें समझ भी न थी, जब हम अपने मालिक व ख़ालिक़ को पहचानते भी न थे, उन माँ-बाप की बरकत से हमारे कानों में इस वक़्त अपने परवरदिगार का नाम पहुँचा। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। फिर

जब हम चलने फिरने के क़ाबिल हुए, अभी बचपन था, दोस्त व दुश्मन की तमीज़ न थी, नफ़ा नुक़सान का अंदाज़ा न था। हमारे वालिद उंगली पकड़कर मस्जिद की तरफ़ ले जाते थे। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। हम जो आज मुसलमान बनकर बैठे हैं मालूम नहीं कि कितने लोगों की मेहनत का इसमें दख़ल है, कितनी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतें हम पर बरसीं कि आज अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईमान की दौलत से माला माल फ़रमाया। जिस्मानी नेमतें तो अनगिनत हैं। परवरदिगार आलम ने हमें सही सलामत जिस्म के साथ पैदा कर दिया। वह परवरदिगार अगर चाहता तो हमें किसी उज़्र के साथ पैदा कर सकता था, किसी बीमारी के साथ पैदा कर सकता था। हमें जो सही सलामत जिस्म मिला है वह परवरदिगार की हम पर कितनी बड़ी मेहरबानी है।

शुक्र का एहसास

एक साहब ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी। तंगदस्ती इतनी थी कि जूता भी टूट गया। गर्मी का मौसम था। गर्म ज़मीन नंगे पाँव चलते हुए यह मस्जिद से घर की तरफ़ लौटने लगे तो दिल में ख़्याल आया परवरदिगार! मैं तो आपके सामने सज्दे में जाता हूँ, नमाज़ें पढ़ता हूँ, मस्जिद की तरफ़ आता हूँ, मुझे तो आपने जूता भी अता नहीं किया। अभी यह बात सोच ही रहा था कि सामने से एक लंगड़े आदमी को आते हुए देखा, वह बैसाख़ियों के बल चलकर आ रहा था। फ़ौरन दिल पर चोट लगी कि ओहो! मैं तो जूते के न होने की शिकायत करता रहा, यह भी तो इंसान है जिसे परवरदिगार ने टांगे भी अता न कीं। यह लकड़ियों के सहारे

चलता हुआ आ रहा है तो जब अपने से नीचे वाले को देखा तो दिल में शुक्र की कैफ़ियत पैदा हुई।

एक बहुत बड़ी कमी

एक उसूल याद रखें कि दीन के मामले में अपने से ऊपर वालों को देखें ताकि अमल का शौक़ और ज़्यादा हो। आज मामला उलट है, हम दीन के मामले में अपने से नीचे वालों को देखते हैं। घर में अपनी बीवी से कहेंगे कि नमाज़ पढ़ो। वह कहेगी कि तुम्हारी बहन कौन सी नमाज़ पढ़ती है? वह कहेगी कि फ़लां की बख़्शिश हो गई तो बस मेरी भी हो जाएगी। अपने से नीचे वालों की मिसालें देगी। दुनिया की बातें करो तो उसको पता होगा कि मेरा घर इतना ख़ूबसूरत बना हुआ है मगर फ़ौरन कहेगी फ़ला के घर में जो डिज़ाईन देखा था वह हमारे घर में तो नहीं है। आज बदक़िस्मती से दुनिया के मामले में अपने से ऊपर वालों को देखते हैं तो दुनिया की हिर्स व लालच बढ़ जाता है और दीन के मामले में अपने से नीचे वालों को देखते हैं जिसकी वजह से दीनी मामलात में सुस्ती पैदा होती है और यह बहुत बड़ी कमी है।

पलकों की नेमत

देखें ये हमारी आँखों के ऊपर पलकें हैं। यह जिस्म का कितना छोटा सा हिस्सा हैं। एक साहब का एक्सीडेंट हुआ और आँखों की पलकें किसी वजह से कट गयीं, आँखें महफ़ूज़ रहीं मगर वह आँख ही क्या करे जिसके ऊपर कोई पर्दा न रहे। जब कुछ वक़्त के बाद उस पर कुछ गर्द और मिट्टी पड़ जाती तो उसे धुंधला नज़र आने लगता। अब उनको धोनी पड़तीं। कुछ

दिन तो गुज़रे लेकिन बार-बार धोने से अब पानी ने भी असर करना शुरू कर दिया यहाँ तक कि वह हालत हुई कि दो महीने के बाद अपने चेहरे पर पानी लगा ही नहीं सकते थे। यूँ लगता था कि जैसे ज़ख़्म बन गया हो और उसके ऊपर कोई तेज़ाब डाला जा रहा है। डाक्टर के पास जाते तो वे कहते बस इसे धोना पड़ेगा। हवा के अंदर मिट्टी के छोटे-छोटे इतने ज़र्रे होते हैं कि हमें नज़र तो नहीं आते मगर मौजूद होते हैं। आप घर के फ़र्नीचर को देखें कि उस पर मिट्टी की एक पतली सी परत आपको नज़र आएगी, कोई शीशा हो उसके ऊपर परत नज़र आएगी। वह असल में हवा के अंदर से मिट्टी के ज़र्रे वहाँ जाकर गिरते हैं और मिट्टी की परत बन जाती है। इसी तरह मिट्टी की परत उनकी आँखों पर भी बनती और उनको आँख धोनी पड़ती। जब बार-बार धोते तो पानी के बार-बार लगने से जिस्म का वह हिस्सा ऐसा हो गया जैसे कोई गलने वाला होता है। मिसाल के तौर पर आप अपने हाथ पानी में पाँच-छः घंटे अपने हाथ ज़रा डालकर देख लीजिए कि हाथों की उंगलियाँ कैसी हो जाती हैं। उनके चेहरे की हालत यह हो गई। आख़िर डाक्टर से जाकर पूछा। वह कहने लगा हमारे बस में कुछ नहीं। फिर एक डाक्टर ने उन्हें समझाया कि हक़ीक़त में इंसान की आँखों का पर्दा वाइपर की तरह होता है और उसके अंदर अल्लह तआला ने एक ऑटोमैटिक सिस्टम बनाया है जहाँ से पानी आता है और थोड़ी-थोड़ी देर से पर्दा वाइपर की तरह चलता रहता है और आँख के ढेले को साफ़ रखता है। उस वक़्त एहसास हुआ कि रब्बे करीम! यह पलक झपकना एक छोटा सा अमल है मगर हक़ीक़त में यह कितनी बड़ी नेमत है। उसके न होने की वजह से इंसान के लिए अपनी आँख

को साफ़ रखना मुश्किल हो गया। जब इतनी छोटी सी चीज़ भी इतनी बड़ी नेमत है तो फिर बड़ी चीज़ें कितनी बड़ी नेमतें होंगी।

बैक्टीरिया से हिफ़ाज़त

बैक्टीरिया एक छोटा सा जरासीम होता है। हवा के अंदर अरबों खरबों की तादाद में बैक्टीरिया हर वक़्त मौजूद होते हैं। लेकिन कभी कोई बैक्टीरिया इनमें से ऐसा भी होता है कि वह इंसानी जिस्म के अंदर जाकर एक्टिव हो जाता है जिसकी वजह से इंसान बीमार हो जाता है। हम कहते हैं कि जी इंफ़ैक्शन से बुख़ार हो गया। इतना बड़ा छः फ़ुट का इंसान चारपाई के ऊपर पड़ा होता है। एक छोटे से बैक्टीरिया ने उस पर अमल करके उसको बीमार कर दिया होता है। अब वह परवरदिगार जो अरबों खरबों बैक्टीरिया से रोज़ाना हमें बचा देता है यह उस परवरदिगार की कितनी बड़ी नेमत है।

वायरस से हिफ़ाज़त

बैक्टीरिया की बात तो क्या करनी आजकल तो वायरस की खोज हो चुकी है। यह बैक्टीरिया से भी ज़्यादा छोटा होता है। बैक्टीरिया को देखने के लिए आपको आम माक्रोस्कोप की ज़रूरत पड़ती है लेकिन वायरस को देखने के लिए माइक्रोस्कोप की बजाए इलैक्ट्रान माइक्रोस्कोप की ज़रूरत होती है, तब जाकर यह वायरस नज़र आता है और यह ऐसा अजीब तमाशा कि अगर उसका अमल शुरू हो जाए तो आज के इंसान के पास उसका इलाज भी नहीं है। कहते हैं जी कि आप को वायरस की वजह से 'फ़्लू' हो गया। अब कुछ दिनों में अपने आप ठीक हो जाएगा।

छः फ़ुट का इतना बड़ा इंसान मगर वायरस ने उसको चारपाई पर लिटा दिया। अगर एक आदमी को अल्लाह तआला ने सेहत दी हुई है तो सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला ने कितनी नुक़सान देने वाली चीज़ों से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाई होगी। इन चीज़ों पर ग़ौर करने से अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र पैदा होगा। हम उसकी नेमतों को शुक्र अदा करेंगे।

शिकवे ही शिकवे

आज अक्सर जगहों पर देखा गया है कि माली और कारोबारी मसाइल की वजह से हर मर्द और हर औरत की ज़बान से शिकवे सुनने में आते हैं। किसी को औलाद का शिकवा, किसी को माल का शिकवा, किसी को कारोबार का शिकवा, कुछ को छोड़कर। कोई बंदा सैकड़ों में नज़र आता है कि जो कहे कि अल्लाह ने मुझे जिस हाल में रखा हुआ है मैं राज़ी हूँ। हर एक कहेगा कि मैं बड़ा परेशान हूँ बाक़ी सारी दुनिया सुखी ज़िंदगी गुज़ार रही है। अगर वह जिसको यह सुखी समझता है उसके ग़म लेकर इसको दे दिए जाएं तो यह पहले से भी ज़्यादा परेशान हो जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जिसको जिस हाल में रखा है हमें चाहिए कि हम उसका शुक्र अदा करें।

हालात की ज़ंजीरें

हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला के कुछ बंदे ऐसे होते है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जानते हैं कि अगर इसको मैंने ज़रूरत से ज़्यादा रिज़्क़ दे दिया तो यह बड़ाई में मुब्तला हो जाएगा, यह धमंड के बोल बोलेगा और ईमान की दौलत से हाथ

धो बैठेगा। इसलिए रब्बे करीम उन्हें तंगदस्ती के हाल में रखते हैं कि मेरा यह बंदा मुझे मुश्किल के हाल में पुकारता रहेगा, उसका ईमान सलामत रहेगा। कुछ बंदे तो ऐसे होते हैं कि अगर उनको ज़रूरत के क़ाबिल रिज़्क़ मिलता रहेगा तो नमाज़ें भी पढ़ते रहेंगे, कारोबार भी चलता रहेगा, तस्बीहात भी चलती रहेंगी और अगर ज़रा कारोबार पर चोट पड़ी या ज़रा कोई और वाक़िआ पेश अया तो सब छोड़-छाड़ कर बैठ जाएंगे। रब्बे करीम क्योंकि मेहरबान है इसलिए बंदे की ज़रूरत के मुताबिक़ देते रहते हैं ताकि यह मेरा बंदा मेरे सामने झुकता रहे। इस तरह हालात की ज़ंजीरें जकड़कर अल्लाह तआला उसे अपने दर पर झुकाते हैं।

रिज़्क़ की तक़्सीम

रब्बे करीम ने रिज़्क़ को तक़्सीम किया हुआ है। फ़रमाया,

﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾

हमने इंसानों के दर्मियान रिज़्क़ तक़्सीम किया है।

अब कौन है जो परवरदिगार की बांट पर राज़ी हो। तक़्दीर पर राज़ी रहने वाले लोग थोड़े नज़र आते हैं। हर बंदे को शिकवा है। अरे! अगर एक बाप दो बेटों के बीच कोई चीज़ बाँट दे तो वह उम्मीद करता है कि बाप होने के नाते ये बच्चे मेरी बांट जैसी भी है उसको क़ुबूल करेंगे। क्या हम अपने ख़ालिक़ व मालिक की बांट क़ुबूल नहीं कर पाते? क्या हम उसकी बांट पर राज़ी नहीं हो पाते। हमें चाहिए कि परवरदिगार ने जिस हाल में रखा हम उसी हाल पर राज़ी हो जाएं।

शुक्र का एहसास पैदा करने का तरीक़ा

सच्ची बात तो यह है कि उसने हमें हज़ारों से बेहतर रखा हुआ है। इसमें कोई शक नहीं। ग़ौर करने की बात है। आप थोड़ा सा अपने हालात पर ग़ौर करें। आपको कितनी चीज़ें ऐसी मिलती चली जाएंगी कि आपका दिल गवाही देगा कि रब्बे करीम अल्लाह जल्लेशानूहु ने कितनों से हमें इस हाल में बेहतर रखा हुआ है। ये चीज़ें इंसान के अंदर फिर भी शुक्र की कैफ़ियत को पैदा कर देती हैं।

नेमतों में बढ़ोत्तरी और कमी के उसूल और क़ायदे

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿لئن شكرتم لازيدنكم﴾ अग तुम शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेमतों को तुम पर और ज़्यादा कर देंगे। हम जितना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का शुक्र अदा करेंगे उतना ही रब्बे करीम की नेमतें और ज़्यादा होंगी और आगे फ़रमाया :

﴿ولئن كفرتم ان عذابي لشديد﴾

और अगर तुम कुफ़राने नेमत करोगे तो याद रखो कि फिर मेरी पकड़ भी सख़्त है।

ज़बानी और जिस्मानी शुक्र

अब शुक्र अदा करने के दो तरीक़े हैं एक तो इंसान अपनी ज़बान से अलहम्दुलिल्लाह कहे, सुब्हानअल्लाह कहे। यह भी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का शुक्र अदा कर रहा है और एक अपने जिस्म से परवरदिगार के हुक्मों की पाबंदी करे, गोया यह भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का शुक्र अदा कर रहा है। ज़बानी शुक्र भी अदा करें और अपने जिस्म से भी अल्लाह तआला की इताअत करें तो गोया यह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने वाला बंदा है। अगर इसमें कमी कोताही हो गई तो फिर अल्लाह तआला कभी-कभी अपनी नेमतों को वापस ले लेते हैं। इस पर ग़ौर करने की ज़रूरत है।

दो तरह की नेमतें

हज़रत अक़्दस थानवी रह० फ़रमाते हैं कि नेमतें दो तरह की हैं एक वजूदी दूसरी अदमी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने वजूदी हमें अता कीं जो आज हमारे पास मौजूद हैं और अदमी नेमतें वे हैं जो हमें आख़िरत में मिलेंगी।

आँखों की नेमत

ग़ौर कीजिए हमारे पास अल्लाह तआला की कितनी नेमतें हैं। और तो और आँखों को ज़रा देखिए यह रब्बे करीम की कितनी बड़ी नेमत है। अगर इसकी अहमियत और क़दर व क़ीमत को मालूम करना है तो उस अंधे से जाकर पूछिए जो माँ के पेट से बग़ैर आँखों के पैदा हुआ। वह अपनी माँ को भी पूरी ज़िंदगी नहीं देख सकता, अपने बाप के चेहरे को नहीं देख सकता। मेरे दोस्तो! उसके दिल में कितनी हसरत होगी कि काश! मुझे एक लम्हे के लिए निगाह मिल जाती ताकि मैं अपनी माँ को देखता, अपने बाप को देखता, क़ुरआन पाक को देखता, मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के

घर को देखता और इन नेमतों से अपनी आँखों को ठंडक पहुँचाता मगर उसके पास ये नेमत नहीं है। मेरे दोस्तो! हमारे लिए तो रात में अंधेरा होता है, उसके लिए तो दिन में भी अंधेरा हुआ करता है। ज़रा ग़ौर तो किया करें उसकी ज़िंदगी कैसी होती होगी। ठोकरें खाता फिरता है, कभी इधर गिरा, कभी उधर गिरा। किसी ने चाहा तो उसका हाथ पकड़कर आगे गुज़ार दिया नहीं तो हाथ-पाँव इधर उधर मारता फिरता है, क्या ज़िंदगी होगी। हम पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी रहमत है कि रब्बे करीम ने हमें सही सालिम देखने वाली आँखें अता फ़रमाईं। ग़ौर करते चले जाएं कि अल्लाह तआला की हम पर कितनी बड़ी रहमतें हैं।

बोलने की नेमत की क़दर

सोचिए कि रब्बे करीम ने हमें बोलने की ताक़त अता फ़रमाई। अब इसकी क़दर व क़ीमत का अंदाज़ा गूंगे से पूछिए कि जो अपने दिल की कैफ़ियत और जज़्बात को किसी के सामने बयान ही नहीं कर सकता। हमें तो किसी से मुहब्बत हो तो मालूम नहीं कैसे-कैसे बातों के हेर-फेर के साथ हम अपना मुद्दा उसके सामने बयान कर रहे होते हैं। कभी बच्चों के सामने मुहब्बत का इज़्हार, कभी बीवी के सामने मुहब्बत का इज़्हार, कभी माँ-बाप के सामने मुहब्बत का इज़्हार, कभी पीर व उस्ताद के सामने मुहब्बत का इज़्हार। हम तो दिल के जज़्बात को अल्फ़ाज़ का रूप पहना देते हैं लेकिन जो आदमी गूंगा है वह अपने दिल के जज़्बात को किसी के सामने खोल तो नहीं सकता। वह चाहे किसी से मुहब्बत करता हो उसे बता नहीं सकता, उसको किसी की ज़ात से प्यार हो तो वह उसे बता नहीं सकता। अपने

अंदर जितना दर्द महसूस कर रहा है, जितना दुखः महसूस कर रहा है वह अपना रंज व ग़म दूसरों के सामने बयान नहीं कर सकता। जैसे जानवर ख़ामोश होता है उसी तरह यह इंसान बनकर भी ख़ामोश होता है क्योंकि अल्लाह ने उसे गूंगा पैदा कर दिया।

सुनने की ताक़त की क़दर

जिन कानों से हम सुनते हैं ये अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत हैं। कितने वे लोग हैं जो देखने में बड़े ख़ूबसूरत होते हैं मगर उनको कानों की सुनवाई नसीब नहीं होती। वे सुनते भी नहीं बोलते भी नहीं। कई बच्चे बचपन में जब पैदा होते हैं तो उनके कानों में कोई नुक़्स होता है, कानों की सुनवाई ठीक काम नहीं करती। जिसकी वजह से उनको बोलना भी बंद होता है क्योंकि उन्होंने कभी कोई बोल सुने नहीं होते। इसलिए उनके दिमाग़ में अल्फ़ाज़ का ज़ख़ीरा नहीं होता जिसकी वजह से उनको बोलने का पता नहीं होता। वे इसलिए नहीं बोल सकते कि उनके सुनने का निज़ाम ख़राब होता है। अब बताइए सुनने का निज़ाम ख़राब है मगर बोलने की नेमत होने के बावजूद बोल नहीं सकते। डाक्टर कहते हैं जिसका सुनना ठीक हो गया उसका बोलना अपने आप ठीक हो जाएगा। परवरदिगार ने हमें सुनने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाई। सोचिए कि जब अज़ान की आवाज़ आती है तो अल्लाहु अकबर की आवाज़ हमारे कानों में सुनाई दे रही होती है, कभी कोई क़ुरआन पढ़ रहा होता है तो कानों में आवाज़ आती है, कोई नात पढ़ रहा होता है तो कानों में आवाज़ आती है। सुब्हानअल्लाह हम कितनी प्यारी-प्यारी आवाज़ें कानों के साथ

सुनते हैं। कभी बीवी की आवाज़, कभी बच्चों की आवाज़, कभी माँ ने आवाज़ दी, कभी किसी ने पुकारा, कभी उस्ताद से बैठ कर दर्स लिया। यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हम पर कितनी बड़ी नेमत है।

हज़्म के निज़ाम की नेमत

सोचिए तो सही यह जो कुछ हम खाते हैं वह सब कुछ आराम से अंदर चले जाना और हज़्म हो जाना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। दुनिया में कितने लोग ऐसे हैं जिनका हाज़्मा ठीक काम नहीं करता, कुछ खा पी नहीं सकते।

इस आजिज़ के पास एक बार किसी शहर से एक औरत तावीज़ लेने के लिए आई। पर्दे में बैठकर अपना हाल बयान करने लगी। कहने लगी, पिछले सात साल गुज़र गए हैं, सिवाए पानी या सेवन-अप वग़ैरह के मैंने कुछ भी पेट में नहीं डाला। घर में तरह-तरह के खाने मैं ख़ुद पकाती हूँ मगर मैं उनको देख तो सकती हूँ खा नहीं सकती। इतना अजीब एहसास हुआ। रब्बे करीम! यह कितनी बड़ी नेमत है। वह औरत रोज़ाना खाने पका रही होती है मगर उसके नसीब में न रोटी है न सालन है सिर्फ़ सेवन-अप की बोतल पी ली या कभी जूस पी लिया। इसके अलावा कोई ठोस चीज़ खाने के क़ाबिल न थी। अगर कोई चीज़ खा लेती थी तो उबकाई आती थी और फ़ौरन सारी चीज़ें बाहर निकल आती थीं। इसलिए परेशान थी। वह कहने लगी, कोई ऐसी दुआ कर दें या बता दें कि मैं पढ़ाई कर लूँ कि मैं पूरे दिन में चपाती तो खा लिया करूं। इतनी हसरत से वह बात कर रही

थी कि मैं पूरे चौबीस घंटे में एक चपाती तो खा लिया करूं। मेरे दिल में यह बात आई कि बंदे! तू ज़रा अपने पर ग़ौर कर, तू हर वक़्त के खाने में कितनी चपातियाँ खा जाता है और तुझे अपने परवरदिगार की इस नेमत का एहसास भी नहीं होता। हम जो कुछ खा लेते हैं तो उसका हज़्म होना और उसका आराम से जिस्म से बाहर हो जाना भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। हम उस नेमत का शुक्र भी अदा नहीं कर सकते। अगर वह चीज़ जिस्म के अंदर ही रुक जाती और बाहर न निकलती तो हमें डाक्टरों के पास जाना पड़ता। कैसे मुश्किल वक़्त गुज़रता, पेट फटने को आता, गंदगी जमा हो जाती और अपने वक़्त पर न निकलती।

साँस की नेमत

हम चौबीस घंटों में कितने हज़ार बार साँस लिया करते हैं। इस साँस का आना और जाना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी रहमत है। कभी दमे के मरीज़ को देखा करें कि जब साँस उखड़ता है तो उसकी कैफ़ियत ऐसी होती है जैसे जान निकल रही हो, आधा साँस बाहर और आधा अंदर होता है। हालत ख़राब हो जाती है। चेहरे का रंग बदल जाता है और ज़िंदगी और मौत की अजीब कशमकश में होता है। हम अगर ग़ौर करते चले जाएं तो रब्बे करीम की कितनी ही नेमतें हमारे ऊपर खुलती चली जाएंगी। रब्बेकरीम ने हम पर बड़ा करम किया हमें ऐसा जिस्म अता किया कि जो सेहतमंद जिस्म है जिस की वजह से हम अपनी ज़िंदगी कितने आराम से गुज़ार रहे होते हैं।

मकान की नेमत

ये तो वजूदी नेमतें थीं। अब ज़रा बाहर की नेमतों पर ग़ौर करें। मेरे दोस्तो! रब्बे करीम ने हमें मकान अता किया। यह हमारे ऊपर अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है। ज़रा उन लोगों से पूछिए जो सड़कों की फ़ुटपाथ पर अपनी ज़िंदगी गुज़ारते हैं। उनके दिल की भी तो तमन्नाएं हुआ करती हैं, उनके दिल के अंदर भी कुछ हसरतें होती हैं। उनका भी जी चाहता होगा कि काश! कोई हमारे लिए भी सर झुपाने की जगह होती। वे तो ख़ेमे लगाकर ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं। ज़रा सी हवा तेज़ चलती है तो उनके ख़ेमे गिरने लगते हैं और जब बारिश होती है तो उनके नीचे जल-थल हो जाता है। दिसंबर और जनवरी की सख़्त सर्दियाँ वे उन्हीं ख़ेमों में गुज़ारते हैं। जब कि रब्बे करीम हमें इज़्ज़तों के साथ घरों में रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं। यह अल्लाह तआला का कितना बड़ा एहसान है कि हमें उसने घरों के अंदर रहने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाई, हमारे ऊपर नीली छत के साथ एक घर की छत भी अता फ़रमा दी।

मीठी-मीठी तंबीह

(दौराने बयान जब लोग उठने लगे तो हज़रत जी दामत बरकातुहुम ने इर्शाद फ़रमाया) आप हज़रात तसल्ली से बैठिए। यह आजिज़ अपना मज़मून उस वक़्त उठाएगा जब सिर्फ़ तलब वाले बाक़ी रह जाएं। जो मसरूफ़ लोग हैं वे जा रहे हैं और जो बाक़ी हैं वे भी चले जाएं और पीछे दीवाने रह जाएं, पीछे मजनूं रह जाएं, पीछे कोई तलब वाले रह जाएं। जो कुछ दामन फैलाकर

बैठेंगे तो रब्बे करीम फिर उनकी ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ बातें कहलवा भी देगा। इसलिए आजिज़ का आज शुरू से इरादा यही था कि आराम और तसल्ली से बात करेंगे। ज़रा कुछ मिनट देखेंगे कि तलब वाले बाक़ी रहें। याद रखें कि सुर वाली तक़रीरें और राग वाली तक़रीरें इंसान को सुलाती हैं और ये जो हम रुखी सूखी बातें कर रहे हैं ये इंसान को जगाती हैं। ये जब एहसास पैदा कर देती हैं तो बंदा जागता है। लिहाज़ा हमें इससे कोई फ़िक्र नहीं कि कोई उठकर जा रहा है या नहीं जा रहा। उनको ज़रूर कोई ज़रूरत होगी इसलिए उन्हें जाने की इजाज़त है और जो कोई सुनने के लिए बैठे हैं रब्बे करीम उनकी तलब के मुताबिक़ उनको अता फ़रमा देंगे। यह भी ज़हन में रखिए कि यह आजिज़ कोई ख़तीब और बयान करने वाला तो नहीं है जो कोई खुत्बा दे और वाज़ करे। कुछ सादा सी बातें है जो अपने मशाइख़ से सीखी हुई हैं वही सबक़ आप लोगों के सामने भी दोहराता हूँ। जो लोग सच्ची तलब के साथ बैठते हैं अल्लाह तआला उनके दामन को मुराद से भर दिया करते हैं। तो मेरे दोस्तो! ज़रा अपनी बाहर की नेमतों पर ग़ौर कीजिए कि रब्बे करीम की कितनी बड़ी नेमतें हैं जो अल्लाह तआला ने हमें अता की हैं और मकान तो बड़ा न सही, कच्चा सही मगर यह परवरदिगार की कितनी बड़ी नेमत है। हम सारा दिन किसी काम के लिए निकलें आख़िर लौटकर घर आते हैं। कितनी तसल्ली होती है।

हाथ फैलाने से निजात

ज़रा ग़ौर कीजिए अगर आप बाहर चलते हुए देखें कि कोई

फ़क़ीर मांग रहा है। मर्द हो या औरत आख़िर वह भी तो एक इंसान है मगर रब्बे करीम ने उसे ऐसे हाल में रख दिया कि उसे दूसरे से मांगने की ज़रूरत पड़ गई। उनके फटे हुए कपड़े होते हैं, जवान उम्र की बच्चियाँ होती हैं। जिनके सर पर दुपट्टा भी पूरा नहीं होता, वे ग़ैर मर्दों के सामने हाथ फैलाती फिरती हैं। वे भी किसी की बहन होगी, किसी की बेटी होगी, किसी की माँ होगी। मेरे दोस्तो! हमारी बहू बेटियाँ अपने घरों में इज़्ज़तों की रोटी खा लेती हैं जबकि ये औरतें मांगकर रोटी खाती हैं। कभी कोई टुकड़ा मिला, कभी कोई टुकड़ा मिला। हमारे घर की औरतें अपनी पसंद के खाने दस्तरख़्वान पर लगाकर खा लेती हैं। यह अल्लाह तआला का हम पर कितना एहसान है कि हमारी इज़्ज़तों को ग़ैर के सामने हाथ फैलाना नहीं पड़ता, उनको किसी ग़ैर की मोहताजी नहीं करना पड़ती, उनको किसी ग़ैर का एहसान लेना नहीं पड़ता। रब्बे करीम ने हमें कारोबार अता कर दिया जिसकी वजह से घर के अंदर रोज़ाना खाना बन जाता है।

औलाद की नेमत

इससे एक क़दम और आगे बढ़ाइए कि रब्बे करीम ने औलाद की नेमत अता फ़रमाई। इसकी क़दर व क़ीमत ज़रा उनसे पूछिए जो बेऔलाद होते हैं। उस औरत से पूछिए जिसकी शादी को कई साल गुज़र गए हों और उसको औलाद की नेमत नहीं मिली, उसके दिल में कितनी तमन्ना होती होगी कि अल्लाह तआला मुझे भी औलाद अता करता, मैं भी औलाद वाली हो जाती, मेरे घर में भी कोई खेलने वाला बच्चा होता, मेरा घर भी आबाद होता, मेरा घर भी मुझे बाग़ की तरह लगता मगर उसके दिल की तमन्ना

पूरी नहीं होती। कितनी औरतों को देखा जिन्हें शौहर का प्यार नसीब है, घर में माल व दौलत भी नसीब है, बड़ी कोठी भी है मगर उनके पास औलाद नहीं। कहती हैं जी हमें यह घर खाने को आता है। इतना बड़ा घर किस काम का जब इसमें खेलने के लिए अल्लाह तआला ने कोई बेटा ही नहीं दिया। उस माँ के दिल में कितनी हसरत होती होगी ज़रा पूछिए तो सही। उस माँ की हसरत का अंदाज़ा इससे लगाइए कि यह अगर रात को तहज्जुद के लिए उठती है तो यह अल्लाह तआला के सामने सज्दे में जाकर औलाद मांगती है। जब दुआ के लिए हाथ उठाती है तो उसकी सबसे पहली दुआ औलाद के बारे में होती है। लोग मीठी नींद सो रहे होते हैं और यह तहज्जुद की नमाज़ पढ़कर अल्लाह से एक नेमत मांगती है जो उसे हासिल नहीं, कभी क़ुरआन पाक की तिलावत करती है तो तिलावत करने के बाद यह अल्लाह तआला से दुआ मांगती है, रब्बे करीम! मुझे औलाद की नेमत अता फ़रमा, कभी किसी अच्छी महफ़िल या मजलिस का पता चला, यह वहाँ पहुँचती है और दुआ मांगती है कि ऐ अल्लाह! यह तेरे नेक लोगों की महफ़िल है, अपने नेक बंदों की बरकत से मुझे औलाद की नेमत अता फ़रमा। यह औरत हज पर गई, उसने काबा शरीफ़ ग़िलाफ़ पकड़कर यह दुआ मांगी, ऐ रब्बे करीम! औलाद की नेमत अता फ़रमा, उसने मक़ामे इब्राहीम पर नफ़्ल पढ़े तो उसने दुआ मांगी रब्बे करीम! औलाद की नेमत अता फ़रमा। जहाँ उसे क़ुबूलियत के आसार नज़र आते हैं वह अपने वही दुखः अल्लाह तआला के सामने रोती है। हर वक़्त वह फ़रियादें करती है। उसको कोई पढ़ने की तस्बीह बताए, उसे कोई रातों को जागकर वज़ीफ़ा करना बताए, यह रातों को जागकर वज़ीफ़ा करने के लिए तैयार, बेचारी

वुज़ू करके घंटों मुसल्ले पर बैठी पढ़ती रहेगी। उसे घर में कोई दिलचस्पी नज़र नहीं आती। इतना बड़ा घर उसे वीरान लगता है। उसके दिल की हसरत का अंदाज़ा लगाइए। उसके पास माल भी है, हुस्न व जमाल भी है, शौहर का प्यार भी है, दुनिया की इज़्ज़त भी है मगर ये सब चीज़ें उसको मामूली नज़र आती हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे औलाद की नेमत अता नहीं की होती। अगर यह माल देकर औलाद ख़रीद सकती तो भला यह अपना सब कुछ लुटा न देती, अगर मेहनत करके औलाद कहीं से ला सकती तो यह पहाड़ों की चोटियों पर भी जाने से पीछे न हटती। मगर यह नेमत वह है कि रब्बे करीम जिसे चाहते हैं अता फ़रमा देते हैं और जब वे नहीं करता तो दुनिया के डाक्टरों की डाक्टरी धरी की धरी रह जाती है। सब हकीमों की हिकमत धरी की धरी रह जाती है। कहते हैं मियाँ-बीवी में कोई नुक़्स भी नहीं मगर मेरे मौला की मर्ज़ी नहीं, सालों गुज़र जाते हैं मगर सालों के बाद भी औलाद नहीं होती। यहाँ तक कि जवानी गुज़रने के क़रीब हो जाती है मगर दिलों की हसरतें दिल में रह जाती हैं, फिर भी दुआएं मांग रही होती हैं। अरे! मेरी और आपकी तो बात क्या करनी ये वह नेमत है जिसके लिए अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने भी दुआएं मांगी। क़ुरआन गवाही देता है। अल्लाह के नबी हैं और उसके मक़बूल बंदे हैं मगर अल्लाह तआला ने उनको औलाद अता नहीं की। उनके दिल में भी अल्लाह तआला ने यह मुहब्बत डाल दी। हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम का वाक़िआ है। बाल सफ़ेद हो गए, हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकीं और खाल लटकर चुकी मगर अल्लाह ने औलाद के बारे में दिल में एक तमन्ना पैदा कर दी थी। लिहाज़ा अल्लाह तआला से दुआएं मांगते थे। वक़्त के

नबी हैं उनकी कैसी मक़्बूल दुआएं होती होंगी मगर उम्र गुज़र गई दुआएं मांगते हुए। जवानी बुढ़ापे में बदल गई। आख़िर दुआ मांगते हुए कहते हैं ﴿رب انی وهن العظم منی﴾ परवरदिगार अब तो मेरी हड्डियाँ भी बोसीदा हो गयीं, ﴿واشتعل الراس شیبا﴾ परवरदिगार मेरे काले बार सफ़ेद हो गए, ऐ मेरे मौला! तू मेरी इस दुआ को क़ुबूल फ़रमा ﴿ولم اکن بدعائك رب شقیا﴾ ऐ अल्लाह! मैंने सारी ज़िंदगी तेरा दरवाज़ा खटखटाया, परवरदिगार! मायूस अब भी नहीं हूँ, इस बुढ़ापे में भी मेरे दिल में यह उम्मीद ज़रूर है। रब्बे करीम! तेरा दर कभी न कभी खुलेगा और तू मुझे नेमत अता फ़रमाएगा। इतनी दुआ मांगते हैं। रब्बे करीम ने दुआ को क़ुबूल फ़रमा लिया और इस बुढ़ापे में औलाद की नेमत अता फ़रमा दी। इसलिए वह नेमत जिसके लिए वक़्त के अंबिया किराम भी दुआ करते रहे तब अल्लाह करीम ने उन्हें यह नेमत अता फ़रमाई। मेरे दोस्तो! हम में से कितने नौजवान हैं जिनकी शादी होती है और दो चार साल के अंदर ही अल्लाह तआला उनको बेटा अता कर देते हैं, बेटियाँ भी अता कर देते हैं। एक से ज़्यादा औलाद होती है। यह रब्बे करीम की हम पर कितनी रहमत है, घरों के अंदर ये बच्चे खेलते नज़र आते हैं। यह कितना प्यार हम से कर रहे होते हैं। कभी बेटी प्यार करती है, कभी बेटा प्यार करता है, कोई हमें अब्बू कह रहा होता है, कभी कोई ज़िद्द करता है, कभी कोई पास आकर खाने खा रहा होता है। मेरे दोस्तो! यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है जो रब्बे करीम ने हमें अता फ़रमा दी है। हम तो दुनिया का सारा माल ख़र्च कर देते तो भी यह नेमत नहीं मिल सकती थी। हमें अल्लाह तआला का कितना शुक्र अदा करना चाहिए।

बीवी जैसी नेमत

इसी तरह ज़रूरी है कि जब कभी बीवी पर नज़र पड़े तो अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक ऐसी औरत से शादी करवा दी कि जो ईमान वाली औरत है। ऐसी औरत के साथ शादी करवा दी जो शौहर के साथ अपना वक़्त गुज़ारती है, ग़ैर की तरफ़ आँख उठाकर नहीं देखती, जिसके चेहरे पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने शर्म व हया दिया, जिसको अल्लाह तआला ने नमाज़ों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, जो इंसान के लिए इज़्ज़त व पाकदामनी का ज़रिया बन जाती है। गुनाहों से बचने का सबब बन जाती है, जो औलाद की तर्बियत का ज़रिया बन जाती है, जो इंसान के पीछे उसके घर-बार की ख़ैर-ख़बर करने वाली होती है। यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है जो अल्लाह तआला अता फ़रमाते हैं। हमें चाहिए कि घर को देखें तो शुक्र अदा करें, औलाद को देखें तो शुक्र करें, अपनी सेहत को देखें तो शुक्र अदा करें, अपनी अच्छी शक्ल को देखें तो शुक्र अदा करें, अल्लाह तआला ने हम पर कितनी मेहरबानी फ़रमाई।

हमारी हालत

हालत तो हमारी ऐसी है कि तरह-तरह के खाने तो खा लेते हैं लेकिन बिस्मिल्लाह पढ़ना हमें याद नहीं होती, हम खाना खाककर उठ जाते हैं लेकिन कभी ख़त्म की दुआ पढ़ना याद नहीं होती। अल्लाह तआला लज़ीज़ पीने की चीज़ें अता फ़रमा देते हैं हम उनको पीते हुए बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ पाते। सोचिए तो सही यह गेहूँ की रोटी जो हमारे सामने आई, यह तो गेहूँ का एक दाना

था। किसी किसान ने उसे खेत में डाला, किसी ने ज़मीन को तैयार किया फिर ज़मीन से उसको नमी मिली, फिर ऊपर से सूरज ने उसे गर्मी पहुँचाई, फिर चाँद ने उसे रोशनी दी और कभी हवा ने उसके फलने फूलने में बढ़ौतरी की। इतनी चीज़ें उस पर कार्यवाही करती रहीं जब जाकर यह फ़सल बनी। किसी ने उसे काटा होगा, किसी ने उसे साफ़ किया होगा, किसी ने उसे पीसा होगा, किसी ने गूंधा होगा, अरे किसी ने उसे पकाया होगा, इतने मोड़ों से गुज़रकर जब वह रोटी हमारे सामने आती है तो हम खाते हुए बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाते हैं। काश! हमें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की इस नेमत का इतना ख़्याल होता कि हम खाते हुए बिस्मिल्लाह ही पढ़ लेते। हम खाते हुए अपने परवरदिगार का शुक्र ही अदा कर लेते कि रब्बे करीम! तेरी कितनी नेमतें हैं जिनको खाकर हम दुनिया में ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

अल्लाह तआला की नेमतों का शुमार

रब्बे करीम फ़रमाते हैं :

﴿وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها﴾

अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम अल्लाह तआला की नेमतों को शुमार ही नहीं कर सकते।

यह बिल्कुल सच्ची बात है। अगर कोई आपसे पूछे कि बताओ तुम बारिश के पानी के क़तरों को गिन सकते हो? तो आप गिन नहीं सकते। कोई आपसे पूछे कि आसमान के सितारों को गिन सकते हो? तो आप गिन नहीं सकते। कोई आप से कहे, सारी दुनिया के रेत के ज़र्रों को गिना जा सकता है? तो आप नहीं

गिन सकते, कोई आपसे कहे सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को गिन सकते हो? आप नहीं गिन सकते लेकिन मेरे दोस्तो! यह आजिज़ फिर भी अर्ज़ करता है, बारिश के क़तरों का गिनना मुमकिन है, आसमान के सितारों का गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों का गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के रेत के ज़र्रों को गिनना मुमकिन है लेकिन मौलाए करीम के हम पर कितने एहसान हैं उन एहसानों का गिनना हमारे लिए मुमकिन नहीं है। अल्लाह तआला ने क्योंकि ख़ुद फ़रमया :

﴿وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها.﴾

अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम अल्लाह तआला की नेमतों को शुमार ही नहीं कर सकते।

मेरे परवरदिगार! जब तेरी इतनी नेमतें हमारे ऊपर हैं तो हम तेरी किस-किसी नेमत का शुक्र अदा करें।

नेमतों की नाक़दरी का वबाल

क़ुरआन पाक की एक आयत है उसको ज़रा ग़ौर से सुनिए। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿فضرب الله مثلا﴾ और अल्लाह तआला मिसाल बयान करता है ﴿قرية﴾ एक बस्ती वालों की ﴿كانت امنة مطمئنة﴾ जिसमें अमन भी था और इत्मिनान भी था। दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किए कि उस बस्ती वालों को अमन भी नसीब था और इत्मिनान भी था। अमन का क्या मतलब? कि उनको बाहर के दुश्मन का कोई डर नहीं था। इत्मिनान का क्या मतलब? कि कोई अंदर का ग़म भी नहीं था, इत्मिनान था। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ياتيها رزقها رغدا من كل مكان﴾ उनको चारों तरफ़ से रिज़्क़

की बहुतात नसीब थी। ﴿فكفرت بانعم الله.﴾ उन्होंने अल्लाह तआला की नेमतों की नाक़दरी की। फिर क्या हुआ? ﴿فاذاقها الله لباس الجوع والخوف.﴾ फिर अल्लाह तआला ने उन्हें भूख, ननंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया, ﴿بما كانوا يصنعون.﴾ क्योंकि वह काम ही ऐसे किया करते थे।

भूख ननंग और ख़ौफ़ का लिबास

अगर ग़ौर करें तो हम में से कितने ऐसे होंगे जिनको पहले सब कुछ नसीब था। आख़िर अल्लाह तआला ने भूख और ननंग का लिबास पहना दिया। ख़ुद आकर कहते हैं, हज़रत! पता नहीं क्या हो गया कि पहले तो यह हाल था कि मिट्टी को हाथ लगाते थे तो वह सोना बन जाती थी और अब सोने को हाथ लगाते हैं तो वह भी मिट्टी हो जाता है। ख़ुद कहते हैं कि हज़रत! पता नहीं एक ख़ौफ़ सा रहता है, कभी हम बीमार, कभी बेटी बीमार, कभी बेटा बीमार, कभी शौहर बीमार, कभी बीवी बीमार, किसी न किसी की बोतल डाक्टर की तरफ़ जाती रहती है। हर वक़्त डर सा रहता है कि कहीं कुछ हो न जाए। ये बातें आप क्यों सुन रहे हैं? इसलिए कि यह वह बंदा है जिसने अल्लाह की नेमतों की नाक़द्री की। आज अल्लाह तआला ने उसको ख़ौफ़ और ग़रीबी का लिबास पहना दिया। सब कुछ होने के बावजूद भी आज पास कुछ नहीं है। और वह रोता फिरता है कि दिल डर से भर गया है। अगर अल्लाह तआला की नेमतों की नाक़दरी की जाए तो अल्लाह तआला भूख और ननंग और डर का लिबास पहना देते हैं।

अल्लाह तआला की पसंद

रब्बे करीम चाहते हैं कि मेरे बंदों पर मेरी नेमतों के असरात ज़ाहिर हों।

﴿ان الله يحب ان يرى اثر نعمته على عبده﴾

बेशक अल्लाह तआला इस बात को पसंद फ़रमाता है कि अपनी नेमतों का असर अपने बंदों पर देखे।

अल्लाह तआला तो चाहते हैं कि जिन बंदों को मैंने नेमतें दीं वे उन नेमतों को इस्तेमाल करें मगर यह भी चाहते हैं कि जो मेरा खाए वह मेरे गीत गाए। इसलिए हर देने वाला इस बात को पसंद करता है कि जब किसी को दिया जाए तो वह बंदा एहसान को माने कि हाँ मेरे ऊपर एहसान किया गया है। रब्बे करीम तो बड़ी अज़मतों वाले हैं। उन्होंने हमें इतना दिया और बिन मांगे दिया। अब हमें चाहिए कि रब्बे करीम का एहसान मानें और अपने परवरदिगार का शुक्र अदा करें।

हमारे शिकवों की असल वजह

आज हम ज़्यादातर शिकवे करते फिरते हैं कि अल्लाह तआला हमारी दुआ तो सुनता ही नहीं, दुआएं क़ुबूल नहीं होती, हम दुआएं मांग-मांग कर थक गए हैं। ओजी क्या करें कि हम ने तो बड़ा कुछ पढ़ा भी है। ये सारे शिकवे किस लिए होते हैं? इसलिए कि हम यह समझते हैं कि हमने इबादत के ज़रिए अल्लाह तआला पर कोई एहसान चढ़ा दिया है। हमारे शिकवों की असल वजह यही है।

खुदा तआला के एहसान

मेरे दोस्तो! याद रखना—

> **ऐ ख़ादिम! तू बादशाह पर एहसान न जतला कि तू बादशाह की ख़िदमत कर रहा है। अरे! बादशाह की ख़िदमत करने वाले तो लाखों हैं लेकिन यह बादशाह का तुझ पर एहसान है कि उसने तुझे ख़िदमत करने के लिए क़ुबूल कर लिया है।**

क्या एहसान जतलाते फिरते हैं कि हम इबादतें करते हैं। क्या इबादतें करने वालों की कोई कमी है? नहीं यह तो परवरदिगार का हम पर एहसान है कि उसने आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। उसने अपने घर में बैठने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। हम अल्लाह तआला का एहसान मानें कि परवरदिगार! यह तेरा करम है—

शुक्र है तेरा खुदाया मैं तो इस क़ाबिल न था
तूने अपने घर बुलाया मैं तो इस क़ाबिल न था
मैं के था बे राह तूने दस्तगीरी आप की
गिर्द काबे के फिराया मैं तो इस क़ाबिल न था
मुद्दतों की प्यास को सैराब तूने किया
जाम ज़मज़म का पिलाया मैं तो इस क़ाबिल न था
डाल दी ठंडक मरे सीने में तूने साक़िया
अपने सीने से लगाया मैं तो इस क़ाबिल न था
तेरी रहमत तेरी शफ़क़त से हुआ मुझको नसीब
गुंबदे ख़िज़रा का साया मैं तो इस क़ाबिल न था
बारगाह सैय्यदुल कौनैन में आकर नफ़ीस
सोचता हूँ कैसे आया मैं तो इस क़ाबिल न था

शुक्र की कमी का वबाल

मेरे दोस्तो! हमें चाहिए कि हम अपनी ज़बान से अपने जिस्म से और अपनी इबादतों से अपने परवरदिगार का जितना शुक्र अदा करें उतना थोड़ा है। आज यह अमल उम्मत में से घटता चला जा रहा है जिसकी वजह से अल्लाह तआला अपनी नेमतें वापस लेते चले जा रहे हैं।

क़ौमे सबा पर अल्लाह तआला की नेमतें

अल्लाह तआला ने एक क़ौम से कहा ﴿لقد كان لسبا في مسكنهم﴾ तुम्हारे लिए क़ौमे सबा के अंदर निशानियाँ हैं। यह वह क़ौम थी जिसके पास इतने बाग़ात थे कि जिस रास्ते पर चलते थे ﴿جنتن عن يمين وشمال﴾ उनके दांई तरफ़ भी बाग़ होता था, बांई तरफ़ भी बाग़ होता था और फिर परवरदिगार का उन पर क्या हुक्म था? फ़रमाया ﴿كلوا من رزق ربكم﴾ तुम अपने परवरदिगार का दिया हुआ रिज़्क़ खाओ ﴿واشكروا لله﴾ और उसका शुक्र अदा करो ﴿بلدة طيبة﴾ यह कितना पाकीज़ा शहर है ﴿ورب غفور﴾ और उनका परवरदिगार उनके गुनाहों को बख़्शने वाला है। अल्लाह तआला तो चाहते हैं कि मेरा दिया हुआ खाओ और मेरा शुक्र अदा करो ताकि मैं तुम्हें ज़ाहिर में भी इज़्ज़तें दूंगा और तुम्हारे गुनाहों को भी धोकर रख दूं और तुम्हें रोज़े महशर की इज़्ज़तें भी नसीब हो जाएं लेकिन हम पूरी तरह शुक्र अदा नहीं करते।

शुक्र करने के तरीक़े

हमारी हालत यह है कि अगर कोई हम से पूछे कि सुनाओ जी

काम कैसा है? हम जवाब देते हैं कि बस जी गुज़ारा है हालाँकि यह वह आदमी बात कर रहा होता है जिसकी कई दुकानें हैं, कई मकान हैं, जो खुद खा पी लेता है मगर उसके पास लाखों की तादाद में बहुत सा माल पड़ा होता है, लाखों की जायदाद का मालिक है। ओ खुदा के बंदे! तेरी ज़बान क्यों झूठी हो गई, तेरी ज़बान से क्यों तेरे रब की तारीफ़ें अदा नहीं होतीं। अगर कोई वज़ीर तेरे बच्चे की नौकरी लगवा दे तो जगह-जगह उसकी तारीफ़ें करता फिरता है कि फ़लाँ ने मेरे बेटे की नौकरी लगवा दी। अरे! उस बंदे ने तुझ पर छोटा सा एहसान किया, तू इतना एहसानमंद होता है, तेरे परवरदिगार के तुझ पर कितने एहसानात हैं, तू उस के एहसानों की तारीफ़ नहीं करता। पूछा भी जाता है सुनाओ, कारोबार कैसा? ओजी बस गुज़ारा है। तुझे चाहिए तो यह था कि यूँ कहता कि मेरे मौला का करम है, मेरी अवक़ात इतनी नहीं थी जितना रब्बे करीम ने मुझे अता कर दिया, मैं तो इस क़ाबिल न था, मैं परवरदिगार का किन लफ़्ज़ों से शुक्र अदा करूं। मेरे दोस्तो! हम अपने रब के गुन गाया करें, कहा करें कि परवरदिगार ने मुझ पर इतना करम किया है कि यक़ीनन मैं इस क़ाबिल न था, मैं तो सारी ज़िंदगी सज्दे में पड़ा रहूँ तो भी उस मालिक का शुक्र अदा नहीं कर सकता, मैं तो सारी ज़िंदगी अगर उसकी इबादत में गुज़ार दूं तो फिर भी हक़ अदा नहीं कर सकता। हमें चाहिए कि हम इस क़िस्म का जवाब दें जिससे परवरदिगार की अज़मतें ज़ाहिर हों, उसकी तारीफ़ें हों कि परवरदिगार ने हम पर कितने एहसानात किए, हमें उसके शुक्र अदा करने का सबक़ फिर से पढ़ने की ज़रूरत है। आप ग़ौर करेंगे तो आपको अपने आसपास कितनी ही नेमतें ऐसी नज़र आएंगी कि आप खुद कहेंगे

कि रब्बे करीम के मुझ पर कितने एहसानात हैं, मैं तो उसका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता।

ऐबों की पर्दापोशी

अरे! और तो और रब्बे करीम ने हम पर इतनी नेमतें कीं कि आज हम दुनिया के अंदर इज़्ज़त भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। रब्बे करीम ने हमें छिपाए रखा है। यह परवरदिगार का कितना बड़ा करम है जो हम इज़्ज़तों की ज़िंदगी गुज़ारते फिरते हैं। यह मौला की सत्तारी की सिफ़्त का सदक़ा है। अगर परवरदिगार अपनी सत्तारी की चादर हम पर न फैलाता, वह अगर अपनी रहमत का पर्दा हमारे ऊपर न डाल देता तो हमारे ऐब लोगों पर खुल जाते और हमारे अंदर के जज़्बात को अगर जिस्म की शक्ल में करके लोगों के सामने पेश कर दिया जाता तो हम नदामत से चेहरा न दिखा सकते थे। और सोचिए कि हमारे अंदर की कैफ़ियतें क्या हैं और ऊपर से लोग हमें क्या समझते हैं। यह जो इज़्ज़तों की ज़िंदगी गुज़ारते फिरते हैं यह भी तो मौला का करम है कि परवरदिगार ने हमारे ऐबों पर पर्दा डाल दिया और हमारी अच्छी बातों को लोगों के सामने फैला दिया, आज लोग तारीफ़ें कर रहे होते हैं।

मौला की तारीफ़

जिसने हमारी तारीफ़ की उसने असल में परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की। सच्ची बात भी यही है कि अगर मख़्लूक़ मख़्लूक़ की तारीफ़ करे तो यह भी मौला की तारीफ़ है, अगर

मख़्लूक़ ख़ालिक़ की तारीफ़ करे तो यह भी मौला की तारीफ़ है, अगर ख़ालिक़ मख़्लूक़ की तारीफ़ करे तो यह भी मौला की तारीफ़ है और अगर ख़ालिक़ अपनी तारीफ़ आप करे तो यह भी मौला की तारीफ़ है। सारी तारीफ़ें उसी को सजती हैं। सब तारीफ़ों की शान उसी को ज़ेबा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को ही यह बात सजती है, सब तारीफ़ें उसी की तरफ़ लौटती हैं। हमें चाहिए कि हम उन नेमतों को ग़ौर से देखें और परवरदिगार का शुक्र अदा करें।

भिखारी के साथ हुस्ने सलूक करने का तरीक़ा

अगर कोई सवाल करे तो तो तुम उसकी सेहत को न देखा करो, उसको झिड़क न दिया करो बल्कि कुछ न कुछ देकर रुख़सत किया करो अगर मोहताज देखा करो तो ज़्यादा दे दिया करो मगर ख़ाली न भेजा करो। परवरदिगार का हुक्म भी तो यही है ﴿واما السائل فلا تنهر﴾ और तुम सवाल करने वाले को इंकार न करो, उसके हालात कैसे हैं? यह तो वही जानता है जो सवाल की ज़िल्लत को सहन कर चुका है। आप तो इसलिए उसको दे दें क्योंकि परवरदिगार ने तुम्हें देने वाला बनाया है मांगने वाला नहीं बनाया। अगर वह चाहता तो तुम्हें उसकी जगह पर खड़ा कर देता और उसे तुम्हारी जगह पर ले आता मगर परवरदिगार ने तुम्हें आज देने वाला बनाया इसलिए जब कोई मांगने आया करे तो कांपा करें और रब का शुक्र अदा किया करें कि रब्बे करीम! तेरा कितना करम है, मेरे हाथ भी दूसरों के सामने फैल सकते थे, मेरी बेटी के हाथ भी फैल सकते थे, मेरी बीवी के हाथ भी फैल सकते

थे। तेरा कितना करम है कि तूने हमें इज़्ज़त की हालत में रखा, हमें लेने के बजाए देने वाला बना दिया।

"अलहम्दुलिल्लाह" कहने की आदत

आप अक्सर देखेंगे कि हम अपनी ज़बान में बातचीत करते हुए अलहम्दुलिल्लाह का लफ़्ज़ अक्सर नहीं बोलते। कोई आकर पूछता है, सुनाओ जी! क्या हाल है? हमने कभी नहीं कहा, अलहम्दु-लिल्लाह मेरी सेहत ठीक है, अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने मुझे ख़ूबसूरत घर दिया, अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह ने बेटा दिया, अलहम्दुलिल्लाह मैंने खाना खाया, हमारी बातचीत में अलहम्दु-लिल्लाह का लफ़्ज़ बहुत कम इस्तेमाल होता है। अरे! परवरदिगार को खुद फ़रमाना पड़ा ﴿وقليل من عبادى الشكور﴾ मेरे बंदों में से थोड़े शुक्रगुज़ार बंदे हैं। सोचिए तो सही कि उस परवरदिगार को यह कहना पड़ा जिस परवरदिगार की नेमतें तमाम इंसानों पर हैं, जो अपनों को भी देता है और परायों को भी देता है, वह जो ईमान वालों को भी देता है और काफ़िरों को भी देता है—

उसके अलताफ़ तो थे आम शहीदी सब पर
तुझसे क्या ज़िद्द थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

फ़िक्र की घड़ी

एक कुत्ता जिसको मालिक सूखा टुकड़ा डालता है वह अपने मालिक का इतना वफ़ादार बनता है कि मालिक के घर का सारी रात जागकर पहरा देता है। मालिक खाना खा रहा होता है तो यह जूतों में बैठकर मालिक को देख रहा होता है, मालिक हड्डी फेंक

दे तो ख़ुशी से खा लेता है अगर कुछ न फेंके तो सब्र के साथ वहीं वक़्त गुज़ारता है। उसकी ज़बान पर शिकायत के बोल नहीं आते। ओ बंदे! तेरे परवरदिगार ने तुझे सुबह, दोपहर, शाम खाने को अता किया, तू मनमर्जी गिज़ाएं खाता है, फिर कोई छोटी-मोटी नागवारी पेश आ जाती है तो फ़ौरन शिकवे करता है कि ओजी हमने तो बड़ी दुआएं मांगी हैं, सुनता नहीं।

हकीक़त यह है कि आज हमारे अंदर तकब्बुर इतना भर चुका है कि हम जब कह रहे होते हैं कि अल्लाह तआला हमारी सुनता नहीं तो दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कह रहे होते हैं कि ऐ अल्लाह! हम ने प्लानिंग तो कर ली, प्रोग्राम तो बना लिया अब ऐ अल्लाह! इस पर अमल आप जल्दी-जल्दी कर लीजिए। अरे वह परवरदिगार है, उस परवरदिगार को हम ने अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाए हमने नौकर की तरह समझा हुआ है कि अब वह इस पर अमल करेगा। उस परवरदिगार की शान है कि अगर वह चाहे तो बंदों की दुआओं को क़ुबूल कर ले और अगर वह न चाहे तो अपने अंबिया किराम की दुआओं को भी रद्द कर दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं। वह अगर चाहे तो फ़ासिक़ व फ़ाजिर की दुआओं को क़ुबूल कर ले। वह बेपरवाह ज़ात है।

मेरे दोस्तो! उसकी शाने बेनियाज़ी का ज़हूर होता है तो बलअम बाओर की पाँच सौ साल की इबादत के बावजूद उसको फटकार के रख देते हैं और जब उसकी रहमत की हवा चलती है तो फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० जो डाकुओं के सरदार थे, रब्बे करीम उसको वहाँ से उठाकर वलियों का सरदार बनाकर रख देते हैं। परवरदिगार बेनियाज़ ज़ात है। ऐसा न हो कि कभी उसकी

बेनियाज़ी ज़ाहिर हो फिर तो हम तिगनी का नाच नाचते फिरेंगे। याद रखना कि जब अल्लाह तआला किसी से नाराज़ होते हैं तो पगड़ियाँ उछल जाती हैं, दुपट्टे उतर जाते हैं फिर इंसान घर बैठे बिठाए ज़लील हो जाता है। बड़ी-बड़ी इज़्ज़तों वालों के चेहरे दिखाने के क़ाबिल नहीं रहते। परवरदिगार नाराज़ न हो। अगर परवरदिगार नाराज़ हो जाए तो चलते फिरते भी वह बंदा मरा फिरता है। उसके अंदर का इंसान ज़िंदा नहीं होता। लोग खुद कहते हैं कि अब हम इतने ज़लील हो गए हैं कि मरे फिरते हैं, हमारी ज़िंदगी भी कोई ज़िंदगी है।

मेरे दोस्तो! परवरदिगार कभी नाराज़ न हो, यह दुआएं मांगा करो। रब्बे करीम हमसे राज़ी रहना, हम पर मेहरबानी फ़रमाते रहना, हमारी कोताहियों की वजह से कहीं हम से नाराज़ न हो जाना। जब रब्बे करीम की रहमत की नज़र हट जाती है तो फिर बंदे की नाव हिचकोले खाने लग जाती है। फिर तो ईमान की हिफ़ाज़त मुश्किल होती है। फिर तो इंसान को अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त मुश्किल होती है। हमें चाहिए कि जो नेमतें उसने दीं उनका शुक्र अदा करें और जो हमारे ऊपर नेमतें नहीं हैं हम उनको अल्लाह तआला से मांगते रहें, उसका दरवाज़ा खटखटाते रहें। एक वक़्त आएगा कि रब्बे करीम उस दरवाज़े को खोलेगा और हमें वे नेमतें अता फ़रमा देगा। लिहाज़ा इस सबक़ को अच्छी तरह दिमाग़ में बिठाने की ज़रूर है जब हम शुक्र अदा करना सीख लेंगे तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को और ज़्यादा कर देंगे। अल्लाह तआला हमें दुनिया की नेमतों से भी माला माल फ़रमाएंगे और अल्लाह तआला हमें रूहानी नेमतों से भी माला माल फ़रमाएंगे।

तीन आदमियों की आज़माइश

हज़रत मौलाना बदरे आलम साहब रह० ने "तर्जुमानुसुन्नः" में इस हदीस का भी ज़िक्र फ़रमाया है कि बनी इस्राइल में तीन आदमी थे। उनमें से एक आदमी के चेहरे पर कोढ़ के निशान थे, दूसरे के सर पर बाल नहीं थे और तीसरा आँखों से अंधा था। उन तीनों के साथ अजीब मामला पेश आया। उनमें से एक आदमी ऐसा था जिसके चेहरे पर कोढ़ के दाग़ थे, शक्ल भी अच्छी न थी, लोग भी उसे देखना पसंद नहीं करते थे, महफ़िल में बैठकर वह अपने आपको मुजरिम की तरह से महसूस करता था। इसलिए बड़ा परेशान फिरता था। उसका कारोबार भी नहीं चलता था।

उसके पास एक आदमी आया और आकर उस आदमी ने कहा कि बताओ कि तुम्हारी कोई परेशानी है? यह कहने लगा, हाँ बड़ी परेशानी है। पूछा, कौन सी परेशानी है? वह कहने लगा, अल्लाह तआला मेरे कोढ़ के दाग़ ठीक कर दे। मेरा चेहरा इस क़ाबिल हो कि मैं लोगों में इज़्ज़त के साथ बैठ सकूं और अल्लाह तआला मेरे कारोबार को ठीक कर दे ताकि मैं इज़्ज़त की रोज़ी खा सकूं, मेरे लिए यही काफ़ी है। लिहाज़ा उस आदमी ने दुआ की। अल्लाह तआला ने उस बंदे की कोढ़ की बीमारी को दूर कर दिया और उसे एक ऊँटनी अता की। ऊँटनी की नसल इतनी बढ़ी कि हज़ारों ऊँट और ऊँटनियों का मालिक बन गया। उसका शुमार अमीर आदमियों में होने लगा।

फिर वह आदमी दूसरे के पास गया। जिसके सिर पर बाल नहीं थे। लोग उसका मज़ाक़ उड़ाते रहते थे और उसे गंजा कहते

थे। कारोबार भी अच्छा नहीं था इसलिए परेशान रहता था। उस आदमी ने पूछा, सुनाओ भई! तुम्हारा क्या हाल है? वह कहने लगा, बस एक तो सर पर बाल न होने की वजह से परेशान हूँ और दूसरा करोबार न होने की वजह से परेशान हूँ। उस आदमी ने कहा, अच्छा अल्लाह तआला तुम्हारे सर पर ख़ूबसूरत बाल उगा दे कि तुम देखने में ख़ूबसूरत नज़र आओ और अल्लाह तआला तुम्हें अच्छा कारोबार अता करे। लिहाज़ा उसके सर पर ख़ूबसूरत बाल आ गए और अल्लाह तआला ने उसको एक गाय अता की। गाय की नसल इतनी बढ़ी कि हज़ारों गायों का मालिक बन गया और वक़्त के अमीर लोगों में उसका शुमार होने लगा।

फिर वह तीसरे आदमी के पास गया और पूछा कि सुनाओ तुम्हारा क्या हाल है? उसने कहा, मैं तो आँखों से अंधा हूँ, मैं तो ठोकरें खाता फिरता हूँ, मैं तो लोगों से भीख मांगता फिरता हूँ, मेरी भी क्या ज़िंदगी है? दुआ करो अल्लाह तआला मुझे रोशनी अता फ़रमा दे और अल्लाह तआला मुझे कोई अच्छा रिज़्क़ अता करे और ग़ैर की मोहताजगी से बचा ले। लिहाज़ा उस आदमी ने दुआ दी। अल्लाह तआला ने रोशनी भी अता फ़रमा दी और उसको एक बकरी अता की। उस बकरी का रेवड़ इतना बढ़ा कि वह हज़ारों बकरियों का मालिक बन गया। उसका शुमार अमीर और बड़े लोगों में होने लगा।

कई साल इन नेमतों में गुज़र गए। लोगों में बड़े चर्चे, बड़ी इज़्ज़तें कि फ़लां तो चौधरी साहब हैं, फ़लां तो नवाब साहब हैं, फ़लां तो राना साहब हैं। उनका रहन-सहन अमीरों जैसा बन गया,

बड़े नौकर-चाकर हो गए, दुनिया के मकान और महल बना लिए थे, बड़ी इज़्ज़तों की ज़िंदगी गुज़ारने लगे और वक़्त के साथ-साथ ग़फ़लत का शिकार हो गए।

जब काफ़ी अरसा गुज़र गया तो वही आदमी पहले के पास आया और कहने लगा, मैं मोहताज हूँ, मैं ग़रीब हूँ, मैं आपके पास आया हूँ, एक वक़्त था जब आपके पास कुछ नहीं था। अल्लाह तआला ने आपको सब कुछ अता कर दिया। आप मुझे उसी अल्लाह के नाम पर कुछ दे दें। यह सुनकर उस आदमी को बड़ा गुस्सा आया। कहने लगा, तुम ने यह क्यों कहा कि एक वक़्त था जब तुम्हारे पास कुछ नहीं था, मेरा दादा अमीर, मेरा बाप अमीर और मैं ख़ुद अमीर, मैंने बचपन में फ़लां जगह ज़िंदगी गुज़ारी, मैं तो सोने का चम्मच मुँह में लेकर पैदा हुआ था, मैंने तो बचपन से दौलत देखी, अरे! मैं तो ख़ानदानी अमीर हूँ, तुम कैसी बातें करते हो, तुमने लोगों के सामने यह बात करके मेरी बेइज़्ज़ती कर दी। उसने कहा, अच्छा फिर जैसे तुम पहले थे अल्लाह तआला तुम्हें वैसा ही कर दे। यह कहकर वह आदमी चला गया। अल्लाह तआला के इरादे से उसको फिर कोढ़ का मर्ज़ हो गया, ऐसी बीमारी फैली कि सारी की सारी ऊँटनियाँ मर गयीं, जाएदाद ख़त्म हो गई और यह उसी पहली वाली हालत में दोबारा आ गया।

फिर वह आदमी दूसरे के पास गया। उसको कहने लगा कि मैं बड़ा ग़रीब हूँ, मोहताज हूँ, मुझे अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो। उसी अल्लाह के नाम पर जिसने आपको सब कुछ दिया जबकि आपके पास तो अपना कुछ भी नहीं था। वह कहने लगा, तुमने कैसी बात की? अरे मैं बड़ा अक़्लमंद आदमी हूँ, दुनिया मुझे बड़ा

बिजनिसमैन कहती है, दुनिया मेरे फ़ैसले मानती है। मैंने फ़लां कारोबार किया, ऐसा सौदा किया कि मुझे इतनी बचत हुई, फ़लां सौदा किया इतनी बचत हुई, मियाँ! मेहनत से कमाया है, बग़ैर मेहनत के कुछ नहीं मिलता। तुम वैसे ही चलकर आ गए भूखे नंगे बनकर, तुम्हें कैसे मिल सकता है? हमने यह मेहनत की कमाई की है, कोई आसमान से वैसे नहीं गिर गया, हम ने दिन रात इसके पीछे मेहनत की तब हमें यह मिला है। जब उसने इस क़िस्म की बातें कीं तो यह आदमी कहने लगा, अच्छा जैसे तुम पहले थे फिर अल्लाह तआला तुम्हें वैसा ही कर दे। जब उसने बद्दुआ कर दी तो उसका गायें सबकी सब मर गयीं, जाएदादें नुक़सान का शिकार होकर हाथों से निकल गयीं। उसके सर के बाल भी गिर गए, जिस हालत में पहले था उसी हालत में वह दोबारा हो गया।

फिर वह तीसरे आदमी के पास गया और उससे जाकर कहा कि मियाँ! मैं मोहताज हूँ, मैं ग़रीब हूँ, मुझे कुछ दे दो उसी अल्लाह के नाम पर जिसने आपको सब कुछ दिया जबकि आपके पास तो कुछ भी नहीं था। जैसे ही उसने यह बात कही उस आदमी पर अजीब कैफ़ियत तारी हुई। आँखों से आँसू आने लगे और यह कहने लगा कि भाई! तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, मैं तो अंधा था, मैं तो लोगों के सामने हाथ फैलाया करता था, मैं दर-दर की ठोकरें खाता फ़िरता था, मेरी दुनिया वीरान थी, मैं भीख मांगता था लोगों के सामने मांगने का कटोरा लेकर जाया करता था। एक दफ़ा कोई ख़ुदा का बंदा आया। उसने दुआ कर दी, मेरे रब ने मुझे आँखो की रोशनी भी अता कर दी और एक बकरी

ऐसी दी जो इतनी बरकत वाली थी कि आज देखो कि दोनों पहाड़ों के बीच जितना रेवड़ नज़र आता है, यह सब मेरे मौला का करम है। ये सब मेरे मौला की देन है, मेरे पास अपना कुछ नहीं था, यह किसी की दुआ लग गई। मेरे दोस्त! तुम उस अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आए हो, मेरा रेवड़ तुम्हारे सामने है, तुम जितना चाहो उन बकरियों में से ले सकते हो। मेरे माल में से जितना चाहो तुम ले सकते हो। मैं अपनी अवक़ात को क्यों भूलूं। मैं तो वही अंधा हूँ, मेरे मौला ने मुझ पर करम किया। उस अजनबी आदमी ने कहा, तुम्हें मुबारक हो, मैं तो अल्लाह का फ़रिश्ता हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे तीन बंदों के पास इम्तिहान के लिए भेजा था। दो बंदे अपनी अवक़ात को भूल गए और उनसे परवरदिगार ने नेमतों को वापस ले लिया मगर तुमने अपनी अवक़ात को याद रखा, जा अल्लाह तआला तेरी इज़्ज़त और माल में बढ़ौतरी करे। लिहाज़ा वह आदमी बनी इस्राइल के बड़े इज़्ज़तदार और मालदार लोगों में से बन गया।

अल्लाह की तारीफ़ें करें

मेरे दोस्तो! हमें भी चाहिए कि हम अपनी अवक़ात को याद रखें, हम दुनिया में आए थे तो क्या कुछ लेकर आए थे? जिस्म पर लिबास भी न था, दूसरी चीज़ें तो बाद की बातें होती हैं जो कुछ मिला परवरदिगार ने दिया। हम उस परवरदिगार का दिया हुआ खाएं और उसी के गीत गाएं, उसकी तारीफ़ करते हुए न थकें, हर वक़्त ज़बान पर उसकी तारीफ़ें हों, हर वक़्त उसी परवरदिगार की शान बयान करें, इतनी तारीफ़ें करें कि लोग हमें

दीवाना कहने लग जाएं। अगर दीवानों की तरह हम परवरदिगार की रहमतों का शुक्र अदा करें तो हम उसकी रहमत का शुक्र फिर भी अदा नहीं कर सकते। मेरे दोस्तो! सच्ची बात कहता हूँ, इस वक़्त मिम्बरे रसूल पर बैठा हूँ, वह परवरदिगार अगर हमें आँखें न देता तो हम अंधे होते, वह हमें बोलने की ताक़त न देता तो हम गूंगे होते, वह हमें सुनने की ताक़त न देता तो हम बहरे होते, वह हमें अक़्ल न देता तो हम पागल होते, वह हमें सेहत न देता तो हम बीमार होते, वह औलाद न देता तो हम बेऔलादे होते, वह हमें माल न देता तो हम भीख मंगे ग़रीब होते। ये जितनी नेमतें हैं ये सब मेरे परवरदिगार का करम है।

अल्लाह तआला की क़दर करें

ओ क्यों नहीं दामन फैलाते और मालिक का शुक्र अदा करते कि रब्बे करीम! क़ुर्बान जाएं तूने नेमतों की हद कर दी मगर हम उसका शुक्र अदा नहीं कर सके। अल्लाह! जो अब तक ग़लती कर चुके नाशुक्री वाली, इतने करीम आक़ा को क़ुरआन मजीद में कहना पड़ा ﴾وقليل من عبادى الشكور﴿ मेरे बंदों में से थोड़े मेरा शुक्र अदा करने वाले हैं। ऐसे करीम आक़ा को कहना पड़ा ﴾وما قدروا الله حق قدره﴿ अरे! इन लोगों ने अल्लाह की क़दर नहीं की जैसे करनी चाहिए थी। वाक़ई हम नाक़दरे निकले, नाशुक्रे निकले। परवरदिगार! हमारे गुनाह को माफ़ फ़रमा दे और आइंदा हमें अपनी क़दरदानी करने की और अपना शुक्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

छोटी-मोटी परेशानियाँ ज़िंदगी का हिस्सा होती हैं। जब मालिक

की तरफ से लाखों खुशियाँ और नेमतें मिलीं तो शुक्र किया करें और छोटी-मोटी परेशानियों पर सब्र किया करें। रब्बे करीम सब्र करने वाले को भी जन्नत अता करेगा, शुक्र करने वाले को भी जन्नत अता करेगा।

❋ ❋ ❋

सब्र की बरकतें

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمoبسم الله الرحمن الرحيمo
انما يوفى الصابرون اجرهم بغير حساب. سبحان ربك رب العزة
عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

हालात का बदलाव

इंसानी ज़िंदगी के हालात अदलते-बदलते रहते हैं। कभी ख़ुशी की घड़ियाँ होती हैं और कभी ग़म की कैफ़ियत होती है, कभी इंसान का हाथ खुला होता है और कभी क़र्ज़ों के बोझ के नीचे दबा होता है, कभी जवानी और सेहत का आलम होता है और कभी बीमारी की वजह से चारपाई के साथ लगा होता है। ज़िंदगी ग़म और ख़ुशी के बीच गुज़रती चली जा रही है। इंसान समझता है कि वक़्त गुज़र रहा है मगर मौत के वक़्त पता चलता है कि वक़्त क्या गुज़रना था मैं ही इस दुनिया से गुज़र गया—

एक ही काम सब को करना है
यानी जीना है और मरना है
रह गई बात रंज व राहत की
यह फ़क़त वक़्त का गुज़रना है

सब के लिए एक ही काम है कि जीना है और मरना है यानी अमल करने हैं और हिसाब देना है। रह गई ख़ुशी और ग़म की बात तो यह तो ज़िंदगी की तर्तीब है।

ख़ुशी और ग़म के असबाब

जब इंसान पर अल्लाह तआला के जमाल की तजल्लियाँ नाज़िल होती हैं तो उसे ख़ुशियाँ नसीब होती हैं। ऐसे में अगर वह मिट्टी को हाथ लगाए तो सोना बनती है, उल्टे काम को भी अल्लाह तआला सीधा कर देते हैं, फ़ैसलों में बरकत डाल देते हैं, दुनिया में हर तरफ़ से ऐसे इंसान के लिए वाह वाह की आवाज़ें आती हैं। और जब किसी इंसान पर जलाल की तजल्लियाँ पड़ती हैं तो फिर इंसान के लिए दुनिया में मुश्किलें ही मुश्किलें होती हैं, हर तरफ़ से परेशानियाँ, दांया क़दम उठाए तो परेशानी, बांया क़दम उठाए तो परेशानी, सोने को हाथ लगाए तो मिट्टी बन जाता है, चलते काम को हाथ लगाए तो वह अटक जाता है, सोच समझकर इज़्ज़त के हासिल करने के लिए क़दम उठाता है मगर बदनामी और ज़िल्लत मिल जाती है, हर तरफ़ से बुरी ख़बरें, परेशानियाँ, मुसीबतें और बीमारियाँ घेर लेती हैं। यह अल्लाह तआला के जलाल की तजल्लियाँ होती हैं।

क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया :

﴿والله يقبض ويبسط واليه ترجعون﴾

अल्लाह तआला ही क़ब्ज़ करने वाला है और खोलने वाला है।

क़ाबिज़ और बासित अल्लाह तआला के दो नाम हैं। क़ाबिज़ का मतलब होता है क़ब्ज़े में लेने वाला, छीन लेने वाला और

बासित कहते हैं खोल देने वाले को। इसलिए जब इंसान अल्लाह के इस्मे क़ाबिज़ का मज़हर बनता है तो फिर उसके ऊपर ग़म और तंगी होती है और जब इस्मे बासित का मज़हर बनता है तो फिर उसके ऊपर खुशी और फ़राख़ी का मामला होता है। कभी खुशी और कभी ग़म होता है। कभी पतझड़ और और कभी बहार होती है—

कभी जोशे जुनूं ऐसा कि छा जाते हैं सहरा पर
कभी ज़र्रे में गुम होकर उसे सहरा समझते हैं

शैतान का वरग़लाना

शैतान इन दोनों हालतों में बंदे को बहकाने की कोशिश करता है। खुशी के हालात में तो ग़फ़लत में डाल देता है और ग़म के हालात हों तो नाउम्मीद बना देता है। ग़फ़लत में पड़ने वाला भी रास्ते से हट गया और नाउम्मीद होने वाला भी रास्ते से हट गया। इन मजलिसों का बुनियादी मक़सद इसी बात को समझाना होता है। अपनी तक़रीर का जादू जगाना नहीं होता बल्कि बात समझाकर ज़िंदगियों में कोई तब्दीली पैदा करनी होती है।

जन्नत का दाख़िला

इस आजिज़ को याद है कि पिछली महफ़िल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों का शुक्र अदा करने का मज़मून आपकी ख़िदमत में बयान किया था और आज मुसीबतों पर सब्र करने के बारे में कुछ कहने का इरादा है। शुक्र अदा करने वाला भी जन्नती और सब्र करने वाला भी जन्नती। मानो शुक्र और सब्र दोनों जन्नत में दाख़िल होने के असबाब हैं। इंसान खुशी के

हालात में हो तो शुक्र अदा करे और ग़म और परेशानी के हालात में हो तो सब्र करे।

चिराग़ बुझ जाने पर अज्र व सवाब

मोमिन को दुनिया में जो भी परेशानी आती है, छोटी हो या बड़ी, अल्लाह तआला की तरफ़ से उसका अज्र और बदला मिलता है। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक बार देखा कि रात को चिराग़ जल रहा है, हवा का झोंका आया और चिराग़ बुझ गया। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़ौरन पढ़ा ﴿انا لله وانا اليه راجعون﴾ *"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"*। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी हैरान हुईं। अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के महबूब! यह आयत तो बड़े ग़म और मुसीबत के आ जाने पर पढ़ी जाती है। फ़रमाया आएशा! मोमिन के लिए इस चिराग़ का बुझ जाना भी एक मुसीबत है और इस चिराग़ के बुझ जाने पर जो यह आयत पढ़ेगा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से इस पर भी अज्र मिलेगा। जब घर का चिराग़ बुझ जाए उस पर सब्र करने वाले को अज्र मिलता है तो जिस के बेटे की ज़िंदगी का चिराग़ बुझ जाए अगर उस पर कोई सब्र करेगा तो कितना अज्र अता किया जाएगा।

मरीज़ के लिए अज्र व सवाब

हदीस पाक में आया है कि जब कोई बंदा बीमार पड़ जाता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि इस मरीज़ के मुँह से कराहने की जो आवाज़ निकल रही है यानी 'हूँ', 'हूँ' हर हर बार कराहने पर सुब्हानअल्लाह कहने का अज्र लिखा जाए

और अगर मरीज़ दर्द की वजह से चीख़ने लगे तो फ़रिश्तों को हुक्म होता है कि तुम "ला इलाहा इल्लल्लाह" पढ़ने का अज्र उसके आमालनामे में लिखो। जब वह मरीज़ साँस लेता है तो हर हर साँस के बदले अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करने का अज्र उसके आमालनामे में लिखा जाता है जिस तरह कि मुसल्ले के ऊपर खड़े होकर तहज्जुद पढ़ने वाले को अज्र दिया जाता है और जब वह आदमी अपनी बीमारी और तकलीफ़ की वजह से करवट बदलता है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के रास्ते में दुश्मन पर पलट-पलट कर हमले करने का अज्र दिया जाता है।

आयते करीमा की फ़ज़ीलत

हदीस पाक में आया है कि जब कोई आदमी बीमार हो जाए तो उसको चाहिए कि यह पढ़ ले :

﴿لا الٰه الا انت سبحٰنك انى كنت من الظالمين٥﴾

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हा-न-क- इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०

इसे आयते करीमा कहते हैं। अगर कोई आदमी अपनी बीमारी में इसको चालीस बार पढ़ ले तो अगर सेहत मिली तो अल्लाह तआला गुनाहों से पाक फ़रमा देंगे और अगर बीमारी में ही उसकी मौत आ गई तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन शहीदों की क़तार में खड़ा फ़रमा देंगे।

मरीज़ की दुआ क़ुबूल होती है

हदीस पाक में आया है कि जब तुम अयादत करने के लिए

किसी मरीज़ के पास जाओ तो उससे अपने लिए दुआ कराओ इसलिए कि मर्ज़ की हालत में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बंदे की दुआ को इस तरह क़ुबूल करते हैं जिस तरह कि वह अपने फ़रिश्तों की दुआ को क़ुबूल कर लिया करते हैं।

सैय्यदना अय्यूब अलैहिस्सलाम का सब्र

सैय्यदना अय्यूब अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के पैग़म्बर थे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको माल दिया, औलाद दी, हत्ताकि हर तरह की नेमतें दी थीं। शैतान कहने लगा कि उनकी सारी इबादतें इसलिए हैं कि उनको दुनिया का माल व दौलत मिला हुआ है, ज़रा लेकर देखें कि तो फिर पता चले। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के चाहने से उनका जितना माल था वह सारा का सारा माल किसी वजह से बर्बाद हो गया। कहने लगा, औलाद तो है। ऐसी बीमारी आई कि उनकी जितनी औलाद थी वह सारी की सारी उनकी आँखों के सामने मर गई। शैतान कहने लगा, सेहत तो है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनके जिस्म पर चेचक के दानों की तरह दाने निकाल दिए। यहाँ तक कि उनकी ज़बान और आँखों के सिवा पूरा जिस्म उन दानों से भर गया। वह दाने इतने बड़े ज़ख़्म बन गए कि उसमें कीड़े भी पड़ गए।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस बीमारी में अठ्ठारह साल गुज़र गए और हर दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से सब्र की वजह से उनके दर्जात बुलंद होते, ज़बान से कोई शिकवा व शिकायत की कोई बात न निकलती। यहाँ तक कि अगर कोई कीड़ा जिस्म के ज़ख़्म से गिरता था तो वह उसको भी उठाकर

वापस रख देते थे कि जब मेरे जिस्म को अल्लाह तआला ने तेरी ग़िज़ा बनाया तो नीचे क्यों गिर रहा है।

अठ्ठारह साल के बाद शैतान बहुत परेशान हुआ कि यह तो अल्लाह के ऐसे ख़ास बंदे हैं कि इतनी आज़माईशों में भी अपनी ज़बान से कोई बेसब्री या नाशुक्री का लफ़्ज़ नहीं निकाला। शैतान को परेशान देखकर उसके चेलों ने उसे कहा कि मियाँ! तुम ने जिस तरह उनके बाप को भूल में डाला था, क्यों न हम उन पर वही गुर आज़माएं। कहने लगा, हाँ। लिहाज़ा वह उनकी बीवी के पास एक हकीम और तबीब की शक्ल में गया और कहने लगा कि देखो मैं तुम्हें एक बात बताने के लिए आया हूँ ताकि तुम्हारे मियाँ को सेहत हासिल हो जाए। वह खुश हुई, हर बीवी चाहती है कि शौहर को सेहत मिले। कहने लगा कि उसका इलाज मेरे पास मौजूद है मगर हमारे हाँ दस्तूर यह है कि जैसे तुम अर्श के खुदा को सज्दा करते हो, एक दफ़ा मुझे भी सज्दा कर लो तो मैं एक ऐसा इलाज आज़माऊँगा कि तुम्हारा शौहर सेहतमंद हो जाएगा। बीवी ने सुना तो ख़ामोश हो गई। कहने लगीं कि मैं उनके पास जाऊँगी और उनसे पूछूँगी। लिहाज़ा तफ़्सीर में लिखा है कि वह आपके पास आयीं और उन्होंने आकर पूछा। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को बड़ा ग़ुस्सा आया और फ़रमाया, तूने उस वक़्त उस मरदूद को क्यों न कहा कि तू शैतान है, यह क्यों कहा कि पूछकर बताऊँगी? अगर अल्लाह ने मुझे सेहत दे दी तो मैं तुझे सौ कोड़े लगाऊँगा कि तूने ईमानी ग़ैरत क्यों नहीं दिखाई और ऐसे शैतान मरदूद को उसी वक़्त मुँह पर जवाब क्यों न दे मारा। आपका जवाब सुनकर शैतान और नाउम्मीद हो गया। सोचने लगा

कि दो चार साल और इसी तरह गुज़रें तो हो सकता है कि यह बीमारी से परेशान हो जाएं।

एक दिन उसने क्या सुना कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम दुआ मांग रहे थे कि ऐ अल्लाह! मेरी ज़िंदगी का जो वक़्त गुज़रा वह तो गुज़र गया, जब यह बीमारी और ग़म तेरी ही तरफ़ से है तो अगर आप मुझे सौ साल की ज़िंदगी भी देंगे तो मैं सौ साल भी इस हाल में आपको नहीं भूलूँगा। जब शैतान ने यह सुना तो वह कहने लगा कि वाक़ई यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वह ख़ास बंदे हैं कि जिनके ऊपर मेरा कोई दांव नहीं चल सकता।

अल्लाह तआला ने फिर अपने प्यारे नबी अलैहिस्सलाम को सेहत दी। बीमारी की हालत में बीवी को कहा था कि सौ कोड़े लगाऊँगा। लिहाज़ा बात भी पूरी करनी थी। अब अल्लाह तआला ने उनकी बीवी के ऊपर रहम खाया और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम पेड़ की एक छोटी-छोटी, पतली-पतली टहनियाँ मिसवाक के बराबर इकट्ठी कर लो और एक सौ को बांधकर उसके जिस्म पर एक दफ़ा मारोगे तो सौ कोड़े समझे जाएंगे। यहाँ से एक बात निकली कि जब परवरदिगार आलम किसी बंदे की ग़लती और कोताही को माफ़ करना चाहते हैं तो रब्बे करीम उसका रास्ता खुद बता दिया करते हैं। हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तआला जब किसी बंदे की बख़्शिश करना चाहते हैं तो उसके किरामन कातिबीन यानी जो फ़रिश्ते रोज़ाना बदल रहे होते हैं नेकी और बुराई लिखने वाले, उन में से नेकी के फ़रिश्ते को तो रोज़ाना बदलते रहते हैं मगर गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को नहीं बदलते, वह वही फ़रिश्ता रहता है। इस तरह

उसकी ज़िंदगी में नेकी का फ़रिश्ता रोज़ाना आकर बदल रहा होता है और गुनाहों वाला फ़रिश्ता एक ही रहता है। क़यामत के दिन उस बंदे के आमालनामे में गुनाह तो लिखे होंगे और उन गुनाहों पर गवाही देने के लिए एक फ़रिश्ता होगा। जबकि उसकी नेकियों की गवाही देने के लिए जितने उसकी ज़िंदगी के दिन थे उतने ही फ़रिश्ते खड़े होंगे। रब्बे करीम फ़रमाएंगे मेरे बंदे की नेकियों पर जब इतने गवाह हैं तो मैं उसके गुनाहों वाले एक गवाह को कैसे क़ुबूल कर लूँ। लिहाज़ा अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि जाओ मैंने इस बंदे को माफ़ फ़रमा दिया।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को तीन इनाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को फ़रमाया ﴿انا وجدناه صابرا﴾ हम ने उसे सब्र करने वाला पाया ﴿نعم العبد﴾ मेरा कैसा अच्छा बंदा था ﴿انه اواب﴾ वह मेरी ही तरफ़ रुजू करने वाला था। तीन बातें कहीं और उनकी अट्ठारह साल की तकलीफ़ का हक़ अदा कर दिया। क़यामत तक इन सिफ़ात के साथ हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का ज़िक्र किया जाएगा।

अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीमारपुर्सी

किसी बुज़ुर्ग का क़ौल है कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से उनकी बीमारी के दिनों के बाद पूछा गया कि हज़रत! यह सेहत का ज़माना अच्छा है या वह बीमारी का ज़माना अच्छा था। फ़रमाने लगे कि सेहत भी अल्लाह की नेमत है, बीमारी भी

अल्लाह तआला की नेमत है, लेकिन एक अजीब बात है कि मैं जब बीमार था और सुबह होती थी तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त पूछते थे कि अय्यूब! तेरा क्या हाल है? मुझे इस बात से इतना मज़ा मिलता था कि पूरा दिन मुझे तकलीफ़ नहीं होती थी। जब शाम होती तो अल्लाह तआला फिर अयादत फ़रमाते थे कि अय्यूब तेरा क्या हाल है? उससे सारी रात मुझे तकलीफ़ महसूस नहीं होती थी। बीमारी तो चली गई लेकिन अल्लाह तआला की अयादत का मज़ा मुझे आज भी याद आता है।

सब्र किसे कहते हैं?

सब्र कहते हैं कोई तकलीफ़ वाली बात पेश आए तो इंसान ज़बान से शरियत के ख़िलाफ़ कोई बात न निकाले, न जिस्म से शरियत के ख़िलाफ़ काम करे, अपने आपको क़ाबू में रखे। न ज़बान से परवरदिगार के शिकवे करे न आमाल से उसकी नाफ़रमानी हो। अगर ग़म, मुसीबत, बीमारी और परेशानी के बावजूद भी यह कैफ़ियत है तो यह आदमी सब्र करने वाला कहलाएगा। आमतौर पर देखा गया है कि जब हमें कोई इस क़िस्म की हालत पेश आती है तो हम दूसरे लोगों से इस बात का बदला लेने के लिए ख़ुद तुल जाते हैं।

बेहतरीन हिकमते अमली

मिसाल के तौर पर किसी ने कुछ ऐसे बोल कह दिए जो हमें नागवार गुज़रे, हम सोचते हैं कि हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। रिश्तेदारों में कोई झगड़े की बात हो गई तो हम कहते हैं कि उन्होंने

एक की थी हम दो करेंगे। ऐसी सूरत में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें हमारे मुख़ालिफ़ों के साथ खुला छोड़ देता है कि तुम जानो और तुम्हारा काम जाने अगर तुम सब्र करते तो तुम्हारी तरफ़ से बदला लेने वाला मैं होता। अब क्योंकि तुमने ख़ुद क़दम उठा लिया इसलिए मैं तुम्हारा मामला तुम्हारे ऊपर छोड़ देता हूँ। इसलिए बेहतरीन पॉलिसी यह है कि जब भी कोई ऐसी बात इंसान को पेश आए तो अल्लाह के सुपुर्द कर दे।

महबूबा और महबूब का बदला

एक बार का वाक़िआ है कि एक बुज़ुर्ग अल्लाह वाले जा रहे थे। सर्दी का मौसम था, बारिश हो रही थी। सामने से मियाँ-बीवी आ रहे थे। उन बुज़ुर्ग के जूतों से छींटे उड़ीं और औरत के कपड़ों पर जा गिरीं। शौहर ने जब देखा उसे बड़ा ग़ुस्सा आया। कहने लगा, तू अंधा है? तुझे नज़र नहीं आता, तूने मेरी बीवी के कपड़े ख़राब कर डाले। ग़ुस्से में आकर उसने उस अल्लाह वाले को एक थप्पड़ लगा दिया। बीवी बड़ी ख़ुश हुई कि तुमने मेरी तरफ़ से ख़ूब बदला लिया। फिर ख़ुशी-ख़ुशी दोनों घर चले गए। यह अल्लाह वाले आगे चले गए। थोड़ी दूर आगे गए तो क्या देखते हैं कि एक हलवाई की दुकान है। हलवाई ने सोचा था आज सर्दी है इसलिए आज मुझे अल्लाह आज अल्लाह का जो भी बंदा सबसे पहला नज़र आया मैं उसको अल्लाह के लिए गर्म दूध का एक प्याला ज़रूर पिलाऊँगा। अब वह इंतिज़ार में था। यह बुज़ुर्ग जब उसके क़रीब से गुज़रे तो उसने बुलाया, बिठाया और गर्म-गर्म दूध का प्याला पेश किया। सर्दी तो थी ही सही। उन्होंने वह गर्म दूध का प्याला पिया और अल्लाह का शुक्र अदा किया। दुकान से

बाहर निकलकर आसमान की तरफ़ देखा और कहा वाह अल्लाह! तेरी शान भी कितनी अजीब है, कहीं तो मुझे थप्पड़ लगवाता है और कहीं मुझे गर्म दूध के प्याले पिलवाता है। इतने में वह मियाँ बीवी अपने घर के क़रीब पहुँच चुके थे। शौहर सीढ़ियों पर चढ़ रहा था कि उसका पाँव अटका, वह गर्दन के बल गिरा और वहीं उसकी मौत हो गई। बीवी ने कहा कि थोड़ी देर पहले एक वाक़िआ पेश आया था। उस बूढ़े ने कहीं बद्दुआ तो नहीं कर दी। लोग उनके पास आए और कहने लगे कि उसने एक थप्पड़ ही मारा था आप माफ़ कर देते, आपने उसके लिए बद्दुआ कर दी। उन्होंने कहा, नहीं मैंने कोई बद्दुआ नहीं की। बात असल में यह है कि उसको बीवी से मुहब्बत थी, जब बीवी को तकलीफ़ पहुँची तो उसने बदला लिया, मुझसे मेरे परवरदिगार को मुहब्बत थी जब मुझे तकलीफ़ पहुँची तो मेरे परवरदिगार ने बदला ले लिया। इसलिए जब इंसान अपना मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द कर देता है तो अल्लाह तआला बदला ले लिया करते हैं।

अल्लाह तआला से जंग... अल्लाह बचाए

इसीलिए फ़रमाया :

﴿من عادیٰ لی ولیا فقد اذنتهٗ بالحرب﴾

जो मेरे वली से दुश्मनी करेगा मेरा उसके साथ ऐलाने जंग है।

ऐसा आदमी वली से दुश्मनी नहीं कर रहा होता बल्कि अल्लाह तआला से जंग कर रहा होता है और जिसने अल्लाह तआला से जंग की फिर अल्लाह तआला उस बंदे की गर्दन मरोड़ दिया करते हैं और उसे तिगनी क़ा नाच नचा दिया करते हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हासिदीन

यह सादा सा उसूल है कि दुनिया में जितने बड़े लोग गुज़रे उनके मुख़ालिफ़ और जलने वाले उतने ही ज़्यादा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हसद करने वाले और मुख़ालिफ़त करने वाले सबसे ज़्यादा था। इसीलिए हसद करने वालों से बचने के लिए अल्लाह तआला ने एक आयत नाज़िल फ़रमाई ﴿ومن شر حاسد اذا حسد﴾। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती थीं कि मेरे वालिद गिरामी पर इतनी मुसीबतें आयीं कि अगर वे मुसीबतें दिन के ऊपर आ पड़तीं तो दिन भी रात में बदल जाता।

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० का सब्र

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० का एक मुख़ालिफ़ था। उसको पता चला कि आपके वालिद की वफ़ात हो गई। वालिदा बूढ़ी थीं, नव्वे साल के क़रीब उम्र होगी। वह एक दिन आपके पास आया और कहने लगा कि शरअ शरीफ़ में हुक्म है कि बेवाओं का निकाह कर दो। तुम्हारी वालिदा क्योंकि बेवा हो चुकी हैं मैंने सुना है कि बड़ी ख़ूबसूरत हैं, हसीन व जमील है तो मैं चाहता हूँ कि मैं उनके साथ निकाह करूं। हज़रत ने सुना तो भांप गए। फ़रमाने लगे, भई! मेरी वालिदा आक़िल बालिग़ हैं और इस उम्र की औरत को पूरे तौर पर अपना फ़ैसला ख़ुद करने का इख़्तियार होता है। मैं उनके सामने जाकर बात कर देता हूँ। उसने कहा, बहुत अच्छा। हज़रत ने अपने घर की तरफ़ जाने के लिए दो क़दम उठाए तो क्या देखा कि उस आदमी के पेट के अंदर

कोई दर्द उठा। उसी दर्द के अंदर वह बंदा गिरा और वहीं पर उसकी मौत आ गई। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० फ़रमाया करते थे कि अबू हनीफ़ा के सब्र ने एक बंदे की जान ले ली।

सब्र के दर्जात

मौज़्ज़िज़ सामईन! सब्र के तीन दर्जात हैं—

ताइबीन का सब्र

पहला दर्जा ताइबीन का है। इसका क्या मतलब कि इंसान अपना ग़म और परेशानी दूसरों को बताना छोड़ दे। इसका यह मतलब भी नहीं कि बीवी शौहर को न बताए, बेटा बाप को न बताए, मरीज़ हकीम को न बताए। नहीं यह ज़रूरियात हैं। एक होता है हालात का तज़्किरा करने के लिए बताना, वह नहीं बताना चाहिए। इसको बताया उसको बताया। यह जो होता है ना हालात बताने की ख़ातिर बताना, इसको मना किया गया है वरना कोई तकलीफ़ है तो डाक्टर को बता देने में कोई हरज नहीं। बेटा बाप को बताए कोई हरज नहीं, बीवी शौहर को बताए। आख़िर बीवी किसको सुनाएगी अगर अपने मियाँ को न सुनाए। लेकिन जिस चीज़ से मना किया गया है वह यह है कि कुछ लोगों की ज़बान पर बात ही यही रहती है। जहाँ बैठे बस जी क्या करें अजीब मुसीबतों में फँसे हुए हैं, अल्लाह तआला तो हमारी सुनता ही नहीं। इस तरह की बातें हमेशा शिकवे में शामिल होती हैं। ऐसा कहने वाले गोया यूँ कह रहे होते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारे साथ अच्छा नहीं किया।

ज़ाहिदों का सब्र

दूसरा दर्जा ज़ाहिदों का है। वह दर्जा यह है कि इंसान को अगर कोई मुसीबत पेश आए तो वह उसके ऊपर राज़ी रहे। जब बंदा हर हाल में राज़ी होता है तो अच्छे हालात हों तो भी राज़ी होता है, बुरे हालात हों तो भी राज़ी तो वह ज़ाहिदों का सब्र कहलाता है।

सिद्दीक़ीन का सब्र

एक तीसरा मर्तबा है जिसे सिद्दीक़ीन का दर्जा कहा जाता है और वह यह होता है कि जब बंदे पर कोई बला या मुसीबत आती है तो वह उस पर ख़ुश होता है कि परवरदिगार मुझ से राज़ी है क्योंकि हदीस पाक में आता है कि ख़ुशियाँ अल्लाह तआला के सामने रोज़ाना हाथ बांधकर खड़ी होती हैं कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए क्या फ़ैसला है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि फ़लाँ-फ़लाँ ज़ालिमों और मुख़ालिफ़ों के पास चली जाओ। ख़ुशियों को उन के हाँ भेज देते हैं। उसके बाद फ़ाक़े, परेशानियाँ और ग़म वग़ैरह रह जाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि अच्छा, तुम मेरे प्यारों के पास चले जाओ। हदीस पाक में आया है कि जिस बंदे को अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत होती हो उस पर परेशानियाँ इस तरह आएंगी जैसे पानी ढलान की तरफ़ तेज़ी के साथ चलता है। नेकी और दीनदारी की ज़िंदगी में ये परेशानियाँ तो आती हैं लेकिन यह थोड़ी सी परेशानियाँ हैं। सौ साल, पचास साल की ज़िंदगी में दो-चार दिन की परेशानियाँ क्या हैसियत रखती हैं जबकि आगे जाकर हमेशा-हमेशा की ज़िंदगी में

उसका अज्र व सवाब मिलेगा। मगर अल्लाह वालों की नज़र इस पर होती है कि अगर हमारा अल्लाह तआला के हाँ दर्जा होगा तो हमारे ऊपर आज़माईश और इम्तिहान आएंगे।

सब्र दर्जों के बुलंद होने का सबब

कभी-कभी बंदा अपनी इबादतों की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के क़ुर्ब के वे मुक़ाम नहीं पा सकता जो अल्लाह तआला उसे देना चाहते हैं तो अल्लाह तआला फिर उसके ऊपर कुछ बुरे हालात भेज देते हैं। जब वह बंदा उन हालात में सब्र करता है तो अल्लाह तआला उसको बहाना बनाकर उस बंदे को बुलंद मुक़ाम अता फ़रमा दिया करते हैं। इसलिए रिवायतों में आया है कि जब कोई बीमार आदमी सेहत पाता है तो अपने गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे उस दिन था जब उसकी माँ ने उसे जन्म दिया था। पतझड़ के मौसम में पेड़ के पत्ते गिरते हैं उसी तरह आदमी के जिस्म से अल्लाह तआला उसके गुनाहों को दूर कर दिया करते हैं।

पुरनम आँखों का बदला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़यामत का दिन होगा। हिसाब-किताब अभी क़ायम नहीं होगा कि ऐलान देने वाला ऐलान करेगा जिन लोगों का अल्लाह तआला पर हक़ है वे अपना हक़ ले लें और मख़्लूक़ हैरान होगी कि अल्लाह तआला पर किसका हक़ है। वे पूछेंगे कि अल्लाह तआला पर किसका हक़ है? फ़रिश्ता कहेगा कि जिस बंदे को दुनिया में कोई ग़म पहुँचा जिसकी वजह से उसकी आँखें पुरनम हो गयीं,

अब उस बंदे का अल्लाह पर हक़ है कि यह उन पुरनम आँखों का बदला अपने परवरदिगार से ले ले। लिहाज़ा लोग खड़े हो जाएंगे कि मुझे भी ग़म मिला था, मैं भी रोया था, मैं भी रोया था। यूँ उनको अल्लाह तआला अपनी शान के मुताबिक़ अज्र देंगे जो उनके गुनाहों की बख़्शिश के लिए काफ़ी हो जाएगा।

बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला

एक रिवायत में आया है कि अभी इंसाफ़ का तराज़ू क़ायम नहीं होगा कि एक फ़रिश्ता ऐलान करेगा कि सब्र करने वाले कहाँ हैं तो सब्र करने वाले खड़े हो जाएंगे। वह फ़रिश्ता उनको लेकर जन्नत की तरफ़ जाएगा और कहेगा कि जाओ। वे सब्र वाले सारे के सारे जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच जाएंगे और कहेंगे कि जन्नत का दरवाज़ा खोलो और हमें जन्नत में दाख़िल होने दो। अब रिज़वान जो जन्नत का दारोग़ा है वह हैरान होकर अल्लाह तआला से पूछेगा कि ऐ अल्लाह! अभी तो मीज़ाने अद्ल (इंसाफ़ का तराज़ू) क़ायम नहीं हुआ और ये आपके बंदे जन्नत में दाख़िले की तमन्ना कर रहे हैं, ऐ अल्लाह! मेरे लिए क्या हुक्म है? परवरदिगार फ़रमाएंगे, मैंने अपना हुक्म अपनी किताब में नाज़िल फ़रमा दिया था :

﴿انما يوفى الصابرون اجرهم بغير حساب.﴾

ये मेरे वे बंदे हैं जिनके साथ बिला हिसाब मामला है।

रिज़वान! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और सब्र करने वालों को बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होने दे। इनसे कोई हिसाब-किताब नहीं लिया जाएगा।

अल्लाह तआला की तरफ़ से माज़रत

बाज़ बुज़ुर्गों ने लिखा है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला एक बंदे को खड़ा करेंगे। यह वह बंदा होगा कि जिसका रिज़्क़ दुनिया में थोड़ा होगा, तंग होगा वह और तंगी की वजह से सब्र और शुक्र के साथ वक़्त गुज़ारेगा। अल्लाह तआला अपने उस बंदे से इस तरह माज़रत करेंगे जिस तरह दोस्त अपने दोस्त से माज़रत किया करता है। यूँ माज़रत फ़रमाएंगे कि मेरे बंदे मैंने दुनिया में तुम्हें थोड़ा रिज़्क़ दिया था कोई बात नहीं, अच्छा तुझे अपनी नेमतें देता हूँ। लिहाज़ा अल्लाह तआला उनको अपनी जन्नतें अता फ़रमाएंगे।

अल्लाह तआला के हाँ ग़रीब लोगों की क़दर

जो दुनिया में ग़रीबी की ज़िंदगी गुज़ारेंगे वे पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे और वहाँ एक दिन दुनिया के सत्तर हज़ार साल के बराबर होगा। एक साल कितना लम्बा होगा और पाँच सौ साल का अरसा कितना होगा? (यह ईमान वालों की बात हो रही है) दुनिया में ईमान वाले ग़रीब लोग उन ईमान वाले अमीर लोगों से जिनको दुनिया में सुख और आसानियों की ज़िंदगी मिली, अल्लाह तआला उनको पाँच सौ साल पहले जन्नत अता फ़रमाएंगे और जो बंदा दुनिया में बेसब्री करेगा वह अपने अज्र को खो बैठेगा।

एक क़ीमती बात

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि ऐ दोस्त! तुम ग़म आने के

पहले दिन वही किया करो जो ग़म आने के तीसरे दिन किया करते हो। फ़र्ज़ करो घर में कोई मर गया हो तो तीसरे दिन लोग क्या करते हैं? दुआ करके अपने-अपने कामों पर चले जाते हैं कि सोग तो तीन दिन तक है तो जब तीसरे दिन सब्र वाला काम करना है तो वही काम इंसान पहले दिन ही क्यों नहीं कर ले ताकि सब्र का अज्र मिल जाए। याद रखिए कि बेसब्री से मुसीबतें नहीं टला करतीं। हाँ मुसीबतों पर मिलने वाला अज्र ज़ाए हो जाया करता है। उस मिलने वाले अज्र से इंसान महरूम हो जाया करता है।

आमिलों के पास झुरमुट की वजह

कुछ लोगों को देखा कि ज़रा सी कोई बात हो तो औरतें तावीज़ लेने के लिए आमिलों के पास जाती हैं। जी ज़रा तावीज़ दे दो फ़लां के बारे में। वे समझती हैं कि इन आमिलों के पास जाकर हम काला इल्म करवाएं और जादू करवा लें ताकि फ़लाँ का कारोबार न चले या उनकी औलाद की बंदिश हो वग़ैरह वग़ैरह।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जिस आदमी ने कोई मुसीबत आने पर बेसब्री की बातें कीं या अपने कपड़ों को काला कर लिया, अल्लाह तआला उसको इतने गुनाह अता करेंगे कि जो उसकी ज़िंदगी के सारे साँसों के बराबर होंगे।

सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जिस

आदमी ने मुसीबत के आने पर बेसब्री की बातें कीं लोगों के सामने अल्लाह की शिकायतें कीं तो अब अल्लाह तआला उसके आमालनामे में इतने गुनाह लिखवाएं जाएंगे जितना कि दरियाए नील के पानी के क़तरे होंगे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि जिसने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से भेजी हुई मुसीबत पर बेसब्री का इज़्हार किया, कपड़ों को स्याह किया, शोर-शराबा किया, अल्लाह तआला उसके आमालनामे में इतने गुनाह लिखवाएंगे जितने पूरी दुनिया के दिन रात शुमार किए जाएंगें। तो बेसब्री पर नेकी का अज्र भी ज़ाए और उल्टा गुनाह आमालनामे में लिखे जाएंगे।

अल्लाह की मदद के लिए एक सुनहरी उसूल

मोहतरम जमात! अगर कोई आदमी आपकी मुख़ालिफ़त कर रहा है, दुश्मनी कर रहा है या हसद कर रहा है तो आप अपने मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दें। आमिलों के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं, कोई तावीज़ गंडों की ज़रूरत नहीं, अपने मौला से तार जोड़िए, उसी से मदद मांगिए, मामले को उसी के हवाले कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तआला आपकी कैसी मदद फ़रमाता है।

एक इल्मी नुक्ता

यहाँ एक इल्मी नुक्ता है, शायद सब लोग तो न समझ पाएं

लेकिन उलमा इसको अच्छी तरह समझेंगे। आपका मुख़ालिफ़ जिस तरीक़े से आपको परेशान कर रहा है और आप उसके ऊपर सब्र कर रहे हैं, इस सब्र की वजह से अल्लाह तआला उसी तरीक़े पर आपको सकून व इत्मिनान अता फ़रमाएंगे। जिस अंदाज़ से बंदे को ग़म मिलता है अगर वह सब्र कर ले तो उसी अंदाज़ से उसको ख़ुशी अता कर दी जाती है।

पहली दलील

अब इस की दलील क़ुरआन पाक से सुनिए क्योंकि जब तक इस किताब से बात न हो महफ़िल का मज़ा भी तो नहीं आता। सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा जब आपको दरिया में डाल रही थीं तो पानी देखकर ग़म मिला था। वाक़ई यह ग़म की कैफ़ियत थी पानी में बेटे को डालने की वजह से उनके दिल में सदमा था। हुक्मे इलाही तो पूरा कर रही थीं मगर माँ की ममता कोई और चीज़ होती है। वह तो बस में नहीं होती। तो बड़े सब्र के साथ अल्लाह तआला के हुक्म को मानते हुए वह अपने बेटे को ले जाकर पानी में डाल रही थीं और यह दरिया का पानी उनके लिए ग़म और मुसीबत का सबब बन रहा था। ﴿واصبح فؤاد ام موسى فارغا﴾ उसका दिल उस वक़्त इतना परेशान था कि सारी रात परेशानी में गुज़ार दी। जब पानी सबब बना उनको परेशानी में मिलने का तो फिर अल्लाह तआला ने वह दिन भी दिखाया कि जब फ़िरऔन को अल्लाह तआला ने उसी पानी में ग़र्क़ कर दिया जो पानी ग़म का सबब बना था और उसी पानी को बनी इस्राइल की निजात का सबब बना दिया।

आदमी ने मुसीबत के आने पर बेसब्री की बातें कीं लोगों के सामने अल्लाह की शिकायतें कीं तो अब अल्लाह तआला उसके आमालनामे में इतने गुनाह लिखवाएं जाएंगे जितना कि दरियाए नील के पानी के कतरे होंगे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि जिसनें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से भेजी हुई मुसीबत पर बेसब्री का इज़्हार किया, कपड़ों को स्याह किया, शोर-शराबा किया, अल्लाह तआला उसके आमालनामे में इतने गुनाह लिखवाएंगे जितने पूरी दुनिया के दिन रात शुमार किए जाएंगे। तो बेसब्री पर नेकी का अज्र भी ज़ाए और उल्टा गुनाह आमालनामे में लिखे जाएंगे।

अल्लाह की मदद के लिए एक सुनहरी उसूल

मोहतरम जमात! अगर कोई आदमी आपकी मुख़ालिफ़त कर रहा है, दुश्मनी कर रहा है या हसद कर रहा है तो आप अपने मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दें। आमिलों के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं, कोई तावीज़ गंडों की ज़रूरत नहीं, अपने मौला से तार जोड़िए, उसी से मदद मांगिए, मामले को उसी के हवाले कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तआला आपकी कैसी मदद फ़रमाता है।

एक इल्मी नुक्ता

यहाँ एक इल्मी नुक्ता है, शायद सब लोग तो न समझ पाएं

आए तो इंसान पहाड़ की तरह अपने दिल को बड़ा कर ले और फिर देखे कि रब्बे करीम किस तरह मेहरबानी फ़रमाते हैं।

हम बदला न लें

आमतौर पर हम किसी बच्चे पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते हालाँकि सौ तरह की हमारे अंदर कमियाँ मौजूद हैं तो क्या सोचते हैं उस रब्बे करीम के बारे में जो अपने बंदों पर मेहरबान भी है, रहीम है, रहमान भी है, ग़फ़ूर भी है, माफ़ करने वाला भी है। वह परवरदिगार अपने बंदे पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ कैसे डाल देंगे। इसलिए ग़म और मुसीबत थोड़े वक़्त के लिए आते तो हैं मगर बंदे के दर्जात को बढ़ाने के लिए आते हैं। तो सब्र करते रहिए, दुनिया में बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं। हमारा बदला लेने वाला परवरदिगार बहुत बड़ा है। हम बदला लें तो क्या ले सकते हैं और अगर परवरदिगार ने बदला लिया तो फिर परवरदिगार का बदला तो दुनिया देखेगी।

कचहरियों में मुक़दमेबाज़ी क्यों?

आज हमारी कचहरियाँ क्यों भरी पड़ी हैं? यह मुक़दमे क्यों होते हैं? कछ बेचारे तो सारी ज़िंदगी बदले लेने में गुज़ार देते हैं। ख़ानदानों के ख़ानदान परेशान रहते हैं। यहाँ तक कि बच्चा पैदा होता है और ज़रा बड़ा होता है तो माँ बताना शुरू कर देती है कि बेटे तुमने बड़ा होकर फ़लाँ से बदला लेना है।

परेशानी दूर करने का आसान नुस्ख़ा

बुनियादी बात समझाने का मक़सद क्या है कि औरतें बजाए

इसके कि भागती फिरें इन आमिलों के पास और काले इल्म वालों के पास, जादू वालों के पास और अपने ईमान से भी हाथ धो बैठें, इससे बेहतर है कि जब कभी परेशानी आए तो अपने रब की तरफ़ तवज्जोह कीजिए, नफ़्लें पढ़ लीजिए, रब्बे करीम के सामने सर सज्दे में डालकर दुआएं कर लीजिए, फ़रियाद कर लीजिए। आप मांगेगे तो परवरदिगार अता फ़रमा देंगे। क्या नहीं देखते कि एक बच्चा जो अपनी माँ से कुछ पैसे मांगता है और माँ उसे कहती है कि हर वक़्त तुझे पैसे मांगने की आदत है, जा दफ़ा हो मैं तुझे नहीं देती। वह बच्चा ज़िद्द कर लेता है। फिर मांगता है, फिर माँ पीछे हटाती है। फिर वह बच्चा मांगता है यहाँ तक कि माँ गुस्से में आकर थप्पड़ भी लगा देती है। वह रोना शुरू कर देता है फिर माँ के क़रीब आता है फिर मांगता है। फिर माँ देखती है कि मैंने मारा भी सही, रो भी रहा है, फिर भी मेरे ही सीने से लिपट रहा है, माँ का गुस्सा उसकी रहमत में बदल जाता है और माँ उसके कहने से भी ज़्यादा चीज़ें लेकर दे देती है। यही मामला परवरदिगार का है अगर वह कभी बंदे के ऊपर कोई ग़म और मुसीबत भेज देता है और बंदा फिर भी उसके सामने सज्दे में पड़ा रहता है, उसी के सामने फ़रियाद करता रहता है तो रब्बे करीम फ़रमाते हैं कि यह बंदा खुशी में भी मेरा शुक्र अदा करता था और मैंने ग़म के हालात भेजे फिर भी मेरी चौखट पकड़ ली, फिर भी मेरे सामने सज्दे में पड़ा रहा, यह मेरे सामने दामन फैलाए बैठा है, इसने मुझसे तार जोड़ी हुई है, यह ग़म किसी को नहीं कहता, इसकी आँखों से आँसू रवां होते हैं, तन्हाईयों में मेरे सामने रोता है। जब यह किसी और को कुछ नहीं बताता, मुझे ही बता रहा है तो याद रख मैं परवरदिगार बड़ी शान वाला हूँ। लिहाज़ा परवरदिगार

उसकी दुआओं को क़ुबूल कर लेते हैं और ग़मों को हटाकर ख़ुशियाँ अता कर देते हैं।

इसीलिए सब्र करने वाले का हर आने वाला दिन उसके गुज़रे हुए दिन से बेहतर हुआ करता है और बेसब्री करने वाले का हर आने वाला दिन उसके गुज़रे हुए दिन से बुरा हुआ करता है।

सब्र ख़ुदा तआला के साथ होने का ज़रिया

यह बात पक्की है अपने दिलों पर लिख लीजिए, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को सब्र करने वालों से मुहब्बत हे। क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿إن الله مع الصابرين﴾ बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है। वह तो सब्र करने वालों के साथ मुहब्बत कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला का साथ उसको नसीब होता है। जिसके साथ परवरदिगार होता है फिर कोई बंदा उसका बाल बांका नहीं कर सकता। अगर अपनी बात कहनी हो तो सिर्फ़ अल्लाह तआला के सामने कहें। उस परवरदिगार ने हालात भेजे हैं। जो भेजने वाला होता है, हालात वापस भी वही ले लिया करता है। हम उसके दर पे तो जाते नहीं और हम हर दर के ऊपर जा रहे होते हैं। दर-दर हाथ फैला रहे होते हैं। शिकवे सुना रहे होते हैं। इस तरह हम अपनी परेशानियों में और इज़ाफ़ा कर रहे होते हैं। अल्लाह तआला सब्र करने वालों के गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं और उनको बड़ा अज्र अता फ़रमा देते हैं।

बख़्शिश का अजीब बहाना

एक आदमी के बारे में लिखा है कि उसकी बीवी बेअक़्ल सी

थी, ग़ल्तियाँ कर बैठती थी। कभी कोई नुक़सान कभी कोई नुक़सान। गुस्सा तो उस आदमी को बहुत आता लेकिन सोचता कि अगर मैंने तलाक़ दे दी तो बेचारी परेशान हो जाएगी, फिर कौन इसे लेगा। चलो इसकी भी ज़िंदगी गुज़र जाएगी और मेरा भी वक़्त गुज़र जाएगा। लिहाज़ा वह उसकी ग़ल्तियों को माफ़ कर देता कि कोई बात नहीं अल्लाह की बंदी है। इस हाल में ज़िंदगी गुज़ार दी यहाँ तक कि वफ़ात हो गई। मरने के बाद किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो पूछा कि सुनाइए आपके साथ क्या मामला बना? कहने लगा, मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर पेश किया गया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, मेरे बंदे! तू अपनी बीवी को मेरी बंदी समझकर माफ़ किया करता था, जा आज मैंने तुझे अपना बंदा समझकर माफ़ कर दिया। तो देखा कि अल्लाह तआला किस तरह मेहरबानी फ़रमा देते हैं। इसलिए ग़मों पर परेशान न हुआ करें। ये ज़िंदगी का हिस्सा हैं अगर ख़ुशियाँ हमेशा नहीं रहतीं तो फिर ग़म भी हमेशा नहीं रहा करते।

तंगी के बाद दो आसानियाँ

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿ان مع العسر يسرا ان مع العسر يسرا.﴾

हर तंगी के बाद आसानी होती है और हर तंगी के बाद आसानी होती है।

इसको दो बार कहा हालाँकि बात तो एक दफ़ा ही कह देना काफ़ी थी मगर रब्बे करीम ने दो बार जो बात को दोहराया तो इसकी कोई वजह होगी। लिहाज़ा मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इसकी वजह यह थी कि जब तंगी के ऊपर बंदा सब्र कर लेता है

तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त एक तंगी के बदले उसे दो आसानियाँ अता फ़रमाया करते हैं। तंगी एक होती है ख़ुशियाँ दो मिल जाती हैं। लिहाज़ा सब्र कीजिए और अपनी तंगी और परेशानी का बदला दुगना लीजिए।

परेशानी और ख़ुशहाली में अल्लाह वालों की कैफ़ियत

अल्लाह वाले तो ऐसे परेशानी के हाल में ज़्यादा ख़ुश होते हैं। वे कहते हैं–

तेरा ग़म भी मुझको अज़ीज़ है के वह तेरी दी हुई चीज़ है

वे इसको नहीं देखते कि परेशानी आई, यह देखते हैं कि भेजने वाला कौन है। इसलिए दाऊद ताई रह० को अल्लाह तआला ने इल्हाम फ़रमाया कि ऐ दाऊद! अगर तुझे किसी वक़्त खाने में कोई सड़ी हुई सब्ज़ी मिले तो दिल तंग न करना बल्कि इस बात को सोचना कि जब मैंने रिज़्क़ तक़्सीम किया तो ऐ मेरे बंदे! तू मुझे याद था, मैंने तेरी तरफ़ रिज़्क़ भेजा, जब भेजा मैंने है तो मैं तुझे इसका बदला और अज्र भी अता करूंगा। इसलिए ऐसी बातों पर परेशान होने की ज़रूरत नहीं होती।

अल्लाह वालों के ऊपर कोई ऐसी परेशानी ग़म और बला न आए तो वे तो कई बार घबराया करते हैं कि यह कोई हमारे ऊपर आज़माईश तो नहीं आ गई। वे डरते और कांपते हैं कि यह कोई इम्तिहान तो नहीं है बल्कि उनका तो यह हाल होता है कि अगर उनकी उम्मीद से बढ़कर आसानी कहीं मिलती है तो रोने

लगते हैं कि कहीं नेकियों का अज्र दुनिया में ही तो नहीं मिल रहा और यही सहाबा का मिज़ाज था।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी मांगा, उनको शर्बत पेश किया गया। आँखों में आँसू आ गए और कहने लगे कि कहीं उमर की नेकियों का बदला उसको दुनिया में तो नहीं दिया जा रहा है और क़यामत के दिन यह न कह दिया जाए :

﴿اذهبتم طيبٰتكم فى حياتكم الدنيا فاستمتعتم بها﴾

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार अपने ग़ुलाम से कहा नज़ला साफ़ करने के लिए कोई चीज़ लाओ। वह एक क़ीमती कपड़ा लाया। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु उसको देखकर रो पड़े कि कहीं मेरे आमाल का बदला मुझे दुनिया ही में तो नहीं चुकाया जा रहा है। मालूम हुआ कि अल्लाह वालों को दुनिया में खुशियाँ मिलती हैं तो वे परेशान हो जाते हैं कि कहीं हमारे ऊपर आज़माइश तो नहीं आ गई। और उनको अगर कोई ग़म मिलता है तो वे खुश होते हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला का वादा है कि मैं जिस बंदे को दुनिया में ग़म अता करूंगा उसे आख़िरत की खुशियाँ दूंगा और जिसे दुनिया की खुशियाँ मिल गयीं उसके बदले उसे आख़िरत के ग़म अता कर दिए जाएंगे।

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

फ़रमाया कि दो खुशियाँ और दो ग़म कभी जमा नहीं करूंगा। यह नहीं कि दुनिया में भी ग़म मिलें और आख़िरत में भी ग़म मिलें, दुनिया की भी खुशियाँ मिलें और आख़िरत की भी खुशियाँ मिलें। नहीं, एक जगह अगर ग़म मिलेंगे तो दूसरी जगह अल्लाह

तआला ख़ुशियाँ अता फ़रमाएंगे। इसलिए दुनिया में ग़म मिल जाएं तो क्या यह बेहतर नहीं कि थोड़े वक़्त के लिए आएंगे और दुनिया में ग़म बहुत ज़्यादा आ भी नहीं सकते। आख़िरत के ग़म बहुत बड़े होंगे और बहुत लम्बे वक़्त के लिए होंगे। इसलिए दुनिया ही में ग़म के हालात पेश आ जाएं तो इंसान उनको अपने गुनाहों का कफ़्फ़ारा समझे। समझ लिया करे कि मेरी जो भी ग़ल्तियाँ कोताहियाँ थीं मुझे दुनिया में ही उनका बदला दे दिया गया। आख़िरत में अल्लाह तआला मेरे साथ रहमत का मामला करेंगे।

एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा की सबक़ देने वाली दास्तान

एक सहाबिया का अजीब वाक़िआ लिखा है कि उनकी शादी हुई। अल्लाह तआला ने उनको हुस्न व जमाल भी अजीब दिया था और शादी भी हुई एक बड़े अमीर सहाबी से जिनके पास रिज़्क़ की फ़राख़ी थी। हर तरह के ऐश व अराम के सामान थे। मियाँ-बीवी में ख़ूब मुहब्बत थी और अच्छा वक़्त गुज़र रहा था। यहाँ तक कि बीवी अपने शौहर की ख़िदमत भी करती और उन्हें ख़ुश भी रखती। दोनों मियाँ-बीवी ख़ुशी-ख़ुशी ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

एक रात प्यास लगी। उसने बीवी से कहा मुझे पानी दो। बीवी उठी और पानी ले आई। जब पानी लेकर वापस आई तो मियाँ सो चुका था। वह पानी का प्याला लेकर खड़ी रहीं हत्ताकि जब ख़ाविंद की दोबारा आँख खुली तो देखा कि बीवी पानी लेकर खड़ी है। वह बड़े ख़ुश हुए। उन्होंने उठकर पानी पिया और बीवी से कहा कि मैं आज इतना ख़ुश हूँ कि तुम इतनी पानी का प्याला

लेकर मेरे इंतिज़ार में खड़ी रहीं। आज तुम जो कहोगी मैं तुम्हारी फ़रमाइश पूरी करूंगा। जब ख़ाविन्द ने यह कहा तो बीवी कहने लगी क्या आप अपनी बात में पक्के हैं कि जो कहूँगी पूरा करेंगे? कहने लगे हाँ पूरा करके दिखाऊँगा। कहने लगी अच्छा आप मुझे तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दीजिए। अब जब तलाक़ की बात हुई तो यह सहाबी बहुत परेशान हुए कि इतनी ख़ूबसूरत और ख़ूबसीरत, इतनी वफ़ादार और ख़िदमतगार बीवी कह रही है कि आप मुझे तलाक़ दे दीजिए। पूछने लगे बीबी क्या तुझे मुझसे कोई तकलीफ़ पहुँची है? कहने लगी बिल्कुल नहीं। बीवी क्या मैंने आपकी बेक़द्री की? हर्गिज़ नहीं। आपकी किसी उम्मीद को तोड़ा है कोई बात आपकी पूरी नहीं की हो? नहीं ऐसी भी कोई बात नहीं। बीवी! क्या आप मुझसे ख़फ़ा हैं? कहने लगी हर्गिज़ नहीं। तो फिर मुझसे तलाक़ क्यों चाहती हो क्या आप मुझे पसंद नहीं करती हो? कहने लगी यह बात भी नहीं। पसंद भी बहुत करती हूँ, मुहब्बत करती हूँ इसीलिए तो ख़िदमत करती हूँ। आपने कहा था कि मैं आपकी बात को पूरा करूंगा, लिहाज़ा आप मुझे तलाक़ देकर फ़ारिग़ कर दीजिए। वह सहाबी परेशान हैं कि क़ौल भी दे बैठे। कहने लगे अच्छा सुबह होगी तो हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाएंगे और आपसे जाकर फ़ैसला करवा लेंगे। वह कहने लगी बहुत अच्छा। लिहाज़ा मियाँ-बीवी दोनों रात को सो गए।

सुबह हुई तो बीवी कहने लगी चलो जल्दी चलते हैं। लिहाज़ा दोनों मियाँ-बीवी घर से बाहर निकले ही थे कि ख़ाविन्द का किसी वजह से पाँव अटका और वह नीचे गिरे और उनके जिस्म से ख़ून निकलने लगा। बीवी ने फ़ौरन अपना दुपट्टा फाड़ा और ख़ाविन्द

के ज़ख़्म पर पट्टी बांधी और उनके जिस्म को सहारा दिया और कहने लगी चलो घर वापस चलते हैं। मैं आपसे तलाक़ नहीं लेती वह हैरान हुए कि जब तुमने तलाक़ का मुतालबा किया तो न मुझे उस वक़्त समझ में आया और अब कहती हो कि तलाक़ नहीं चाहिए तो न अब मुझे समझ में आ सका। कहने लगीं घर तश्रीफ़ ले चलें, वहाँ जाकर मैं आपका बता दूँगी। जब घर जाकर बैठे तो कहने लगे मुझे बताओ तो सही क्या बात है। कहने लगी आपने कुछ दिन पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुनाई थी कि जिस बंदे से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मुहब्बत करते हैं उस बंदे के ऊपर इस तरह परेशानियाँ आती हैं जिस तरह पानी ऊँचाई से ढलान की तरफ़ जाया करता है। मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान सुना तो मैं दिल में सोचती रही कि मैंने अपने घर में कोई परेशानी नहीं देखी, कोई ग़म नहीं देखा, कोई मुसीबत नहीं देखी तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि मेरे आक़ा की बात सच्ची है। ऐसा तो नहीं कि मेरे ख़ाविन्द के ईमान में फ़र्क़ हो, मेरे ख़ाविंद के आमाल में फ़र्क़ हो। मेरे ख़ाविन्द से अगर परवरदिगार को मुहब्बत नहीं तो मैं उस बंदे की क्या ख़िदमत करूंगी। इसलिए जब आपने कहा कि मैं तुम्हारी बात पूरी करूंगा तो मैंने कहा कि मैं इस बंदे से तलाक़ चाहती हूँ जिससे मेरे परवरदिगार मुहब्बत नहीं करते। फिर जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में इल्म हासिल करने जा रहे थे, वह अल्लाह का रास्ता था, आप गिरे और ख़ून निकला तो मैं फ़ौरन समझ गई कि अल्लाह के रास्ते का ग़म पहुँचा, मुसीबत पहुँची, तकलीफ़ पहुँची। यक़ीनन अल्लाह तआला को आपसे प्यार है और अल्लाह तआला ने आपको अपनी नाराज़गी की वजह से ख़ुशियाँ

नहीं दी हुई बल्कि अल्लाह तआला को आपसे मुहब्बत है। अब मुझे तलाक़ लेने की कोई ज़रूरत नहीं। इसलिए मैं सारी ज़िंदगी आपकी ख़ादिमा बनकर आपकी ख़िदमत करूंगी, सुब्हानअल्लाह।

फ़िक्र की घड़ी

सोचकर हैरान होते हैं कि इन हज़रात की निगाह कहाँ पहुँचा करती थी। है कोई औरत जिसकी सोच आज ऐसी हो? कोई मर्द जिसकी सोच आज ऐसी हो? नहीं, हम ज़रा सी परेशानी होती है और उसी वक़्त किसी सही अक़ीदा बंदों के घर का मामला देखा करें कि किसी बड़े मुशरिक और बिदअती के पास पहुँचे हुए होंगे। ऐसे बंदे के पास पहुँचेंगे जो ख़ुद भी जाहिल होगा और दूसरे के ईमान का भी जनाज़ा निकालेगा। कई कहते हैं कि मुर्ग़ा लाओ। उसको ज़िब्ह करके उसके ख़ून से तवीज़ लिखते हैं। कई कहते हैं कि बकरे का ख़ून लेकर आओ। ऐसे अजीब व ग़रीब हालात हैं कि मेरे दोस्तो! कहने के क़ाबिल नहीं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमें ग़म के आलम में सब्र की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ख़ुशी के आलम में शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

इस्लाम और मग़रिबी (पश्चिमी) समाज

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم٥ بسم الله الرحمن الرحيم ٥
ان الدين عند الله الاسلام٥ وقال الله تعالى فى مقام اخر اليوم اكملت لكم
دينكم واتممت عليكم نعمتى ورضيت لكم الاسلام دينا ٥ سبحان ربك
رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

अमरीका का सफ़र

फ़क़ीर ने अमरीका की कुल 22 रियासतों का सफ़र किया। ऐसा भी हुआ कि सुबह का प्रोग्राम एक रियासत में हुआ, ज़ोहर का प्रोग्राम दूसरी रियासत में हुआ और रात का प्रोग्राम तीसरी रियासत में हुआ। यहाँ फ़ैसलाबाद की जमात के दोस्तों ने मुतालबा किया कि वहाँ के हालात और बातें हमें भी बताएं ताकि ख़्यालात का तबादला हो सके तो फ़क़ीर ने कह दिया था कि इंशाअल्लाह किसी एक महफ़िल में वहाँ की कुछ तफ़्सीलात अर्ज़ कर दी जाएंगी। इसलिए उन दोस्तों ने इस उनवान के लिए इस

मस्जिद को चुना है। लिहाज़ा आज मग़रिबी समाज के मुख़्तलिफ़ पहलुओं पर रोशनी डाली जाएगी।

नई टैक्नालोजी

नई टैक्नालोजी इस वक़्त दुनिया में राज कर रही है। दुनिया की सुपर पावर बनी हुई है बल्कि अब तो उन्होंने सुप्रीम पावर कहलाना शुरू कर दिया।

मिट्टी सोने के भाव

मग़रिब अब इतनी टैक्नालोजी हासिल कर चुका है कि वह अपनी मिट्टी को आज सोने के भाव बेच रहा है। रेत को अंग्रेज़ी में सेलीकान कहते हैं। इस सेलीकान से इलैक्ट्रानिक के पुर्ज़े, एंटीग्रेटिड सरकिट और माक्रो प्रोसेसर बनते हैं जो वज़न के हिसाब से सोने से भी ज़्यादा क़ीमती होते हैं।

चाँद पर बैठी मक्खी की आँख का फोटो

मग़रिब का दावा है कि हम ज़मीन पर बैठकर चाँद पर बैठी हुई मक्खी की आँख का फ़ोटो उतार सकते हैं। यह बात वाक़ई ठीक है क्योंकि इस आजिज़ ने वहाँ के अजाएब घरों को देखा है। उससे पता चलता है कि उनको आज टैक्नालॉजी में जो पोज़ीशन हासिल है उनके लिए यह काम आसान हो चुका है। चाँद जो अपने दायरे में चलता है। उसकी पोज़ीशन तब्दील होने के लिए मसावातें (इक्वेशन) हैं जो चाँद की मदारवी (धुरी की) हरकत को ज़ाहिर करती हैं। उसके छः हज़ार फ़ैक्टर बदलते रहते हैं मगर इसके बावजूद चाँद के मदार के हर इंच को मापा जा रहा है।

रूस-अमरीका अमन समझौते का इज़्हार

रूस और अमरीका के बीच समझौता हुआ। दोनों ने यह फ़ैसला किया कि इस समझौते को मनाया जाए। इस मक़सद के लिए रूस ने एक ख़लाई (अंतरिक्षी) गाड़ी उड़ाई और एक अमरीका ने। ख़ला में जाकर दोनों आमने-सामने आकर आपस में इकट्ठी जुड़ गयीं। रूसी मशीन बदं हो गई और अमरीकी मशीन ने उसे चलाना शुरू कर दिया। उसने उसको चलाकर अमरीका में लाकर उतारा।

फिर दोबारा एक-एक गाड़ी उड़ाई। फिर वे इकट्ठी हो गयीं। अब की बार अमरीकी मशीन बंद हो गई और रूसी मशीन ने उसे चलाते हुए रूस के अंदर उतारा। फ़क़ीर ने इन दोनों मशीनों को जुड़ा हुआ पड़े देखा है। फ़क़ीर हैरान था कि हम लागों को मोटर की शाफ़्ट पर पुली चढ़ानी पड़े तो हथौड़ों की ज़रूरत होती है। कितनी महारत चाहिए होगी कि हवा में एक मशीन तैर रही है उसे नीचे बैठे आदमी कंट्रोल कर रहा है और वे मशीन ठीक एक दूसरे के सामने आकर जुड़ जाती हैं। फिर उनमें से एक बंद हो जाती है तो दूसरी का मर्कज़ सक़्ल (ग्रेवटी प्वाइन्ट) बदल जाता है मगर वह इसको बैलेंस करती है और नई सूरत में उसको कंट्रोल करते हुए वापस लाकर अपने मुल्क में हिफ़ाज़त के साथ उतार देती है। इंजीनियरिंग का बैकग्राउन्ड रखने वाले हज़रात समझ रहे होंगे कि यह कितनी महारत का काम है।

बर्कले युनीवर्सिटी में कंप्युटरों की तादाद

इलैक्ट्रानिक्स की दुनिया में तलहका मचा हुआ है। हर आने

वाला दिन नई-नई खोजें लेकर आ रहा है। और ये सारी तब्दीलियाँ साठ के दशक के बाद हुईं। सन् 1960 ई० में बर्कले युनीवर्सिटी कैलिफ़ोर्निया में एक बड़ा कंप्युटर था जबकि सत्तर के दशक में इस युनिवर्सिटी में सत्तर हज़ार पी०सी० टर्मीनल थे। अब आप सोचिए कि जब इतने लोग दिन रात स्क्रीन पर काम कर रहे हों और इंसान अपने दिमाग़ का इस्तेमाल कर रहे हों तो फिर माद्दे की असलियतें क्यों नहीं खुलेंगी।

जैन्टेक्स इंजीनियरिंग की नई खोजें

जैन्टेक्स इंजीनियरिंग के अंदर इस वक़्त ऐसी-ऐसी चीज़ें सामने आ रही हैं कि इंसान की आँखे खुली की खुली रह जाती हैं। स्वीडन के अंदर एक पेड़ उगाया गया जिसकी तीन अलग-अलग शाख़ों पर तीन अलग-अलग फल लगे हुए थे। यह कितनी हैरतअंगेज़ बात है।

दरअसल जब भी कोई चीज़ परवरिश पाती है उसके ख़लिए का एक डी०एन०ए० ज़ाब्ता हुआ करता है। डी०एन०ए० के अंदर आर०सी०जी०टी० डंडों से बनी हुई सीढ़ी होती है। जिसमें उसके नशोनुमा के ख़ास पैग़ाम मौजूद होते हैं। मिसाल के तौर पर आदमी ही को लीजिए। सबकी दो आँखे होती हैं, किसी की तीन या चार आँखें नहीं होतीं। सबके नाक और कान एक ही जगह पर होते हैं किसी और जगहों पर नहीं होते। सब के चेहरों का रुख़ सामने की तरफ़ होता है। हर चीज़ जो अपनी-अपनी जगह पर अपनी-अपनी शक्ल में पैदा हो रही है उसको वही ज़ाब्ता पीछे से कंट्रोल कर रहा होता है। इस कोड को आज इंसान ने समझना

शुरू कर दिया है। यह जैन्टेक्स इंजीनियरिंग आने वाले वक़्त में बड़ी अजीब तब्दीलियाँ सामने लाएगी।

काएनात को क़ाबू करने की तरफ़ इशारा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने चौदह सौ साल पहले फ़रमाया दिया था कि ﴿سخر لكم﴾ और हमने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया ﴿ما في السموت وما في الارض﴾ जो कुछ आसमान और ज़मीन के बीच में है। इस फ़रमान के मुताबिक़ इसांन के अंदर काएनात को क़ाबू में करने की सलाहियत मौजूद है। वह अल्लाह का नाएब है, अल्लाह का ख़लीफ़ा और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की सिफ़ात का मज़हर अतम है। वह अपनी सलाहियतों को इस्तेमाल करेगा तो इन चीज़ों को समझना उसके लिए मुश्किल नहीं रहेगा।

पेट खोले बग़ैर आप्रेशन

मेडिकल की लाईन में आज नित नई रिर्सच सामने आ रही हैं। एक दिलचस्प इज़ाफ़ा आप्रेशन की नई टैक्नालॉजी है। अल्सर के लिए आज किसी इंसान के पेट को खोलना नहीं पड़ता बल्कि एक तरफ़ से इंजेक्शन की सूई की बराबर तार अंदर डालते हैं जिसमें एक कैमरा फ़िट होता है और दूसरी तरफ़ सुराख़ करके उसमें अपने औज़ार डालकर टीवी स्क्रीन पर अंदर का फोटो देख रहे होते हैं। इस तरह पेट के अंदर ही आप्रेशन करते हैं, पेट के अंदर ही उसके टांके लगाते हैं और इस मरीज़ को आप्रेशन के कुछ मिनट के बाद ही घर जाने की इजाज़त दे देते हैं। वे आप्रेशन जो पहले छः घंटे तक जारी रहते थे और महीनों इंसान

बिस्तर प रहा करता था, ख़ून की कई-कई बोतलें दी जाती थीं आज उनके करने का तरीक़ा इतना बदल चुका है कि आप्रेशन के बाद वह आदमी हस्पताल में रहने के बजाए अपने घर चला जाता है।

बग़ैर आप्रेशन फेफड़े से गोली निकालना

सऊदी अरब में एक नौजवान अपने दोस्तों के साथ मिलकर शिकार करने के लिए जंगल में गया। उसके पास एयरगन भी थी। उसने भूले से एक छर्रा अपने मुँह में डाल लिया। वह छर्रा उसके गले के रास्ते हवा की नाली में चला गया और वहाँ से सीधा फेफड़ों में जा पहुँचा। वह शिकार से वापस आया तो उसने अपने घर में किसी को इस बारे में न बताया।

कुछ दिनों बाद नौजवान को खांसी और बुख़ार हो गया। क़रीब डाक्टरों से इलाज करवाया तो मालूम हुआ कि उसके फेफड़े में धातू की बनी हुई कोई चीज़ है जिसकी वजह से वह ठीक नहीं हो रहा था।

उनको बताया गया कि जद्दा में एक डाक्टर साहब आप्रेशन के बग़ैर यह छर्रा निकाल देंगे। लिहाज़ा वह जद्दा में उस डाक्टर साहब के पास चले गए। उसने एक बारीक सी तार ली और मुँह के रास्ते उस तार को डाक्टर ने अंदर दाख़िल कर दिया। उस तार के सिरे पर एक बहुत ही छोटे से साईज़ का कैमरा लगा हुआ था। जो साथ पड़े हुए एक टीवी सेट में फेफडे के अदंर से तस्वीर पेश कर रहा था।

डाक्टर साहब ने नाक के ज़रिए एक और तार उसके फेफड़े में

दाख़िल की। टीवी पर उसकी तस्वीर आती रही। यहाँ तक की वह भी छर्रे के क़रीब पहुँच गई। इस दूसरी तार के ज़रिए उस डाक्टर साहब ने उस छर्रे को निकाल लिया। यूँ आप्रेशन के बग़ैर ही उसके फेफड़े से छर्रा निकालकर उसे उसी वक़्त घर भेज दिया।

यूरोपियन लोगों का दावा

फ़क़ीर आपको मग़रिबी समाज का तार्रुफ़ करवा रहा है ताकि जो लोग वहाँ नहीं गए उनके ज़हन में तस्वीर बन जाए कि फ़क़ीर किस सोसाइटी की बात कर रहा है। वहाँ पर निज़ाम बहुत ही मज़बूत और ठोस बना दिया गया है। वह दावा करते हैं कि हमारा मुल्क Country of justice इंसाफ़ वाला देश और Country of freedom आज़ादी वाला देश है। और वाक़ई वहाँ के लोगों को अपने क़ानून के मुताबिक़ इंसाफ़ दिलवाते हैं। इसलिए वहाँ के लोग मुतमइन होते हैं। लोग दफ़्तरों में काम करने की नीयत से जाते हैं और काम करके वापस आ जाते हैं।

शहवतपरस्ती का ज़ोर

अगर आप यूरोप जाकर देखें तो उनकी बेईमानी और ज़ाती ज़िंदगी की कुछ बड़ी बुराईयों के अलावा कुछ समाजिक ख़राबी नज़र नहीं आएगी। वे बुराईयाँ जिनका ताल्लुक़ नफ़्सानियत के साथ है कि इंसान हमेशा शहवत परस्त और नफ़्स परस्त साबित हुआ है क्योंकि नफ़्स चाहता है कि मुझे अपनी चाहतों के मामले में पूरी इजाज़त हो। लिहाज़ा औरत की बेपर्दगी, उसके साथ नाजाएज़ ताल्लुक़ात, गाना-बजाना, शराब और इससे जुड़ी हुई कुछ

चीज़ें जिनकी धुरी औरत हो वे ख़राबियाँ आपको वहाँ आम नज़र आएंगी क्योंकि उनका क़ानून उनको इजाज़त देता है।

मग़रिबी समाज के मसबत (पोज़िटिव) पहलू

इसके अलावा अगर आप उनकी इज्तिमाई ज़िंदगी में ग़ौर करें तो हैरान करने की हद तक वहाँ इस्लामी उसूल व क़ायदों नज़र आएंगे। मसलन इंसाफ़ के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि "तुम कुफ़्र के साथ हुकूमत तो चला सकते हो मगर ज़ुल्म के साथ हुकूमत नहीं चला सकते।" और वहाँ पर हर बंदे को इंसाफ़ होता नज़र आता है। जिस मुक़दमे की पैरवी करने वाला कोई नहीं होता उसकी पैरवी ख़ुद हुकूमत करती है। अरे! यह अदल व इंसाफ़ तो हमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौर में नज़र आता था।

स्वीडन के वज़ीरे आज़म का इस्तीफ़ा

आप हैरान होंगे कि स्वीडन के वज़ीर आज़म ने कहा कि अब मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है। लिहाज़ा मैं समझता हूँ कि मैं अब क़ौम की उम्मीदों पर पूरा उतरने के क़ाबिल नहीं रहा, मैं इतनी मेहनत नहीं कर पा रहा हूँ जितना करनी चाहिए थी लिहाज़ा आइंदा साल इस्तीफ़ा दे दूँगा। अब पूरी क़ौम कह रही है कि आप इस्तीफ़ा न दें। वह कहता है कि नहीं, मैं समझता हूँ कि मैं अपनी सीट के साथ इंसाफ़ नहीं कर रहा। पूरा साल उसे कहते रहे कि

आप इस्तीफ़ा न दें मगर साल गुज़रने के बाद उसके इस्तीफ़ा दे दिया।

अपोज़िशन लीडर की नालायक़ी का अजीब वाक़िआ

जब उसने इस्तीफ़ा दे दिया तो नए वज़ीर आज़म के चुनाव का मस्अला खड़ा हो गया। अपोज़ीशन लीडर एक औरत थी। उसको नामज़द किया गया क्योंकि वह सबसे ज़्यादा वोट हासिल करने वाली औरत थी। उसकी ज़िंदगी की सारी बातें परखने के लिए पड़ताल की गई ताकि पता चले कि वह इस सीट पर बैठने के क़ाबिल भी है या नहीं।

पड़ताल के दौरान एक बात सामने आई की अपोज़िशन लीडर होने की हैसियत से उसे एक क्रेडिट कार्ड मिला हुआ था। वह एक बार अपने बच्चे को लेकर किसी स्टोर पर गई मगर अपना ज़ाती क्रेडिट कार्ड घर भूल गई। बच्चे ने ज़िद्द की कि मुझे एक खिलौना लेकर दें। उसने तीन सौ मार्क का खिलौना लेकर दिया। पाकिस्तानी करेन्सी के मुताबिक़ तक़रीबन ढाई हज़ार रुपए बनते हैं। और जैसे ही वह घर आई उसने आते ही अपने ज़ाती एकाउन्ट से उतने पैसे उस एकाउन्ट में ट्रांसफ़र कर दिए। स्टोर से घर आने तक तक़रीबन दो घंटे लगे होंगे।

यह कई साल पहले की बात थी। जबकि उसने पैसे अदा भी कर दिए मगर पड़ताल करने वालों ने कहा कि क़ौम की अपोज़ीशन की लीडर थी। उसको अपनी सीट की वजह से कार्ड मिला था, यह तो सरकारी काम के लिए था। अगर यह तीन सौ मार्क अपनी ज़रूरतों के लिए ख़र्च कर सकती है तो उसे कल वज़ीर आज़म बनांएगे तो यह तो मालूम नहीं कि क्या कुछ अपनी

ज़ात के लिए इस्तेमाल करेगी। सिर्फ़ इस वजह से उसको नाक़ाबिल क़रार दिया गया हालाँकि जब वह रक़म वापस कर रही थी। उस वक़्त पता भी नहीं था कि कल को मेरी यह बात किसी को मालूम होगी या नहीं होगी।

पार्लियामेंट के मेम्बरों की माज़रत

जब उसको नाक़ाबिल क़रार दिया गया तो फिर कोई आदमी अपने आपको वज़ीर आज़म बनने के लिए पेश करने को तैयार नहीं था। आप हैरान होंगे कि आज के दौर में सह स्वीडन दुनिया का अकेला मुल्क है जहाँ पर एक साल तक पार्लियामेंट में से हर एक को दावत देते रहे कि कोई अपने आपको वज़ीर आज़म बनने के लिए पेश करे मगर कोई भी पेश नहीं करता था। एक कहता कि आप वज़ीर आज़म बन जाएं, दूसरा कहता कि मैं तो इस क़ाबिल नहीं हूँ। मैंने जब यह बात सुनी तो मुझे अपने बड़ों का वक़्त याद आ गया कि जब उन पर ज़िम्मेदारी रखी जाती तो वे फ़रमाते थे कि मैं तो इस बोझ को उठाने के क़ाबिल नहीं हूँ।

यूरोप में समाजी हुक़ूक़ का ख़्याल

वहाँ जाकर आपको इस्लाम के उसूल व ज़ाब्ते अमली शक्ल में नज़र आएंगे। उन्होंने चाहे इसको इस्लाम का नाम नहीं दिया हुआ मगर यह हक़ीक़त है कि उन्होंने यह चीज़ें इस्लाम से मांगी हुई ली हैं। लिहाज़ा आप अगर वहाँ किसी आबादी में जाकर रहें तो पड़ौसी के जो हक़ एक मुसलमान सोसाईटी में होने चाहिएं वे हक़ूक़ आपको सौ फ़ीसद इस माहौल के अंदर मिलेंगे। इसलिए

यहाँ से जाने वाले लोगों को वह सोसाइटी बड़ी अच्छी लगती है यहाँ तक कि हमारे कुछ दोस्त वहाँ फ़क़ीर से सवाल पूछने लगे कि क़ुरआन पाक में जिस जन्नत का ज़िक्र किया गया है कहीं वह इसी सोसाईटी के बारे में तो नहीं कहा गया है। फ़क़ीर ने जवाब में कहा कि आप लोगों ने जन्नत को क्या समझा हुआ है।

मग़रिबी समाज में चाहे आपकी कोई सिफ़ारिश नहीं है और आपने किसी दफ़्तर में फ़ोन करना है या खुद जाना है तो हर बंदा आपसे पूछेगा (Can I help you?) क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ? वहाँ आपको फ़ाइल के चलने के लिए पहिए नहीं लगाने पड़ेंगे बल्कि हर काम अपने क़ायदे के मुताबिक़ होगा।

वहाँ सरकारी महकमों में लोग इस तरह लगन से काम करते हैं जिस तरह लोग प्राइवेट महकमों में काम करते हैं। कोई आदमी दफ़्तर में बैठकर अपने घर के मामलात के लिए टेलीफ़ोन नहीं करेगा। कोई आदमी दफ़्तर के पते पर अपने घर की डाक नहीं मंगवाएगा। काम का मतलब काम ही समझा जाएगा।

सोसाईटी में अगर लोगों को किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो यूँ समझिए कि हकूमत बैतुलमाल से वे चीज़ें दे देती हैं। वहाँ पर इंसानी हक़ूक़ की इतनी पासदारी है कि आज के मुसलमान मुल्कों के लोग भी अपने मुल्कों को छोड़कर वहाँ जाकर रहना पसंद करते हैं।

वहाँ पर इंसाफ़ के हासिल करने के लिए पंचायत का सिस्टम है। उसका तरीक़ा यह है कि सोसाईटी में तजुरिबेकार लोगों को चुनकर उनकी पंचायत बिठा दी जाती है और कहा जाता है कि कि उसके सामने पेश होकर अपने मुक़दमे बयान करो। वहाँ पर

जज को पुलिस रखने का इख़्तियार होता है और हर मुक़दमे का एक बजट होता है कि वह चाहे तो अपनी मर्ज़ी के आदमी रखकर ख़ुद उस मुक़दमे की पूछताछ करवा सकता है ताकि इंसाफ़ वाले को इंसाफ़ मिले। तो वहाँ पर यह अजीब बात देखी कि वहाँ पर इस्लाम नज़र आता है मगर मुसलमान बहुत कम हैं जबकि यहाँ पर मुसलमान नज़र आते हैं और इस्लाम बहुत कम है। जिसकी वजह से वहाँ लोग मुतमइन नज़र आते हैं। वे मेहनत करते हैं और उनको मेहनत का फल मिलता है। इसी वजह से वे आज दुनिया में रहबरी कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया में उनका सिक्का चल रहा है। उसका का सिक्का आज पूरी दुनिया में रैफ़रेन्स बना हुआ है। उनके सिक्के रैफ़रेन्स की बिना पर दुनिया के तमाम मुल्क अपनी करेन्सी तोलते हैं।

अंदरून व बैरून मुल्क में सियासी पहचान

बाहर की दुनिया के साथ वे सियासत में अपनी नाइंसाफ़ी को भी इंसाफ़ कहते फिरें तो यह उनकी अपनी मर्ज़ी है। उनके सियासतदानों का पूरी दुनिया में और अपने मुल्क में क्या रवैय्या होता है, बहुत फ़र्क नज़र आता है। फिर भी अपने मुल्क की हद तक उन्होंने लोगों को मुतमइन रखा हुआ है। जिसकी वजह से लोग काम भी करते हैं और क़रीब रहते हुए एक दूसरे का ख़्याल भी करते हैं।

पढ़ाई-लिखाई का ख़र्च

यूरोपी समाज पढ़ा-लिखा समाज है। वहाँ पर 99.9% तालीम

है क्योंकि वहाँ तालीम के शोबे पर बहुत ज़्यादा ख़र्च किया जाता है। इस हद तक कि उनके लिए किंडर गार्टन के स्कूल बने हुए हैं वे हमारे यहाँ युनिर्वसिटियों से भी कुछ मामलात में ज़्यादा एडवांस होते हैं बल्कि जिधर भी चले जाएं आपको यूँ लगेगा कि मुल्क के एक-एक इंच को उन्होंने तरक़्क़ी याफ़्ता बनाया हुआ है आपको पूरे मुल्क में बेतवज्जेही का शिकार शायद ही कोई नज़र आएगा।

रूस की एक अजीब शिकायत

ये एजुकेशन के वे इदारे हैं जहाँ से बच्चे निकलते हैं तो फिर वे मुल्क अंदर काम करते हैं। रूस ने आज से आठ-नौ साल पहले यही तो शिकायत की थी कि मैं अमरीका से तो निबट लूँ कि यह क्या है मगर इसकी युनिर्वसिटियों और कालेजों से बड़ा तंग हूँ। हर दिन में वहाँ पर एक नई रिसर्च हो रही है क्योंकि वहाँ पर लाखों सलाहियत वाले लोग बैठे रिसर्च कर रहे होते हैं। उनकी साइंसी रिसर्चों ने मेरी नाक में दम कर रखा है।

बच्चों की तर्बियत

वे लोग अपनी औलाद की तर्बियत का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखते हैं। फ़क़ीर को एक बार पैरिस से न्युयार्क जाना था। जब फ़लाइट पर बैठा तो फ़क़ीर के साथ वाली कुर्सी पर एक नौजवान लड़की आकर बैठी तो उसने आते ही अपनी तहज़ीब के मुताबिक़ हैलो हाय किया। उसने कहा आप कहाँ से हैं? फ़क़ीर ने कहा मैं पाकिस्तानी हूँ। उसने भी बताया कि मैं अपने शौहर के पास

न्युयार्क जा रही हूँ। फ़क़ीर के पास एक किताब थी। फ़क़ीर ने वह किताब पढ़ना शुरू कर दी।

थोड़ी देर के बाद एयरहोस्टेस ने खाना लगाया। फ़क़ीर ने खाने को मना कर दिया क्योंकि पता था कि यह खाना पैरिस में बनाया गया है। मालूम नहीं कि किस तरह पका हुआ है और कैसा नहीं। एहतियात इसी में होती है कि इंसान के पास अपना कुछ हो जिससे वह सफ़र के अंदर अपना काम चला ले।

उस लड़की ने अपने सामने मेज़ पर खाना लगवाया लिया क्योंकि वह बिल्कुल साथ वाली सीट पर बैठी थी इसलिए फ़क़ीर को उसकी सब बातों का पता चल रहा था कि क्या हो रहा है। उसने बच्ची को गोद में बिठाया और चम्मच में चावल लेकर अपने मुँह में डाले। छोटी बच्ची ने आवाज़ दी कि मम! यानी वह चाह रही थी कि मुझे भी दें। जब उस बच्ची ने कहा तब माँ ने चम्मच में थोड़े से चावल लिए और बच्ची के मुँह में डाले। जब बच्ची ने खा लिए तो माँ ने कहा, (Say thank you.) (कहो आपका शुक्रिया)। वह छोटी सी बच्ची माँ से कहती है, (Mom! thank you.) मम! शुक्रिया। फिर माँ ने खाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद बच्ची ने फिर इशारा किया। अब उसने फिर चम्मच में चावल लेकर उसके मुँह में डाले और फिर कहा, (Say thank you.) (कहो आपका शुक्रिया।) वह एक-एक चम्मच बेटी को देती रही और हर चम्मच पर शुक्रिए का लफ़्ज़ कहलवाती रही।

उसी बीच कुछ चावल माँ के कपड़ों पर गिर गए। बेटी ने देखा तो इशारा करके कहने लगी, मोम। माँ ने टिशू पेपर से उस

कपड़े को साफ़ किया और साफ़ करने के बाद अब माँ अपनी बेटी को कह रही है शुक्रिया। खाने के दौरान उस माँ ने अपनी बेटी से तक़रीबन 36 बार शुक्रिए का लफ़्ज़ कहलवाया। अब बताइए कि शुक्रिया अदा करने की यह आदत इस बच्ची की घुट्टी में पड़ जाएगी या नहीं।

मेरे दोस्तो! यह तालीम तो इस्लाम ने हमें दी थी। हदीस पाक में आया है :

﴿من لم يشكر الناس لم يشكر الله.﴾

जो इंसानों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता।

मगर आज है कोई माँ जो अपने बेटे को शुक्रिए अदा करने की आदत डाल दे। इसीलिए जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो कहते हैं कि माँ-बाप ने जितने जतन काटे हैं वे तो उन्होंने करना ही था। बड़ा भाई छोटे भाई के लिए कितनी क़ुर्बानियाँ दे दे, छोटा भाई बड़े भाई को कभी शुक्रिए का लफ़्ज़ नहीं कहेगा।

क़ायदे-क़ानून

फ़क़ीर वाशिंगटन में कई मंज़िला इमारत में ठहरा हुआ था। उस इमारत के क़रीब एक ग्राउंड था। वहाँ ठीक पौने सात बजे बच्चों की एक स्कूल वैन आती जबकि बच्चे उस ग्राउंड में साढ़े छः बजे आ जाते हैं। बच्चे क्योंकि हर जगह बच्चे ही होते हैं इसलिए वे पंद्रह मिनट पहले आकर अपने बस्ते फेंकते और खेलना शुरू कर देते। कोई भाग रहा है, कोई दौड़ रहा है, कोई गिर रहा है, कोई गिरा रहा है।

ठीक पौने सात बजे वैन ड्राइवर आकर ब्रेक लगाता और ब्रेक लगाने के बाद हार्न देता है। उसका हार्न सुनकर फ़क़ीर घड़ी देखता तो पूरे पौने सात बजे का वक़्त होता। फ़क़ीर खिड़की में से झांककर देखता। हार्न की आवाज़ सुनते ही उन बच्चों में मालूम नहीं कौनसा इंसान जाग जाता है कि वे सब के सब अपने बस्ते लेते और गाड़ी के सामने सीधी लाइन बनाकर खड़े हो जाते। कंडेक्टर, उस्तादों और माँ-बाप में से कोई पास न होता मगर वे इतने सधे हुए थे कि बिल्कुल सीधी लाइन बनाकर खड़े हो जाते। छोटे क़द का बच्चा सबसे पहले खड़ा होता। उसके बाद उससे बड़े क़द का फिर उससे बड़े क़द का यहाँ तक कि जो सबसे बड़ा और डील डौल में लंबा-चौड़ा होता है वह सबसे आख़िर में खड़ा होता है। जब ड्राइवर देखता कि सब लड़के एक लाइन में खड़े हो गए हैं तो वह घंटी बजाता है और कहता फर्स्ट यानी पहले बच्चे को सवार होने के लिए आवाज़ देता है। पहला बच्चा सवार होकर अपनी पसंद की सीट पर बैठ जाता है। ड्राइवर फिर कहता है, (Next) तो दूसरा बच्चा सीट पर बैठ जाता है। वह हर बार (Next, Next) कहता रहता और बच्चे एक-एक करके सीट पर बैठते चले जाते। जब वे सीट बाई सीट बैठ जाते तो ड्राइवर दरवाज़ा बंद करता और चला जाता।

फ़क़ीर काफ़ी देर सोचता रहा कि ऐसे क़ायदे-क़ानून वाले समाज को हराना कितना मुश्किल काम है। जबकि इसके मुक़ाबले में हमारे लोगों में से औसत से ज़रा ऊपर वाले लोग हवाई जहाज़ों में सफ़र करते हैं। उनको बोर्डिंग पास मिल चुके हो चुके होते हैं, सीट नंबर लिखा हो चुका होता है, लाउंच में बैठे हुए होते हैं।

इधर से ऐलान होता है कि तशरीफ़ ले आएं तो इधर दरवाज़े पर वह उधम मचा दिया जाता है कि औरतें बेचारी पीछे खड़ी रहती है जबकि हर बंदे को मालूम होता है कि फ़लाइट वाले मुझे लिए बग़ैर फ़लाइट नहीं चलाएंगे। यहाँ तक की टायलेट में भी जाकर ढूंढेंगे कि वह बंदा किधर ग़ायब है? मगर इसके बावजूद हमारे अंदर इतना सब्र भी नहीं होता कि हम लेडीज़ को पहले सवार होने दें, कुछ मिनट ज़रा पीछे खड़े हो जाएं कि मेरे दूसरे मुसलमान भाई मुझसे पहले चले जाएं। जब फ़क़ीर मुक़ाबला करता है तो हैरानी होती है।

बहरहाल यह यूरोपी समाज के पॉज़िटिव पहलू हैं। पोज़िटिव पहलू चाहे किसी बड़े से बड़े दुश्मन के ही क्यों न हो वह मानने पड़ते हैं। इस सोसाइटी के कई निगेटिव पहलू भी हैं।

मग़रिबी समाज के मन्फ़ी (नगेटिव) पहलू

माँ-बाप की बदहाली

वहाँ पर सारी टैकनालॉजी के बावजूद घरेलू ज़िंदगी सकून से ख़ाली है। अक्सर बच्चे अट्ठारह साल की उम्र का इंतिज़ार करते हैं। अट्ठारह साल गुज़रने के बाद अपने माँ-बाप अलविदा कह देते हैं। अट्ठारह साल के बाद बच्चों और माँ-बाप के बीच ताल्लुक़ ठीक रखने के लिए इस सोसाइटी में कोई कंट्रोल नहीं है। सारे साल में एक दिन मदर-डे मनाया जाता है। उस दिन बच्चे जहाँ

कहीं हों वे माँ को ख़त लिख देते हैं या माँ को तोहफ़ा भेज देते हैं। वे तोहफ़ा भेजकर यह समझते हैं कि हमने माँ का हक़ अदा कर दिया है।

एक लड़की वाशिंगटन में रहती है। उसके माँ-बाप भी वाशिंगटन में रहते हैं मगर वह कहती है कि पिछले सात साल से मुझे अपने माँ-बाप से मिलने या बात करने का मौक़ा नहीं मिला। इसलिए अट्ठारह साल की उम्र के बाद बच्चों के अंदर जवानी का तूफ़ान होता है और वे जवानी के कामों में इतना मशग़ूल हो जाते हैं कि उनको दुनिया में किसी की परवाह नहीं होती। बूढ़े माँ-बाप को उस वक़्त अपने बच्चों की ख़िदमत की ज़रूरत होती है। यह इस समाज की सबसे कमज़ोर बात है। घर जितनी चीज़ों से भी भर जाए, इंसान तो गोश्त का बना हुआ है, उसके दिल में जज़्बात भी हैं इसलिए माँ-बाप को जो सकून औलाद से मिल सकता है भला वह लोहे और सोने-चाँदी की बनी हुई चीज़ों से कहाँ मिल सकता है।

हकूमत ने इस तरह के लावारिस बूढ़े माँ-बापों की ख़बर लेने के लिए बूढ़े लोगों के लिए घर बनाए हुए हैं। वहाँ पर बेहतरीन इंतिज़ाम किए जाते हैं। मगर वहाँ पर सब बूढ़े होते हैं, कोई भी जवान या छोटा बच्चा नहीं होता जो उनका दिल बहलाए। लिहाज़ा बूढ़ों के घरों में कुछ अरसा रहने के बाद उनका दिल उकताना शुरू हो जाता है। यहाँ तक कि कुछ अरसे रहने के बाद उनका दिल उकताना शुरू हो जाता है यहाँ तक कि वे कभी-कभी यह पसंद करते हैं कि हमें ज़हर का टीका लगा दिया जाए।

स्वीडन में तलाक़ की दर

स्वीडन इतना अमीर मुल्क है, उसके पास इतनी दौलत है कि उनका बजट नफ़े वाला होता है जबकि हमारे मुल्क का बजट नुकसान वाला होता है। हम सोचते हैं कि पैसे आएंगे कहाँ से और वे सोचते हैं कि पैसे लगाएंगे कहाँ पर। स्वीडन की एक कंपनी के डायरेक्टर ने मुझे बताया कि अगर पूरी क़ौम काम करना छोड़ दे और जिस तरह ऐश व आराम में वक़्त गुज़ारते रहे हैं तो हकूमत उनको छः साल तक खिला सकती है। जिसके पास नौकरी नहीं होती उसको 2000 क्रोना हर महीने एलाउंस मिलता है। घर नहीं है तो सोशल सिक्योरिटी वाले घर लेकर देते हैं। बीमार हो जाए तो उसका इलाज करवाया जाता है। अब उनको रोटी, कपड़ा और मकान का मस्अला तो हल हो गया। इसके बाद इंसान की ख़्वाहिशें रह गयीं, शहवतें रह गयीं। इस सिलसिले में वह सैक्स के लिहाज़ से आज़ाद मुल्क कहलाता है। कौन किसके साथ रहता है? क्यों रहता है? कब रहता है, क्यों रहता है? किसी को इससे कोइ मतलब नहीं होता। लिहाज़ा यह मस्अला भी उनका हल हो गया। अब उनका ज़ाहिरी तौर पर कोई मस्अला मौजूद नहीं लेकिन यह एक कढ़वी हक़ीक़त है कि स्वीडन में ख़ुदकशी करने की दर पूरी दुनिया में सबसे ज़्यादा है, वहाँ पर 70% औरतों को तलाक़ हो जाती है। इसलिए कि दिमाग़ी परेशानी होती है।

मियाँ-बीवी में मुहब्बत की कमी

पैंतीस साल के साथ के बावजूद मियाँ-बीवी में मुहब्बत पैदा

नहीं होती, वफ़ादारी का जज़्बा पैदा नहीं होता। मामूली बात पर मियाँ कहता है (I don't care.) (मुझे कोई परवाह नहीं)। बीवी भी कहती है (I don't care.) (मुझे कोई परवाह नहीं)। अब मियाँ ने बेग संभाला और इधर का रास्ता लिया और बीवी ने बैग संभाला और उधर का रास्ता लिया। पैंतीस साल इकट्ठा रहने के बावजूद बीवी अपना कमाती है और शौहर अपना कमाता है और रसोई के लिए ख़र्चा दोनों पर बांट दिया जाता है। इससे अजीब बात यह कि रास्ते में जाते हुए अगर मियाँ के पास सिगरेट ख़त्म हो जाते हैं तो वह अपनी बीवी से उधार मांगता है जो बाद में वापस करना पड़ता है और अगर बीवी के पास सिगरेट ख़त्म हो जाते हैं तो वह मियाँ से उधार मांगती है, बाद में उसे भी वापस करनी पड़ती है। इस सोसाईटी में हमदर्दी का तसव्वुर ही नहीं है। बस कहते हैं कि इस हाथ ले उस हाथ दे क्या ख़ूब सौदा नक़द है। इतनी टैकनालॉजी के बावजूद उनके दिलों में वे मुहब्बतें, हमदर्दियाँ और वफ़ाएं पैदा नहीं होतीं जो आज बदआमालियों के बावजूद हमारी सोसाईटी में मियाँ-बीवी के अंदर मौजूद हैं।

इस्लाम की बरकत

यह इस्लाम की बरकत है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿لو انفقت ما فى الارض جميعا.﴾ अगर आप दुनिया में जो कुछ है ख़र्च कर देते तो भी आप उनके दिलों में मुहब्बतें पैदा नहीं कर सकते थे ﴿ولكن الله الف بينهم﴾ यह तो अल्लाह ने उनके दिलों में मुहब्बतें पैदा कर दी हैं। यह दीन इस्लाम की बरकत है कि आज इतने मसाइल होने के बावजूद, इतने प्रेशर होने के बावजूद, इतने मसाइल

होने के बावजूद घर के लोगों के अंदर फिर भी मुहब्बत के मंज़र देखने में आते हैं। माँ-बाप और औलाद में मुहब्बत होती है। बेटा परदेस में जाता है तो बूढ़ी माँ इंतिज़ार में होती है, रातों को उठकर दुआएं मांग रही होती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया ﴿ان الذين امنوا وعملوا الصلحت﴾ बेशक जो लोग ईमान लाएंगे और नेक आमाल करेंगे ﴿سيجعل لهم الرحمن ودا.﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनके दिलों के अंदर मुहब्बतें पैदा कर देंगे। ये मुहब्बतें और हमदर्दी यूरोपी सोसाईटी में रहने वाले लोगों के लिए ख़्वाब है। उनको ज़ाहिर में ये नेमतें नहीं मिलतीं।

औलाद के बारे में तसव्वुर

हमारे एक दोस्त कहने लगे कि मैं हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा था। मेरे बिल्कुल क़रीब एक जोड़ा बैठा हुआ था। पहले तो वे अपने ही कामों लगे रहे। कुछ देर के बाद फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने मुझसे हैलो हाय कहा। मैंने उनसे पूछा (How many kids have you?) कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं? वे दोनों मियाँ-बीवी जवाब देने लगे कि (We would like to have a dog.) कि हम बच्चों के बजाए घर में एक कुत्ता पालना पसंद करेंगे। वे कहते हैं कि मैं हैरान हुआ और उनसे पूछा, भई! आप कुत्ता पालना क्यों पसंद करेंगे? कहने लगे इसलिए कि वह बच्चों से ज़्यादा वफ़ादार होता है। जब माँ-बाप का औलाद के बारे में यह तसव्वुर हो तो औलाद का माँ-बाप के बारे में क्या तसव्वुर होगा। इसलिए औलाद ज़रा बड़ी होती है तो माँ-बाप को सामने कह देती है–

You enjoyed your life and now let me enjoy

my life.

कि आपने अपनी ज़िंदगी के मज़े लिए अब हमें अपनी ज़िंदगी के मज़े लेने दें। उनके दिलों में इतनी बेमुरव्वती नज़र आती है जैसे ख़ून बिल्कुल सफ़ेद हो गए हैं।

एक बूढ़ी औरत की बदहाली

मेरे एक दोस्त कहने लगे कि मैं रेलगाड़ी में सफ़र कर रहा था। एक नव्वे साल से ज़्यादा उम्र की बूढ़ी औरत मुझे कहने लगी, क्या आप मुसलमान हैं? मैंने कहा हाँ, मैं मुसलमान हूँ। कहने लगी कि मैंने सुना है कि मुसलमान वादे के बड़े पाबंद होते हैं। मैंने कहा, हाँ बड़े पाबंद होते हैं। कहने लगी, क्या आप मुझसे एक वादा कर सकते हैं? मैंने कहा, जी बताएं कि क्या वादा करूं? कहने लगी, बस आप मुझसे वादा करें फिर आपको बताऊँगी। मैंने कहा मुझे बताओ तो सही क्या वादा लेना है? कहने लगी, वादा यह लेना है कि आप अमरीका में जहाँ कहीं भी हों रोज़ाना पाँच मिनट के लिए मुझे कलैक्ट काल कर दिया करें। कलैक्ट कॉल ऐसे फ़ोन को कहते हैं कि आप टेलीफ़ोन से किसी आदमी को फ़ोन करें मगर बिल आपकी बजाए उस बंदे को आएगा जिसको टेलीफ़ोन किया जा रहा है। गोया वह कह रही थी कि बिल मैं अदा करूंगी। मैंने पूछा क्यों, क्या आपके बच्चे नहीं हैं? कहने लगी, बच्चे तो हैं मगर उनके पास मुझे मिलने के लिए टाइम नहीं है। मेरे पास बहुत बड़ा घर है, मुझे इतनी पेंशन मिलती है कि मुझे ख़र्च की परवाह नहीं मगर मैं अपने बच्चों को याद करती हूँ और इतने बड़े घर में सारा दिन अकेली रहती हूँ

जिसकी वजह से अब मेरी सेहत भी ख़राब होती जा रही है। अगर आप मुझे कॉल करने का वादा करें तो चौबीस घंटों में मुझे इंतिज़ार रहेगा कि कभी न कभी तो मेरे फ़ोन की घंटी तो बजेगी। मैं यही समझूंगी कि अमरीका में कोई बंदा तो मेरे बारे में सोच रहा होगा। इस तरह आपके फ़ोन के इंतिज़ार में मुझे सारा दिन जीने की ताक़त मिल जाएगी।

अब बताइए कि जिस माँ की उसी मुल्क में औलाद भी मौजूद हो, वह पाँच मिनट के लिए किसी से बात करने को तरसती फिरती है। यह उस सोसाईटी का सबसे कमज़ोर पहलू है।

कुत्ता अच्छा है या माँ

अमरीका में एक रियासत में एक माँ ने अपने बेटे के ख़िलाफ़ मुक़दमा किया। वह मुक़दमा अख़बारों की भी ज़ीनत बना और टीवी में भी उसकी तफ़सील आई। माँ ने मुक़दमा यह किया कि मेरे बेटे ने घर में कुत्ता पाला हुआ है और यह रोज़ाना तीन चार घंटे उसके साथ लगाता है। यह उसे नहलाता है, उसकी ज़रूरतें पूरी करता है, उसको अपने साथ टहलने के लिए भी ले जाता है, वह अपने कुत्ते को रोज़ाना सैर भी करवाता है, उसे खिलाता पिलाता भी है। मैं भी उसी घर में दूसरे कमरे में रहती हूँ लेकिन यह मेरे कमरे में पाँच मिनट के लिए भी नहीं आता। इसलिए अदालत को चाहिए कि वह मेरे बेटे को पाबंद करे कि वह रोज़ाना एक बार मेरे कमरे में आया करे।

जब माँ ने मुक़दमा किया तो बेटे ने भी मुक़दमा लड़ने की तैयारी कर ली। माँ ने भी वकील बना लिया और बेटे ने भी

वकील बना लिया। जब दोनों के वकील जज साहब के सामने पेश हुए तो जज साहब ने मुक़दमे की सुनवाई के बाद फैसला दिया कि अदालत आपके बेटे को आपके कमरे में पाँच मिनट के लिए आने पर मजबूर नहीं कर सकती क्योंकि मक़ामी क़ानून है कि जब औलाद 18 साल की उम्र को पहुँच जाए, उसको हक़ हासिल होता है कि वह अपने माँ-बाप को चाहे तो कुछ वक़्त दे या बिल्कुल अलैहिदगी अपना ले। रही बात कुत्ते की तो कुत्ते की उस पर ज़िम्मेदारियाँ हैं जिनको अदा करना उसकी ज़िम्मेदारी है। हाँ अगर माँ को कोई तकलीफ़ है तो उसको चाहिए कि वह हकूमत से राब्ता करे, वह उसे बूढ़ों के घर में ले जाएंगे और वहाँ जाकर उसकी देखभाल करेंगे। अब बताइए कि जहाँ माँ और बेटे का यह ताल्लुक़ होगा वहाँ ज़िंदगी सुकून से कैसे गुज़रेगी।

जर्मनी मे बेटी से बाप की बदसलूकी

हमारे एक प्रोफ़ेसर हमें इंजीनियरिंग का एक मज़मून पढ़ा रहे थे। कहने लगे कि मैंने जर्मनी से एक कोर्स किया। जिस आफ़िस में काम करता था उस आफ़िस में मेरे साथ वाले काउंटर पर एक लड़की बैठती थी। एक दिन वह देर से आफ़िस में पहुँची। मैंने देखा कि परेशान सी लग रही है। मैंने उससे पूछा, क्या कोई मुश्किल पेश आई है? वह कहने लगी कि मैं अपने वालिद के मकान में रहती थी। मेरे वालिद मुझसे बहुत ज़्यादा किराया वसूल करते हैं। कुछ दिनों से किसी आदमी ने उनको ज़्यादा किराए का आफ़र कर दिया था। वह मुझसे कह रहे थे कि या तो तुम किराया बढ़ाओ या फिर मैं दूसरे आदमी के साथ मामला तय कर

लूंगा। मैंने कहा कि मेरी सालाना तरक़्क़ी आने वाली है। उसके बाद मैं ज़्यादा किराया देना शुरू कर दूंगी मगर वह दो रोज़ पहले आए और कहने लगे कि मैंने उस आदमी से बातचीत कर ली है इसलिए तुम अपने लिए जगह का बंदोबस्त कर लो। मुझे नए मकान का बंदोबस्त करके अपना सामान शिफ़्ट करना पड़ा जिसकी वजह से आज मैं थकी हुई और परेशान हालत में आफ़िस पहुँची हूँ।

इस्लामी सोसाईटी में बेटी का मक़ाम

एक मग़रिबी सोसाईटी है जहाँ बाप और बेटी में यह मुहब्बत है और दूसरी तरफ़ इस्लाम की बरकतें देखिए कि हमारी नालायक़ियों और बदआमालियों के बावजूद आज भी यहाँ बाप और बेटी में इतनी मुहब्बतें हैं कि बाप अपनी बेटी के लिए अपने दिल को निकाल कर तश्तरी में रखने के लिए तैयार हो जाए। मेरे दोस्तो! मैं जब कभी वे नज़ारे देखता हूँ जब कोई बेटी अपने घर से शादी के वक़्त रुख़सत हो रही होती है। बाप अपनी बेटी को सारी ज़िंदगी की कमाई तो पेश कर चुका होता है फिर उस मौक़े पर बाप की आँखों में आँसू भी आ रहे होते हैं, माँ भी रो रही होती है, भाई और बहनें भी रो रही होती हैं। वह मंज़र बताता है कि दिलों में मुहब्बतें बाक़ी हैं। इतना प्यार दुनिया में किसी बेटी को कहाँ नसीब होगा जो आज इस्लाम की बरकत से एक बात अपनी बेटी को पेश कर रहा होता है। यहाँ बाप और बेटी में अल्लाह ने यह मुहब्बत रख दी है और वहाँ बाप और बेटी का वह ताल्लुक़ है। अब दोनों के बीच फ़र्क़ का आप ख़ुद अंदाज़ा

कर सकते हैं–

ढूंढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का
अपने अफ़्कार की दुनिया में सफ़र कर न सका

जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ़्तार किया
ज़िंदगी की शबे तारीक सहर कर न सका

सारी दुनिया को क़ुमक़ुमों से रोशन करने वाला इंसान आज अपने मन में अंधेरा लिए फिरता है। सारी दुनिया को रोशनियाँ देने वाल आज इंसान आज अंदर की बस्ती में अंधेरे के साथ ज़िंदगी गुज़ार रहा है।

जिस क़दर तस्ख़ीर ख़ुर्शीद व क़मर होती गई
ज़िंदगी तारीक से तारीक तर होती गई

काएनात माह ओ अंजुम देखने के शौक़ में
अपनी दुनिया से यह दुनिया बेख़बर होती गई

मुहब्बतें ही तो इंसान की ज़िंदगी है। जहाँ यह मुहब्बत व प्यार न हो तो वहाँ की इतनी टैकनालॉजी किस काम की होगी। ये मुहब्बतें पैदा करने के लिए एक दिन इस्लाम के दामन में आना पड़ेगा।

माँ की अज़मत

आप ख़ुद सोचिए कि वह माँ जिसने बेटे को जन्म दिया, जिसने अपनी गोद में बच्चे की परवरिश की, जो बच्चे के लिए रातों को जागती रही, जिसने बच्चे को इतनी क़ुर्बानियों के साथ पालकर बड़ा किया, वह माँ की ममता बच्चे के लिए कितना

उदास होती होगी। माँ के दिल में बच्चे की कितनी मुहब्बत होती है? उसको मापने के लिए आज तक कोई पैमान नहीं बन सका। माँ की ममता वह गहरा समुंद्र है जिसकी गहराईयों को कोई माप नहीं सकता। माँ की ममता वह हिमालय पहाड़ है जिसकी बुलंदियों को आज तक कोई न पहचान सका। यह माँ ही जानती है कि औलाद के लिए उसका दिल कितना तड़प रहा होता है। मगर इस सोसाईटी में जब यही माँ बूढ़ी होती है और बच्चा जवान होता है तो बच्चे के पास फ़ुर्सत नहीं होती कि वह माँ की बात का जवाब दे सके।

फ़िक्र की घड़ी

ऐ एहसान फ़रामोश बेटे! तू अपनी उस माँ के साथ यह बर्ताव करता है जिने तुझे जन्म दिया, जिसने तेरी परवरिश की और जिसने तेरा साया बनकर ज़िंदगी गुज़ारी। आज वह तुझसे बात करने को तरसती है और तू कहता है कि मेरे पास फ़ुर्सत नहीं। अफ़सोस है तेरी जवानी पर, अफ़सोस है तेरी ज़िंदगी पर कि तू अपनी माँ के लिए अपने दिल में इतनी मुहब्बत नहीं रखता। अरे माँ तो वह माँ थी जो तुझे अपने हाथ से जूता पहनाती थी, आज तू उसके लिए जूते सीधे नहीं कर सकता। अरे बचपन में वह तुझे पहले खिलाती थी बाद में खुद खाती थी, पहले तुझे पिलाती थी और बाद में खुद पीती थी, पहले तुझे सुलाती थी बाद में खुद सोती थी। क्या उसकी वफ़ाओं का आज यही सिला है कि तुम्हें अपनी जवानी का नशा अपनी माँ के कमरे में पाँच मिनट के लिए भी नहीं आने देता।

हदीस पाक में आया है कि जिसने अपनी माँ या अपने बाप के चेहरे पर मुहब्बत और अक़ीदत की एक नज़र डाली, अल्लाह तआला उसको एक हज और एक उमरे का सवाब अता फ़रमाते हैं। एक जगह तो माँ-बाप के बारे में यह तसव्वुर पेश किया जा रहा है और दूसरी जगह पर 18 साल के बाद माँ-बाप अपनी औलाद से कुछ उम्मीद नहीं रख सकते।

फ़िरंगियों (अंग्रेज़ों) से एक सवाल

फ़क़ीर ने वहाँ बड़ी-बड़ी महफ़िलों में कहा कि यह पढ़ी लिखी सोसाईटी मुझे एक सवाल का जवाब दे कि एक लड़की जो ग़ैर थी, जो किसी और घर में पली बढ़ी, जवान हुई, आज वह उस लड़के के साथ आकर रहने लग गई, यहाँ का क़ानून उस लड़की के लिए तमाम हुक़ूक़ तसलीम करता है और वह माँ जिसने उसके पेट में उठाए रखा, जो सेहत के बावजूद मरीज़ बनकर ज़िंदगी गुज़ारती रही, उन नौ महीनों में वह अपनी पसंद का खाना भी नहीं खा सकती थी, पसंदीदा चीज़ों की महक उसे बुरी मालूम होती थी, उसको सेहत के बावजूद कमज़ोरी महसूस होती थी, वह अपने ख़ून से तेरी नशो व नुमा करती थी, वह तुझे अपनी गोद में डालकर तेरे चेहरे पर मुहब्बत की नज़र डाला करती थी। यहाँ का क़ानून 18 साल के बाद उस माँ के लिए कोई हक़ तसलीम नहीं करता। इसकी कोई दलील नहीं बनती?

फ़क़ीर ने यह सवाल अलग-अलग महफ़िलों में पूछा मगर उनके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था। फिर फ़क़ीर ने कहा कि हमारे मज़हब में देखिए, बीवी के अपने हक़ हैं, माँ के

अपने हक़ हैं, माँ को अपनी हैसियत दी गई है और बीवी को अपनी हैसियत दी गई है। यह ज़िंदगी की वह हक़ीक़त है जो इस सोसाईटी को आख़िर एक न एक दिन तसलीम करना पड़ेगी।

फ़िरंगियों का इस्लाम क़ुबूल करना

बल्कि अभी यह पोज़ीशन है कि जब वे इस्लाम के बारे में पढ़ते हैं तो वे ख़ुशी से इस्लाम क़ुबूल करने पर तैयार हो जाते हैं। कितने ही ऐसे लोग हैं जो मुसलमानों के निकाह होते हुए देखकर इस्लाम क़ुबूल कर लेते हैं, मुसलमानों की शादी-शुदा ज़िंदगी में प्यार मुहब्बत देखकर इस्लाम क़ुबूल कर लेते हैं। यह पहलू हमारे पास सबसे ज़्यादा मज़बूत है, जिसे एक दुनिया तलब करेगी और उन्हें मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर आना होगा।

न कहीं जहाँ में अमाँ मिली जो अमाँ मिली तो कहाँ मिली
मेरे जुर्म ख़ाना ख़राब को तेरे अफ़ुव्व बंदा नवाज़ में

पुरसुकून ज़िंदगी का राज़

अमरीका में मुझे एक कंपनी का डायरेक्टर मिला। वह पीएचडी था। कहने लगा मैं पाकिस्तान गया हूँ और मैंने वहाँ एक अजीब बात देखी। मैंने कहा बताओ वह कौन सी बात है? कहने लगा कि वहाँ के बारे में दो बातें करता हूँ कि पाकिस्तान एक ऐसा मुल्क है जहाँ कार और ऊँट एक ही सड़क पर चलते हैं। मैंने कहा वाक़ई आप ठीक बात कर रहे हैं। वह कहने लगा मैं एक दूसरी बात भी करता हूँ। मैंने कहा वह क्या है? कहने लगा, मैंने

वहाँ ग़रीब लोगों को देखा कि उनके कपड़े फटे पुराने होते हैं, उनके चेहरों से अंदाज़ा होता था कि उन्हें खाना भी ठीक नहीं मिलता, उनके पास नहाने के लिए चीज़ें भी पूरी तरह नहीं, उनके घर का मैयार भी इतना अच्छा नहीं लेकिन मैं यह देखकर हैरान होता था कि उनके चेहरों पर सुकून होता था। खड़े होते थे तो बिल्कुल सीधे खड़े होते थे। मैं जितने लोगों से पूछता था वे सब के रात को मीठी नींद सोते थे। कहने लगा मुझे यह बताएं कि इसकी क्या वजह है? मैंने कहा यह इस्लाम की बरकत है।

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को मिलती है ख़ुदा को याद करने से

अल्लाह का शुक्र है यह दीन की बरकत है कि आज हमारे ग़रीब भी अपने घरों में आराम की नींद सोते हैं जब कि उन मुल्कों के अमीर भी अपने घरों में आराम की नींद नहीं सो पाते। यह हमारे पास एक पोज़िटिव पहलू है।

मुहब्बत ही मुहब्बत होगी

मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इन मुहब्बतों को सलामत रखिए। इन हक़ूक़ का ख़्याल कीजिए जो इस्लाम ने हम पर लागू किए हैं। यह अल्लाह तआला की रहमत है कि उसने हमें एक ऐसा सिस्टम दिया है कि अगर हम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो मियाँ-बीवी में मुहब्बत होगी, औलाद और माँ-बाप में मुहब्बत होगी, भाई-भाई में मुहब्बत होगी, पड़ौसी-पड़ौसी में मुहब्बत होगी। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें एक ऐसा समाज देंगे जहाँ हर तरफ़ मुहब्बतें ही मुहब्बतें नज़र आएंगी।

इस्लाम में ईसार की रोशन मिसाल

इस्लाम अपनी तारीख़ में ईसार व मुहब्बत के ऐसे-ऐसे वाक़िआत पेश कर सकता है कि जिनके बारे में आज की दुनिया तसव्वुर भी नहीं कर सकती। क्या जंगे यरमूक का वाक़िआ याद नहीं है कि एक साहब शहीद होने वाले हैं, तड़प रहे हैं ﴿العطش العطش﴾ प्यास! प्यास! पुकार रहे हैं। उनका चचाज़ाद भाई पानी लेकर जाता है। दूसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह अपने होंट को बंद कर लेता है और इशारा करता है कि मेरे बजाए मेरे भाई को पानी दिया जाए। उधर जाते हैं तो तीसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह भी होंट बंद कर लेते हैं और तीसरी तरफ़ भेज देते हैं। जब तीसरी जगह जाते हो तो वह आदमी वफ़ात पा जाता है। फ़ौरन लौटकर दूसरे के पास आते हैं, वह भी वफ़ात पा चुक हैं। फिर लौटकर जब पहले के पास आते हैं तो देखा कि वह भी वफ़ात पा चुके हैं। यूँ अपनी ज़िंदगी के आख़िरी लम्हों में भी दूसरों को अपने से आगे करने की तालीमात इस्लाम ने दी हैं। पूरी दुनिया अपनी टैकनालॉजी के बावजूद ये मिसालें कभी भी पेश नहीं कर सकती। हमें चाहिए कि हम ज़िंदगी को इस्लाम की तालीमात के मुताबिक़ गुज़ारें ताकि कुफ़्र की दुनिया के सामने इस्लाम की हक़ीक़तें खुल सकें, इस्लाम की हक़्क़ानियत उनके सामने आ जाए और वे सारे के सारे इस्लाम के दामन में दाख़िल हो जाएं। आज मुसलमानों की बेअमली की वजह से कुफ़्फ़ार इस्लाम में दाख़िल होने से घबराते हैं।

एक मुसलमान सफ़ीर की बदहाली

फ़क़ीर ने एक बात वाशिंगटन में बयान किया जिसमें वहाँ के आला तालीम वाले लोग आए हुए थे। वहाँ पर बयान के बाद एक साहब फ़क़ीर के पास आए। वह एक मुसलमान मुल्क के एंबेसडर रहे थे, गले मिले और रोना शुरू कर दिया। फ़क़ीर ने उनको तसल्ली दी। काफ़ी देर के बाद तबियत ठीक हुई तो कहने लगे कि बात यह है कि मैं मुसलमान मुल्क का एंबेसडर बनकर यहाँ रहा लेकिन मेरी ज़िंदगी इस्लाम से इतनी दूर थी कि मेरे घर का माहौल अच्छा न था। मेरे दो बेटे हैं और उन दोनों ने ग़ैर-मुस्लिम लड़कियों से शादी कर ली और एक मेरी बेटी ने भी एक ग़ैर-मुस्लिम लड़के से शादी कर ली।

अंग्रेज़ लड़कियों से शादी

ऐसा भी हुआ कि लोग यहाँ से गए तो मुहम्मद था मगर वहाँ जाकर अपने आपको महमट कहलवाना शुरू कर दिया। ऐसा भी हुआ कि यहाँ से गए बच्चों के नाम मुहम्मद और अहमद रखे हुए थे और वहाँ जाकर अंग्रेज़ लड़कियों से शादी कर ली और उनसे पैदा होने वाले बच्चों में से एक का नाम बिल है, दूसरे का नाम बॉब है और तीसरे का नाम बुश है।

मस्जिद के मीनार या रॉकेट लांचर

एक साहब लाहौर के रहने वाले थे। वह अमरीका गए। वहाँ से लौटकर कई सालों के बाद वापस आए। उनके बच्चे वहीं पले बढ़े। वह अपने बच्चों को लाहौर में गाड़ी में ले जा रहे थे। जब

हज़रत अली हिजौरी रह० के मज़ार के सामने से गुज़रने लगे तो वहाँ उनको मस्जिद के बड़े-बड़े सतून नज़र आए। वे बच्चे इस्लाम से इतने अंजान थे कि उन मीनारों को देखकर कहने लगे:

Dad, why these Rocket Lonchers have been fitted right in the center of the city?

अब्बा जान! शहर के बिल्कुल बीच में यह रॉकेट लांचर क्यों फ़िट कर दिए गए है?

यह वहाँ के मुसलमानों की औलादों का मामला था।

नमाज़ियों के लिए परेशानी

सन् 1960 ई० की दहाई में मुसलमानों के लिए अपनी पहचान बाक़ी रखना बहुत मुश्किल काम था यहाँ तक कि एक दावत में इकट्ठे होते तो वहाँ पर शराब आम पी जाती थी और अगर किसी ने नमाज़ पढ़ना होती तो उसमें हिम्मत नहीं होती थी। लिहाज़ा चुपके से टॉयलेट जाने के बहाने वह वुज़ू करता और घर के स्टोर के अंदर जाकर छिपकर नमाज़ पढ़ता। फिर अपनी टाई और कपड़ों को ठीक करके बाहर निकलता कि लोग यह न कहें कि तुम यहाँ आकर भी ऐसे काम करते हो। यह मुसलमानों की दावतों का हाल था।

अमरीका में इस्लामिक सैंटर का क़याम

फिर एक रद्दे अमल हुआ। लोगों ने चर्च किराए पर लेना शुरू कर दिए, अपनी ज़मीनें ख़रीदना शुरू कर दीं, इस्लामिक सैंटर बनाना शुरू कर दिए। लिहाज़ा सन् 1980 ई० की दहाई में तेज़ी

से इस्लामिक सैंटर बनना शुरू हो गए। उनमें संडे स्कूल लगने लगे। इतवार के दिन क़ुरआन पाक की तालीम दी जाने लग गई। इसलिए इस्लामी सरगर्मियाँ शुरू हो गयीं।

मुसलमान नौजवानों की सरगर्मियाँ

अब सन् 1990 ई० की दहाई में वहाँ पर काफ़ी तब्दीली नज़र आ रही है। बाज़ शहरों में मुसलमानों ने अपने कालेज बना लिए बल्कि शिकागो शहर के अंदर मुसलमानों ने दो युनिर्वसिटियाँ बना लीं। उसका बहुत फ़ायदा हुआ। फ़क़ीर ने एक बार ज़ोहर की नमाज़ शिकागो युनिर्वसिटी में पढ़ी। वहाँ के तलबा को 'सुन्नते नबवी और जदीद साइंस' के उनवान पर ख़िताब किया। अल्लाह का शुक्र है कि वहाँ पर कई तलबा बैअत हुए। उसके बाद उनकी ज़िंदगियों में बहुत ज़्यादा तब्दीली आई। उनकी हैरानी में डालने वाली क़ुर्बानियाँ देखीं। फ़क़ीर एक मस्जिद में गया। वहाँ ज़ोहर की नमाज़ तक़रीबन 150 नौजवान, बच्चे और बूढ़े नमाज़ी मौजूद थे। फ़क़ीर ने एक साहब से पूछा, क्या यह कोई ख़ास मौक़ा है कि अमरीका के माहौल में 150 आदमी मौजूद हैं? कहने लगा, नहीं बल्कि यहाँ पर स्कूल और कालेज मुसलमानों के अपने हैं। हमारे बच्चे मुसलमान उस्तादों के हाथों में तालीम पाते हैं। और वे उनको मुसलमान बनाकर ही तालीम देते हैं। लिहाज़ा उन नौजवानों के चेहरों पर आप नूर देखेंगे और वे पाँच वक़्त के नमाज़ी नज़र आएंगे। लिहाज़ा फ़क़ीर ने देखा कि ठीक जवानी के आलम में उन्होंने दाढ़ी की सुन्नत पर अमल किया हुआ था। कुछ ने अमामा बांध हुआ था। उनमें से कुछ ने मिलकर यूथ ग्रुप

बनाए हुआ है। वे आपस में क़ुरआन का दर्स देते हैं। उन नौजवानों की सरगर्मियों को देखकर दिल बाग़-बाग़ हो गया। अलहम्दुलिल्लाह जब ये नौजवान बड़े होंगे तो वहाँ पर अपने वजूद का सबूत पेश करेंगे। न सिर्फ़ शिकागो में ही बल्कि जार्जिया, अटलान्टा में भी स्कूल बन चुके हैं। वाशिंगटन में भी अब एक इदारे की बुनियाद रख दी गई है। कैलिफ़ोर्निया में भी एक युनिर्वसिटी बन गई है। जिससे आइंदा मुसलमान नस्ल मुसलमान बनकर आसानी से ज़िंदगी गुज़ार सकेगी।

अल्लाह का शुक्र है कि अब यह नौजवान वहाँ के मक़ामी लोगों से इस्लाम के बारे में बात करते हैं। और एक-एक नौजवान आठ-आठ दस-दस नौजवानों के मुसलमान होने का ज़रिया बन रहा है।

एक अंग्रेज़ नौजवान का इस्लाम क़ुबूल करना

फ़क़ीर को एक नौजवान मिला और कहने लगा, मैं कल अपने एक दोस्त को लाऊँगा वह काफ़िर माँ-बाप का बेटा है। मैं उससे कई दिन से इस्लाम के बारे में बात कर रहा था। अब उसने कलिमा पढ़ना है। आप मुझे बता दीजिए कि आप कब वक़्त देंगे ताकि वह आकर आपके हाथ पर मुसलमान हो सके। फ़क़ीर की आँखों से आँसू निकल आए। फ़क़ीर ने कहा, बच्चा! वह दिन में आए या रात में, अगर कलिमा पढ़ना चाहता है तो फ़क़ीर उसके लिए हर वक़्त क़ुर्बानी देने के लिए तैयार है। मुझे ख़ुशी हुई कि वहाँ के बच्चे आज दीन के नुमाइंदे बनकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। फ़क़ीर के नज़दीक वहाँ पर मस्जिदें बनाने से ज़्यादा उनको स्कूलों,

कालिजों और युनिर्वसिटियों का क़ायम करना ज़्यादा ज़रूरी है। इसलिए कि नमाज़ तो स्कूल कालिज के किसी भी कमरे में पढ़ी जा सकती है। यह मस्जिद का कभी रुख़ नहीं करेंगे। अगर उन्होंने वहाँ के मक़ामी स्कूलों और कालिजों में जाना हैं आप जो कुछ मस्जिद में बताएंगे, स्कूल वाले उस पर पानी फेर देंगे। अल्लाह का शुक्र की वहाँ के हालात के मुताबिक़ ज़रूरत पूरी हो गई है।

एक क़ीमती उसूल

एक उसूल याद रखिए कि उस्ताद अरग काफ़िर होगा तो वह शार्गिद क़ुरआन पढ़ाकर भी काफ़िर बना देगा और अगर उस्ताद मुसलमान होगा तो वह इंजील पढ़ाकर भी शार्गिद को मुसलमान बना देगा, यह उस्ताद पर मुन्हसिर है।

एक नौजवान का इस्लाम क़ुबूल करना

फ़क़ीर के एक दोस्त मेडिकल डाक्टर थे। उनका एक बहुत समझदार बेटा था जो बहुत इबादत गुज़ार था। उसे हर साल उमरे का शौक़ था। माँ को भी उमरे के लिए ले जाता और दूसरे घरवालों को भी। अक्सर इस्लाम के बारे में पढ़ता रहता था मगर कुछ अरसे के बाद वह दहरिया बन गया। उसके वालिद जब उसे फ़कीर के पास लेकर आए तो कहने लगे, जी यह लड़का अब बिल्कुल दहरिया है, यह दीन इस्लाम को तो मानता ही नहीं।

फ़क़ीर ने उसे बिठाया और उससे पूछा, मामला क्या बना? उसने कहा, मैं आपको सीधी और साफ़ बात बताता हूँ। मेरा

टीचर एक ग़ैर-मुस्लिम था। उसने मुझे पहले तो यहूदियत की तरफ़ माइल करने की कोशिश की मगर मैं माइल नहीं हुआ। जब उसने देखा कि यहूदी तो बना नहीं और बड़ा पक्का मुसलमान है। उसके बाद उसने मुझे डराविन थ्योरी पढ़ाना शुरू कर दी। उसने डराविन थ्योरी की आड़ में मुझे ऐसा परेशान कर दिया कि मैं दहरिया बन गया।

फ़क़ीर ने कहा कि आपके ज़हन में जो सवाल हैं पूछिए। हमारे पास अगली नमाज़ तक के लिए तीन घंटे हैं। उसने डराविन थ्योरी बयान करना शुरू कर दी। फिर उसके बाद उसके बारे में सवाल पूछने शुरू कर दिए। अल्लाह का शुक्र है फ़क़ीर उसको जवाब देता रहा। साथ-साथ दुआएं भी करता रहा और तवज्जेहात भी देता रहा। तीन घंटे वक़्त दिया हुआ था मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसी मेहरबानी फ़रमाई कि ठीक 50 मिनअ बाद वह कहने लगा कि मुझे कलिमा पढ़ाकर दोबारा मुसलमान बना दीजिए।

अल्लाह का बार-बार शुक्र है, कमरे से निकलकर उसने वुज़ू किया और बाप के सामने खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने लगा। उसके बाप की आँखों से जो आँसू रवां हुए उनकी कैफ़ियत को फ़क़ीर कभी भी नहीं भूल सकता। उसको तो गोया नया बेटा मिल गया, उसके घर में नई खुशियाँ मिल गयीं। फिर उसके दिल से जो दुआएं निकल रही थीं उन दुआओं का भला कोई आदमी क्या तसव्वुर पेश कर सता है।

तीन दिलचस्प सवाल

एक बार फ़क़ीर ने एक इस्लामिक सैंटर में लड़को का ज़बानी

इम्तिहान लेना था। वहाँ के सब तलबा ग्रेजुएट क्लासों के साइंस स्टूडेंट थे। फ़क़ीर हर तालिब इल्म से सवालात पूछ रहा था। एक तालिब इल्म के साथ उसका छोटा भाई भी आया हुआ था। उसकी उम्र आठ-नौ साल थी। जब वह बच्चा फ़क़ीर के सामने आकर बैठा तो फ़क़ीर ने दिल में सोचा कि इससे क्या सवाल पूछे जाएं?

एक मेज़ क़रीब ही पड़ी हुई थी, फ़क़ीर ने कहा,

Ok. please tell me, who made this table?

आप मुझे यह बताएं कि यह मेज़ किसने बनाई है? बच्चा कहने लगा,

Sir, Allah gave man brain and man used that brain and he made that table.

कि अल्लाह तआला ने इंसान को दिमाग़ दिया, इंसान ने दिमाग़ को इस्तेमाल किया और उसने यह मेज़ बना दिया। जब उसने दलील के साथ जवाब दिया तो फ़क़ीर भी थोड़ा सा संभल गया। उससे दूसरा सवाल पूछा,

You tell me why do you read Quran do you feel it is maditory or it is intresting?

यानी आप क़ुरआन क्यों पढ़ते हैं, क्या आप समझते हैं कि यह ज़रूरी है या यह बड़ा दिलचस्प है?

फ़क़ीर अंदाज़ा लगाना चाहता था कि यह मारे बांधे का क़ुरआन पढ़ता है या अपने शौक़ से पढ़ता है। जब फ़क़ीर ने उससे यह पूछा तो कहने लगा,

Sir, I feel it is both, it is manditory as well as it is very intresting.

उसने कहा कि मैं समझता हूँ कि ये दोनों चीज़ें हैं। यह ज़रूरी भी है और दिलचस्प भी बहुत ज़्यादा है। फ़क़ीर तो उम्मीद नहीं करता था कि वह इतना अच्छा जवाब देगा।

अब फ़क़ीर ने तीसरा सवाल पूछा,

Ok, you tell me, what do you want to be in your life?

कि तुम अपनी ज़िंदगी में क्या बनना चाहते हो? उसने कहा,

Sir, I want to be th President of Amrica.

कि मैं अमरीका का सदर बनना चाहता हूँ।

जब उसने यह कहा तो फ़क़ीर ने अचानक उससे कहा, (Why?) कि तुम अमरीका के सदर क्यों बनना चाहते हो? उसने कहा,

Sir, I will be th first Muslim President of America.

मैं अमरीका का पहला मुसलमान सदर बनूंगा, सुब्हानअल्लाह।

फ़क़ीर उसके इस जवाब से बहुत ज़्यादा ख़ुश हुआ और हैरान हुआ कि अगर आज इन मुसलमान बच्चों में अल्लाह तआला ने यह जज़्बा पैदा कर दिया तो अजब नहीं कि एक ऐसा वक़्त भी आ जाए कि जब दुनिया की सुपर पावर की कुर्सी पर एक मुसलमान बैठकर इस्लाम के क़ानून लागू कर रहा हो।

मेरे दोस्तो! वहाँ के नौजवान उम्मीद की एक किरन हैं। वहाँ

पर मुसलमान का संभलना और अपनी तहज़ीब व तमद्दुन को महफ़ूज़ करके उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना अच्छी उम्मीद है। हो सकता है कि ये लोग कल वहाँ के मक़ामी लोगों के लिए दीन की दावत का ज़रिया बन जाएं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त वहाँ के मक़ामी लोगों को दीन में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें।

जेलों में इस्लाम की तबलीग़

अब वहाँ एक और तब्दीली आ रही है। वह यह कि हकूमत ने अब जेलों के अंदर मुसलमान उलमा के लिए जाकर तबलीग़ करने की इजाज़त दे दी है। पहले इजाज़त नहीं थी। अब इजाज़त दे दी गई है। इसकी वजह यह है कि वहाँ के मुजरिम लोगों की इस्लाह हकूमत खुद तो नहीं कर सकती। इसलिए हकूमत ने सोचा कि ये लोग अगर मुसलमान बन जाएं तो उनकी ज़िंदगी में तब्दीली आ जाएगी क्योंकि मुसलमान शरीफ़ शहरी होते हैं। लिहाज़ा हकूमत ने अपने फ़ायदे के लिए वहाँ पर जेलों में इतवार के दिन मुसलमान स्कालरों के लिए जाने और तबलीग़ दीन करने की इजाज़त दे दी है। इस तरह सैकड़ों क़ैदी मुसलमान हो रहे हैं।

इस्लाम की तासीर

अमरीका में मेरे एक दोस्त आलिम हैं। हम उनके घर खाना खा रहे थे कि उन्होंने कहा, मैं यहाँ की जेलों में इतवार के दिन इस्लाम की तबलीग़ करने के लिए जाता हूँ। फ़क़ीर ने उससे पूछा कि वहाँ के हालात सुनाएं। कहने लगे कि जो भी मुसलमान होता है उसकी ज़िंदगी में बड़ी तब्दीली आती है।

वह कहने लगे, इन दिनों एक मुलज़िम जेल में आया हुआ है। उसे एक साल की जेल मिली थी जिसमें से वह छः महीने गुज़ार चुका है और छः महीने और गुज़ारने हैं। वह मुसलमान हुआ। मैंने उसे नमाज़ सिखाई। एक दिन हम दोनों बैठे हुए थे कि मुझे कहने लगा, मैं आप पर बहुत ज़्यादा भरोसा करता हूँ। मैं आपको बताऊँगा के इस्लाम लाने के बाद मेरी ज़िंदगी बहुत ज़्यादा तब्दील हो गई है। मैंने कहा वह तो सबकी होती है। कहने लगा, लेकिन जितनी मेरी ज़िंदगी तब्दील हुई है उतनी और लोगों की शायद न हुई हो। मैंने कहा, वह कैसे? वह कहने लगा, इस्लाम लाने से पहले मैं बिल्कुल हैवान था और अब मैं इंसान बनकर ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ। मैंने कहा, भई! तफ़्सील से बताओ, क्या इशारों में बात कर रहे हो। कहने लगा, अभी तो मैं एक छोटे से जुर्म की वजह से जेल में आया हूँ। एक साल की जेल मिली है, छः महीने गुज़र चुके हैं और छः महीने के बाद वापस चला जाऊँगा। लेकिन आपको दिल की बात बताता हूँ कि इस्लाम लाने से पहले मुझे लोगों को क़त्ल करने में मज़ा आता था। जब किसी को तड़पते और उसके जिस्म से ख़ून के फ़व्वारे छूटते देखता तो मैं मज़े लेता था। मैं अब तक कई आदमियों को अपने हाथों से क़त्ल कर चुका हूँ गोया यह मेरा काम था। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद मेरा दिल इतना बदला है कि अब अगर मैं पैदल चल रहा हूँ और मेरे पाँव के नीचे अगर चींटी भी आकर मर जाए तो मुझे उसका भी अफ़सोस होता है।

अल्लाह का शुक्र है, अल्लाह का शुक्र है यूँ ज़िंदगियाँ बदल रही हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें उस इलाक़े में इस्लाम का झंडा

बुलंद होता हुआ देखने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

स्वीडिश के नज़दीक मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ाम

आज मग़रिबी मुल्कों के लोग इस्लाम को तो पसंद करते हैं लेकिन जब हम मुसलमानों के दोग़लेपन को देखते हैं तो वे कहते हैं कि हम ऐसे मुसलमान बनना नहीं चाहते। गोया आज का कमज़ोर मुसलमान उनके रास्ते की रुकावट बना हुआ है।

फ़क़ीर सन् 1992 ई० में स्वीडन में था। उन दिनों वहाँ की हुकूमत ने एक सर्वे करवाया। उन्होंने दस हस्तियों के नाम लिखे। उस लिस्ट में डराविन, न्युटन, आइन्सटाइन, ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामों के अलावा भी नाम थे। उन्होंने कहा कि हम सर्वे करना चाहते हैं कि स्वीडिश लोगों के नज़दीक सबसे अच्छी और महबूब हस्ती कौन सी है? हमारे सामने अख़बारों में ख़बरें आती थीं। फ़क़ीर खुद वे ख़बरें पढ़ता था। जिस दिन उन्होंने कंप्युटर रिज़ल्ट निकाले और स्वीडिश लोगों की राय बताई तो फ़क़ीर अख़बार में यह ख़बर देखकर हैरान हुआ कि 67% लोगों की राय दी कि हम मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं।

एक सच्चे आशिक़ का वाक़िआ

स्वीडन की बात है कि वहाँ नंगेपन और बेहयाई के माहौल में अल्लाह तआला ने एक आदमी को मुसलमान होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उसने हर काम सुन्नत के मुताबिक़ करने का इरादा

कर रखा था। जब भी उसे कोई नया मस्अला पेश आता तो वह उलमा किराम से राब्ता करके उस काम को सुन्नत का तरीक़ा पूछता है। वहाँ उस माहौल में वह खद्दर का लिबास पहनता और शलवार के पाएंचे टख़नों से ऊपर रखता है।

एक दफ़ा उसने कोई एक तक़रीब की। उसने उस तक़रीब में फ़क़ीर को भी दावत दी हुई थी। उन दिनों वहाँ पाकिस्तान के एक और आलिम भी रहते थे। उसने उनको भी दावत दी हुई थी। उस आलिम साहब ने उससे कहा, भई! यह शलवार थोड़ी सी नीचे तक भी तो बांधी जा सकती है। जैसे ही इस आशिक़ सादिक़ ने उसके यह अलफ़ाज़ सुने तो उस वक़्त जो उसको ग़ुस्सा आया उसकी कैफ़ियत को मैं ही जानता हूँ। उन्होंने ग़ुस्से के लहजे में कहा :

You are Muslim by chance, but I am Muslim by choice.

कि आप तो इत्तिफ़ाक़ी तौर पर मुसलमान के घर में पैदा हुए थे मगर मैंने चुनकर इस्लाम क़ुबूल किया है। गोया जो इंसान ख़ुद अपनी मर्ज़ी से मुसलमान होता है उसके अंदर दीनी ग़ैरत और मान बहुत ज़्यादा होता है।

एक स्वीडिश नौजवान का इस्लाम क़ुबूल करना

फ़क़ीर एक बार लाहौर में था। वहीं से मुझे बैरून मुल्क सफ़र पर जाना था। सफ़र पर रवाना होने से एक दिन पहले किसी आदमी ने टेलनीफ़ोन पर कहा कि जी मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। फ़क़ीर ने कहा कि मुझे कल बैरून मुल्क सफ़र पर जाना है।

इसलिए तैयारी करने में मसरूफ़ियत है। उसने कहा मैं भी बैरून मुल्क से आपसे मिलने आया हूँ। जब उसने यह कहा तो फ़कीर ने कहा है, ठीक है तशरीफ लाइए।

थोड़ी देर के बाद वह एक टैक्सी में आया। उसके गाड़ी से उतरने और फिर चलकर आने, मिलने, बैठने और बातचीत करने के अंदाज़ ने फ़कीर को हैरत में डाल दिया। वह इतना ख़ूबसूरत और खुश अख़्लाक़ इंसान था कि उस जैसा इंसान फ़कीर ने पहले नहीं देखा था। जब तार्रुफ़ हुआ तो बताया कि मैं स्वीडन का रहने वाला हूँ। मैंने कुछ अरसे पहले सोचा कि मेरा भी कोई मज़हब होना चाहिए। लिहाज़ा मैंने दुनिया के 120 मज़हबों के बारे में पढ़ा। एक 120 मज़हबों के पढ़ने के बाद मैंने फ़ैसला किया कि इस्लाम ही दुनिया का सच्चा मज़हब है। लिहाज़ा मैंने इसे क़ुबूल कर लिया।

उसके बाद मेरे दिल में तमन्ना पैदा हुई कि पूरी दुनिया के बड़े-बड़े स्कालरों से मिलूँ ताकि पूरी रहमनुमाई हासिल कर सकूँ। लिहाज़ा मैं आपसे भी मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल करने के लिए हाज़िर हुआ हूँ।

आस्ट्रेलिया में एक लड़की से बातचीत

फ़कीर एक बार आस्ट्रेलिया (सिडनी) में था। एक ईसाई लड़की ने वक़्त मांगा कि मैं आपसे इस्लाम के बारे में कुछ सवालात पूछना चाहती हूँ। फ़कीर ने उसे एक घंटा दिया। वह पहले एक घंटे मुझसे जेसिस क्रिस्ट (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) के उठाए जाने और उनके वापस आने के बारे में सवाल पूछती रही।

फिर उसने क़यामत के दिन के बारे में पूछा। फिर जन्नत और दोज़ख़ के बारे में पूछा। यहाँ तक कि उसने इस्लाम के बारे में बहुत ज़्यादा तफ़्सीलें पूछीं। जब उसको तसल्ली हो गई तो मैंने पूछा कि अब बताएं कोई सवाल पूछना है? कहने लगी अब मेरे दिल में इस्लाम के बारे में और कोई सवाल नहीं है। मैं समझती हूँ कि इस्लाम बहुत ही ज़्यादा ख़ूबसूरत मज़हब है। जब उसने ख़ूबसूरत का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो फ़क़ीर समझा कि शायद अब यह इस्लाम क़ुबूल कर लेगी। लिहाज़ा फ़क़ीर ने उससे पूछा कि क्या आप इस्लाम क़ुबूल करने के बारे में सोचेंगी? वह कहने लगी कि आप मुझे बताएं कि ये सारे का सारा इस्लाम क़ुरआन में मौजूद है? फ़क़ीर ने कहा हाँ, वही तो बुनियादी जड़ है। कहने लगी, क्या आपके पास क़ुरआन है? फ़क़ीर ने कहा, हाँ मेरे पास क़ुरआन है। जब फ़क़ीर ने क़ुरआन मजीद दिखाया तो वह कहने लगी कि आप ऐसा करें कि इसकी कई कापियाँ मुसलमान मुल्कों में भिजवाएं और उन्हें कहें कि तुम्हें इस क़ुरआन के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को तब्दील करने की ज़रूरत है।

अब बताइए कि मैं इसको क्या जवाब देता? मेरे दोस्तो! अगर हम पक्के-सच्चे मुसलमान बन जाएं और इस्लाम को उन लोगों के सामने पेश करें तो यह हो सकता है कि वे इस्लाम को क़ुबूल कर लें और पूरी दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इस्लाम का झंडा बुलंद करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे। आइए इसको ज़िंदगी का मक़सद बना लीजिए।

हम इसकी इब्तिदा अपनी ज़ात से करें। आज दिल में अहद कर लीजिए कि हम आज के बाद अपने जिस्म पर इस्लाम का

क़ानून लागू करेंगे। अगर हमने अपने आपको बदलना शुरू कर दिया तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे उन आमाल की बरकत से दुनिया के दूसरे इंसानों को भी बदल देंगे।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

तहज्जुद की पाबंदी

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم ٥ بسم الله الرحمٰن الرحيم ٥

والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا ط وان الله لمع المحسنين ٥ سبحٰن ربك

رب العزة عما يصفون ٥ وسلام على المرسلين ٥ والحمد لله رب العالمين ٥

इंसानियत का मक़ाम

इंसान दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाएब, उसका ख़लीफ़ा और उसकी सिफ़ात का मज़हर है। यह अपने मुक़ाम और मंसब तक पहुँचने के लिए मेहनत करें तो रास्ता हमवार कर दिया जाता है और अगर मेहनत न करे तो यह अपने मुक़ाम से गिर जाता है—

ज़िंदगी आमद बराए बंदगी
ज़िंदगी बे बंदगी शर्मिंदगी

बेअमली की बुनियादी वजह

अजीब बात तो यह है कि हम ज़्यादातर नेकी की बातें अपने बड़ों से सुनते आते है मगर हम ध्यान नहीं देते, अमल के जज़्बे से नहीं सुनते और मामला ऐसा बन जाता है कि जैसे कि हमने सुना ही नहीं होता। हम सुनते हुए भी नहीं सुनते।

﴿ولو اراد الله خيرا لا سمعهم.﴾

अगर अल्लाह तआला उनके साथ ख़ैर का इरादा फ़रमा लेता तो उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता।

अव्वल तो सुनते ही नहीं और अगर सुनते भी हैं तो समझते नहीं।

﴿فمال هٰؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا.﴾

कुछ ऐसे हैं जो सुनते नहीं और जो सुन लेते हैं वे बात को समझते नहीं। नतीजा क्या होता है कि अमल के लिए खड़े नहीं होते।

मगर दिल न बदला

हर साल तक़रीबन पच्चीस लाख आदमी हज पर जाते हैं। अगर वही बदलकर वापस आ जाएं तो इस दुनिया के अंदर इंक़लाब आ जाए। वे जाते हुए क्या कह रहे होते हैं? वे ऊपर चढ़ते हैं और नीचे उतरते हैं तो लब्बैक पढ़ रहे होते हैं। लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, वे बैठते उठते लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक का नारा मारते हैं, वे सोते-जागते लब्बैक, लब्बैक पढ़ रहे होते हैं। वे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के घर का दीदार करने जा रहे होते हैं और वापसी पर वे अपने गुनाहों को बख़्शवा कर आ रहे होते हैं। जिनको इतना ईनाम दिया जाता है कि जब वे हज से वापस लौटें तो चालीस दिन तक उनकी अपने घरों में भी दुआएं क़ुबूल होती हैं। जिनके बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तू हाजी की भी मग़फ़िरत फ़रमा और

जिसकी मग़फ़िरत की हाजी दुआ करे उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमा। अब यह हाजी ख़ुद बदलकर नहीं आया। कितने अफ़सोस और ग़म की बात है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के घर का दीदार करके आए मगर दिल न बदला। जबकि हमारे पहले के बुज़ुर्ग हज के सफ़र पर जाया करते थे और एक सफ़र में उनसे हज़ारों आदमी इस्लाम क़ुबूल कर लिया करते थे। आज हम हज पर जाकर वापस आते हैं मगर ख़ुद सही मायनों में मुसलमान बनकर वापस नहीं आते।

हमारी बदहाली

हमारी बदहाली और बे सर व सामानी का आलम यह है कि इबादतों से लगाव बिल्कुल ख़त्म होता जा रहा है। कुछ मिनट मुसल्ले पर बैठना पड़ जाए तो एक मुसीबत नज़र आती है। यहाँ तक कि अगर किसी ऐसी जगह पर पहुँच जाएं जहाँ लोग क़ुरआन पाक पढ़ रहे हों तो कई कतराते हैं कि क़ुरआन न ही पढ़ना पड़े। और अगर एक पारा पढ़ भी लें और कोई दूसरा कह दे कि जी एक पारा और पढ़ दें तो चेहरे पर ऐसे असरात होते हैं कि जैसे पता नहीं कौनसी मुसीबत में फंस गए हैं। इबादतों का शौक़ ख़त्म होता जा रहा है। दुनिया के मज़ों के पीछे दीवाने बने फिरते हैं और रूहानी मज़ों से नावाक़िफ़ और ना आशना होते चले जा रहे हैं।

पहले ज़माने और मौजूदा ज़माने का मुक़ाबला

एक वक़्त था कि जब तहज्जुद के छूटने पर लोग रोया करते थे। फिर एक वक़्त ऐसा आया कि तक्बीरे ऊला के छूटने पर

रोया करते थे। लेकिन आज वह वक़्त आ चुका है कि फ़र्ज़ की जमात भी हासिल नहीं। यहाँ तक कि नमाज़ भी अगर क़ज़ा हो गई तो कोई इंसान उस पर ग़म करने वाला नज़र नहीं आता। आज का ज़माना फ़ितने का ज़माना है। फ़ितने सवारी पर सवार होकर आ रहे हैं और हमारी हालत यह है कि हम पहले से कमज़ोर होते चले जा रहे हैं।

तहज्जुद से महरूमी की वजह

कुछ लोग कहते हैं कि मसरूफ़ियत और थकावट की वजह से हम से तहज्जुद में उठा नहीं जाता। ठीक है, यह उनकी सोच है मगर किसी की सोच यह भी तो हो सकती है कि अल्लाह तआला तेरा चेहरा देखना पसंद नहीं करते।

तहज्जुद के वक़्त फ़रिश्तों की तीन जमातें

जब रात का आख़िरी पहर होता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों की तीन जमातें बना देते हैं।

1. थपकियाँ देकर सुलाने वाले फ़रिश्ते

एक जमात को हुक्म देते हैं कि देखो, यह मेरे क़रीबी लोगों के जागने का वक़्त है, यह मेरे चाहने वालों के लिए मुझसे राज़ व नियाज़ करने का वक़्त है। तुम दुनिया में जाओ। फ़लां-फ़लां मेरे नाफ़रमान बंदे हैं, उन्होंने मुझे नाराज़ किया हुआ है, तुम उनके

सरहाने जाकर खड़े हो जाओ और थपकियां दे दे कर उनको सुला दो ताकि ये सोए रहें और उनकी आंख न खुले। मैं चाहता ही नहीं कि ये इस मौक़े पर मेरे सामने खड़े हों। फ़रिश्ते आते हैं और उन लोगों को थपकियाँ देकर मीठी नींद सुला देते हैं।

लिहाज़ा आप देखेंगे कि अगर अक्सर लोग इशा के बाद गप्पें मारना शुरू कर देते हैं। गप्पे मारते मारते जब तहज्जुद और क़ुबूलियत का वक़्त शुरू होता है तो सोए पड़े होते हैं बल्कि मोए पड़े हुए होते हैं। शादी ब्याह पर इसकी अक्सर मिसालें आप देखते हैं कि इशा के बाद ख़ूब गहमा गहमी होती हैं कहते है। कि जी हम सारी रात जागते रहेंगे लेकिन रात के आख़िरी पहर में उन्हीं लोगों को देखेंगे, सब सोए, मोए पड़े होते हैं। क्यों? इसलिए कि यह क़रीबी लोगों के उठने का वक़्त है। अल्लाह तआला ऐसे वक़्त में उनको जागने नहीं देते। हम सोचते हैं कि हम नहीं जागते लेकिन हक़ीक़त यह होती है कि ऊपर से तौफ़ीक़ ही नहीं होती। बहाना थकावट और कामों का बनाते हैं।

अल्लाह तआला उस वक़्त में उनका जागना भी पसंद नहीं करते क्योंकि यह ऐसी बरकत का वक़्त होता है कि हमारे मशाइख़ ने लिखा है कि जो औरतें रात के आख़िरी पहर में उठकर अपने घर में झाड़ू देती है या लस्सी बनाती है तो जैसे कि दस्तूर है हमारे इलाक़ों का, उस कोई काम करने वाली औरत भी अल्लाह की रहमत से महरूम नहीं रहती। जब रहमत का यह हाल है तो ऐसे वक़्त में जो भी जागे वह हिस्सा पाएगा। इसीलिए जागने ही नहीं देते। हुक्म होता है कि सुला दो ताकि फ़हरिस्त में नाम ही न आए। हम उनको कुछ नहीं देना चाहते।

2. पर मारकर जगाने वाले फ़रिश्ते

फिर फ़रिश्तों की एक दूसरी जमात को हुक्म होता है कि जाओ फ़लां-फ़लां बंदे मेरे पसंदीदा बंदे है, जाओ और उनको जगाओ ताकि वे मेरे सामने खड़े होकर इबादत करें, मुझ से राज़ व नियाज़ की बातें करें। वे मुझ से मांगेगे और मैं उनकी झोलियाँ भर दूंगा। लिहाज़ा कई लोगों को देखते हैं कि बावजूद इसके कि थके हुए होते हैं, तहज्जुद के वक़्त में ऐसे अचानक आँख खुल जाती है कि जैसे किसी ने उठा दिया हो। उनके अंदर घड़ी फ़िट हो जाती है। जैसे कि आज हम में से हर एक के पेट की घड़ी होती है। कहते हैं कि यह पेट की घड़ी हमेशा ठीक टाईम पर अलार्म बजा देती है और हर बंदे को पता चल जाता है कि भूख लगी हुई है। तो जैसे हमारे पेट की घड़ी ठीक काम करती है अल्लाह वालों के दिल की घड़ी ठीक काम कर रही होती है। वे तहज्जुद के वक़्त अलार्म बजा देती है। कितना ही थके हुए क्यों न हों आख़िर पहर में उनकी आँख खुल जाती है और वे अपने रब के आगे खड़े होकर अपने रब को मनाते हैं।

तीन घंटों की नींद तीन मिनट में

हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाने लगे कि एक दफ़ा मैं बहुत ही थका हुआ था। कई दिन से लगातार काम कर रहा था। मग़रिब की नमाज़ का वक़्त क़रीब था, थकावट इतनी ग़ालिब थी कि मैं आजिज़ आ गया और मैंने अपने दोस्तों से कहा कि बस अब सब लोग यहाँ से चले जाएं। वे कहने लगे हज़रत! नमाज़ में सिर्फ़ दस पंद्रह मिनट बाक़ी हैं। आप बाद में सो जाना। मैंने कहा

कि बस आप जाएं। मैंने उन सबको कमरे से बाहर निकाल दिया। फ़रमाते हैं कि मैंने कुंडी लगा दी और आकर बिस्तर पर सो गया। मैं सोता रहा, सोता रहा यहाँ तक कि मेरी नींद पूरी हो गई। मैंने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है, 'हम ही सुलाते हैं और हम ही जगाते हैं। इस बात को सुनकर मेरी आँख खुल गई। फ़रमाते हैं कि मेरी तबियत ताज़ा दम थी। मैंने कहा अच्छा उठकर वुज़ू करता हूँ और नमाज़ पढ़ता हूँ। जब मैं उठा और कुंडी खोली तो देखा कि जिन लोगों को बाहर निकाला था वह दरवाज़े पर ही खड़े थे। दरवाज़ा खोला, बाहर निकला तो वे कहने लगे हज़रत! आपने सोने का इरादा छोड़ दिया? मैंने कहा नहीं, मेरी तो नींद पूरी हो गई। इस पर उन्होंने घड़ी देखी और कहने लगे कि अभी हमें कमरे से बाहर निकले हुए सिर्फ़ तीन मिनट ही गुज़रे हैं। अल्लाह तआला अपने प्यारों को तीन मिनट में इतना सकून दे देता है कि जैसे उनको तीन घंटे की नींद नसीब हो गई और हम सारी रात भी सोकर ताज़ा दम नहीं होते।

मुक़र्रिबीन की करवट बदलने वाले फ़रिश्ते

फ़रिश्तों की एक तीसरी जमात होती है। अल्लाह तआला उनसे फ़रमाते हैं कि जाओ जो लोग मेरे क़रीबी लोगों में से हैं उनकी जाकर करवट बदल दो। वे चाहेंगे तो उठकर नमाज़ पढ़ेंगे, तिलावत करेंगे और मुझसे मांगेगे और चाहेंगे तो लेटे रहेंगे। मैं जिस तरह उनकी इबादत से राज़ी हूँ उसी तरह उनके सो जाने पर भी राज़ी हूँ। ﴿نوم العلماء عبادہ﴾ ये वे उलमा होते हैं कि जो साहिबे मारिफ़त होते हैं और उनका सोना भी अल्लाह तआला के नज़दीक इबादत शुमार कर लिया जाता है।

एक मिसाल से वज़ाहत

देखें आप एक लकड़ी का काम करने वाले को घर लाएं और वह आकर आरी से अपना काम शुरू करे और कुछ देर के बाद उसके औज़ार कुंद हो जाएं तो वह क्या करता है? वह ज़रा बैठकर तेज़ करता है। अब जब वह अपने औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है तो कोई ज़रा बैठकर उनको तेज़ करता है। अब जब वह अपने औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है तो कोई आदमी उसका वक़्त नहीं काटता। कोई आदमी भी यह नहीं कहेगा कि आपने आधा घंटा आरी तेज़ करने में लगाया हम तो आपका टाईम काटेंगे। वह कहेगा कि भई! आरी को तेज़ करना इस काम में शामिल है। इसी तरह ये अल्लाह वाले होते हैं जो हर वक़्त अल्लाह की याद में और उसके दीन के काम करने में लगे होते हैं। जब ये सो जाते हैं तो उनका मक़सद यह होता है कि बदन को आराम मिल जाए ताकि ताज़ा दम होकर दोबारा काम करें। यह उस वक़्त उस बंदे की तरह होते हैं जो लकड़ी काटने के लिए औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है। इसलिए उनके सोने पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको मज़दूरी अता कर दी जाती है कि ये मेरे वे बंदे हैं जिनका सोना भी अब मेरे नज़दीक इबादत का हुक्म इख़्तियार कर गया है।

नौजवानों की बदहाली

आज इबादत का शौक़ निकलता जा रहा है। लिहाज़ा नौजवानो में से आज मुश्किल से ही कोई नौजवान नज़र आएगा जिसके दिल में यह तड़प हो कि मैं जागूं और अपने रब को

मनाऊँ और मुझे तहज्जुद की तौफ़ीक़ हमेशा के लिए नसीब हो जाए। अजीब बात तो यह है कि अब इसके लिए दुआएं भी नहीं करवाते हैं। दुआओ के लिए आते है। तो कौन सी दुआएं करवाते हैं? नौकरी की दुआएं, क़र्ज़े की दुआएं, कारोबार की दुआएं, मकान की दुआएं, अपनी शादी की दुआए, अपनी बीमारी की दुआएं, इल्ला माशाअल्लाह क़िस्मत से कोई होगा जो आकर कहेगा कि हज़रत! दुआ कीजिए कि अल्लाह तहज्जुद की पाबंदी अता फ़रमा दे।

एक मुग़ालता और उसका जवाब

आम लोग तो हैं ही आम लोग इस वक़्त अहले इल्म हज़रात को भी एक मुग़ालता लग रहा है। आपस में बैठकर बातें करते हैं कि जी हम मदरसों के माहौल में रहने वाले बहुत से बड़े गुनाहों से तो मदरसे के माहौल में रहने की वजह से वैसे ही बच जाते हैं और कहते हैं कि सारा दिन जो हम पढ़ते-पढ़ाते हैं तो फिर रात की इबादत का सवाब तो पढ़ने पढ़ाने से मिल ही जाता है। जी हाँ, क्या सहाबा किराम सारा दिन दुकानदारियाँ करते थे इसीलिए उनको रात को तहज्जुद पढ़ने की ज़रूरत पेश आती थी? मुहद्दिसीन और फ़ुक़्हा सारा दिन कारोबार करते थे इसीलिए ईशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ें पढ़ते थे? अब नए पढ़ने पढ़ाने वाले तशरीफ लाए हैं और कहते हैं कि जी पढ़ने पढ़ाने में रात की इबादत का अज्र तो मिल ही जाता है। जी हाँ, कितना हसीन और ख़ूबसूरत धोका है जो शैतान दे रहा है। उठने की तड़प ही नहीं रही चुनाँचे तहज्जुद तो क्या गई फ़ज्र की तक्बीरे ऊला जाती है। तक्बीरे ऊला तो क्या गई फ़ज्र की जमात चली जाती है। कुछ

दोस्तों ने ख़ुद अपनी ज़बान से कहा कि कभी-कभी हमारी फ़ज्र की नमाज़ भी क़ज़ा हो जाती है। अब बताइए जब वे लोग जो दीन का इल्म रखने वाले हैं, अंबिया किराम के वारिसों में शामिल होने की तमन्ना करते हैं। जब इस दौर में उनकी कैफ़ियत यह बन जाए तो फिर हैं सोचिए कि आम लोगों का क्या हाल होगा। इसलिए आजकल मस्जिदों के अंदर फ़ज्र की नमाज़ की हाज़िरी थोड़ी है।

सलतनत के ज़वाल की अलामत

एक वक़्त वह था जब लोग तहज्जुद में जागते थे और उनके घरों से क़ुरआन पाक पढ़ने की आवाज़ें ऐसे आती थीं जैसे शहद की मक्खियों के भिनभिनाने की आवाज़ें आया करती हैं। एक वक़्त था कि बग़दाद के ख़लीफ़ा की माँ आकर उसे कहती है कि बेटा! तुम्हारी सलतनत को ज़वाल आने वाला है। वह पूछते हैं, अम्मी जान! आपको कैसे पता चला? उन्होंने कहा पहले मौहल्ले की औरतें तहज्जुद नमाज़ पढ़ने के लिए सौ से भी ज़्यादा आती थीं और आज रात सिर्फ़ सत्तर औरतें तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने लिए आई हैं और आज वह कैफ़ियत नहीं।

नूर पीर दा वेला

आजकल के जो नेक लोग हैं वह भी फ़ज्र की नमाज़ ﴿بين النومين﴾ नींदों के बीच में पढ़ते हैं। सुन्नत तो यह है कि तहज्जुद नींदों के बीच पढ़े मगर आजकल के नेक लोग भी फ़ज्र की नमाज़ नींदों के बीच पढ़ते हैं। बस मुश्किल से उठे और फ़ज्र पढ़कर सो गए। वे अवराद व वज़ाईफ़ जो फ़ज्र के बाद पढ़े जाते थे उनकी

पाबंदी न रही जबकि हमारे मशाइख़ ने इस क़दर उसकी पाबंदी करवाई है कि सुबह के वक़्त का नाम ही 'नूर पीर दा वेला' पड़ गया। ओ ख़ुदा के बंदे! हमारे मशाइख़ इतना अवराद व वज़ाइफ़ का एहतिमाम करते थे और आज वह वक़्त सोकर गुज़र जाता है और मामूलात अल्लाह के हवाले हो जाते हैं।

नेक लोगों के क़हत का दौर

इसीलिए आज ख़ानक़ाहें आमाल से ख़ाली होती चली जा रही हैं।

ज़ागों के तसर्रूफ़ में उक़ाबों के नशेमन

आज वे लोग जिन्होंने लोगों को रातों को जागने वाला बनाना था, लोगों के अंदर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत भरनी थी और लोगों को दुनिया से काटकर अल्लाह तआला से जोड़ना था, उनके अपने अंदर भी सहूलत पसंदी आ गई। दुकानदारी चल रही है, मुरीदीन आते हैं, तोहफ़े तहाएफ़ चल रहे हैं और माशाअल्लाह लाखों मुरीदीन के रूहानी पेशवा हैं। सियासत से फ़ुर्सत मिले या न मिले रूहानी पेशवा बने होते हैं। तो जब ख़ानक़ाहों का यह हाल है तो फिर अल्लाह! अल्लाह सीखने वालों का क्या हाल होगा। इसलिए आज नेक लोगों की कमी का दौर है। कहीं-कहीं कोई चिराग़ टिमटिमाता नज़र आता है।

कीमियाए अहमर से क़ीमती शख़्सियत

शैतान ने हर तरफ़ अंधेरा फैलाया हुआ है। ख़्वाहिशात नफ़्सानी का ग़लबा ऐसा है कि बाहर भी अंधेरे हैं और अंदर भी

अंधेरे हैं। अब ऐसे में अगर कोई ऐसा शेख़ मिल जाए जो आपको सलूक सिखाने के लिए मेहनत करने वाला हो, इख़्लास के साथ सलूक के रास्ते पर चलाने वाला हो तो बक़ौल हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० उसको कीमियाए अहमर से कम न समझना चाहिए। इसलिए कि जिस दौर में लोग कम हों, फिर उस दौर में जो भी होते हैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनकी क़दर व क़ीमत को बढ़ा दिया करते हैं।

तीन रातों में नबी अकरम सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत

अल्लाह तआला बाबू जी अब्दुल्लाह रह० की क़ब्र पर करोड़ों दुआएं क़बूल होती हैं) बुज़ुर्ग थे। ऐसे मुस्तजाबुद-दावात थे कि रहमतें नाज़िल फ़रमाए। वह बहुत ही मुस्तजाबुद-दावात (जिनकी जिस बंदे के लिए दुआ कर देते थे कि अल्लाह तआला उसे अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब फ़रमा, तीन रातों के अंदर उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हो जाती थी। हमने अपनी ज़िंदगी में बहुत बार इसका तजरिबा किया है। बहुत से दोस्तों के लिए दुआ करवाई और अल्लाह का शुक्र है कि हर बंदे को अल्लाह तआला ने तीन दिनों में या तीन रातों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब फ़रमा दिया।

ज़िक्रे इलाही के फ़ायदे

हज़रत बाबू जी अब्दुल्लाह रह० फ़रमाया करते थे कि जो

ज़ाकिर शाग़िल आदमी होता है एक तो उसे मौत के वक़्त प्यास नहीं लगती और दूसरा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़ब्र का अज़ाब उस बंदे को माफ़ फ़रमा देते हैं तो ये दो बड़ी नेमतें हैं। अगर अच्छी मौत मर जाना चाहें और क़ब्र के अंदर आसानी का वक़्त गुज़ारना चाहें तो इसके लिए ज़िक्र बिल्कुल तिरयाक़ की तरह है। इसलिए कसरत के साथ ज़िक्र करें। ज़िक्र से अल्लाह तआला बंदे के गुनाहों को माफ़ कर देते हैं और उसके अंदर क़ुव्वते इरादी पैदा कर देते हैं। जिसकी वजह से वह अपने रब की इबादत किया करता है।

मियाँ-बीवी के वक़्त की तक़्सीम

एक वह वक़्त था कि हमारे पिछले बुज़ुर्ग इबादत में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिशें किया करते थे। भाई-भाई आपस में बढ़ने की कोशिशें कर रहे होत थे, मियाँ-बीवी ने वक़्त बांटे हुए थे। मियाँ सोचता कि मैं रात के पहले हिस्से में सो जाऊँ और रात के आख़िरी हिस्से में घर के अंदर तहज्जुद पढूंगा। बीवी कहती है कि मैं रात के अव्वल हिस्से में नफ़्लें पढ़ लूँ और बाक़ी हिस्से में सो जाऊँ। मियाँ-बीवी की ज़िंदगी ऐसी होती थी कि पूरे चौबीस घंटे में घर का कोई न कोई आदमी इबादत में लगा होता था। अवक़ात की तक़्सीम कर रखी होती थी।

बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने की तड़प

इसी तरह बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने की तमन्ना होती थी। लिहाज़ा मुझे हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० की औलाद में से एक साहब के घर जाने का मौक़ा मिला। उनके बच्चे घर के

ग्राउंड में फ़ुटबाल खेल रहे थे। नई आबादी थी, मस्जिद क़रीब नहीं थी। इसीलिए घर में ही जमात से नमाज़ अदा करना पड़ती थी। जब हमने मग़रिब की नमाज़ के लिए अज़ान दी और सफ़ें बनानी शुरू कीं तो हमने देखा कि वे बच्चे जो फ़ुटबाल खेल रहे थे, छोटे-बड़े सारे ही आए और आकर सफ़ बांधकर खड़े हो गए। मैंने घरवालों से पूछा कि इन बच्चों ने वुज़ू नहीं करना? उन्होंने कहा कि वुज़ू किया हुआ है। इस आजिज़ ने सोचा कि शायद उन्होंने सोचा होगा कि मेहमान आया हुआ है नमाज़ तो पढ़नी ही है इसलिए हम पहले से वुज़ू करके खेलते हैं। लेकिन नमाज़ पढ़ने के बाद घरवाले ने बताया कि हमारे ख़ानदान में ऊपर से मशाइख़ यह अमल चलता आ रहा है कि कोई बच्चा भी जब चार-पाँच साल की उम्र से बड़ा हो जाता है तो हम उसको हर वक़्त बावुज़ू रहने की तलक़ीन करते हैं। हमारे घर में आपकी किसी बंदे को भी जागते हुए होश की हालत में बेवुज़ू नहीं देखेंगे। आज के दौर में भी ऐसे लोग हैं कि जिनको बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने की तड़प और तमन्ना होती है।

﴿كما تعيشون تموتون.﴾

फ़रमाया : तुम जिस हाल में ज़िंदगी गुज़ारोगे तुम्हें उसी हाल में मौत आएगी।

बावुज़ू ज़िंदगी गुज़ारने वालों को अल्लाह तआला बावुज़ू मौत अता फ़रमाएंगे।

एक बांदी का इबादत का ज़ौक़

एक साहब कहते हैं कि मैं एक बांदी ख़रीदकर लाया। देखने

में वह कमज़ोर सी थी, बीमार सी लगती थी। सारा दिन उसने घर के काम किए और इशा की नमाज़ के बाद मुझसे पूछने लगी कि कोई और काम भी मेरे ज़िम्मे है? मैंने कहा जाओ आराम कर लो। उसने वुज़ू किया और मुसल्ले पर आ गई और मुसल्ले पर आकर नफ़्लें पढ़ने लगी। कहने लगे मैं सो गया। तहज्जुद के वक़्त जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि वह उस वक़्त अल्लाह तआला से दुआ मांग रही थी। मुनाजात कर रही थी और मुनाजात में यह कह रही थी कि ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम! आप मेरी यह बात पूरी फ़रमा दीजिए। वह कहते हैं कि जब मैंने यह सुना कि ऐ अल्लाह आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम तो मैंने उसको टोका और कहा, ऐ लड़की! यह न कह कि ऐ अल्लाह! आपको जो मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम बल्कि यूँ कह कि ऐ अल्लाह! मुझे आपसे मुहब्बत रखने की क़सम। फ़रमाते हैं कि जब उसने यह सुना तो वह नाराज़ होने लगी गई, बिगड़ गई और कहने लगी मेरे मालिक! बात यह है कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को मुझसे मुहब्बत न होती तो यूँ वह मुझको मुसल्ले पर न बिठाता और आपको सारी रात मीठी नींद न सुलाता। आपको जो मीठी नींद सुला दिया और मुझे मुसल्ले पर बिठाकर जगा दिया, मेरे साथ कोई ताल्लुक़ तो है कि मुझे जगाया हुआ है। सुब्हानअल्लाह! एक वह वक़्त वह था कि तहज्जुद के वक़्त अपने रब से यूँ अपने ताल्लुक़ के वास्ते दिया करते थे, ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की क़सम, वाक़ई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को उनसे मुहब्बत होती थी और उन लोगों को अल्लाह तआला से मुहब्बत होती थी।

रोज़ाना सत्तर तवाफ़ करने वाले बुज़ुर्ग

एक बुज़ुर्ग के हालात ज़िंदगी में लिखा है कि सत्तर साल की उम्र थी और सत्तर साल की उम्र में वह रोज़ाना सत्तर बार बैतुल्लाह का तवाफ़ किया करते थे। हर तवाफ़ के सात चक्कर होते हैं और सत्तर तवाफ़ों के 490 चक्कर और हर तवाफ़ के दो रकूअत वाजिबुत्तवाफ़ और वाजिबुलगैरअ अदा करने पड़ते हैं। सत्तर तवाफ़ हों तो 140 रकूअत नफ़्लें। अब हम चालीस रकूआत नफ़्लें ही पढ़ कर देख लें कि हालत क्या बनती है। यह उनके आमाल में से एक अमल था कि 490 चक्कर लगाते और उसके ऊपर 140 रकूअतें नफ़्लें पढ़ते और यह ज़िंदगी का एक मामूल था। बाक़ी मामूलात इसके अलावा हुआ करते थे।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० का शौक़े इबादत

इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते थे कि मैं मक्का मुकर्रमा से मदीना तैय्यबा गया। मुझे जाते हुए सवारी के ऊपर 16 दिन लगे और 16 दिनों में मेरे 16 क़ुरआन पूरे हो गए। उन को क्यों इतना इबादत का शौक़ होता था? आपको फल खाने का शौक़ है, जूस पीने का शौक़ है, आइसक्रीम खाने का शौक़ होता है। इसी तरह उन हज़रात को इबादत का शौक़ होता था। आपको अलग-अलग खाने खाकर मज़ा आता है। उनको मुख़्तलिफ़ इबादतें करके मज़ा आता है।

एक अनमोल तमन्ना

एक बुज़ुर्ग से मौत के क़रीब पूछा गया, आपकी ज़िंदगी की

कोई आख़िरी तमन्ना है तो बताएं। फ़रमाने लगे, मेरे दिल में एक ही तमन्ना है कि लम्बी सर्दियों की रात होती जिसे मैं अपने रब के हुज़ूर उसे मनाने में गुज़ार देता, सुब्हानअल्लाह।

सईद बिन जुबैर रह० को ज़ौक़ इबादत

सईद बिन जुबैर रह० को जब हिज्जाज बिन युसूफ़ ने क़त्ल करना था तो पूछा कि तुम्हारी आख़िरी तमन्ना क्या है? फ़रमाने लगे कि दो रक्अत नफ़्ल पढ़ना चाहता हूँ। लिहाज़ा उन्होंने जल्दी-जल्दी नफ़्ल पढ़ लिए। हिज्जाज ने पूछा कि जल्दी क्यों पढ़ लिए? फ़रमाया जी तो चाहता था कि लम्बा क़याम, रुकू करूं मगर दिल में ख़्याल आया कि तू यह सोचेगा कि मौत के डर की वजह से नमाज़ लम्बी कर ली। इसलिए मैंने जल्दी पढ़ लीं। अब ज़रा सोचिए इधर जल्लाद उनका सर क़लम करने को तैयार है और उधर उनकी हालत यह है कि जी तो चाहता था कि दो रक्अत लम्बी पढ़ लेता। इसकी क्या वजह थी? उनको अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर लुत्फ़ अता फ़रमा दिया था। उनके लिए रातों का जागना कोई मुश्किल नहीं था।

तहज्जुद की नमाज़ और सौ रुपए

रातों को जागना कोई मुश्किल नहीं होता जब कि आदमी को पता हो कि मुझे इस पर तंख़्वाह मिलेगी। एक आदमी जो बाज़ार के अंदर चौकीदारी करता है, पहरा देता है वह सारी रात जागता है। इसलिए कि महीने के बाद तीन हज़ार रुपए तंख़्वाह मिलेगी। अब उस बंदे को हर रात जागने पर सौ रुपए मिलने की उम्मीद

होती है और वह आँख भी नहीं झपकता। बैठता भी नहीं, चलता रहता है और पहरा देता रहता है। जागता भी रहता है और जगाता भी रहता है। मेरे दोस्तो! हम तहज्जुद की नमाज़ में खड़े नहीं हो सकते कि जी नींद आई हुई है। मालूम हुआ कि हमारे नज़दीक तहज्जुद की क़ीमत सौ रुपए के बराबर भी नहीं और कहते हैं, ओ जी आँख नहीं खुलती।

मन हरामी ते हुज्जतां ढेर

असल में अंदर चोर होता है और ऊपर से बहाने तराश रहे होते हैं। ठीक है हम झूठे बहाने बनाकर लोगों को राज़ी कर लेंगे लेकिन परवरदिगार तो जानते हैं कि उठता इसलिए नहीं कि दिल के अंदर गुनाह बहुत ज़्यादा हैं।

तहज्जुद से महरूमी का इलाज

हसन बसरी रह० के पास एक आदमी आया और कहने लगा, हज़रत! मुझे रात जागने की तौफ़ीक़ नहीं होती। फ़रमाया कि ऐ दोस्त! तू दिन के वक़्त में अपने आपको गुनाहों से महफ़ूज़ कर ले अल्लाह तआला तुझे रात के आमाल की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा देंगे। अगर हम दिन में गुनाहों से बच जाएं तो अल्लाह तआला हमें रात को तहज्जुद की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देंगे।

शक वाले लुक़्मे की नहूसत

हज़रत शाह ग़ुलाम अली देहलवी रह० फ़रमाते हैं कि एक बार किसी के हाँ दावत खाई और कोई शक वाला लुक़्मा मेरे मुँह में चला गया। शुब्हे वाला लुक़्मा था हराम नहीं, हराम तो बड़ा खुला

हुआ होता है। फ़रमाते हैं कि वह लुक़्मा अंदर चला गया तो चालीस दिन के लिए मेरी तमाम कैफ़ियतों को छीन लिया गया।

तहज्जुद से महरूमी की एक अजीब वजह

एक मुफ़्ती साहब अपनी ज़बान से फ़रमाया करते थे कि उनका बैअत का ताल्लुक़ हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह बहलोवी रह० से था, वह बहुत बड़े आलिम और बुज़ुर्ग थे। यह बात मुफ़्ती साहब ख़ुद सुनाया करते थे कि मैं जब बैअत था तो कई बार हज़रत की ख़िदमत में आना-जाना रहता था और उस दौर में हमारी तहज्जुद के क़ज़ा होने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। कहने लगे कि एक बार हम वापसी की इजाज़त लेने के लिए ख़िदमत में हाज़िर हुए और हज़रत रह० का दिल चाहता था कि हम एक दो दिन और रुक जाएं। वजह क्या थी कि शेख़ की मोहलत थोड़ी थी। उसके कुछ दिन बाद उनका इंतिक़ाल होना था। तो अल्लाह तआला ने उनके दिल में डाला होगा कि यह आए हैं तो कुछ लेकर जाएं। शेख़ तो उसको देखकर कह रहे होंगे कि भई! ज़रा एक दो दिन ठहर जाओ, अल्लाह के बंदो! यह नेमत पा लो। मगर फ़रमाने लगे हज़रत! हमारे ऊपर दर्स व तदरीस का भूत सवार था और हम अपने मदरसों में वापस हो गए। फिर हज़रत की वफ़ात हो गई और उनकी वफ़ात के बाद आज तक हमें तहज्जुद में इस्तिक़ामत नसीब न हो सकी।

बयालिस साल तक तिलावत क़ुरआन पाक का मामूल

ये नेमतें घर बैठे नहीं मिलतीं। ये मशाइख़ की सोहबत में आकर मिलती हैं, ये उनके पास रहने से मिलती हैं। आज के दौर

में भी ऐसे लोग मौजूद हैं। लिहाज़ा मेरी मुलाक़ात एक आलिम से हुई उनकी बैअत का ताल्लुक़ हज़रत ख़्वाजा अब्दुलमालिक सिद्दीक़ी रह० जो हमारे दादा पीर हैं उनके साथ था। आजिज़ ने ख़ुद यह बात सुनी फ़रमाने लगे, हज़रत से बैअत किए हुए मुझे बयालिस साल गुज़र गए हैं, बयालिस साल में क़ुरआन पाक का एक पारा तिलावत करने वाले अमल में एक दिन भी नाग़ा नहीं हुआ।

सत्ताईस साल से अव्वाबीन की पाबंदी

कुछ अरसे पहले एक दोस्त ने ख़त लिखा। वह जवान उम्र है, उसकी दाढ़ी में मुश्किल से कोई बाल सफ़ेद नज़र आएगा। लिखता है कि हज़रत! अल्लाह का शुक्र है सत्ताईस साल से मेरी अव्वाबीन की नफ़्लें कभी क़ज़ा नहीं हुई। आज के दौर में भी करने वाले कर रहे हैं। ऐसे लोग हैं जिनकी तहज्जुद की नमाज़ ग्यारह-ग्यारह साल से कभी क़ज़ा नहीं हुई।

एक औरत का इबादत का शौक़

पिछले दिनों हमारे एक दोस्त की वालिदा की वफ़ात हुई। उनकी वालिदा की बैअत का ताल्लुक़ हमारे पीर व मुर्शिद रह० के साथ था। फिर उनके बाद आजिज़ से हुआ। अपनी वफ़ात से पहले उन्होंने सारे घर के बच्चे, बच्चियों, मर्दों और औरतों को बुलाया और उन्हें फ़रमाया कि देखो! मेरी जब शादी हुई उस वक़्त मेरी उम्र बीस साल थी और आज मेरी उम्र अस्सी साल है। इस साठ साला शादी-शुदा ज़िंदगी में मेरी कभी भी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई।

दौरे हाज़िर की मुसीबत

अगर ऐसी औरत आज ज़िंदगी गुज़ार रही हैं तो बताइए वे औरतें जो बहाना करती हैं कि जी बच्चों की वजह से नमाज़ नहीं पढ़ सकतीं। लगता ऐसे है कि जितनी नमाज़ें पढ़ने वाली होती हैं सबके बच्चे नहीं होते थे। ये नई आयी हैं कि अब इनको औलाद मिलनी शुरू हुई है, पहले नहीं होती थीं। सब बहाने हैं कि जी मेहमान आ गए थे, नमाज़ क़ज़ा हो गई। मेहमान की रिआयत करते हैं परवरदिगार और रहमान की रिआयत नहीं करते। आज इबादतों का शौक़ ख़त्म होता जा रहा है और यह मुसीबत है आज के दौर की।

इबादत का शौक़ कैसे पैदा होता है?

यह इबादतों का शौक़ कैसे आएगा? ख़रबूज़ा, ख़रबूज़े को देखकर रंग पकड़ता है। जो आदमी कपड़े वालों के पास बैठेगा उसे कपड़े के कारोबार का शौक़ पैदा होता है, जो कंप्युटर वालों के पास बैठेगा उसके ज़हन में यह काम करने का शौक़ पैदा होता है। जो आदमी बिजनेसमैन के पास बैठेगा उसके ज़हन में वह काम करने का शौक़ पैदा होता है और आदमी शब ज़िंदादार, इबादतगुज़ार लोगों की महफ़िल में बैठेगा तो उसके दिल में इबादत ज़्यादा करने का शौक़ पैदा हो जाता है।

शब बेदारी (रात को जागने) की बरकतें

जो महाना इज्तिमा रखते हैं उसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि हम सब कम से कम एक रात तो इकट्ठा मिल

बैठें और अल्लाह तआला की इबादत में अपना वक्त गुज़ारें। महीने में कम से कम एक रात तो ऐसी हो जो हम पिछले बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर गुज़ारें ताकि इस रात को हमारे मशाइख़ की रातों के साथ मुशाबिहत नसीब हो जाए। आप देखिएगा कि इसके असरात आपको खुद अपनी ज़िंदगी में आते हुए महसूस होंगे। जिन जिन शहरों में हमारे दोस्तों ने ये महाना प्रोग्राम करना शुरू किया उसकी बरकतें महसूस हो रही हैं। कितने लोग हैं जो आकर बताते हैं कि इस एक रात की बरकत से महीने की कितनी रातों में अल्लाह तआला उन्हें तहज्जुद की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं।

शब ज़िंदादारों का एकाउंट

एक बात ज़हन में रखिए, ज़रा मिसाल से समझने की कोशिश करना। एक बैंक है जिसमें अरबों खरबों रुपयों के मालिकों ने एकाउंट खोले हुए हैं। एक बंदे ने एकाउंट खोला और एक हज़ार रुपए जमा करवा दिए। अब बताएं, जब वे लिस्ट बनाएंगे कि इस बैंक में किस-किस बंदे का एकाउंट मौजूद है तो जहाँ अरबों खरबों पतियों के नाम लिस्ट में आएंगे इस एक हज़ार रुपए वाले का नाम भी लिस्ट में आएगा। बिल्कुल इसी तरह हमारे बुज़ुर्गों के एकाउंट शब ज़िंदादारियों के खुले हुए थे, क़यामत के दिन जब अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि मेरे रातों को जागने वाले बंदे कहाँ हैं? तो उस लिस्ट में जहाँ हमारे उन बुज़ुर्गों का नाम आएगा तो महीने में अगर एक रात हम ने भी जाग ली और हमारे आमालानामे में भी वह रात को जागने की रात गुज़री तो क्या लिस्ट में हमारा नहीं आएगा? भई एकाउंट में रक़म थोड़ी ही सही मगर खुला तो हुआ है। इसी तरह समझिए कि हम अपने रब की

इबादत के लिए आज रात अपना एकाउंट खुलवा रहे हैं। लिहाज़ा हम इस रात को जागेगें और अपने जिस्म को अल्लाह की इबादत में जगाने का अज्र पाएंगे।

बग़ैर अज्र के जागने वाले लोग

यह जिस्म मालूम नहीं दुनिया की ख़ातिर कितनी बार जागा होगा। कभी तो अल्लाह के लिए भी जागे। देखें ज़रा एयरपोर्टों पर, रेलगाड़ियों के स्टेशनों पर, बसों के स्टैंडों पर, कारख़ानों में और फ़ैक्टरियों में लोग रातों को जाग रहे होते हैं। हर जगह लोग रातों को जाग रहे होते हैं। अगर लोग दुनिया की ख़ातिर जाग रहे होते हैं तो क्या ज़िंदगी में एक रात हम अल्लाह के लिए इबादत की नीयत से नहीं जाग सकते। वे जागते हैं तो उनको अज्र नहीं मिलता लेकिन जब हम इबादत की नीयत से जागेंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से अज्र पाएंगे।

जागकर कौन से आमाल किए जाएं?

हम इस रात में ज़ौक़ व शौक़ के साथ आएं और यहाँ पर इबादत में अपना वक़्त गुज़ारें। नमाज़ें पढ़ें, सलातुत्तस्बीह पढ़ें, ज़िंदगी की जो नमाज़ें क़ज़ा हुई वे पढ़ लें, क़ुरआन पाक की तिलावत कर लें, लम्बा मुराक़्बा कर लें, अल्लाह तआला से तसल्ली की दुआ मांग लें, कोई काम तो करें। एक रात तो हमें सकून और तसल्ली से इबादत करने की मिल जाए ताकि हमें अल्लाह वालों के साथ मुशाबिहत नसीब हो जाए और अल्लाह तआला के यहाँ क़ुबूलियत मिल जाए कि मेरा यह बंदा मेरी याद

में और मेरी मुहब्बत में रात भर जागता रहा। अल्लाह तआला के हाँ इसकी क़ुबूलियत होगी।

ख़शियते इलाही की पहचान

जब एक आदमी को अल्लाह तआला ख़शियत अता फ़रमा देते हैं तो इसकी पहचान यह होती है कि वह आदमी गुनाहों से बच जाया करता है। याद रखना हर चीज़ की कोई दलील होती है अगर कोई पूछे कि इसको ख़शियते इलाही हासिल है या नहीं तो इसकी दलील यह होगी कि उसने अपनी ज़िंदगी में गुनाहों को छोड़ दिया या नहीं। अगर गुनाहों को छोड़ चुका है तो फिर उसे ख़शियत की कैफ़ियत हासिल है। गुनाहों को छोड़ देना यह मोमिन की ज़िंदगी का मक़सद है। इसलिए कि गुनाहों का मज़ा शुरू में शहद की तरह होता है मगर गुनाहों का अंजाम ज़हर की कढ़वाहट की तरह हुआ करता है।

अज़ाज़ील से शैतान बनने की पाँच वजूहात

अज़ाज़ील जिसने इतनी इबादत की कि चप्पे-चप्पे पर सज्दे किए और आख़िर में शैतान बना, इबलीस बना। जानते हो उसको किस चीज़ ने इबलीस बनाया? मज़े की बात है, ज़रा सुनने और समझने की बात है। उलमा ने किताबों में लिखा है कि पाँच बातों ने ताउसे मलाइका को इबलीस बना दिया, मरदूद बना दिया।

सबसे पहली बात यह कि गुनाह तो किया मगर गुनाह का इक़रार न किया। यह शैतान की निशानी है। दूसरी बात यह कि गुनाह तो किया मगर गुनाह पर नदामत न हुई। उसको गुनाह पर

शर्मिन्दगी न हुई बल्कि ढीट बनकर कहने लगा, ﴿انا خير منه﴾ मैं तो इससे अफ़ज़ल हूँ। तीसरी बात यह कि गुनाह तो किया मगर अपने नफ़्स को भी मलामत नहीं की यानी यह भी नहीं कि अपने मन ही में नफ़्स को कह देता कि तूने बुरा किया। चौथी बात यह कि अपने गुनाह से तोबा भी न की कि अगर गुनाह कर बैठा था तो तोबा कर लेता और पाँचवी बात यह कि अल्लाह तआला की रहमत से मायूस हो गया। इन पाँच बातों ने उसको इबलीस बना दिया।

क़ुबूलियत तोबा की पाँच वजूहात

इसके मुक़ाबले में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को देखिए। उनके अंदर पाँच ख़सलतें मौजूद थीं।

पहली यह कि उन्होंने फ़ौरन अपनी ग़लती को मान लिया ﴿ربنا ظلمنا انفسنا﴾ रब्बना ज़लमना अनफ़ुसना कहा। दूसरी यह कि ग़लती का इक़रार कर लेने के बाद अपनी ग़लती पर बहुत नादिम भी हुए कि मुझसे कोताही हुई, भूल हो गई। तीसरी यह कि उन्होंने अपने आपको मलामत भी की कि मैंने ऐसा क्यों किया? फिर उसके बाद उन्होंने सच्ची तोबा भी की और आख़िरी बात यह कि वह अल्लाह तआला की रहमत से कभी मायूस भी न हुए। इसलिए अल्लाह तआला ने उनकी तोबा को क़ुबूल फ़रमा लिया।

हमारी ज़िम्मेदारी

हमें चाहिए कि हम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के नक़्शे क़दम पर चलें। एक तो गुनाहों का इक़रार करें और उस पर नादिम हों। अपने नफ़्स को भी मलामत करें, अल्लाह तआला के

हुज़ूर तोबा भी करें और अल्लाह तआला की रहमत से मायूस भी न हों। उम्मीद लगाए रखें कि अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा देंगे। हमें चाहिए कि अपने गुनाहों से तोबा करने की सच्ची नीयत को लेकर बैठें कि रब्बे करीम! अब तक जितने गुनाह कर चुके, हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा। दिल में नेकी का शौक़ लेकर बैठें कि परवरदिगार! हमें अपनी ज़िंदगी में इबादत और नेकी करने का लुत्फ़ व मज़ा नसीब फ़रमा।

लज़्ज़त आशनाई

जिस बंदे को अल्लाह तआला इबादत का शौक़ अता फ़रमा देते हैं तो अपनी मुहब्बत की शराब का एक क़तरा उसके हलक़ में टपका देते हैं और फिर उस बंदे का इबादत में अपने आप दिल लग जाता है।—

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
'अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

यह अजीब नेमत है। ये जो हज़रात मुसल्ले पर बैठकर सारी-सारी रात गुज़ार दिया करते थे, यह नहीं कि उनको कोई मारे बांधे जागना पड़ता था नहीं बल्कि वे लज़्ज़तों की ख़ातिर जागते थे। उनको मज़ा आता था रात को जागने का। इतना मज़ा आता था कि रात के गुज़र जाने का भी उनको पता न चलता था।

एक मिसाल से वज़ाहत

देखिए, एक माँ ज़्यादा काम करके थकी हुई है और सारे घर में कहती है कि मैं आज इतना थक गई हूँ कि बस मैंने आज

पड़ते ही सो जाना है। आज मुझे कोई डिर्स्टब न करे क्योंकि मेरी नींद पूरी नहीं हुई, मेरा बदन थका हुआ है, मेरे बदन में दर्द है, मैं तो फ़ौरन सो जाऊँगी। अगर उसने नीयत कर ली फ़ौरन सो जाऊँगी और यह वाक़ई लेट भी गई और ठीक उसी वक़्त दरवाज़े पर घंटी बजी, उसका वह बेटा आया तो कई साल से परदेस गया हुआ था वह अचानक वापस आ गया। तो बताइए कि उस माँ की नींद रहेगी या उड़ जाएगी? वह उसके साथ मज़े से बैठी दो तीन घंटे बातें कर रही होगी। अगर सारे घरवाले पूछेंगे, अम्मी! आपकी नींद कहाँ गई? अम्मी! आपकी थकन कहाँ गई? तो कहेगी, बस मेरा बेटा आ गया, मेरी थकन दूर हो गई और बेटे को देखकर मेरी नींद उड़ गई। जैसे यह थकी हुई माँ अपने बेटे को देखती है, उसका चेहरा देखकर वह थकान भूल जाती है और उसकी नींद उड़ जाती है बिल्कुल इसी तरह हमारे बुज़ुर्ग रात को जब मुसल्ले पर बैठकर अल्लाह की इबादतें किया करते थे, अल्लाह तआला के जमाल के जलवे उनको दिखाई देते थे तो उनकी थकान दूर हो जाती थी। वे ताज़ा दम हो जाया करते थे। हमें इबादत थका देती है और उनको इबादत ताज़ा दम बना दिया करती थी। वे क़ुरआन पढ़कर ताज़ा दम, नफ़्लें पढ़कर ताज़ा दम और "ला इलाहा इल्लल्लाह" की ज़र्बें लगाकर ताज़ा दम हो जाते थे।

हमारे लिए दवा और उनके लिए ग़िज़ा

अगर भूख लगी हो तो पुलाव और क़ोरमे खाने कितने अच्छे लगते हैं। इसलिए कि बंदे की ग़िज़ा होते हैं लेकिन दवा पीनी और खानी बड़ी मुशिकल होती है बल्कि कई बच्चे और औरतें तो बीमार रहना पसंद कर लेते हैं लेकिन दवा नहीं खाते क्योंकि

कढ़वी होती है। लेकिन ग़िज़ा खाना आसान। हमारे बुज़ुर्गों के लिए इबादत ग़िज़ा की तरह थीं और हमारे क्योंकि मिज़ाज बिगड़े हुए हैं इसलिए ये दवा की तरह हैं। इसलिए हमने सोचा कि चलो एक रात तो सबको दवा पिलाएं, काढ़ा पिलाएं।

मस्जिद में गधा

एक देहाती का गधा मस्जिद में आ गया। मौलाना साहब ने देखा तो उसको एक डंडा लगाया। देहाती ने पूछा, मौलाना साहब! इसको डंडा क्यों मार रहे हो? उन्होंने कहा, मस्जिद में जो घुस आया। कहने लगा, क्या करूं वह जानवर है उसे पता नहीं था, कभी मुझे भी आपने मस्जिद में देखा है? तो कई लोगों को नफ़्स यह सिखा रहा होगा कि इस दफ़ा फंस गए आइंदा सही।

ख़ुशी का सौदा है

यह ख़ुशी का सौदा है। जी हाँ ख़ुशी में औरतें चूड़ियाँ पहनती हैं इसी तरह ये ख़ुशी की चूड़ियाँ हैं जिसका दिल चाहे वह आए, जिसको फ़ायदा नज़र आए वह आए और जिसको नींद में फ़ायदा नज़र आए वह बेशक आराम से सो जाए। इसलिए कि आप यहाँ कुछ लेने के लिए आए हैं देने के लिए नहीं।

बैअत करते वक़्त हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० की कैफ़ियत

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० फ़रमाते थे कि जब कोई बंदा मुझसे बैअत होने के लिए आता है तो मुझे उससे

यूँ हैबत महसूस होती है कि जैसे बंदे को शेर से हैबत महसूस होती है, क्यों? इसलिए कि उसके आमाल के बारे में उससे भी पूछा जाएगा और मुझसे भी पूछा जाएगा कि शेख़ होने के नाते तुमने हक़ अदा किया था या नहीं, तुमने उसे ख़ैर की तरफ़ बुलाया था या नहीं?

जान बख़्शी

अज़ीज़ दोस्तो! यह महीने में एक प्रोग्राम हम ने अपनी जान बचाने के लिए रखा है कि आपकी बातों का आप से हिसाब तो होगा ही सही लेकिन जिसके हाथ में आपने हाथ दिया है उससे भी पूछा जाएगा। यह मुसीबत पड़ी हुई है। अपना बोझ तो है ही सही, जिस-जिस बंदे ने हाथ में हाथ दिया, हर उस बंदे का बोझ सर के ऊपर है ﴿فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين﴾। क़ुरआन पाक की इस आयत से मशाइख़ ने यह मतलब लिखा है कि क़यामत के दिन शेख़ को अल्लाह तआला ज़ंजीरों में बांधकर खड़ा करेंगे और उस वक़्त तक नहीं खोलेंगे जब तक वह यह साबित न कर देंगे कि हमने अपने ताल्लुक़ वालों की इस्लाह के लिए अपनी तरफ़ से पूरा ज़ोर लगाया था। इसलिए यह जो प्रोग्राम रखा है यह अपनी जान बचाने के लिए है। अब हमारी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई। कोई यह न कह सके कि जी हमें तो वक़्त नहीं मिलता था। जी हमारे शेख़ मसरूफ़ रहते हैं और उनके पास वक़्त नहीं होता।

रूहानियत में ज़ाहिरी फ़ासलों की हैसियत

चलें यह एक रात इबादत में गुज़ारने के लिए है। ज़रा आप

इस मामूल में जुड़िए फिर देखें कि आपको दूर बैठे तवज्जेहात मिलती है या नहीं मिलती। बातिनी तवज्जेहात के लिए यह ज़ाहिरी फ़ासले कुछ हैसियत नहीं रखते। पूरब व पश्चिम का फ़ासला कोई हैसियत नहीं रखता। इसलिए आप हज़रात अगर इस्लाह की नीयत से यहाँ आएंगे तो जिन हज़रात को इस आजिज़ ने यहाँ नुमाइंदा बनाया है वह आपको मुराक़बा भी करवाएंगे, रात के आमाल में भी लगवाएंगे और इंशाअल्लाह आप झोलियाँ भरकर वापस जाएंगे।

जमाअती काम की फ़ज़ीलत

एक मस्अला सुनिए कि अकेला बंदा नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी कि वह क़ुबूल करे या न करे। लेकिन फ़िक़्ह का मस्अला है जिस आदमी ने जमात के साथ नमाज़ पढ़ी अब अगर पूरी जमात के बंदों में से एक की नमाज़ भी क़ुबूल हो गई तो अल्लाह तआला उसकी नमाज़ को भी क़ुबूल फ़रमा लेंगे। बिल्कुल इसी तरह जब इतने बंदे राते के आमाल करेंगे तो उन बंदों में से किसी एक की इबादत भी क़ुबूल हो गई तो जमात की वजह से अल्लाह तआला सबका जागना क़ुबूल फ़रमा लेंगे।

पिछले रमज़ानुल मुबारक की थकावट

जब पिछली दफ़ा हमने रोज़े रखे, तरावीह पढ़ी, उस वक़्त हमें थकान महसूस होती थी। आज हमें याद नहीं कि रमज़ान शरीफ़ में जिस्म थका था। अगर पिछले रमज़ान की थकावट याद नहीं, वह ख़त्म हो गई लेकिन अज्र बाक़ी है तो इसी तरह अगर आज

की रात जागेगें तो यह थकावट भी कल शाम तक भूल जाएंगे और इस पर मिलने वाला अज्र आमालनामे में बाक़ी रहेगा।

नफ़्स पर बोझ डालिए नफ़्स पर बोझ डालिए

नफ़्स ने अगर जाग-जाग कर गुनाह करवाए तो हम इसको जगा-जगा कर इबादत क्यों न करवाएं। अच्छा है कि कभी हमारी आँखों में भी सुर्ख़ डोरे पड़ें जैसे सहाबा किराम की आँखों में सुर्ख़ डोरे पड़े होते थे, आँखें नींद को तरसती थीं। हमारी आँखें भी नींद को तरसें। किसके लिए? अल्लाह तआला की इबादत के लिए। हम इबादत नहीं कर सकते जैसे इबादत करने का हक़ है लेकिन हम कुछ नीयत तो कर सकते हैं, कुछ क़दम तो बढ़ा सकते हैं। अल्लाह तआला उसी क़दम बढ़ाने को क़ुबूल फ़रमा लेंगे और उसकी बरकतें आप महसूस करेंगे।

शब बेदारी का प्रोग्राम रखने की वजह

यह जो रात को प्रोग्राम रखा सिर्फ़ इसलिए रखा कि हम चाहते हैं कि महीने की एक रात सब सालिक एक जगह मिल बैठें और अपने रब को याद करें। जी तो चाहता था कि दिन का वक़्त होता मगर आप लोगों में से किसी की मजबूरियाँ होती हैं, घर के काम होते हैं। आप लोग कहते हफ़्ते के बाद एक छुट्टी मिलती है वह भी पीर साहब के पास जाना पड़ गया तो घर के काम कौन करेगा? तो शिकवे शिकायतें होतीं। हमने कहा चलो दिन का वक़्त तुम अपने कामों में गुज़ार लेना। हम आपको रात को यहाँ कुछ देर तक इबादत में मशग़ूल रख लेते हैं। सीखने का मौक़ा मिल जाएगा। साल में और नहीं तो बारह रातें तो अल्लाह तआला

की याद में जागकर गुज़र जाएं। अल्लाह तआला को ऐसा ही बंदा महबूब होता है जो दूसरे से ज़्यादा मेहनत कर रहा हो। आज के दौर में जो लोग हैं उनसे कोई ताबईन वाले हालात नहीं मांगे जाएंगे या तबे ताबईन वाले हालात नहीं मांगे जाएंगे कि उस दौर के हालात तुम्हारे पास क्यों नहीं हैं? अहवाल क्यों नहीं? ऐसा नहीं बल्कि हम से आज के दौर के हालात तलब किए जाएंगे। इसलिए कि पैदा जो इस दौर में हुए हैं। लिहाज़ा आज के दौर के बारे में सवाल होगा। जो बंदा किसी क़दर ज़्यादा कोशिश करेगा अल्लाह तआला उसको तौफ़ीक़ अता फ़रमाएंगे और क़ुबूलियत अता फ़रमाएंगे।

एक वाक़िआ हदीस पाक में आया है, अल्लाह तआला दो बंदों को क़ुबूल फ़रमा लेते हैं और उनसे ख़ुश होकर फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र फ़रमाते हैं। एक जब कोई क़ाफ़िला थका हुआ आए और रात के आख़िरी पहर में आकर सो जाए। एक आदमी उनमें से थका हुआ था, वह उठा उसने वुज़ू किया और मुसल्ले पर खड़ा होकर इबादत करने लग गया। अल्लाह तआला मुस्कराकर फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि देखो बाक़ी भी थके मांदे थे यह भी थका हुआ था लेकिन इसको मेरी मुहब्बत ने जगाए रखा। यह खड़ा नफ़्लें पढ़ रहा है। ऐसा बंदा अल्लाह तआला को ज़्यादा प्यारा होता है। और दूसरे वह नौजवान जिसको तहज्जुद के वक़्त आँख खुली और उसने वुज़ू करके नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी जबकि ख़ूबसूरत बीवी घर में मौजूद थी। वह चाहता तो उसके साथ गुज़ार सकता था लेकिन उसने अल्लाह तआला की इबादत को तरजीह दी। अल्लाह तआला ख़ुश होकर उसको देखते हैं और फ़रिश्तों में उसका ज़िक्र फ़रमाते हैं। मालूम यह हुआ कि जो

आदमी अपनी नींद की, अपनी ख़्वाहिशात की क़ुर्बानी देकर अपने रब की इबादत करता है अल्लाह तआला उसकी इबादत को क़ुबूल भी फ़रमाते हैं और मुस्कराकर उसका ज़िक्र फ़रिश्तों की महफ़िल में फ़रमा देते हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपने रातों को जागने वाले लोगों में शामिल फ़रमा दे और हमारे गुनाहों को नेकियों से तब्दील फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

मज्ज़ूबों की पुर असरार (राज़ भरी) दुनिया

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم ○ بسم الله الرحمن الرحيم ○

فوجدا عبدا من عبادنا اتينه رحمة من عندنا وعلمناه من لدنا علما○ سبحن ربك

رب العزة عما يصفون○ وسلام على المرسلين○ والحمد لله رب العالمين○

दुनिया में ज़ाहिरी असबाब की अहमियत

यह दुनिया दारुल असबाब है, अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त ने इसके निज़ाम को असबाब के तहत चलाया है। हर चीज़ के काम करने का तरीक़ा और उसूल व क़ायदे तय फ़रमा दिए। अल्लाह तआला चाहें तो बग़ैर रोटी के भी भूख मिटा सकते हैं मगर एक दस्तूर बना दिया कि रोटी खाओगे तो भूख मिटेगी, पानी पिओगे तो प्यास बुझेगी, निकाह करोगे तो औलाद मिलेगी, कोशिश करोगे तो तुम्हें रोज़ी दी जाएगी। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैदान ओहद के मैदान में ज़ख़्म लगा तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने लकड़ी जलाकर राख बनाई और आपके ज़ख़्मों पर लगाई। शिफ़ा देने वाला अल्लाह तआला है मगर ज़ख़्म पर राख लगानी पड़ी। सख़्त भूख की हालत में बेताबी

थी, खाने को कुछ नहीं था जिसकी वजह से पेट पर पत्थर बांधने पड़े। क़ानूने ख़ुदावंदी है कि लोहा मज़बूत होता है। आप दुनिया में जहाँ कहीं भी चले जाएं आप आँख बंद करके कह सकते हैं कि लोहा मज़बूत होता है। यह कभी नहीं होगा कि वह एक जगह तो मज़बूत हो और जब उसे पुल बनाने के लिए इस्तेमाल करें तो वह प्लास्टिक की तरह नरम हो जाएं। लोहा हर जगह लोहा ही होता है। इसीलिए आज के इंजीनियर आँख बंदकर के एक सौ दस मंज़िला इमारत डिज़ाइन कर देते हैं कि लोहे की मज़बूती की वजह से यह इमारत यूँही खड़ी रहेगी और वह वाक़ई खड़ी रहती है। अगर कोई क़ानून और क़ायदा न होता तो पुल बनते न इमारतें बनतीं, न मशीनें बनतीं और न ही इंसान की ज़िंदगी का कारोबार चलता।

क़ुदरते इलाही का इज़्हार

आमतौर पर ऐसा नहीं होता कि इंसान रात को सो जाए तो फ़ासिक़ हो और सुबह को उठे तो कामिल हो। अगर अल्लाह तआला ऐसा फ़रमा दें तो यह उसकी क़ुदरत है। यूँ तू बीबी मरयम रज़ियल्लहु अन्हा को बग़ैर शौहर के भी बेटा दे दिया था। बाज़ अंबिया किराम को ऐसी उम्र में औलाद मिली जब कि औरत बांझ हो जाती है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी को बशारत मिली कि बेटा होगा :

﴿فصكت وجهها وقالت عجوز عقيم﴾

चेहरे पर हाथ मारा और कहने लगी, ओहो! मैं बुढ़िया! इस हालत में माँ बनूंगी?

मगर यह क़ुदरत का ज़हूर है।

आमतौर पर दुनिया का निज़ाम असबाब के मातहत चल रहा है लेकिन कभी-कभी असबाब का मालिक अपनी क़ुदरत दिखाता है ताकि लोगों का ईमान सलामत रहे और वे असबाब को ही खुदा न समझ बैठें। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी क़ुदरत का इज़्हार फ़रमा देते हैं कि हम निज़ाम बनाकर इसके पाबंद नहीं हो गए हैं बल्कि मर्ज़ी अब भी हमारी ही चलती है।

रूहानी असबाब

जिस तरह ज़ाहिरी तौर पर माद्दी निज़ाम असबाब के तहत है उसी तरह रूहानियत का निज़ाम भी असबाब के तहत है। जिस तरह इंसान माद्दी उलूम सीखता है उसी तरह उसे रूहानियत को भी सीखना पड़ेगा। शेख़ से बैअत होना, उनसे ज़िक्र व मुराक़बा सीखना असबाब हैं। रहमतें तो अल्लाह तआला ही भेजते हैं मगर मुराक़बा में बैठना इसका सबब बन जाता है।

दो तरह के इंतिज़ामात

दुनिया के गुलशन के कारोबार को चलाने के लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से दो तरह के इंतिज़ामात हैं।

1. फ़रिश्तों के ज़रिए

कुछ तो फ़रिश्ते तय हैं जो दुनिया का निज़ाम संभाले हुए हैं। मसलन पानी के हर क़तरे के साथ एक फ़रिश्ता है। तब तक वह

क़तरा पीने वाले के मुँह में नहीं चला जाता, वह उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। इसी तरह हवाओं का निज़ाम फ़रिश्तों के तहत, पहाड़ों का निज़ाम फ़रिश्तों के तहत, रिज़्क़ का निज़ाम फ़रिश्तों के तहत, बंदों की हिफ़ाज़त का निज़ाम फ़रिश्तों के तहत। किताबों में लिखा है कि हर इंसान के साथ दो फ़रिश्ते तय होते हैं। अगर वे न होते तो जिन्न इंसानों का नाम व निशान ही मिटा देते। आमाल लिखने का निज़ाम फ़रिश्तों के तहत :

﴿وان علیکم لحافظین کراما کاتبین یعلمون ما تفعلون.﴾

और जब मरने लगता है तो रूह क़ब्ज़ करने का इंतिज़ाम फ़रिश्तों के तहत। बस अल्लाह तआला ने दुनिया का निज़ाम चलाने के लिए कुछ इंतिज़ाम फ़रिश्तों के ज़िम्मे लगा दिया है।

2. इंसानों के ज़रिए निज़ाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने कुछ इंसानों को भी इस ख़िदमत के काम पर तैनात हैं। जब कोई हाकिम मुल्क पर हकूमत करता है तो उस मुल्क में आमतौर पर तीन तब्क़े होते हैं। उनमें से एक तो आम लोगों का तब्क़ा होता है जिनको एक निज़ाम के तहत अपनी ज़िंदगी गुज़ारना पड़ती है। वे कारोबार करें या नौकरी करें या जो मर्ज़ी करें। उन्हें बहरहाल इस निज़ाम के तहत अपनी ज़िंदगी गुज़ारनी है। दूसरा तब्क़ा हाकिम के नुमाइंदों का है जो हकूमती पॉलिसियाँ बनाते हैं, समझाते हैं और लोगों को उस क़ानून के तहत ज़िंदगी गुज़ारने का पाबंद बनाते हैं और तीसरा तब्क़ा फ़ौज या पुलिस का होता है। यह महकमे मुल्क के कुछ ख़ास कामों के लिए बनाए जाते हैं। फ़ौज का शोबा मुल्क की

हिफ़ाज़त के लिए तैनात होता है जब कि पुलिस का शोबा मुल्क में अमन व अमान क़ायम रखने के लिए बनाया जाता है।

ख़ुदाई निज़ाम

ख़ुदाई निज़ाम के भी तीन हिस्से हैं। एक आम लोग, जिनमें से कोई सईद होगा कोई शक़ी होगा। उन्हें दुनिया में अपनी ज़िंदगी गुज़ारकर आख़िरत के सफ़र पर रवाना होना है। इसके अलावा अल्लाह तआला ने अपने बंदों के दो शोबे और बनाए हैं जो ख़ुदाई काम पर तैनात होते हैं।

क़ुतुब इर्शाद के फ़राइज़

एक शोबे के बड़े को "क़ुतुब इर्शाद" कहते हैं। इर्शाद कहते हैं दावत को, तबलीग़ को, सुन्नत को ज़िंदा करने को, दीन को ज़िंदा करने को। क़ुतुब इर्शाद अल्लाह तआला का वह बंदा होता है जिसको रूहानी तौर पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुमताज़ वारिस होने की निस्बत हासिल होती है। और दावत व तबलीग़ का जो काम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दौर में करते थे। उनकी वकालत करते हुए नुमाइंदगी करते हुए और उनका वारिस होते हुए क़ुतुब इर्शाद वही काम कर रहा होता है। गोया क़ुतुब इर्शाद लोगों के दिलों को अल्लाह तआला की मुहब्बत से गर्मा रहे होते हैं और शरिअत की बालादस्ती और हाकमियत आला के अहकामात की तामील करवाने के लिए कोशिशें कर रहे होते हैं। फिर उनके तहत कई औलिया किराम होते हैं जो उनसे फ़ैज़ पाते हैं और आगे काम

कर रहे होते हैं। इसे दावत व इर्शाद का एक मुस्तक़िल शोबा समझ लीजिए।

क़ुतुब मदार के फ़राइज़

एक शोबा और होता है जिसका फ़ौज की तरह रिआया के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं होता। उनका ताल्लुक़ मुल्क की हिफ़ाज़त, सालमियत और अमन व अमान से होता है। उस शोबे के बड़े को "क़ुतुब मदार" कहते हैं। उनके तहत आगे और कई औलियाए किराम होते हैं। जिनके ज़िम्मे मुख़्तलिफ़ काम लगे होते हैं। उनका ताल्लुक़ काएनात के निज़ाम के साथ होता है। जैसे फ़रिश्तों की जमात निज़ामे काएनात को संभालने के लिए बनी, ये बंदे भी निज़ाम को संभालने के लिए पैदा किए गए हैं।

जब किसी को फ़ौजी बनाया जाता है तो उसे वर्दी पहना दी जाती है ताकि आम लोगों और उनमें फ़र्क़ हो सके। इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जब किसी बंदे को तकवीनी निज़ाम से मुताल्लिक़ किसी काम पर तैनात फ़रमाते हैं तो ज़ाहिरी तौर पर उस पर कुछ बेहोशी का आलम तारी फ़रमा देते हैं। जिसकी वजह से आम दुनिया के लोगों से बातचीत के क़ाबिल नज़र ही नहीं आते। वे लगन के साथ अपने काम में मगन होत हैं।

क़ुतुब इर्शाद की फ़ज़ीलत

यहाँ एक बात ग़ौर के क़ाबिल है कि दावत व इर्शाद का रास्ता अफ़ज़ल है। इसीलिए क़ुतुब मदार हमेशा क़ुतुब इर्शाद के मातहत होते हैं। एक ही वक़्त में क़ुतुब इर्शाद भी होंगे और

क़ुतुब मदार भी होंगे मगर क़ुतुब मदार मातहत होंगे क़ुतुब इर्शाद के। वे अपने सब मामलात की रिपोर्ट क़ुतुब इर्शाद को बताएंगे। क्योंकि क़ुतुब इर्शाद दावत व तबलीग़, इशाअत दीन, शरिअत का काम, मदरसों, मस्जिदों, मक्तबों और रूहानियत का निज़ाम चलाते हैं इसलिए शरिअत ने क़ुतुब इर्शाद को फ़ज़ीलत बख़्शी है।

मजनून और मज्ज़ूब में फ़र्क़

जो लोग ज़ाहिर में एक आम इंसान की तरह अक़्लमंद नज़र नहीं आते और एक ख़ास हालत में रहते हैं, लोग उन्हें मजनून कहते हैं या मज्ज़ूब। यानी मजनून को देखो तो वह अजीब व ग़रीब हरकतें करता है, न खाने से वास्ता न पीने से वास्ता न ही दूसरी चीज़ों से ताल्लुक़ होता है। मज्ज़ूब का लफ़्ज़ 'जज़्बे' से निकला है। लिहाज़ा मज्ज़ूब के अंदर एक ख़ास जज़्बा होता है मगर यह भी ज़ाहिर में मजनून की तरह अजीब सी हरकतें करता है। मजनून और मज्ज़ूब की ज़िंदगी आम लोगों से हटकर होती है। मगर मजनून बीमार होता है जब कि मज्ज़ूब अल्लाह का वली होता है। दोनों ज़ाहिर में एक जैसे लगने की वजह से सालिकीन परेशान होकर उनके बारे में कमी-ज़्यादती का शिकार हो जाते हैं। कुछ लोग तो मजनून को भी मज्ज़ूब ही कह देते हैं। जो भी पागल व दीवाना देखा उसी को मज्ज़ूब और ख़ुदा का वली समझ लिया। कुछ ऐसे होते हैं जो मज्ज़ूब लोगों को भी मरीज़ समझ लेते हैं। सही राह अपनाने के लिए कुछ नुक्ते बयान किए जाते हैं ताकि आपका अक़ीदा और अमल पिछले बुज़ुर्गों के अक़ीदे और अमल के मुताबिक़ हो जाए।

सबसे बड़ी निशानी तो यह है कि मजनून हमेशा बेचैन नज़र आएगा जब कि मज्ज़ूब हमेशा मुमइन नज़र आएगा। यानी मजनून को किसी कल चैन नहीं होता, उसका दिमाग़ ख़राब होता है जिसकी वजह से वह हर वक़्त हिलता-जुलता रहता है। बेचैनी की वजह से वह कभी कोई हरकत करता है और कभी कोई। मज्ज़ूब भी देखने में इसी तरह होता है मगर उसके आमाल में आपको बेचैनी नज़र नहीं आएगी। गोया मजनून पर बेचैनी ग़ालिब होगी और मज्ज़ूब पर इत्मिनान ग़ालिब होगा।

मज्ज़ूब बनने के लिए हाथ खड़ा करें

अगर कोई आदमी मज्ज़ूब आदमी के पास जाए, उसकी ख़िदमत करे और मज्ज़ूब उस पर मेहरबान हो जाए तो मज्ज़ूव उसे उस दर्जे तक पहुँचा सकता है जहाँ पर वह ख़ुद होता है यानी ज़्यादा से ज़्यादा करेगा तो वह उसे अपनी तरह का मज्ज़ूब बना देगा। अब बताओ भई! जिस-जिस ने मज्ज़ूब बनना हो वह हाथ खड़ा करें। हम में से तो कोई भी पसंद नहीं करेगा कि वह ऐसी ज़िंदगी गुज़ारे। हर बंदा पसंद करेगा कि शरिअत सुन्नत की इत्तिबा की जाए ताकि रोज़े महशर शरअ शरीफ़ पर अमल करने वाले बंदों में हमारा शुमार कर लिया जाए।

मज्ज़ूब की क़िस्में

एक सवाल यह पैदा होता है कि ये मज्ज़ूब बनते कैसे है? इसका जवाब यह है कि मज्ज़ूब दो तरह के होते हैं। एक वहबी मज्ज़ूब और कस्बी मज्ज़ूब।

1. वहबी मज्ज़ूब

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जब रोज़े मीसाक़ ﴿الست بربكم﴾ 'अलस्तु बिरब्बिकुम' इर्शाद फ़रमाया और अपने जमाल का जलवा दिखााया तो कुछ इश्क़ वाले ऐसे थे जो मस्त हो गए। वे जमाले इलाही के मुशाहिदे में ऐसे ग़र्क़ हुए या उस तजल्ली का नक़्श उनके दिल व दिमाग़ पर यूँ बैठा कि अपने होश गुम कर बैठे। उनको वहबी मज्ज़ूब हैं। वे माँ के पेट में भी मज्ज़ूब, बचपन में भी मज्ज़ूब, जवानी में भी मज्ज़ूब, बुढ़ापे में भी मज्ज़ूब रहते हैं यहाँ तक कि वे इसी हालत में दुनिया से गुज़र जाते हैं।

2. कस्बी मज्ज़ूब

कस्बी मज्ज़ूब अमूमन दो तरह के होते हैं, एक तो वे जो शुरू में दावत व इर्शाद के सही रास्ते पर चलते हैं, सालिकीन तरीक़त बनते हैं मगर सुल्तानुल अज़्कार के सबक़ पर रुक जाते हैं। उनके रग व रेशे में जो अल्लाह! अल्लाह निकलती है वे इस हाल में मग़लूब हो जाते हैं।

दूसरे वे जो किसी मज्ज़ूब के पास जाते हैं और राह व रस्म रखने या किसी ख़िदमत की वजह से मज्ज़ूब किसी तरह उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है। जिसकी वजह से वह भी मज्ज़ूब बन जाते हैं।

हज़रत बाबूजी अब्दुल्लाह रह० पर एक मज्ज़ूब का वार

हज़रत बाबू जी अब्दुल्लाह रह० ने फ़रमाया कि एक मज्ज़ूब मुझ पर बहुत मेहरबान था। एक बार वह मुझे मिला और कहने

लगा, 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढ़ो। मैंने पढ़ा 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'। उसने हर चंद ज़ोर लगाया कि मैं 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढ़ूं मगर मैं हर बार 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' पढ़ता रहा। फ़रमाने लगे अगर मैं वाक़िफ़ न होता तो उसके कहने पर सिर्फ़ 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पढ़ देता तो उसी वक़्त मज्ज़ूब बन जाता।

एम०बी०बी०एस० डाक्टर अब्दाल कैसे बना?

हज़रत शाह ज़व्वार हुसैन शाह रह० से इस आजिज़ ने एक वाक़िआ खुद सुना। उनके दौर में एक एमबीबीएस डाक्टर साहब का एक मज्ज़ूब के पास उठना बैठना था। वह मज्ज़ूब फ़ौत होने लगा तो उनको कोई चीज़ खाने को दे गया। उन्होंने वह चीज़ खाई तो वह भी मज्ज़ूब बन गए। अब वह एमबीबीएस डाक्टर बग़ैर अज़ारबंद के सिर्फ़ एक पाजामा पहनने लग गए। हालत यह थी कि पाजामा हाथ में लेकर चलते फिरते थे। वह डाक्टर साहब एक हकीम साहब के पास आते जाते थे।

हज़रत ने फ़रमाया कि एक बार हम भी हकीम साहब से मिलने गए तो ऊपर से वह डाक्टर साहब भी आ गए। हकीम साहब ने डाक्टर साहब को देखकर फ़रमाया कि मैं ज़रा मसरूफ़ हूँ, मिलने वाले बैठे हैं इसलिए थोड़ी देर तशरीफ़ रखें। उन्होंने इशारा किया ठीक है। उसके बाद वह हमारे पास ही बैठ गए। मैं हैरान था कि जब मैं उनकी तरफ़ देखता तो इधर उधर देखने लगते और जब मैं इधर उधर देखता तो फ़ौरन मेरा चेहरा देखना शुरू कर देते। थोड़ी देर के बाद उन्होंने हकीम साहब के काग़ज़ों में से एक काग़ज़ उठाया और क़लम लेकर कुछ गुनगुनाने भी लगे

और लिखने भी लगे। जब मैंने उनकी गुनगुनाहट पर थोड़ी सी तवज्जेह दी तो मुझे महसूस हुआ कि वह अरबी के बहुत ही अजीब अश्आर पढ़ रहे हैं। समझ में नहीं आती थी मगर उसकी सुर ऐसी थी कि उससे मैंने पहचान लिया कि मुहब्बते इलाही के अश्आर गुनगुना रहे हैं हालाँकि एमबीबीएस डाक्टर को अरबी से क्या वास्ता? यह बेचारे तो इट-मिट पढ़ते हैं।

थोड़ी देर के बाद वह डाक्टर साहब उठे और इशारा किया कि अब मैं जाता हूँ। हकीम साहब ने कहा डाक्टर साहब क्या बात है आप इतने दिन से हमारे पास नहीं आए? डाक्टर साहब कहने लगे, "अब हम दाल हो गए हैं।" यह कहकर डाक्टर साहब चले गए, बाद में हकीम साहब ने सैय्यद ज़व्वार हुसैन शाह रह० से अर्ज़ किया, क्या आपको पता चला कि यह क्या कह गए हैं? हज़रत ने फ़रमाया कि मैं तो नहीं समझ सका। हकीम साहब कहने लगे कि यह कह गए हैं "अब हम दाल हो गए हैं।" मतलब यह है कि अब मैं अब्दाल बन गया हूँ। सही बताने के बजाए कि हम अब्दाल हो गए हैं, उसने अब को पहले कहा और दाल को बाद में। हज़रत रह० फ़रमाते हैं कि मुझे भी हैरानी हुई कि वाक़ई बात तो ऐसी ही कर गया है लेकिन हकीम साहब ने इशारा समझ लिया।

फिर उसके बाद उन्होंने एक लैंस मंगवाया जो हरूफ़ को बड़ा करके दिखाता है। उसकी मदद से देखा कि तो मैं हैरान रह गया कि ज़ाहिरन तो नज़र आता था कि उन्होंने ऐसे ही निशान से बना दिए हैं लेकिन जब उसे बड़ा करके देखा तो पता चला कि अरबी का शेर इतना ख़ूबसूरत लिखा हुआ था कि ऐसा तो कोई कातिब भी नहीं लिख सकता।

मज्ज़ूब की एक ख़ास कैफ़ियत

मज्ज़ूब लोग क़ुदरत की तरफ़ से इंतिज़ामी उमूर से मुताल्लिक़ ख़ास कामों पर तैनात होते हैं मगर उनसे अमूमन कोई काम भी शरिअत के ख़िलाफ़ शरअ नहीं होता। उनसे क़लम उठा लिया जाता है। उनमें कभी-कभी इतनी होश ज़रूर होती है कि कभी-कभी बातचीत कर लेते हैं जैसे जानवरों में अक़्ल तो नहीं होती मगर उन्हें अपने मालिक की या ग़ैर की पहचान ज़रूर होती है। क्या चीज़ खानी है और क्या चीज़ नहीं खानी, उसकी भी उन्हें पहचान होती है। आमतौर पर उनको होश नहीं होता।

कामिल मज्ज़ूब की पहचान

सैय्यद ग़ौस अली रह० ने दो मज्ज़ूबों को देखा, किसी ज़ालिम ने उनको पकड़कर उनकी रानों पर अंगारे रख दिए। उनमें से जो कामिल था वह जल गया और जो कामिल न था उसने अंगारे को हटा दिया। इसलिए मज्ज़ूबों में जो जितना कामिल होगा वह उतना ही होश वह में होगा। बेहोश से मुराद यह है कि उसे दुनिया की होश नहीं होती। बस वह एक ख़ास हाल में मगन नज़र आते हैं।

मजनून लोगों का जन्नत में दाख़िला

मजनून से भी मज्ज़ूब की तरह शरिअत का क़लम उठा लिया जाता है। अल्लाह तआला क़यामत के दिन मजनून लोगों को अपनी रहमत से जन्नत में भेज देंगे। उलमा ने इसकी वजह लिखी है क्योंकि उसकी शक्ल इंसानों वाली होती है इसलिए इंसानियत

के एहतिराम की वजह से अल्लाह तआला उनको जहन्नम के बजाए जन्नत अता फ़रमा देंगे।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला एहतिराम इंसानियत की वजह से कुछ बंदों को जहन्नम से बचा लेंगे तो जो लोग शरिअत पर चलने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला उन पर अपनी मेहरबानी क्यों नहीं फ़रमाएंगे।

मज्ज़ूबों के हैरतअंगेज़ वाक़िआत

मज्ज़ूब लोगों के वाक़िआत भी बड़े अजीब व ग़रीब होते हैं। उनको पढ़कर इंसान हैरान रह जाता है।

मज्ज़ूब की दुआ के समरात

हकीम सनाई रह० के वालिद मख़्दूम साहब को एक मज्ज़ूब ने कहा कि अल्लाह तआला तुझे बेटा देगा जो मर्द होगा। लिहाज़ा कुछ अरसे के बाद हकीम सनाई पैदा हुए। हकीम सनाई रह० लड़कपन में अपने एक दोस्त उस्मान ख़ैराबादी के साथ मिलकर खेला करते थे। एक दिन उन दोनों को एक मज्ज़ूब कहने लगा काक (रोटी) और शोरबा लाओ। दोनों ने कहा अच्छा। उनके पास पैसे नहीं थे इसलिए एक ने अपनी कोई चीज़ बेचकर रोटी ख़रीदी और दूसरे ने अपनी कोई चीज़ बेचकर शोरबा ख़रीदा और दोनों चीज़ें मज्ज़ूब के पास लाए। उसने खाकर उन दोनों को दुआ दी। वे दोनों अपने वक़्त के बड़े

नामवर लोग बने। उस्मान ख़ैराबादी से अल्लाह तआला ने रूहानियत का काम लिया और हकीम सनाई रह० अपने वक़्त के हकीम भी थे और शायर भी यहाँ तक कि अल्लामा इक़बाल रह० ने भी उनके अश'आर में तज़मीन लिखी।

इब्ने अरबी रह० की एक मज्ज़ूब से मुलाक़ात

इब्ने अरबी रह० ने एक मज्ज़ूब को देखा कि वह ज़ाहिर में नमाज़ भी पढ़ रहा था। उन्होंने उससे पूछा, मियाँ! क्या कर रहे हो? वह कहने लगा, मुझे तो पता ही नहीं, वही मुझे उठाता है और वही मुझे बिठाता है। इब्ने अरबी ने अपनी किताब में इसको नक़ल किया है।

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० की एक मज्ज़ूब से मुलाक़ात

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन रह० को जब ख़िलाफ़त मिली तो वह हज़रत ख़्वाजा रसन रह० के मज़ार पर चालीस दिन तक मौतकिफ़ रहे। इसी दौरान उन्होंने फूलों की एक बेल देखी जो ताज़ी-ताज़ी लगाई गई थी। वह बेल कुछ दिनों में बड़ी हो गई। एक दिन जब देखा कि फूल भी लग चुके हैं तो दुआ मांगी, रब्बे करीम! इतने दिनों में तो एक बेल पर भी फूल लग गए, मैं तेरी इबादत में यहाँ बैठा हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे अंदर भी तक़्वे के फूल लगा दे। उनकी दुआ ऐसी क़ुबूल हुई कि चालीस दिन मुकम्मल करके जब निकले तो रास्ते में एक मज्ज़ूब से मुलाक़ात हुई। उसने तवज्जेह दी और आपका मामला ही कुछ और बन गया।

नस्ल दर नस्ल बादशाहत

सुबक्तगीन ग़ज़नी के बादशाह सुलतान महमूद ग़ज़नवी के वालिद थे। वह फ़ौज में एक आम सिपाही थे। उनके घर में एक अल्लाह वाले आए। वह अल्लाह वाले की मेहमान नवाज़ी करते, मस्जिद जाते तो उनके अदब की वजह से कुछ क़दम पीछे चलते। अल्लाह तआला ने ऐसा निज़ाम बना दिया कि वह सिपाही से जरनैल बने, फिर वक़्त के बादशाह बन गए। जितने क़दम उस बुज़ुर्ग से पीछे चलते थे अल्लाह तआला ने उनकी उतनी ही नस्लों में बादशाहत चला दी।

मज्ज़ूब ने हाथी को गिरा दिया

एक बार सुबक्तगीन के हाथी किसी रास्ते पर जा रहे थे। एक मज्ज़ूब हाथी के क़रीब से गुज़रने लगा। रास्ता थोड़ा होने की वजह से वह मज्ज़ूब दीवार और हाथी के दर्मियान आ गया। मज्ज़ूब ने हाथी को बस हाथ लगा दिया और कहा पीछे हट। इतना बड़ा हाथी वहीं गिर गया।

चाँद को प्याले में छिपाना

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० के वालिद शाह अब्दुर्रहीम नक़्शबंदी निस्बत रखते थे मगर अपने आपको छिपाते थे। एक बार सोचा कि मैं ज़ाहिर में मुजाहिदीन वाला लिबास क्यों न पहन लूँ। लिहाज़ा मुजाहिदीन वाली वर्दी पहनकर फिरते रहते। एक बार एक मज्ज़ूब ने देख लिया तो कहने लगे, देखो! यह चाँद को प्याले के नीचे छिपाए फिरता है।

एक मज्ज़ूबा का पर्दा करने का वाक़िआ

ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक़ ग़ुजदवानी रह० इमाम मालिक रह० की औलाद में से थे और हमारे सिलसिला-ए-आलिया नक़्शबंदिया के बड़े बुज़ुर्ग थे। उनका घर बुख़ारा से अठ्ठारह किलोमीटर के फ़ासले पर ग़ुजदावान में था। एक बार कहीं जा रहे थे कि एक मज्ज़ूबा ने देख लिया। उसके जिस्म पर पूरे कपड़े भी नहीं थे। जैसे ही उन्हें देखा उसी वक़्त उसने एक तन्दूर में छलांग लगा दी हालाँकि जलने के बाद उसमें अंगारे मौजूद थे। जब ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक ग़ुजदवानी रह० चले तो गए तो वह तन्दूर से बाहर निकली। लोगों ने पूछा कि तो वैसे तो नंगी फिरती रहती है और उनको देखकर तूने तन्दूर में छलांग लगा दी। वह कहने लगी हाँ बड़ी मुद्दत के बाद एक मर्द नज़र आया। मर्द से पर्दा करने का हुक्म है डंगरों और जानवरों से तो पर्दा करने का हुक्म नहीं दिया गया।

बकरियों की हिफ़ाज़त करने वाले भेड़िए

हज़रत अक़्दस थानवी रह० के नाना ने एक मज्ज़ूब को देखा कि भेड़िए उसकी बकरियों की हिफ़ाज़त पर तैनात हैं। उन्होंने पूछा मियाँ! भेड़िए जो जानवरों को खा जाते हैं, तेरी बकरियों को क्यों नहीं खाते? उसने जवाब दिया कि मैं अपने मौला का काम करने पर लगा हुआ हूँ तो उसके भेड़ियों मेरी बकरियों की हिफ़ाज़त में लगे हुए हैं।

ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० को एक मज्ज़ूब की नसीहत

ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० को एक मज्ज़ूब मिला। हज़रत

रह० को उन दिनों इल्म हासिल करने का शौक़ था। पास से गुज़रे तो एक मज्ज़ूब ने एक शे'र पढ़ा। कहने लगा–

तर्जुमा : तुझे सर्फ़ कंज़ व हदाया पढ़ने से ख़ुदा नहीं मिलेगा। दिल के सिपारे को पढ़ ले कि इससे बेहतर कोई किताब नहीं है।

जबकि मज्ज़ूब को पता न था कि वह कौन है।

तफ़्सीरे दिल

हज़रत मुर्शिदे आलम रह० फ़रमाते थे कि मैं दर्से क़ुरआन के वक़्त क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर करता था तो बाज़ उलमा हज़रत सिद्दीक़ी रह० से आकर पूछते थे कि हाफ़िज़ ग़ुलाम हबीब साहब कौनसी तफ़्सीर पढ़ते हैं? हज़रत सिद्दीक़ी फ़रमाते कि वह तफ़्सीरे दिल पढ़ते हैं जिसकी वजह से अल्लाह तआला उन पर उलूम व मआरिफ़ की बारिश बरसाते हैं।

दो मज्ज़ूबों की इंतिज़ामी कामों पर तैनाती

कुछ मज्ज़ूब ऐसे भी होते हैं जो इंतिज़ामी कामों पर तैनात होते हैं। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० के पास एक आदमी आया। उसने कहा हज़रत! आजकल तो हालात बहुत ही ढीले हो गए हैं, कोई नज़्म व नस्क़ और क़ानून नहीं है, सब लोग मन-मर्ज़ी करते फिरते हैं। हज़रत रह० ने फ़रमाया, हाँ भाई जो बंदा इंतिज़ामी कामों पर तैनात हुआ है वह तबियत के लिहाज़ से बहुत ही ढीला है। उसने पूछा हज़रत वह कौन है? हज़रत रह० ने फ़रमाया, वह जामा मस्जिद के सामने ख़रबूज़े बेच रहा है। वह आदमी गया तो देखा कि एक सादा सा आदमी बैठा हुआ ख़रबूज़े बेच रहा है। इसने कहा कि मुझे ख़रबूज़े ख़रीदने हैं। वह कहने

लगा ख़रीद ले। उस आदमी ने कहा चखने के बाद ख़रीदूँगा। वह कहने लगा चख लो। अब उसने एक ख़रबूज़ा काटा, चखा और कहने लगा कि यह तो मुझे पसंद नहीं है, दूसरा काटा, कहा पसंद नहीं है। यहाँ तक कि सारे ख़रबूज़े काटकर चखे और कहा मुझे तो कोई भी ख़रबूज़ा पसंद नहीं आया। उसने कहा अच्छा अगर कोई पसंद नहीं आया तो चले जाओ। वह कहने लगा बिल्कुल ठीक, निज़ाम भी ऐसा ही है। कुछ दिन गुज़रे तो निज़ाम ऐसा ठीक हुआ कि हुक्काम सख़्त हो गए। वह फिर कहने लगा निज़ाम बहुत सख़्त हो चुका है। हज़रत ने फ़रमाया, मियाँ आजकल बड़ा सख़्त बंदा आया हुआ है। उसने पूछा हज़रत! वह कौन है? हाँ वह जो फ़लाँ जगह मशक से पानी पिलाता है। इसने कहा अच्छा जाकर देखता हूँ। गर्मी का मौसम था। वह आदमी गया तो देखा कि एक आदमी दोपहर के वक़्त पानी पिलाने के लिए खड़ा है। उसने कहा जी पानी पिला दें। उसने पियाला भरकर पानी दे दिया। अब इस आदमी ने पियाले में पानी को देखा तो कहने लगा कि यह पानी ठीक नहीं है और यह कहकर उसने पानी उंडेल दिया और कहा कि पियाले में और पानी डाल दो। वह कहने लगा पहले इस पानी के पैसे अदा करो जो फेंका है फिर दूसरे की बात करना। वह दिल ही दिल में कहने लगा वाक़ई बात ठीक है कि आजकल निज़ाम ऐसा ही है।

औरंगज़ेब आलमगीर रह० को तख़्त व ताज मिलने का वाक़िआ

अगर हज़रत अक़्दस थानवी रह० जैसे मुहक़्क़िक़ आलिम और फ़क़ीह कोई वाक़िआ लिखते हैं तो वह हमारे लिए सनद होता है।

वह अपनी किताब में एक वाक़िआ लिखते हैं कि दाराशिकोह और औरंगज़ेब आलमगीर रह० दोनों भाई थे। उनमें आपस में तख़्त की कशमश थी। उन दोनों में से हर एक की यही ख़्वाहिश थी कि तख़्त व ताज मुझे मिले। दाराशिकोह चाहता था कि मेरा हक़ बनता है, लिहाज़ा बादशाहत मुझे मिलनी चाहिए जबकि औरंगज़ेब आलमगीर रह० मशाइख़ की सोहबत पा चुके थे। इसलिए वह चाहते थे कि अगर मुझे सलतनत मिल जाए तो मैं बिदअतों का ख़ात्मा करके शरिअत व सुन्नत को ऊपर उठाऊँगा।

दाराशिकोह को किसी ने बताया कि फ़लां जगह पर एक बुज़ुर्ग रहते हैं जिनकी दुआ क़ुबूल होती है, उनसे दुआ करवाएं। जब वह वहाँ गए तो उन बुज़ुर्ग ने खड़े होकर मुसाफ़ा किया और बैठने के लिए अपना मुसल्ला पेश किया। दाराशिकोह ने अदब की वजह से कहा, नहीं जी, मैं इस क़ाबिल कहाँ कि इस जगह बैठ सकूं। अगर उन्होंने बुज़ुर्गों की सोहबत उठाई होती तो समझते कि ﴿الامر فوق الادب﴾ कि हुक्म का दर्जा अदब से ज़्यादा होता है। उन बुज़ुर्ग ने फिर कहा यहाँ बैठ जाओ। मगर उसने दूसरी बार भी यही कहा, हज़रत! मैं इस क़ाबिल कहाँ। उन्होंने तीसरी बार इसरार किया कि बैठिए। लेकिन कहने लगा, जी नहीं आप ही बैठिए। जब वे बैठ गए तो दाराशिकोह भी उनके सामने बैठा। उनकी आपस में बातचीत होती रही। फिर जब उठने लगा तो कहा, हज़रत! दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह तआला मुझे तख़्त व ताज अता फ़रमा दे। बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे, हमने तो मुसल्ला पेश किया था, आप ख़ुद ही नहीं बैठे तो क्या करें अब वक़्त गुज़र चुका है। उसे बहुत ज़्यादा अफ़सोस हुआ। अब उसने सोचा कि

कहीं औरंगज़ेब आलमगीर रह० को पता न चल जाए। लिहाज़ा उसने इस बात को छिपाए रखा।

अल्लाह तआला की शान देखिए कि कुछ अरसे के बाद औरंगज़ेब आलमगीर रह० को भी किसी ने बता दिया कि फ़लां जगह पर एक अल्लाह के मक़्बूल बुज़ुर्ग रहते हैं, आप उनके पास जाएं। औरंगज़ेब आलमगीर रह० तो वैसे ही अल्लाह वालों के सोहबत पाए और साहिबे निस्बत थे। वह भी वहाँ पहुँच गए। जब वहाँ पहुँचे तो उन बुज़ुर्ग ने खड़े होकर उनका इस्तिक़बाल किया और कहा, जी आइए तशरीफ़ लाइए और बैठिए। उन्होंने अदब की वजह से कहा, हज़रत! मैं इस क़ाबिल कहाँ? उन्होंने फ़रमाया, नहीं, नहीं बैठो। जब दोबारा कहा बैठो तो वह मुसल्ले पर बैठ गए। बातचीत होती रही। जब उठने लगे तो उन्होंने कहा, मेरा दिल चाहता है कि शरिअत व सुन्नत को क़ायम करने के लिए काम करूं, इसलिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला मुझे तख़्त व ताज अता फ़रमा दें। वह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे, भई तख़्त तो हम तुझे पहले ही दे चुके हैं। जब उन्होंने तख़्त का नाम लिया तो पहचान गए कि अल्लाह वालों की ज़बान से निकला हुआ एक-एक बोल मायने रखता है इसलिए कहने लगे कि हज़रत तख़्त तो मिल गया और क्या ताज नहीं मिलेगा? फ़रमाया कि ताज का निज़ाम तो आपको वुज़ू करवाने वाले के पास है।

औरंगज़ेब आलमगीर रह० को फ़ौरन याद आया कि हाँ शहज़ादा होने की वजह से महल में मेरा एक ख़ादिम है, वह वाक़ई नेक आदमी है, मिटा हुआ है और वही मुझे वुज़ू करवाता है। मुझे तो पता ही न था। लिहाज़ा वापस आकर सोच में पड़

गए कि मैं उनसे अपने सर पर ताज कैसे रखवाऊँ। क्योंकि सोहबत पाए हुए थे इसलिए समझ गए कि बे मौक़े कहना तो अदब के ख़िलाफ़ होगा।

वह अमामा तो बांधते ही थे। अगली दफ़ा जब वुज़ू किया तो अपने दोनों हाथों जान बूझकर मसरूफ़ कर लिया और उन्हें कहा कि यह अमामा मेरे सर पर रख दीजिए। वह कहने लगे मैं इस क़ाबिल कहाँ कि मेरे हाथ आपके सर तक पहुँचे। वह फ़रमाने लगे, नहीं, नहीं अमामा रख दीजिए। थोड़ी देर तक उन्होंने इंकार किया लेकिन औरंगज़ेब आलमगीर रह० ज़िद्द करते रहे। आख़िर में उन्होंने अमामा उठाकर औरंगज़ेब आलमगीर रह० के सर पर रख दिया। और उस बुज़ुर्ग को बुरा भला कहना शुरू करी दिया कि उसने मेरा राज़ खोल दिया। इस तरह का निज़ाम अल्लाह तआला ने अपने बंदों के सुपुर्द किया होता है। उनको पहचानना मुश्किल होता है। उनका पता भी नहीं चलता। बातिनी फ़िरासत और बसीरत रखने वाले तो उनको पहचानते हैं हर बंदा नहीं पहचानता।

सरापा तसलीम व रज़ा

इस बारे में आख़िरी सवाल यह पैदा होता है कि जब उनके ज़िम्मे इस क़िस्म के काम तय होते हैं तो फिर क्या हमें उन्हीं के पीछे भागना चाहिए ताकि सारे काम होते रहें। इसका जवाब यह है कि 'नहीं'। क्योंकि वह हर काम में हुक्मे इलाही के पाबंद होते हैं। बाल बराबर भी कोई काम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं करते। सरापा तसलीम व रज़ा होते हैं बल्कि मज्ज़ूब तो क्या उन

के सरदार ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

﴿وما ادری ما یفعل بی ولا بکم ان اتبع الا ما یوحی الی.﴾

मैं नहीं जानता कि मेरे और तुम्हारे साथ क्या होगा, मैं तो उस बात की इत्तिबा करता हूँ जो मेरे ऊपर 'वही' आती है।

हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी रह० में तसलीम व रज़ा

हज़रत मौलाना याक़ूब नानौतवी रह० से किसी ने कहा, हज़रत! अंग्रेज़ की हिंदुस्तान पर पकड़ मज़बूत होती जा रही है। क्या ये औलिया कुछ भी नहीं कर सकते? मौलाना याक़ूब साहब ने फ़रमाया, मियाँ! एक तस्बीह घुमाने की बात है मगर क्या करें ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० में तसलीम व रज़ा

जब सातवीं सदी हिज्री में तातारी फ़ितना उठा उस वक़्त "तज़्किरातुल औलिया" के मुसन्निफ़ ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० ज़िंदा थे। उन्हें पता चला कि तातारी लश्कर उनके शहर की तरफ़ आ रहा है। जिस वक़्त इत्तिला मिली उस वक़्त वह प्याले में कुछ पी रहे थे। उन्होंने उस प्याले को दूसरी तरफ़ घुमा दिया। जब प्याले को घुमाया तो लश्कर रास्ता भूल गया। पूरे का पूरा लश्कर किसी और सिम्त में चला गया। एक साल इसी तरह गुज़र गया।

एक साल बाद दोबारा पता चला कि तातारी लश्कर उस शहर की तरफ़ आ रहा है। उन्होंने फिर इरादा किया कि मैं कुछ करूं मगर इल्हाम हुआ कि प्यारे! मर्ज़ी तो हमारी चलती है, ये क़ज़ा व

क़द्र के फ़ैसले हैं जो आपको तसलीम करना पड़ेंगे। इसलिए ख़ामोश होकर बैठ गए कि ऐ अल्लाह! जब तेरी रज़ा यूँही है, जब तेरी क़ज़ा व क़द्र के फ़ैसले ऐसे ही हैं तो हम कट जाएंगे। फिर यह नतीजा निकला कि वह तातारी लश्कर आया, उन्होंने शहर फ़तेह किया और लोगों का क़त्ले आम किया। ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन अत्तार रह० भी उन्हीं शहीद होने वालों में से थे।

मौलाना ताजमहमूद अमरोही रह० में तसलीम व रज़ा

जब रेशमी रुमाल की तहरीक चल रही थी। उस वक़्त औलिया किराम में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बड़ा ग़ुस्सा था। मौलाना ताज महमूद अमरोही रह० एक मौक़े पर बात करते हुए बड़े जलाल में आ गए और फ़रमाने लगे कि जी तो यूँ चाहता है कि एडवर्ड के महल में घुसकर अपने हाथों से उसका गला दबा दूँ मगर क्या करूं मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़्वाजा अब्दुलमालिक सिद्दीक़ी रह० में तसलीम व रज़ा

ख़्वाजा अब्दुलमालिक सिद्दीक़ी रह० एक महफ़िल में फ़रमाने लगे कि अगर मैं एक तवज्जेह करूं तो पूरे मजमे को तड़पाकर रख दूँ मगर क्या करूं मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रह० में तसलीम व रज़ा

एक बार ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रह० के सामने बताया

गया कि बादशाह बड़ा नाफ़रमान बनता चला जा रहा है। फ़रमाने लगे, अगर तसर्रुफ़ करूं तो बादशाह नंगे पाँव दौड़ता हुआ अभी चलकर यहाँ आ जाए मगर क्या करूं ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

असल करने वाला

मेरे दोस्तो! जब मर्ज़ी मौला की चलनी है तो मज्ज़ूबों के पीछे भागने के बजाए क्यों न हम अपने मौला की मर्ज़ी को अपने हक़ में करने की कोशिश कर लें। याद रखें कि जब हम अपने रब को मनाने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला अपने कारिन्दों में से किसी कारिन्दे को हमें फ़ैज़ पहुँचाने के लिए मुतवज्जेह फ़रमा देंगे। ज़ाहिर में तो उस कारिन्दे के ज़रिए काम होता हुआ नज़र आएगा मगर हकीक़त में मर्ज़ी उसी की चलेगी—

हुस्न का इंतिज़ाम होता है
इश्क़ का यूँही नाम होता है

जलवे दिखाने का इंतिज़ाम तो ख़ुद हुस्न ने किया होता है और नाम इश्क़ का लगा देते हैं। अल्लाह तआला हमें भी अपनी ज़ात के जमाल का मुशाहिदा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और रोज़े महशर हमें अपने पसंदीदा बंदों में शामिल फ़रमा दे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

शर्म व हया

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيمo بسم الله الرحمن الرحيمo

لقد كان لكم فى رسول الله اسوة حسنة. وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم

الحياء شعبة من الايمان او كما قال عليه الصلوة والسلام. سبحن ربك رب

العزة عما يصفونo وسلام على المرسلينo والحمد لله رب العالمينo

सीरते तैय्यबा के मुख़्तलिफ़ पहलू

रबीउल अव्वल के मुबारक महीने में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरते तैय्यबा के बारे में महफ़िलें की जाती हैं। किसी महफ़िल में विलादत बासआदत की बात होती है, किसी महफ़िल में इश्क़ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उनवान पर बात होती है, किसी महफ़िल में इत्तिबाए सुन्नत की बात होती है, किसी महफ़िल में उम्मत के बड़ों और इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उनवान पर बातचीत होती है। इस तरह सीरत तैय्यबा को उजागर करने के अलग-अलग अंदाज़ हैं।

عباراتنا شتى و حسنك واحد   و كل شىء الى ذات الجمال يشير

इबारत मुख़्तलिफ़, मज़मून सबका एक होता है और ये सब चीज़ें एक ही हस्ती के हुस्न व जमाल की तरफ़ इशारा करती हैं।

हया ईमान का शोबा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस मुबारक की तिलावत की गई। इर्शाद फ़रमाया ﴿الحياء شعبة من الايمان﴾ हया ईमान का शोबा है।

मोमिन हयादार होता है, उसकी ज़िंदगी पाकीज़ा होती है, अफ़ीफ़ ज़िंदगी होती है, पाकदामनी वाली ज़िंदगी होती है। इसी वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की उस पर ख़ास रहमतें नाज़िल होती हैं। गोया नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हया की इतनी तालीम दी कि उसे ईमान का शोबा क़रार दे दिया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शर्म व हया का आलम

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं जब कभी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक आँखों को देखती थी तो मुझे आपकी आँखों में वह हया नज़र आती तो मदीने तैय्यबा की कुँवारी लड़कियों में भी नहीं हुआ करती थी।

ग़ैरत का मक़ाम

हदीस पाक में आया है :

﴿لا ايمان لمن لا غيرة لهٗ.﴾

उसका ईमान ही नहीं जिसके अंदर ग़ैरत नहीं।

गोया मोमिन ग़य्यूर होता है। ग़य्यूर का क्या मतलब? ग़य्यूर का मतलब यह है कि वह बेहयाई और फ़हश कामों से दूर रहता

है। ऐसा इंसान गुनाहों से पाक ऐसी ज़िंदगी गुज़ारता है कि ग़ैरत उसका ओढ़ना बिछौना बन जाती है। इसलिए हदीस पाक में आया है कि ﴿الغيرة من الايمان.﴾ ग़ैरत ईमान का हिस्सा है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿انا اغير ولد آدم﴾ कि आदम अलैहिस्सलाम की जितनी औलाद है मैं उनमें से सबसे ज़्यादा ग़ैरतमंद हूँ ﴿والله اغير مني﴾ और अल्लाह तआला मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरत वाला है। इसलिए अल्लाह तआला ग़ैरत वाली ज़िंदगी को पसंद फ़रमाते हैं।

इस्लामी शरिअत का हुस्न

इस चीज़ को शरिअत ने पसंद किया कि इंसान पाकदामनी की ज़िंदगी गुज़ारे और अख़्लाक़ी गुनाहों से बचे। इस्लाम ने इफ़्फ़त व पाकदामनी का ऐसा सबक़ दिया है कि दुनिया के किसी मज़हब ने ऐसा सबक़ नहीं दिया। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم.﴾

ईमान वालों से कह दीजिए कि वे अपनी निगाहों को नीचा रखें।

शरिअत इस्लामी का यह हुस्न है कि मर्द को अपनी जगह तालीम दी और औरत को अपनी जगह तालीम दी ताकि वे दोनों गुनाहों से बच सकें। औरत से कहा कि तुम शरई ज़रूरत के बग़ैर अपने घर से न निकलो और अगर निकलना भी हो तो अपने जिस्म को पर्दे में छिपाओ। इसके अलावा हुक्म दिया कि रास्तों के बीच में चलने के बजाए किनारों पर चलो। तुम्हार चलना भी इस

अंदाज़ का हो कि कोई पहचान न सके कि तुम्हारी जवानी की उम्र है। अगर किसी तक़रीब में भी आना-जाना पड़े तो ऐसी ख़ुशबू इस्तेमाल न करो जो फैलने वाली हो। हदीस पाक में आया है कि औरत के लिए बेहतरीन ख़ुशबू वह है जिसका रंग ज़्यादा हो मगर फैलती कम हो। इसके अलावा फ़रमाया कि ऐसा लिबास मत पहनकर निकलो जिसको देखकर ग़ैर-महरम लोगों की निगाहें तुम पर पड़ें।

बेपर्दा औरत का अंजाम

बेपर्दा बाहर निकलने वाली औरत को सख़्ती से मना किया गया है। ﴿رب قاسية عارية يوم القيامة.﴾ वे औरतें जो पर्दा होकर अपने से घरों से बाहर निकलेंगी अल्लाह तआला रोज़े महशर उनका यह हश्र फ़रमाएंगे कि उनको नंगा करके जहन्नम में धक्का दिलवा देंगे। यह किस लिए? इसलिए कि उसने हया की चादर को ख़ुद उतार दिया था।

यमन से मदीना तक शर्म व हया का आलम

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम में हया वाली सिफ़्त ऐसी कूट-कूटकर भर दी थी कि उनकी निगाहें ग़ैर की तरफ़ उठती ही नहीं थीं। इसलिए हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में एक औरत यमन से चली और मदीना अकेली आई। उसने महीनों का सफ़र किया, वह रात को भी कहीं ठहरती होगी, उसके पास माल भी था, उसे जान और अपनी इज़्ज़त व नामूस का भी ख़तरा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

अन्हु को पता चला तो आपने उन्हें बुलवाया। पहले यह पूछा कि अकेली क्यों आई हो? उसके कोई उज़्र पेश किया। फिर आपने एक सवाल पूछा कि तुम जवान उम्र औरत हो, तुमने अकेले सफ़र किया, आबादियों से भी गुज़रीं, वीरानों से भी गुज़रीं, तुम्हें जान व माल व इज़्ज़त व आबरू का भी ख़तरा था। यह बताओ तुमने यमन से मदीना तक के लोगों को किस हाल में पाया? उसने जवाब दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं यमन से चली और मदीना तक पहुँची और मैंने रास्ते के सब लोगों को ऐसे पाया कि जैसा ये सब के सब एक माँ-बाप की औलाद होते हैं। उन सबकी निगाहें इतनी पाकीज़ा थीं कि जवान उम्र औरत सैकड़ों मील का सफ़र करती थी और उसे अपनी इज़्ज़त व आबरू का कोई ख़तरा नहीं हुआ करता था।

बातिन पर मेहनत करने की ज़रूरत

यह दीने इस्लाम का हुस्न है कि वह इंसान के अंदर से शहवतों, ख़्वाहिशों और शैतानियत को निकालकर रख देता है। जब कोई बंदा यह देखे कि मेरी निगाह पाक नहीं है, मेरे दिल में तूफ़ान उठते हैं, मेरे दिल में तमन्नाएं जन्म लेती हैं और ग़लत ख़्यालात परेशान किए रखते हैं तो वह समझ ले कि अभी मेरे बातिन पर मैल है और मेरा मामला बहुत बिगड़ा हुआ है। हमारी निगाह की नापाकी और नामुसलमानी इस बात की दलील होती है कि हमें अपने बातिन पर मेहनत करने की ज़रूरत है। जिस बंदे ने अपने बातिन पर मेहनत की अल्लाह तआला ने उसे पाकीज़ा ज़िंदगी अता की।

आजकल की तबियतों की हालत

आजकल के नौजवान अक्सर इस मामले में परेशान रहते हैं। उसकी दो बुनियादी वजहें हैं। एक तो बे पर्दगी बढ़ती जा रही है और दूसरा यह कि वे अपने ऊपर मेहनत नहीं करते इसलिए आग की तरह होते हैं। हज़रत अक्दस थानवी रह० ने लिखा है कि आम आदमी का नफ़्स ऐसा होता है जैसे माचिस की तीली होती है कि आग उसमें पहले ही भरी होती है सिर्फ़ रगड़ने की देर होती है, रगड़ लगी और आग जली। आजकल की तबियतों का हाल ऐसा ही है। ख़बासत और ज़ुलमत पहले ही भरी होती है। बस गुनाह का मौक़ा मिला और इंसान के अदंर से वह शैतानियत ज़ाहिर हो गई। यह चीज़ हमारे लिए ख़तरे की अलामत है इसलिए हमें अपने ऊपर मेहनत करनी है ताकि हमारी निगाह की नामुसलमानी दूर हो जाए। सच्ची बात अर्ज़ करूं कि आजकल हमारी निगाहें शिकारी कुत्तों की तरह दूसरों पर पड़ रही होती हैं। जिधर भी निगाहें उठती हैं हवस भरी होती हैं।

बातिनी बीमारियों की अलामत

पाकीज़ा निगाहें सैकड़ों में से कोई एक होती होगी। इस बारे में उम्र का कोई फ़र्क़ नहीं। आज जवान की निगाह भी वैसी और बूढ़ों की निगाह भी वैसी बनी हुई है। पढ़े-लिखे की निगाह और अनपढ़ की निगाह में कोई फ़र्क़ नहीं। जब बातिन पर मेहनत नहीं की होगी तो फिर नमाज़ पढ़ने के बाद बाहर निकलेंगे तो कुछ क़दम के फ़ासले पर निगाहें फिर इधर-उधर ढूंढना शुरू कर देंगी। यह चीज़ बातिनी बीमारियों की निशानी होती है। और इसी के

इलाज के लिए मशाइख़ की सोहबत में आना होता है। जैसे इंसान को टीबी की बीमारी हो जाए या दिल की तो वह हस्पताल में डाक्टर की तरफ़ रुजू करता है। इसी तरह यह बातिनी बीमारी इस बात की निशानी है कि हमारा कोई रूहानी मर्ज़ बहुत बढ़ रहा है और हमें अब किसी न किसी रूहानी इलाज करने वाले की ज़रूरत है। जब इंसान कामिलीन के पास आकर अपनी निगाह की नामुसलमानी दूर करवाने की कोशिश करता है तो अल्लाह तआला उन हज़रात की सोहबत में आने पर इंसान को पाकीज़ा ज़िंदगी अता फ़रमा देते हैं और उसकी निगाह मुसलमान बन जाती है।

ज़बां से कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल ओ निगाहं मुसलमां नहीं तो कुछ भी नहीं

मोमिन की मिसाल

ग़ौर कीजिए कि अगर आदमी के लिए फाँसी का हुक्म हो चुका हो और वह काल कोठरी में बंद हो तो क्या वह इस तन्हाई में गुनाहों के बारे में सोचेगा? जिस आदमी को यक़ीन हो कि कल मुझे फाँसी मिलनी है, तन्हाई और अंधेरे के बावजूद उसका ज़हन गुनाह की तरफ़ नहीं जाएगा। उसके दिल पर ग़म सवार होगा। उसको पता है कि मेरे लिए आज मौत का फ़ैसला हो चुका है। मोमिन की मिसाल बिल्कुल इसी तरह होती है कि उसे अपनी मौत का यक़ीन होता है कि आनी है मगर उसे पता नहीं होता कि वह कब आनी है। इसलिए इसकी मिसाल काल कोठरी के उस मुजरिम की तरह होती है। इसीलिए फ़रमाया ﴾الدنيا سجن المؤمن﴿ कि दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाने की तरह है। उसको नहीं मालूम होता कि किस वक़्त मौत आएगी और इंसान का दरवाज़ा

खटखटा दे। हमें क्या पता है कि हम यहाँ बैठे हैं और मौत चलते-चलते हमारे घर की दहलीज़ पर आ चुकी हो।

मौत कब आएगी?

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने यारों से पूछा, मौत के बारे में क्या जानते हो? किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! सुबह क्या होती है तो मुझे यक़ीन नहीं होता कि रात भी आएगी या नहीं आएगी? दूसरे ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! मैं चार रक्अत की नीयत बांधता हूँ तो मुझे यक़ीन नहीं होता कि मैं पूरी भी कर सकूंगा या नहीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, मेरा यह हाल है कि जैसे नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहा हो और उसने एक तरफ़ सलाम फेर दिया हो उसे यह भी नहीं पता होता कि अब मैं दूसरी तरफ़ सलाम फेर भी सकूंगा या नहीं यानी ज़िंदगी के बारे में इतना भी यक़ीन नहीं। जिन हज़रात के दिलों में यह ध्यान पैदा हो जाता है फिर अल्लाह तआला उनकी ज़िंदगी सुन्नत और शरिअत के मुताबिक़ बना दिया करते हैं।

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० में शर्म व हया

हम अपने असलाफ़ की ज़िंदगियों को देखें तो यह चीज़ें हमें उनमें अजीब व ग़रीब नज़र आती हैं। इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रह० एक बार तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक जगह एक आदमी हमाम से नहाकर निकला तो उसने ऐसा तहबंद बांधा हुआ था कि उसके घुटनों के ऊपर था यानी जिस्म का वह हिस्सा जो मर्द के लिए छिपना ज़रूरी है वह नंगा था तो आपने अपनी आँखों को

बंद कर लिया। वह आदमी क़रीब आया और कहने लगा, ऐ नौमान! आप कब से अंधे हो गए? आपने फ़रमाया, जब से तुझ से हया रुख़सत हुई तब से मैं अंधा हो गया हूँ।

एक औरत की पाकदामनी से क़हतसाली ख़त्म

हज़रत शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह० एक अजीब बात लिखते हैं कि जिस इंसान की ज़िंदगी पाकदामनी की ज़िंदगी होगी अल्लाह तआला उस इंसान की दुआओं को भी रद्द नहीं फ़रमाया करते। उसके बाद उन्होंने एक वाक़िआ नक़ल किया। फ़रमाते हैं कि देहली में एक दफ़ा क़हत पड़ा। बारिश नहीं होती थी। लोग परेशान, जानवर पेरशान, चरिन्दे परिन्दे परेशान, न सब्ज़ा था न पानी था, हर तरफ़ ख़ुश्की ही ख़ुश्की नज़र आती थी। इस परेशानी के आलम में लोग उमला की ख़िदमत में आए कि आप हमारे लिए कोई दुआ कीजिए। उन्होंने नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिए शहर क़े सब लोगों को बुलाया। छोटे-बड़े, मर्द व औरत सब इकट्ठे हुए। उन्होंने नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला से रो-रो कर दुआएं मांगते दिन गुज़र गया मगर क़ुबूलियत के कोई आसार ज़ाहिर नहीं हो रहे थे।

जब असर का वक़्त हुआ तो देखा कि एक सवारी पर कोई सवार है और एक नौजवान आदमी उस सवारी की नकेल पकड़कर जा रहा है। वह क़रीब से गुज़रा तो रुका। उसने आकर पूछा कि लोग क्यों जमा हैं? बताया गया कि यह लोग अल्लाह तआला से उसकी रहमत की दुआ मांग रहे हैं मगर क़ुबूलियत के कोई आसार ज़ाहिर नहीं हो रहे हैं। वह कहने लगा, अच्छा मैं दुआ मांगता हूँ। वह आदमी सवारी के तरफ़ गया और वहाँ जाकर

पता नहीं उसने क्या बात कही कि थोड़ी देर के बाद आसमान पर बादल आ गए और सब ने देखा कि छम-छम बारिश बरसने लगी। सब हैरान थे। जिन उलमा को उस लड़के की बात का पता था वह उसके पीछे गए कि हम पूछें कि इस बात में क्या राज़ था? जब उससे जाकर पूछा कि अल्लाह तआला की यह रहमत कैसे आई? तो वह कहने लगा कि इस सवारी पर मेरी माँ सवार थीं। उन्होंने पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारी, पाकदामनी वाली ज़िंदगी गुज़ारी, यह अफ़ीफ़ा ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरत है। जब मुझे पता चला कि आप की दुआ क़ुबूल नहीं हो रही है तो मैं उनके पास आया और उनकी चादर का कोना पकड़कर दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मैं उस माँ का बेटा हूं जिसने पाकदामनी की ज़िंदगी गुज़ारी। ऐ अल्लाह! अगर आप को यह अमल क़ुबूल है तो आप रहमत की बारिश अता फ़रमा दीजिए। अभी दुआ मांगी ही थी कि परवरदिगार ने रहमत की बारिश अता फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

शर्म व हया से कारोबारी परेशानी का ख़ात्मा

आजकल अक्सर लोगों को रिज़्क़ की परेशानी होती है। हर तीसरा बंदा यह कहेगा कि या तो जिन्न का असर है या काले इल्म का असर है। कहते हैं कि पता नहीं किसी ने बांधा हुआ है। अज़ीब व ग़रीब ज़िंदगियां हैं। यह नहीं देखते कि यह हमारे आमाल शरिअत व सुन्नत के मुताबिक़ हैं या ख़िलाफ़ हैं। हक़ीक़त यह है कि हमारी बद आमालियों ने हमें बांधा हुआ होता है। हमारी बद आमालियां की वजह से रिज़्क़ बंधा हुआ होता है और अल्लाह तआला ने इंसान को परेशान किया हुआ होता है। इसलिए अपने आमाल को संवारकर ज़िंदगियों को पाकीज़ा बनाने

की ज़रूरत है ताकि अल्लाह तआला की हमारे ऊपर रहमतें आएं और हमारी ज़िंदगियों में बहार पैदा कर दें। यह चीज़ कब आएगी? जब हमारी ज़िंदगियों में हया होगी और हमारी निगाहें पाक होंगी।

ईमान का मज़ा हासिल करने का तरीक़

हमें चाहिए कि हम जब रास्तों पर चल रहे हों तो अपनी निगाहों को नीचे रखें। हदीस पाक में आया है कि जो बंदा अपनी निगाहों को ग़ैर-महरम से महफ़ूज़ कर लेता है अल्लाह तआला उसके बदले उसको ईमान की हलावत अता फ़रमा देते हैं। बाज़ हदीसों में फ़रमाया कि अल्लाह तआला उसके बदले उसको इबादतों में लज़्ज़त अता फ़रमा देते हैं। अब आज नमाज़ का सुरूर क्यों हासिल नहीं? सज्दे के अंदर मज़ा क्यों नहीं आता? तिलावत क़ुरआन में मज़ा क्यों नसीब नहीं होता। इसलिए कि निगाहें पाक नहीं होतीं।

क़ुबूलियते दुआ का लम्हा

एक जगह पर अजीब बात लिखी हुई थी कि जब आदमी किसी गुनाह पर ताक़त रखता है मगर अल्लाह तआला के डर की वजह से वह गुनाह नहीं करता, उस लम्हे वह जो भी दुआ मांगता है अल्लाह तआला उस दुआ को क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। तजुरिबे वाली बात है, आप इसे आज़मा कर देख लीजिए कि आप कहीं जा रहे हों, जी चाहता है कि निगाह उठाकर देखें कि सामने कौन है मगर आप अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ करते हुए निगाहों को नीचा करते हैं तो उस वक़्त आप अल्लाह तआला से जो भी दुआ मांगेगे, अपनी

ज़िंदगी में उसे अपनी आँखों से पूरा होते हुए देखेंगे।

ज़िना के क़रीब भी न जाओ

इस्लाम ने हमें न सिर्फ़ ज़िना करने से मना किया है बल्कि इन तमाम बातों से मना किया जो इंसान को ज़िना की तरफ़ ले जाती हैं। फ़रमाया ﴿لا تقربوا الزنا﴾ तुम ज़िना के क़रीब भी न जाओ। इसलिए कि यह रास्ता ही अल्लाह का नापसंद है।

बदकारी की वजह से उम्र में कमी

हदीस पाक में आया है कि जो आदमी बदकारी की ज़िंदगी गुज़ारता है अल्लाह तआला उसकी उम्र को कम कर दिया करते हैं। उम्र को कम करने का क्या मतलब? इसके दो मतबल हैं, एक मतलब तो यह है साठ साल की उम्र थी और ऐसी बीमारी आई कि यह पचास में मर गया। यूं उम्र कम कर दी गई और दूसरा मतलब मुहद्दिसीन ने यह लिखा है कि आदमी की साठ साल की उम्र थी मगर अल्लाह तआला ने ऐसी बीमारियों में फंसा कर दिया कि उसकी ज़िंदगी सेहतमंद ज़िंदगी के बजाए बीमारों वाली ज़िंदगी होती है और उसके लिए परेशानी का सबब बन जाया करती है।

आप देखेंगे कि यह चीज़ें आजकल आम नज़र आती हैं कि आपको चालीस साल की उम्र के बूढ़े नज़र आएंगे। ऐसे लोग नज़र आएंगे जिनकी उम्र चालीस साल की भी नहीं होती। कहते हैं कि क्या करें खड़े होते हैं तो आँखों के आगे अंधेरा आ जाता है कि कोई काम नहीं कर सकते।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में शर्म व हया का आलम

हदीस पाक में आया है कि हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जगह पर जिहाद के लिए क़दम बढ़ाया। आगे दुश्मन थे। उन्होंने सोचा कि हम इनको किस तरह इनका दीन के रास्ते से हटाएं। लिहाज़ा उन्होंने अपनी औरतों से कहा बेपर्दा होकर गलियों में निकल आएं ताकि इनकी निगाहें इधर-उधर उठें। इस तरह उनके साथ अल्लाह तआला की जो मदद है वह ख़त्म हो जाएगी। जब हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा तो उन्होंने बुलंद आवाज़ से ऐलान किया:

﴿قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم.﴾

ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहों को नीचा रखें।

यह ऐलान सुनकर पूरे लश्कर के लोगों ने अपनी निगाहों को इस तरह नीचे कर लिया कि किसी की निगाह किसी ग़ैर औरत पर न पड़ी। यहाँ तक कि लश्कर के लोग जब लौटकर आए तो उनसे किसी ने पूछा कि यह तो बताइए कि वहाँ के मकानों की ऊँचाई कैसी थी? फ़रमाने लगे कि जब अमीर लश्कर ने नज़रें झुकाने का हुक्म दिया तो हमने मकानों की ऊँचाई की तरफ़ ध्यान ही न दिया, सुब्हानअल्लाह।

जल्दी बंद होने वाला दरवाज़ा

अल्लाह तआला ने इंसान की आँखों पर जो पर्दा बनाया है वह

भी इतनी जल्दी काम करने वाला (Quick-acting) बनाया है कि पलक झपकना एक कहावत बन गई। वक़्त की कमी की बात करनी हो तो कहते हैं कि जी पलक झपकने की देर में यानी थोड़ी सी देर में। अल्लाह तआला ने इस दरवाज़े को जल्दी बंद होने वाला इसलिए बना दिया है कि मेरे बंदो! कल क़यामत के दिन यह ऐतिराज़ न कर सको कि रब्बे करीम! ग़ैर-महरम सामने थी, हम चाहते थे कि आँखें बंद करें मगर हमें आँखें बंद करने मे वक़्त लग गया था।

दो आज़ा की दोहरी हिफ़ाज़त

इंसान के जिस्म के दो आज़ा ऐसे हैं कि जिनको अल्लाह तआला ने दोहरी हिफ़ाज़त (Double protection) दी हुई है। एक ज़बान, देखिए कि उसके चारों तरफ़ दो दीवारें हैं। एक दाँतों की दीवार और एक होंटों की दीवार। इसको दो दीवारों में इसलिए बंद किया है कि ज़बान की दो दीवारों को खोलने से पहले ज़रा तोल लो कि तुम कौन सी बात कर रहे हो? इस ज़बान से ऐसे-ऐसे कलिमे निकल सकते हैं कि जो काफ़िर को भी मोमिन बना और सकते हैं और ग़लत हों तो मोमिन को भी कुफ़्र की हदों में दाख़िल कर देते हैं।

दूसरे इंसान के जिस्म के जो पोशीदा आज़ा हैं उनके ऊपर हमेशा दो कपड़े होते हैं। बाज़ुओं पर एक कपड़ा, पेट पर एक कपड़ा, टांगों पर एक कपड़ा लेकिन पोशीदा आज़ा पर हमेशा दो कपड़े। एक ऊपर क़मीज़ और दूसरे नीचे अज़ारबंद। दो कपड़ों में छिपाने की सुन्नत इसलिए बनाई गई है कि ऐ मोमिन! ज़रा कपड़ा हटाने से पहले याद रखना कि तू कितने बड़े गुनाह को कर

रहा है, अल्लाह की अज़मत से डर जाना, इस गुनाह से बच जाना, ऐसा न हो कि तेरे लिए यह दुनिया व आख़िरत में ज़िल्लत व रुसवाई का सबब बन जाए।

सैय्यदना उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु में शर्म व हया

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने यारों को ऐसी हया सिखाई कि उस्मान ग़नी से अल्लाह के फ़रिश्ते भी हया करते थे। अल्लाह तआला ने उनको ऐसी पाकीज़ा ज़िंदगी अता की हुई थी।

शर्म व हया पर अल्लाह की मदद के करिश्मे

अल्लाह तआला हयादार इंसान की ज़िंदगी में बरकत देते हैं। उसको परेशानियों से भी महफ़ूज़ फ़रमा लेते हैं और अल्लाह तआला खुद उसके मुहाफ़िज़ बन जाते हैं। ऐसे नेक इंसान को ज़िंदगी में अगर कोई परेशानी आए तो अल्लाह तआला खुद उसकी परेशानियों का हल निकाल लिया करते हैं।

देखिए, इस दुनिया के अंदर कुछ वाक़िआत ऐसे भी हुए कि लोगों ने कुछ बेगुनाह लोगों पर इल्ज़ाम लगाए तो अल्लाह तआला का ग़ैबी निज़ाम हरकत में आ गया। अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी कैसी पुश्त पनाही की गई और उन्हें कैसे निजात दी गई। इसके वाक़िआत हम सुनते रहते हैं। इस वक़्त यह आजिज़ कुछ वाक़िआत आपकी ख़िदमत में पेश कर देता है

बीबी मरयम की पाकदामनी की गवाही

बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा अल्लाह तआला की एक नेक

बंदी गुज़री हैं। अभी पैदा भी नहीं हुई, माँ के पेट में हैं, उनकी माँ उनके लिए दुआ कर रही हैं :

﴿رب انی نذرت لك ما فی بطنی محررا فتقبل منی.﴾

ऐ अल्लाह! मेरे पेट में जो भी है मैं उसे तेरे लिए वक़्फ़ कर दिया, तू उसे क़ुबूल फ़रमा ले।

इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿فتقبلها ربها بقبول حسن وانبتها نباتا حسنا و كفلها زكريا.﴾

हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम उनके ख़ालू थे, वह उनके सरपरस्त बने।

हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा मस्जिद के अंदर ऐतिकाफ़ की हालत में रहतीं और सारा दिन ज़िक्र व इबादत में लगी रहतीं। अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसी रहमत होती है कि उसके लिए बेमौसम फल भेजे गए। लोगों के अंदर उनकी इबादत व तक़्वे की धाक बैठी हुई थी। लोग बहुत इज़्ज़त करते थे।

उनके साथ एक वाक़िआ पेश आया। क़ुरआन पाक ने इस वाक़िए को तफ़्सील से बयान किया है और एक सूरः का नाम भी सूरः मरयम रखा। फ़रमाया :

﴿واذكر فی الكتب مريم اذ انتبذت من اهلها مكانا شرقيا.﴾

उन्होंने ग़ुस्ल के लिए अपने मकान मश्रिक़ी सिम्त को अपने लिए मख़्सूस कर लिया। ﴿مكان شرقيا﴾ से मुफ़स्सिरीन लिखा है कि ईसाईयों ने पूरब को इसलिए क़िब्ला बनाया कि वह पूरब की तरफ़ गयीं। जब वह पूरब की तरफ़ गयीं ﴿فاتخذت من دونهم حجابا﴾ उन्होंने अपने इर्द-गिर्द पर्दा तान लिया ताकि तन्हाई हो जाए और

गुस्ल कर सकें। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इतने में ﴿فارسلنا اليها روحنا﴾ हमने उसकी तरफ़ अपने रूहुल अमीनल को भेजा ﴿فتمثل لها بشرا سويا﴾ और वह एक भरपूर इंसान की शक्ल में उस के पास पहुँचे। जब तन्हाई में मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा के सामने एक भरपूर इंसान आया तो उस वक़्त वह घबरा गयीं। वह आज के वक़्त की कोई बिगड़ी हुई बेगम नहीं थीं कि एक ग़ैर आदमी को तन्हाई में देखकर मुस्करा देतीं। वह अल्लाह पाक की नेक बंदी थी। लिहाज़ा उसके चेहरे पर घबराहट के आसार नज़र आए।

﴿اني اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا.﴾

मैं तुझ से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पनाह मांगती हूँ कि तुझ से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए, तेरे चेहरे से तो तक़्वा ज़ाहिर होता है।

उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पहचान लिया कि बीबी मरयम घबरा गई इसलिए उन्होंने फ़ौरन अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचा दिया कि ﴿انما انا رسول ربك﴾ मैं तेरे रब का भेजा हुआ नुमाइंदा हूँ ﴿لاهب لك غلما زكيا﴾ ताकि तुझे सुथरा बेटा दे।

अब इस बात को सुनकर मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की परेशानी बजाए कम होने के उल्टा और ज़्यादा बढ़ गई। मरयम सोचने लगीं कि मैं पहले तो इससे अल्लाह की पनाह मांग रही थी मगर जो इसने बात कह दी उसने तो मुझे और ज़्यादा परेशान कर दिया। लिहाज़ा कहने लगीं ﴿انى يكون لى غلم﴾ मेरे बेटा कैसे हो सकता है? ﴿ولم يمسسنى بشر﴾ न मुझे किसी बशर ने छुआ ﴿ولم اك بغيا﴾ और न मैंने कोई बुराई का काम किया। मरयम जानती थीं कि बेटा होने के लिए दो सबब हुआ करते हैं, या निकाह के ज़रिए या गुनाह के ज़रिए। क्योंकि उनकी ज़िंदगी में दोनों काम

नहीं थे इसलिए मरयम कहने लगीं कि जब सबब मौजूद नहीं तो मेरे बेटा कैसे पैदा होगा? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿قال كذلك﴾ कि ऐसा ही है कि न तेरा निकाह हुआ और न तूने गुनाह किया। ﴿كذلك﴾ 'कज़ालिका' के लफ़्ज़ के साथ अल्लाह तआला ने मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी पर मुहर लगा दी। अल्लाह तआला हर एक को ऐसी बेटी अता फ़रमाए जिसकी पाकदामनी पर ऐसी मुहर लगी हुई हो। आगे फ़रमाया ﴿قال ربك هو علي هين﴾ तेरे परवरदिगार ने कहा कि मेरे लिए आसान है। मरियम! यह बेटा तुझे परवरदिगार ने देना है किसी ज़ुल्फ़ों वाली सरकार नहीं देना, इसलिए तुझे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं।

उसी वक़्त मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा को हमल के आसार महसूस होने शुरू हो गए। उस वक़्त मरयम परेशान हो गयीं। वह खजूर के एक पेड़ के साथ जाकर बैठ गयीं। जिब्राईल तो चले गए मगर बीबी मरयम ग़मज़दा हैं, परेशान हैं, जिंदगी का गुज़रा ज़माना सामने है। वह दिल ही दिल में कहने लगीं, ऐ अल्लाह! मैं तो तेरी इबादत करते हुए उम्र गुज़ारने वाली बंदी हूँ, मैंने अपनी उम्र एतिकाफ़ में गुजारी, लोगों में मेरी नेकी और तक़्वे के चर्चे हैं मगर आज मैं इस हाल में बैठी हुई हूँ कि जब लोगों के सामने यह बात ज़ाहिर होगी तो मैं उनको क्या चेहरा दिखाऊँगी, मेरी सारी इबादत पर पानी फिर जाएगा, लोगों में बदनामी होगी, मेरी ज़िंदगी कैसे गुज़री और यह मामला कैसा पेश आया।

मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा उस पेड़ के साथ ऐसे बैठीं जैसे कोई हारा हुआ जरनैल हुआ करता है। उस वक़्त इतनी घबराहट थी कि दिल कह रहा था कि इस ज़िंदगी से तो मर जाना बेहतर है।

लिहाज़ा कहने लगी :

﴿يا ليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا.﴾

ऐ काश! मैं तो इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी चीज़ बन चुकी होती।

मालूम हुआ कि जो अफ़ीफ़ा औरतें होती हैं उन्हें अपनी बदनामी और बेइज़्ज़ती से हमेशा डर लगा करता है। वह अल्लाह की पनाह मांगती हैं, वे मर जाने को पसंद करती हैं मगर कोई ऐसा काम नहीं करतीं। जब बीबी मरयम ने ऐसी बात कही तो ﴿فناداها من تحتها﴾ उनको फिर नीचे से एक आवाज़ आई। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह दोबारा जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने दोबारा कलाम किया था और बाज़ ने कहा कि अल्लाह तआला ने कलाम फ़रमाया। बहरहाल उनको फ़रमाया गया ﴿لا تحزنى﴾ मरियम! तो परेशान न हो, ये रब की बातें हैं। जब उसने तुझे यह निशानी दी तो वह परवरदिगार तेरी पासबानी भी करेगा। फ़रमाया, यह जो तुम्हें अपने क़रीब पेड़ नज़र आ रहा है उस पर हमने खजूरें लगा दीं हैं, तुम खजूर के इस पेड़ को हिलाओ :

﴿وهزى اليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا.﴾

तुम्हारे ऊपर तर खजूर गिरेंगी, उनको खा लेना और तुम्हारे नीचे पानी जारी कर दिया गया है उसको पी लेना। उसके बाद जब तुम्हारे हाँ बच्चे की विलादत हो तो उस बच्चे जबीन पर नबुव्वत के नूर की किरने फूटते देखकर उस बच्चे की जबीन को बोसे देना। उससे तुम्हारे दिल को तसल्ली हो जाएगी। मरियम! अगर लोग तुझ से पूछें कि यह क्या मामला है तो कहना ﴿انى

﴿نذرت للرحمٰن صوما﴾ कि मैंने तो रहमान के लिए रोज़ा रखा हुआ है ﴿فلن اكلم اليوم انسيا﴾ आज किसी बंदे से भी मैं बात नहीं करूंगी। उस वक़्त की शरिअत में बोलने से भी रोज़ा टूट जाता था। उम्मते मुहम्मदिया के लिए अल्लाह तआला ने आसानी पैदा कर दी कि बोलने की इजाज़त अता फ़रमा दी। लिहाज़ा जब बीबी मरयम बच्चे को लेकर आती हैं ﴿فاتت به قومها تحمله﴾ बच्चे को जब सीने से लगाकर क़ौम में आती हैं तो वे हैरान हो जाते हैं ﴿قالوا يمريم لقد جئت شيئا﴾ कहने लगे, एक मरियम! तू यह क्या ग़ज़ब की चीज़ लेकर आ गई? ﴿يا اخت هارون﴾ ऐ हारून अलैहिस्सलाम की बहन! ﴿ما كان ابوك امرء سوء وما كانت امك بغيا﴾ न तेरा बाप ऐसा बुरा था और न तेरी माँ ऐसी बुरी थी, तू यह बुराई करके कैसे आई? मालूम हुआ कि औरत से जब कोई ग़ल्ती कोताही होती है तो उसके माँ-बाप और भाईयों पर बात जाती है। उसके महरम मर्दों पर बात जाया करती है।

जब क़ौम ने तानों के नश्तर चलाए तो उस वक़्त मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर ग़म तारी हुआ। मरयम बहुत परेशान हुईं और ﴿فاشارت اليه﴾ बच्चे की तरफ़ इशारा किया। कहना यह चाहती थीं कि मेरा सर मत खाओ, पूछना है तो इस बच्चे से पूछो यह कैसे पैदा हुआ? क़ौम ने बच्चे की तरफ़ देखा और कहा ﴿قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا﴾ कि गोद में पड़ा छोटा सा बच्चा कैसे बोल सकता है? मगर अल्लाह तआला ने अपनी एक पाकदामन बंदी के लिए निज़ाम को बदल कर रख दिया। फ़रमाया, मेरे प्यारे ईसा! बच्चे इस उम्र में बोला नहीं करते मगर आज तेरी माँ पर बोहतान लगाया जा रहा है, मैं अपने निज़ाम को बदलता हूँ, अब तुझे बोलना होगा और अपनी माँ की सफ़ाई की

गवाही देनी होगी। इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बोलते हैं ﴿انی عبد اللہ﴾ मैं अल्लाह का बंदा हूँ

اتٰنی الکتٰب وجعلنی نبیا وجعلنی مبارکا این ما

کنت واوصٰنی بالصلوٰۃ ما دمت حیا۔

सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईसा अलैहिस्सलाम की ज़बान से अपनी प्यारी बंदी की गवाही अता फ़रमा दी अल्लाह तआला ने हर दौर और हर ज़माने में अपने पाकदामन बंदों की, मासूम बच्चों की ज़बानों से पाकदामनी की गवाही दिलवाई।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाकदामनी की गवाही

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ भी आप जानते हैं कि उनकी पाकदामनी की गवाही भी एक छोटे बच्चे ने दी थी। तो जब कोई इंसान गुनाहों से बचता है, पाकदामनी की ज़िंदगी गुज़ारता है तो अल्लाह तआला उसकी इसी तरह हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं, उस की ख़ातिर बने हुए उसूलों को बदल दिया जाता है। अल्लाह तआला अपनी सुन्नत को छोड़कर अपनी क़ुदरत का इज़्हार कर देते हैं कि मैं अपनी क़ुदरत का इज़्हार यूँ भी कर सकता हूँ।

उम्मुल मोनिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की दास्ताने वफ़ा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली शादी हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से के साथ हुई। यह वह औरत

थीं जिनको अल्लाह तआला ने बड़ा शर्फ़ अता फ़रमाया था। जब निकाह होना था तो उन्होंने तिजारत के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तिजारत पर गए। उन्होंने अपने गुलाम मैसरा को आपके साथ भेजा कि पता करो कि सफ़र के हालात कैसे हैं? अल्लाह तआला ने आपको दो गुना फ़ायदा अता फ़रमाया। मैसरा ने आकर बड़ी अच्छी अच्छी बातें सुनायीं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का दिल बहुत ख़ुश हुआ कि जिस इंसान की अमानत और सदाक़त इतनी अच्छी है, वही ज़िंदगी का अच्छा साथी बन सकता है। लिहाज़ा आपने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत से तोहफ़े वग़ैरह दिए और आख़िर आपके चचा की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि अगर आप मेरे रिश्ते के लिए आना चाहते हैं तो मेरे भाई उमर से या मेरे वालिद से बात कीजिए। लिहाज़ा आपके चचा ने उनकी बात कही और आख़िर निकाह हुआ। निकाह में बीस ऊँट महर रखे गए और दो ऊँटों को ज़िब्ह किया गया था।

यह वह औरत थीं जिनको अल्लाह तआला ने बड़ा ऐज़ाज़ बख़्शा कि जब अल्लाह तआला का क़ुरआन नाज़िल हुआ, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से सुना तो उसके बाद आपने सब से पहले अपनी मोहतरम बीवी को यह बात सुनाई। इसलिए नबुव्वत की ज़बान से सबसे पहले क़ुरआन सुनने का शर्फ़ एक औरत को हासिल हुआ। इस उम्मत के मर्दों पर औरतों में से इस औरत को यह फ़ज़ीलत हासिल है जिसको अल्लाह के महबूब की मुबारक ज़बान से सबसे पहले क़ुरआन सुनने का शर्फ़ हासिल हुआ और इस उम्मत में से इस

औरत को ऐज़ाज़ हासिल हुआ कि उसने अपनी आँखों से मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को मुहम्मदुर्रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनते सबसे पहले देखा।

जब आप किसी वजह ग़मज़दा होते और फ़रमाते ﴿خشیت علی نفسی﴾ कि जब वह फ़रिश्ता आता है तो मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ होता है। आप फ़रमातीं थी ﴿کلا﴾ हर्गिज़ नहीं, अल्लाह तआला आपको ज़ाए नहीं फ़रमाएगा। अल्लाह तआला आपकी मदद करेगें। लिहाज़ा वह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देती थीं। हिजरत से तीन साल पहले 65 की उम्र में आपकी वफ़ात हुई।

सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी मुबारक

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़मगीन रहा करते थे। तसल्ली देने वाला जो ज़िंदगी का साथी था वह भी चला गया। उन दिनों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़म को बांटने वाला कोई नहीं था। हदीस पाक में आया है कि आपको ख़्वाब के अंदर एक शक्ल दिखाई गई। फ़रमाया, मेरे महबूब आप ग़मज़दा रहते हैं, हमने आपके लिए ज़िंदगी के साथी का चुनाव कर दिया है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जागे। आपने एक औरत को पैग़ाम भेजा कि मैंने इस तरह की एक लड़की देखी है, जिसके साथ परवरदिगार की तरफ़ से इशारा है कि यह तुम्हारे लिए ज़िंदगी की दूसरी साथी बनेगी। उन्होंने जवाब दिया कि यह तो

अबू बक्र की बेटी है जिसका नाम आएशा है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में दे दिया।

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़ुसूसियत

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी वह बीवी हैं जो कुँवारेपन में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आयीं। बाक़ी जितनी अज़वाजे मुताहिरात हैं वे सब की सब ऐसी थीं जिनकी पहले शादी हो चुकी थी या उनको तलाक़ हो चुकी थी या उनके ख़ाविंद वफ़ात पा चुके थे और बाद में उनका नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दोबारा निकाह हुआ बल्कि अगर मैं यूँ कह दूँ तो ग़लत न होगा कि आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा वह हस्ती हैं कि जिन्होंने जब बलूग़ की ज़िंदगी को शुरू किया तो उनकी निगाहों ने सबसे पहले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरे को देखा।

उम्मे अब्दुल्लाह आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से इतनी मुहब्बत थी कि आपने उनकी कुन्नियत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के नाम पर उम्मे अब्दुल्लाह रखी। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु उनके भांजे थे जो हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे थे। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को एक दफ़ा गोद में लेकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आयीं और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आप इनको शफ़क़त दीजिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने उनको प्यार भी फ़रमाया और दुआ भी दी और फ़रमाया, आएशा! तुम्हें मैं अब्दुल्लाह की कुन्नियत देता हूँ मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको प्यार का भी एक नाम 'हुमैरा' दिया हुआ था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुहब्बत

एक दफ़ा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा तशरीफ़ फ़रमा थीं। आपने इर्शाद फ़रमाया, आएशा! मुझे तुम से इतना प्यार है, मुझे तुम इतनी अच्छी लगती हो जैसे मक्खन और खजूर को मिलाकर खाया जाए, जितनी लज़्ज़त उसमें होती है मुझे तुम उतनी मरग़ूब हो। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़ौरन जवाब दिया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे आप शहद और मक्खन को मिलाकर खाने की तरह मरग़ूब हैं। अल्लाह के महबूब मुस्करा दिए कि मैंने तो मक्खन और खजूर की मिसाल दी थी लेकिन तूने कैसी अक़्लमंदी की बात कही।

हज़रत आएशा का इल्म व तक़्वे में मक़ाम

हज़रत अता बिन रबाह रह० इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० के उस्तादों में से हैं। वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने इल्म, तक़्वे और हुस्न व जमाल में उनको तमाम पाकीज़ा बीवियों से ज़्यादा रुत्बा अता किया था। बल्कि ज़हरी रह० ने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर हुज़ूर की सारी पाकीज़ा बीवियों के इल्म को जमा कर लिया जाए तो आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का इल्म फिर भी उनके इल्म से बढ़ जाएगा।

हज़रत आएशा का फ़िक़्ह में मुक़ाम

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने 2210 हदीसें रिवायत की हैं। आप फ़क़ीहा बनीं। सहाबा किराम में चालीस फ़ुक़्हा था जिनका ज़्यादा रुत्बा समझा जाता था। फिर उन चालीस में से भी चौदह ऐसे थे जिनका और भी ज़्यादा रुत्बा समझा जाता था, उनमें हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम भी आता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से उम्महातुल मोमिनीन को इख़्तियार

एक वक़्त ऐसा भी आया कि जब पाकीज़ा बीवियों को इख़्तियार दिया गया कि तुम चाहो तो ऐसी ज़िंदगी इख़्तियार करो, तुम्हें इतना माल व दौलत दे दिया जाता है मगर तुम अपनी ज़िंदगी गुज़ारना चाहो तो अल्लाह के महबूब के साथ ज़िंदगी गुज़ारो। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम बीवियों को इख़्तियार दे दिया था मगर हुमैरा से कहा तुम अपने माँ-बाप से मशवरा कर लेना। महबूब के दिल में यह बात थी कि कम उम्र है ऐसा न हो कोई और फ़ैसला कर ले। इसलिए माँ-बाप की शर्त लगा दी। आपको पता था कि ग़ुलाम की बेटी है वह तो अच्छा ही मशवरा देगा।

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी की गवाही

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़िंदगी में भी एक

अजीब वाक़िआ पेश आया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की भी अजीब मशीयत होती है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ज़वा बनी मुस्तलक़ में तशरीफ़ ले गए। जब आप वहाँ से वापस आने लगे तो क़ाफ़िले ने चलना था। क़ाफ़िले के लोग जैस-जैसे तैयार होते चलते रहते थे। सैकड़ों बल्कि हज़ारों ऊँट होते थे। चलते हुए भी घंटों लगा करते थे। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सोचा कि क़ाफ़िले ने जाना है पता नहीं कितना वक़्त लग जाए, क्यों न हो क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ हो जाऊँ। क़ज़ाए हाजत के लिए खेतों में जाया करते थे। लिहाज़ा आप ज़रा दूर चली गयीं ताकि फ़रागत हासिल कर सकें। जब फ़रागत हासिल करके वापस आयीं तो आप ने होवज में बैटना था जिसको सवारी के ऊपर रखा जाता था।

इतने में आपने महसूस किया कि मैंने गले में एक हार पहना हुआ था वह कहीं टूटकर गिर गया है। सोचा कि अभी तो रवाना होने में वक़्त होगा, मैं जाकर हार देख लेती हूँ। आप हार ढूंढने वापस तशरीफ़ ले गयीं। पीछे सहाबा किराम ने सोचा कि आप तशरीफ़ तो ले आयी थीं, लिहाज़ा होवज में बैठ गयी होंगी। इसलिए चार-पाँच आदमियों ने होवज को उठाकर ऊँट पर रख दिया। आपकी उम्र कम थी और वज़न भी कम था, चार-पाँच आदमी उठाने वाले तो उनको पता भी न चला कि आप अंदर बैठी हुई हैं या कि नहीं।

अब क़ाफ़िले के लोग तो वहाँ से चले गए। जब वापस आयीं तो आपने देखा कि वह जगह तो ख़ाली है और क़ाफ़िला जा चुका है। आपको इत्मिनान था कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चलेगा तो किसी न किसी को भेजेंगे, इसलिए

आप वहीं बैठ गयीं। थोड़ी देर के बाद नींद ग़ालिब आ गई। लिहाज़ा अपने ऊपर चादर ली और सो गयीं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक थी कि सहाबा में से किसी एक सहाबी को हुक्म दिया जाता कि जब सारा क़ाफ़िला चला जाए तो अगर रात का वक़्त हो तो सुबह के वक़्त वहाँ आकर देखें कि कहीं कोई चीज़ पीछे पड़ी तो नहीं रह गई। लिहाज़ा एक बदरी सहाबी हज़रत सफ़वान बिन मोतल रज़ियल्लाहु अन्हु जो पक्की उम्र के थे, उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस काम पर तैनात फ़रमाया था। वह जब उस जगह पर आए तो किसी को उस जगह पर लेटा हुआ पाया। क़रीब आए तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहतरम बीवी हैं। उन्होंने ऊँची आवाज़ में ﴿انا للّٰه و انا اليه راجعون﴾ 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा। उनकी आवाज़ सुनकर आपकी आँख खुल गई। आपने जो चादर अपने ऊपर ली हुई थी उससे अपने आपको पूरी तरह ढांप लिया। उन्होंने आपके लिए ऊँट को बिठाया, आप ऊपर बैठ गयीं, उन्होंने मुहार पकड़ी और चल पड़ें यहाँ तक कि उस क़ाफ़िले के पास पहुँच तो क़ाफ़िले में जो मुनाफ़िक़ मौजूद थे उन्होंने देखा तो कहने लगे कि इसमें तो कुछ न कुछ बात होगी। वे तो पहले ही ऐसे मौक़े की तलाश में थे जिससे मुसलमानों को परेशान कर सकें और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचा सकें। लिहाज़ा उन्हें बातें करने का मौक़ा मिल गया।

लिहाज़ा जब मदीना पहुँचे तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात का पता चला। आपको बड़ा सदमा हुआ।

लोगों में यह बात आम होना शुरू हो गई। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं आकर एक महीने तक बीमार रही और कमज़ोर भी हो गई। एक दिन मैं एक सहाबिया उम्मे मस्तह रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ क़ज़ाए हाजत के लिए रात को बाहर निकली। वह एक ज़गह पर क़दम उठाने लगीं तो उनको ठोकर लगी। उन्होंने अपने बेटे के बारे में बद्दुआ कर दी। मैंने कहा, तुम अपने बेटे के लिए बद्दुआ क्यों कर रही हो? वह कहने लगी तुम्हें पता नहीं कि वह तुम्हारे बारे में क्या बातें कर रहा है? मैंने पूछा कि क्या बात कह रहा है? उस वक़्त उन्होंने सारी तफ़्सील बता दी कि आपके बारे में इस वक़्त सारे शहर में यह बातें हो रही हैं। फ़रमाती हैं कि जब मैंने ये बातें सुनीं तो मेरे दिल पर बड़ा सदमा हुआ। मैं घर आई और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिज़ार करने लगी। आप जब मस्जिद से तश्रीफ़ लाए तो मैं आपके सामने आई और सलाम किया। आपने मेरे सलाम का जवाब दिया मगर चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया। मैं दूसरी तरफ़ से आई मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी निगाहें दूसरी तरफ़ कर लीं। आपकी ख़ामोश निगाहों ने मुझे बहुत सारी बातें सिखा दीं कि इस वक़्त महबूब की तबियत पर बोझ है और आप कोई बात नहीं करना चाहते।

मैंने सोचा कि चलो मैं अपने माँ-बाप के घर चली जाती हूँ ताकि सही हालात का पता चल सके। मैंने इजाज़त चाही, अल्लाह के महबूब ने इशारे से फ़रमा दिया कि हाँ चली जाओ। फ़रमाती हैं कि जब मैं वहाँ पहुँची तो मेरी वालिदा ने दरवाज़ा खोला। मैंने देखा कि मेरी वालिदा की आँखें रो-रो कर सुर्ख़ हो चुकी हैं, परेशान चेहरे के साथ खड़ी हैं। मैंने पूछा, अम्मी! क्या हुआ?

वालिदा ख़ामोश हैं। आँखों से आँसू टपकना शुरू हो गए। मैंने पूछा अम्मी! मेरे अब्बू किधर हैं? उन्होंने इशारा कर दिया। मैंने देखा कि चारपाई पर बैठे अल्लाह का कुरआन पढ़ रहे हैं। एक-एक आयत पर आँखों से आँसू टप-टप गिरते हैं। अल्लाह के हुज़ूर में दुआएं मांग रहें हैं। फ़रमाती हैं कि मैंने जब ग़म का माहौल देखा तो मेरी तबियत और ज़्यादा परेशान हो गई। मैंने सोचा कि मैं क्या करूं? जिन पर मुझे मान था, जो मेरी ज़िंदगी के रखवाले थे वह भी आज मुझसे नाराज़ हैं, माँ-बाप भी आज जुदा हैं, मैं आज कहाँ जाऊँ? दिल में ख़्याल आया कि क्यों न हो कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जेह हूँ। इसलिए फ़रमाती हैं कि मैंने वुज़ू किया और घर के एक कोने की तरफ़ जाने लगी। माँ ने पूछा आएशा! किधर जा रही हो? उनको डर लग गया था कि बेटी ग़मज़दा है, ऐसा न हो कोई बेटी कोई संगीन फैसला कर ले। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मैंने अम्मी को कहा, अम्मी! मैं अपने रब के हुज़ूर दुआएं करने जा रही हूँ। गोया यूँ कहना चाहती थीं कि अम्मी! हाईकोर्ट तो नाराज़ हो गए, अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ। फ़रमाती हैं कि मैंने मुसल्ला बिछाया और सज्दे में सर रखकर दुआएं मांगनी शुरू कीं कि ऐ मिस्कीनों के परवरदिगार! ऐ फ़रियादियों की फ़रियाद सुनने वाले अल्लाह! ऐ मज़लूमों के परवरदिगार! ऐ कमज़ोरों के सुनने वाले आक़ा! तेरे मक़्बूल बंदों पर जब भी कोई ऐसा वक़्त आया, अल्लाह! तूने ही उनकी मदद की, अल्लाह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर बात बनी तो भी आपने बरा'त दिलवाई, अल्लाह! मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर बात बनी थी तो आप ने ही उनकी पाकदामनी की गवाही लिवाई, अल्लाह! आज तेरे महबूब की हुमैरा तेरे दरवाज़े पर हाज़िर है और

फ़रियाद करती है कि मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें की जा रही हैं, परवरदिगार! तू हुमैरा की मदद फ़रमा। मेरे आक़ा ने भी इस वक़्त मेरे साथ बात करना छोड़ दी, अल्लाह! तेरे सिवा कोई ज़ात जो दुखी दिलों को तसल्ली दे सके, जो ग़मज़दा दिलों को इत्मिनान दे सके। रो-रो दुआएं कर रही हैं।

उधर दुआएं मांगी जा रही हैं और इधर आक़ा ने मस्जिद नबवी में मज्लिस मशावरत क़ाएम की हुई है। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तो घर में थे। बाक़ी सहाबा जमा थे। मुहद्दिसीन ने उसका अजीब मंज़र लिखा, फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ग़मज़दा बैठे थे, सहाबा किराम के चेहरों पर उदासी थी। उन्होंने अपने महबूब के चेहरे पर ग़मज़दा देखा जिसकी वजह से उनकी तबियत भी अजीब बन चुकी थी। लिहाज़ा कुछ सहाबा किराम सिसकियाँ ले-ले कर रो रहे थे। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने यारों से पूछा, इस मामले में तुम क्या मशवरा देते हो? सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, उमर! तुम इस मामले में क्या कहते हो? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर कहा, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआला ने आपको इज़्ज़त और शराफ़त बख़्शी, आपके बदन पर कोई मक्खी भी नहीं बैठती। जब अल्लाह तआला ने आपको इतना पाकीज़ा बनाया है कि उस पर एक गंदी मक्खी को बैठने की इजाज़त नहीं तो आपकी जीवन साथी ऐसी कैसे हो सकती हैं जिसके अंदर गुनाहों की गंदगी हो। इसलिए मुझे तो यह चीज़ ठीक नज़र नहीं आती। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, उस्मान! तुम बताओ क्या मामला हो सकता है? हज़रत उस्मान ने

नबुव्वत की सोहबत का हक़ अदा कर दिया। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! अल्लाह तआला ने आपको ऐसा बनाया कि बादल आपके सर पर साया किए रखता है, आपका साया ज़मीन पर नहीं पड़ता कि ऐसा न हो कि किसी का क़दम आपके साए पर पड़ जाए, जब अल्लाह तआला ने आपके अदब का इतना लिहाज़ फ़रमाया कि किसी ग़ैर के क़दम आपके साए पर नहीं पड़ सकते तो यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि किसी को आपकी मोहतरम बीवी पर क़ुदरत हासिल हो जाए। लिहाज़ा यह चीज़ तो हमारे वहम व गुमान से भी बाहर है। उनकी बात सुनकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ामोश हो गए। उसके बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, अली! तुम बताओ क्या मामला हो सकता है? हज़रत अली ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! एक बार आपके जूते के साथ गंदगी लगी हुई थी, आप चाहते थे कि पहन लें मगर अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा था और आपको इत्तिला दे दी थी कि आपके जूते के साथ गंदगी लगी हुई है। जब जूते पर गंदगी लगी हुई थी तो आपको बता दिया गया था अगर आपके घरवालों के साथ कोई ऐसा मामला होता तो आपको क्यों न बता दिया जाता। इसलिए यह बात मुझे ठीक नज़र नहीं आती। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर ख़ामोश हो गए। आपकी ग़मगीनी को देखकर हज़रत अली दोबारा बोले और कहने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अगर आपकी तबियत बहुत ज़्यादा ग़मज़दा है तो आप चाहें तो तलाक़ दे दें। आपके लिए बीवियों की कौन सी कमी है, अल्लाह तआला आपको कोई और जीवन साथी अता फ़रमा देंगे। उनकी यह बात

सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तड़पे और खड़े हो गए। उन्होंने उस वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के नबी आप यह इर्शाद फ़रमाइए कि यह निकाह आपने अपनी मर्ज़ी से किया था या आपको इशारे से बताया गया था? यह आपकी पसंद थी या किसी और की पसंद थी? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगली से ऊपर की तरफ़ इशारा किया कि यह तो मेरे रब की तरफ़ से इशारा था। हज़रत उमर फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह के नबी! अब आप मुझे छोड़ दीजिए और उन मुनाफ़िक़ों को छोड़ दीजिए, मेरी तलवार जाने और मुनाफ़िक़ों की गर्दनें जानें, वे ऐसी तौहीनी की बात कैसे कर सकते हैं। रब्बे करीम की पसंद पर वे ऐसी बातें कर रहे हों, यह नहीं हो सकता। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त हज़रत उमर को प्यार की निगाहों से देखा, गोया कह रहे हों कि उमर! अल्लाह तेरा निगहबान हो, तूने मेरे ग़म को हल्का कर दिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तबियत को इत्मिनान आ गया। आप उठे और मज्लिस बर्ख़ास्त हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के घर की तरफ़ जाते हैं कि मेरी हुमैरा किस हाल में है? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस्तक देते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ने दरवाज़ा खोला। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उनका रो-रो कर बुरा हाल हो चुका है। जब सिद्दीक़े अकबर की तरफ़ देखा तो उनकी आँखें भी रो-रो कर सुर्ख़ हो चुकी हैं और सूझ चुकी थीं। आपने पूछा हुमैरा नज़र नहीं आ रही, हुमैरा कहाँ हैं? उन्होंने कोने की तरफ़ इशारा किया। उस वक़्त हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु

अन्हा सज्दे में दुआएं मांग रही थीं। बाद में फ़रमाती हैं कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तशरीफ़ लाए थे तो मेरे दिल में बात आई थी कि मैं उसी वक़्त आक़ा के क़दमों में चिमट जाऊँ और जी भरकर रो लूँ कि मेरे साथ यह क्या मामला पेश आ रहा है मगर मेरे दिल ने कहा आएशा! तूने अपने रब के सामने अपनी फ़रियाद बयान कर ली है, अब अपने रब से ही मांग ले, तेरा रब तेरा निगहबान होगा। लिहाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हुमैरा! आपकी आवाज़ सुनते ही हुमैरा ने सज्दा पूरा किया और आकर चारपाई पर बैठ गयीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़रीब बैठ गए। आपने प्यार से समझाया कि अगर तुझसे कोई ऐसी ग़ल्ती हो गई है तो अपने रब से माफ़ी मांग ले। रब्बे करीम गुनाहों को माफ़ करने वाला है। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त तो मैं सब्र के साथ बैठी थी। आपकी यह बात सुनकर मेरे ज़ब्त के बांध टूट गए, मेरी आँखों से आँसू आना शुरू हो गए। मैं रोती रही मगर ख़ामोश थी। रोते हुए मैंने कहा, मैं वही बात कहूँगी जो जो यूसफ़ अलैहिस्सलाम के वालिद ने कही थी ﴿انما اشكوبثى وحزنى الى الله﴾ मैं अपना ग़म और शिकवा अपने रब से कहती हूँ। फ़रमाती हैं मैंने ये अल्फ़ाज़ कहे और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरए अनवर की तरफ़ देखा। आपकी पेशानी पर पसंदीदा पसीने के क़तरे देखे और आपके अंदर वह हसीन कपकपी देखी जो 'वही' के नाज़िल होने के वक़्त हुआ करती थी। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर ग़ुनूदगी सी तारी हो गई। आपने अपने ऊपर चादर कर ली। फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी। मेरे दिल में ख़्याल था कि अल्लाह तआला उनको इल्क़ा कर देंगे या नींद में कोई ख़्वाब दिखा

देंगे और वज़ाहत फ़रमा देंगे। मगर मेरे बाप और मेरी माँ पर कुछ लम्हे बड़े अजीब थे। मैंने अपने वालिद को देखा कि तड़प रहे थे कि 'वही' नाज़िल हो रही है, पता नहीं मेरी बेटी की क़िस्मत का क्या फ़ैसला होता है। वालिद की आँखों में भी आँसू और वालिदा की आँखों में भी आँसू! फ़रमाती हैं कि मैं आराम से बैठी थी। थोड़ी देर बाद मेरे आक़ा ने चेहराए अनवर से कपड़ा हटाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहराए अनवर कपड़े से ऐसे बाहर निकला जैसे बादल हटता है तो चौदहवीं का चाँद नज़र आता है। फ़रमाने लगीं, मैंने चेहराए अनवर पर बशाशत देखी, मैं समझ गई कि अल्लाह तआला ने रहमत फ़रमा दी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, आएशा! मुबारक हो, अल्लाह का कलाम आया है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है :

الخبيثت للخبيثين والخبيثون للخبيثت والطيبت

للطيبين والطيبون للطيبت اولئك مبرون مما يقولون.

अल्लाह तआला ने तेरी बराअत नाज़िल फ़रमा दी। फ़रमाती हैं कि उस वक़्त मेरी वालिदा फ़रमाने लगीं, आएशा! उठ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का शुक्रिया अदा फ़रमा। फ़रमाने लगीं, मेरी तवज्जेह रब की तरफ़ गई। फ़रमाने लगीं, मैं अपने रब का शुक्रिया अदा करती हूँ जिसने महबूब की हुमैरा की फरियाद को क़ुबूल फ़रमा लिया। उनकी पाकदामनी की गवाही में क़ुरआन पाक की अट्ठारह आयतें नाज़िल फ़रमा दी गयीं। यही नहीं उनकी बराअत नाज़िल फ़रमा दी गई बल्कि आगे फ़रमा दिया कि तुम्हें इतना अरसा जो परेशान रहना पड़ा उसके बदले में ﴿لهم

مغفرة واجر عظيم﴾ तुम्हारे लिए मग़फ़िरत और अल्लाह तआला की तरफ़ से बड़ा अज्र है।

जब पाकदामन इंसान की ज़िंदगी में परेशानी आती है तो फिर अल्लाह तआला ख़ुद उनकी पुश्तपनाही फ़रमा दिया करते हैं। आज भी जो इंसान नेकोकारी की ज़िंदगी और परहेज़गारी की ज़िंदगी बसर करेगा अल्लाह तआला की मदद व नुसरत उसके साथ होगी। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात कितनी अच्छी हैं कि आपने इस बात से मना फ़रमाया कि कोई भी ऐसा काम किया जाए जो हया के तक़ाज़ों के ख़िलाफ़ हो। आपने एक-एक सहाबी को हया का ऐसा नमूना बना दिया था कि उनकी निगाहें पाकीज़ा, उनका दिल पाकीज़ा और उनकी ज़िंदगी गुनाहों से पाकीज़ा होती थी। अल्लाह तआला हमें भी उनकी पाकदामनी वाली ज़िंदगियों का नमूना अता फ़रमा दे और हमें भी हया और ग़ैरत वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

इस्लाम में बेटी का मक़ाम

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी के बारे में ऐसी तालीमात हैं कि आपने फ़रमाया कि बाप अगर घर आए, बेटे भी हों और बेटी भी तो अगर कोई चीज़ लाया है तो उसको चाहिए कि अपनी बेटी को चीज़ पहले दे। इसलिए कि वह चार दीवारी में रहती है और वह बाप के रहम की ज़्यादा हक़दार है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक

थी कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो आप अपने घर जाने से पहले हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर जाया करते थे आप जब अपने घर वापस तशरीफ़ फ़रमा होते और हज़रत फ़ातिमा आती थीं तो आप अपनी बेटी को देखकर खड़े हो जाते थे और उनको बिठाकर फिर आप बैठा करते थे।

इस्लाम में बहन का मक़ाम

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहन की इज़्ज़त करने की भी तालीम दी। लिहाज़ा शीमा जो हलीमा साअदिया रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटी थीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचपन में साथ उठाकर ले जाया करती थीं, उनके बारे में आया है कि जब क़बीला साअद पर फ़तेह हासिल की गई तो उनको भी गिरफ़्तार करके लाया गया। उन्होंने सहाबा से कहा, तुम मुझे गिरफ़्तार करते हो, मैं तुम्हारे नबी की बहन हूँ, मैंने उन्हें गोद में खिलाया है, मैं उनके लिए पानी भरकर लाया करती थी, मैं उनका प्यार किया करती थी। सहाबा ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आज एक ऐसी औरत गिरफ़्तार हुई है जो यह कहती है कि मैं तुम्हारे नबी की बहन हूँ। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, उनका नाम शीमा तो नहीं? बताया गया उनका नाम शीमा है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चादर बिछाई, उनको उस पर बिठाया और फ़रमाया, शीमा! मुझे वह वक़्त याद है कि जब मुझे प्यास लगती थी तो तू मेरे लिए पानी भरकर लाया करती थी, तू मेरी दूध शरीक बहन है, तुझे गिरफ़्तार करके लाया गया है, तेरे क़बीले के जितने लोग भी गिरफ़्तार हुए हैं, मैं तेरी वजह से आज उन सबको आज़ाद कर

दिया और तुम्हें इख़्तियार दिया कि तुम उनको लेकर वापस चली जाओ।

इस्लाम में वालिदा का मक़ाम

जब कभी हलीमा साअदिया रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए तशरीफ़ लातीं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए अपनी चादर को ख़ुद बिछाते थे और उसके ऊपर अपनी रज़ाई माँ को बिठाया करते थे। आपने माँ की इज़्ज़त बताई, बहन की इज़्ज़त बताई, बेटी की इज़्ज़त बताई। इन क़रीब की औरतों की इज़्ज़त करने का हुक्म इसलिए दिया ताकि पाकदामनी की ज़िंदगी नसीब हो।

चाँद देखना सुन्नत है

पहली रात का चाँद देखना सुन्नत है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाँद देखा करते थे और उम्मत को भी हुक्म दिया कि पहली रात का चाँद देखा करें। इसलिए हमें चाहिए कि हम चाँद देखें। उस वक़्त यह दुआ भी पढ़ी जाती है :

اللهم اهله علينا باليمن والايمان والسلامة والاسلام

والتوفيق لما تحب وترضى ربى و ربك الله.

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा में शर्म व हया

अल्लाह तआला ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अजीब हया अता फ़रमा दी थी। एक दफ़ा चाँद की पहली तारीख़ थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ आपकी बेटी

हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लायी थीं। पूछा, फ़तिमा! क्या तुमने चाँद देखा है? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मैंने चाँद नहीं देखा। फ़रमाया, बेटी! तुमने क्यों नहीं देखा? वह ख़ामोश हो गयीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा पूछा, इसकी क्या वजह थी? हज़रत फ़ातिमा ने जवाब दिया, ऐ अब्बा जान! मेरे दिल में ख़्याल आया कि आज पहली का चाँद है, सब लोग चाँद की तरफ़ देख रहे होंगे, अगर मैं भी देखूंगी तो मेरी निगाहें और ग़ैर-महरम मर्दों की निगाहें चाँद के ऊपर इकट्ठी होंगी। मैंने इस बात को शर्म व हया के ख़िलाफ़ पाया, इसलिए मैंने आज चाँद नहीं देखा। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह तआला हमें भी ऐसी बेटियाँ अता करे जिनमें ऐसी हया हो और अल्लाह तआला हमें भी ऐसी ज़िंदगी अता फ़रमाए कि हमारी ज़िंदगी से गुनाह निकल जाएं।

तीन दिन का फ़ाक़ा

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में मौजूद थे। हज़रत फ़ातिमा तशरीफ़ लायीं। आक़ा ने आप से पूछा कि कैसे आई हो? आपने अपने दुपट्टे का पल्लू खोला। उसके अंदर आधी रोटी थी। आपने वह रोटी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश की और कहा अब्बा जान! मैं आपके लिए अपनी तरफ़ से तोहफ़ा लाई हूँ। पूछा, फ़ातिमा! क्या बात बनी? अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी हम कई दिनों से भूखे थे, हज़रत अली ने कुछ काम किया और आटा लेकर आए। मैंने रोटियाँ पकायीं,

एक हसन ने खाई, एक हुसैन ने खाई, एक अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाली। एक रोटी मांगने वाले को दे दी और एक रोटी मेरे लिए बची थी। अब्बा जान जब मैं रोटी खा रही थी तो दिल में ख़्याल आया, फ़ातिमा! तुम बैठी रोटी खा रही हो, पता नहीं कि तुम्हारे अब्बा हुज़ूर को कुछ खाने को मिला या नहीं मिला, इसलिए मैंने बाक़ी आधी रोटी कपड़े में लपेटी और आपकी ख़िदमत में ले आई हूँ। अब्बा हुज़ूर मैं आपको यह हदिया पेश कर रही हूँ, इसको क़ुबूल फ़रमा लीजिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, फ़ातिमा! मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आज तीन दिन गुज़र गए तेरे बाप के पेट में खाने का कोई लुक़्मा नहीं गया।

परेशानियाँ ख़त्म करने की तर्कीब

आजकल नौजवान ज़्यादातर कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी की परेशानियाँ ख़त्म नहीं होतीं। कहते हैं कि एक परेशानी ख़त्म नहीं होती कि दूसरी आ जाती है, दूसरी ख़त्म नहीं होती तीसरी आ ऊपर से आ जाती है। आमतौर पर इनकी वजह हमारे अपने गुनाह और तक़्वे की कमी होती है। जब ज़िंदगियों में तक़्वा और परहेज़गारी आएगी तो अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकतें नाज़िल होंगी। इर्शादे बारी तआला है :

ولوان اهل القرى آمنوا وتقوا لفتحنا عليهم بركت من السماء والارض.

कि अगर ये बस्ती, देसों वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते तो हम ज़रूर बिल ज़रूर उनके लिए आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते।

सहाबा किराम के रिज़्क़ में बरकत

सुनिए और दिल कानों से सुनिए कि सहाबा किराम की ज़िंदगियों में तक़्वा था इसलिए अल्लाह तआला ने उनको रिज़्क़ की इतनी ज़्यादती अता कर दी थी। सहाबा किराम के दौर में जब कोई ज़कात लेकर निकलता तो पूरे मदीने में ज़कात का मुस्तहिक़ नज़र नहीं आता था क्योंकि सहाबा किराम के घरों में माल व दौलत के ढेर लगे होते थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेरे पास बैतुलमाल से जो हिस्सा आता था उसमें सोने के इतने बड़े-बड़े डले आते थे कि उन्हें लकड़ी के कुल्हाड़े से तोड़ा करता था।

तक़्वे की बरकतें

फिर क़्यामत के क़रीब एक वक़्त आएगा, जब इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाएंगे। उस वक़्त ज़मीन से अल्लाह तआला की नाफ़रमानियाँ ख़त्म हो जाएंगी, सब नेक लोग होंगे। हदीस पाक में आया है कि लोगों के तक़्वे की वजह से अल्लाह तआला की इतनी बरकतें होंगी कि एक गाय का दूध पूरे-पूरे ख़ानदान के लिए काफ़ी हो जाया करेगा। हम जितना तक़्वा इख़्तियार करेंगे उतनी ही हमारी सेहत बरकत, वक़्त में बकरत और कामों में बरकत होगी। आज गुनाहों की वजह से बरकतें रुक चुकी हैं। न माल में बरकत न सेहत में बरकत और न वक़्त में बरकत है। फिर हम रोते हैं कि किसी ने कुछ बांध दिया है। किसी ने कुछ कर दिया है, हमारे ऊपर आसेब का असर हो गया। उल्टी सीधी राहों पर चल निकलते हैं। अमलियात वालों के पास

जाते हैं जिसकी वजह से अक़ीदे भी ख़राब कर बैठते हैं।

अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात पर अमल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और ने आमाल को सबब बनाकर अल्लाह तआला हमारी ज़िंदगी में बरकत अता फ़रमा दे, अब तक हमने जितने भी गुनाह किए, छोटे या बड़े, तन्हाई में किए या महफ़िल में किए, दिन में किए या रात में किए अल्लाह तआला हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे और आइंदा हमें पाकीज़ा निगाहें अता फ़रमा दे और निगाहों की ना मुसलमानी से महफ़ूज़ फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

तीन बड़ी नेमतें

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم o بسم الله الرحمن الرحيم o

انما يخشى الله من عباده العلماء. وقال الله تعالى فى مقام اخر الله احق ان تخشه. وقال الله تعالى فى مقام اخر فلا تخشوهم و اخشونى. وقال الله تعالى فى مقام اخر وانها لكبيرة الا على الخاشعين. الذين يظنون انهم ملقوا ربهم وانهم اليه رجعون. سبحن ربك رب العزة عما يصفون o وسلام على المرسلين o والحمد لله رب العالمين o

हर इंसान को अल्लाह तआला की तरफ़ से बेशुमार नेमतें मिली हैं।

﴿وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها﴾

फ़रमाने इलाही है, अगर तुम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम उन्हें शुमार नहीं कर सकते। इन बेशुमार नेमतों में कुछ नेमतें बड़ी नुमायां हैसियत रखती हैं। उनकी तादाद तीन है।

पहली बड़ी नेमत

पहली बड़ी नेमत अक़्ल है।

अक़्ल की लफ़्ज़ी तहक़ीक़

हदीस में आता है ﴿اول ما خلق الله العقل﴾ अल्लाह तआला ने सबसे पहले अक़्ल को पैदा किया। यह एक नेमत है कि अल्लाह तआला जिसको भी अता फ़रमा दे। अक़्ल के लफ़्ज़ ﴿عقل ناقه﴾ से बना है। ऊँटनी को जो नकेल डाली जाती है उसको अक़्क़ाल कहते हैं। वह ऊँटनी को क़ाबू में रखती है, इधर-उधर भागने नहीं देती। इसी तरह जब इंसान की अक़्ल सलीम हो तो वह उसको शरिअत की हदों के अंदर रखती है इधर उधर भागने नहीं देती।

जन्नत में अक़्ल के मुताबिक़ दो दर्जे

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक दफ़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि ऐ अल्लाह के नबी! लोग क़यामत के दिन जो मुक़ाम व दर्जे पाएंगे वह किस हिसाब से पाएंगे? नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि अक़्ल के मुताबिक़। वह बड़ी हैरान हुई, कहने लगीं, ऐ अल्लाह के नबी! क्या अमल के मुताबिक़ नहीं पाएंगे? तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह अमल भी उतना ही करेंगे जितनी अल्लाह तआला ने उन्हें अक़्ल दी हुई होगी।

इस अक़्ल की दो क़िस्में हैं। एक को अक़्ले मआद कहते हैं और दूसरी को अक़्ले मआश कहते हैं।

अक़्ले मआश

यह अक़्ले मआश दुनिया के नुक़्ताए नज़र की अक़्ल होती है। यह हर चीज़ में दुनिया को तलाश करेगी यहाँ तक कि उनके

सामने दीन पेश किया जाएगा तो ये दीन में भी दुनिया का पहलू निकाल लेगी। उनसे कहो एक पारा तिलावत करें तो उन्हें मुसीबत नज़र आती है लेकिन कारोबार के लिए कहो तो फ़लां आयत ग्यारह सौ बार पढ़ो तो बड़े आराम से पढ़ लेंगे। उनकी मंज़िल दुनिया का माल और दुनिया की शान व शौकत है। अब उसके लिए बताने वाले ने बता दिया कि तहज्जुद की नमाज़ के बाद पढ़ो तो वह भी उठकर पढ़ लिया करते हैं। अक़्ले मआश अपने दीन को भी दुनिया बना लेती है।

अक़्ले मआद

अक़्ले मआद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने अंबिया किराम को अता फ़रमाते हैं और उनकी इत्तिबा की बरकत की वजह से उलमा और सुलहा को भी अता फ़रमाते हैं। यह वह अक़्ल होती है जो हर काम में आख़िरत की कामयाबी को देखती है। आख़िरत की कामयाबी को असल कामयाबी समझेगी। उसके सामने दुनिया की भी बात करो तो यह दुनिया की बातों में से भी आख़िरत के पहलू निकाल लेगी। यह अक़्ले मआद है।

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। उन्होंने संतरे बेचने वाले की आवाज़ सुनी। वह कह रहा था, 'चंगे संगतरे, चंगे संगतरे'। उन पर वज्द तारी हो गया। अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह! ऊँची आवाज़ से कहने लगे। जब कुछ कैफ़ियत ठीक हुई तो लोगों ने कहा कि हज़रत! क्या हुआ? फ़रमाने लगे, तुमने नहीं सुना कि वह क्या कह रहा था? अर्ज़ किया, हज़रत! वह संगतरे बेच रहा था। फ़रमाया नहीं सुनो तो सही कि क्या कह रहा है? उन्होंने कहा,

हज़रत! संतरे बेच रहा है कि मेरे पास अच्छे संगतरे हैं, तुम ख़रीद लो। उन्होंने कहा फिर सुनो वह कह रहा है चंगे संगतरे। कहा, हाँ हज़रत! बेचने की सिफ़्त बयान कर रहा है कि अच्छे संगतरे। फ़रमाया, नहीं। ज़रा ग़ौर से सुनो वह कह रहा है चंगे संगतरे। जो चंगों के संग लग गए वह तर गए। सुब्हानअल्लाह! यह अक़्ले मआद होती है कि दुनिया की बात उनके सामने पेश हो उसमें से भी आख़िरत का नुक्ता निकाल लेते हैं।

अक़्ले मआद दुनिया को भी दीन बना लेती है। अल्लाह वालों को अक़्ले मआद नसीब होती है। इसलिए उनकी तवज्जेह हर वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ होती है। हर चीज़ उसे अल्लाह तआला की याद दिलाती है। सुना है कि ज़ुलेख़ा ने हर चीज़ का नाम यूसुफ़ रख लिया था। मोमिन का भी यही हाल है कि हर चीज़ उसे अल्लाह तआला की याद दिलाती है।

चाँद तारों में तू मुर्ग़ज़ारों में तू है ख़ुदाया
किस ने तेरी हक़ीक़त को पाया

और एक शायर कहता है—

जग में आकर इधर उधर देखा
तू ही आया नज़र जिधर देखा
जान से हो गए बदन ख़ाली
जिस तरफ़ तूने आँख भर देखा

दूसरी बड़ी नेमत

दूसरी बड़ी नेमत इल्म है, अल्लाह तआला जिसको अता फ़रमा

दें। अभी आप हज़रत शैख़ुल हदीस दामत बरकातुहुम से इल्म ज़ाहिरी और इल्मे बातिनी के आपस में लाज़िम होने पर बातचीत सुन रहे थे। एक किताबी इल्म होता है और एक सोहबती इल्म होता है। किताबी इल्म तो काग़ज़ के पन्नों पर लिखा हुआ मिल जाएगा जबकि सोहबती इल्म सीनों से सीनों में मुन्तक़िल होता है। जैसे ज़ाहिरी इल्म किताबों से क़लम और काग़ज़ के ज़रिए एक दूसरे के पास आता रहा है। यह इल्म हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पाया। इसीलिए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

﴿ما صب الله فی صدری الا وقد صببتہ فی صدر ابوبکر﴾

अल्लाह तआला ने मेरे सीने में जो कुछ भी डाला है मैंने अबू बक्र के सीने में डाल दिया है।

और उनकी बीवी फ़रमाया करती थीं कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को लोगों पर फ़ज़ीलत उनकी नमाज़ और रोज़े की कसरत की वजह से नहीं थी बल्कि उस सोज़ व ग़म की वजह से थी जो अल्लाह ने उनके दिल में अता कर दिया था। जैसे लोग अपने ख़ानदानी शजूरे रखते हैं कि हम हसनी व हुसैनी सैय्यद हैं। अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पास शजूरे मौजूद हैं कि सैय्यदना अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से आगे यह नेमत आगे कहाँ पहुँची और फिर उससे आगे कहाँ पहुँची। और अल्लाह का शुक्र है कि हमारे मशाइख़ ने यह नेमत अपने रब की रहमत और फ़ज़्ल से हम जैसे आजिज़ और नालायक़ों तक पहुँचा दी। यह निस्बत क़यामत तक चलती रहेगी।

इमाम मेहदी और सिलसिला नक़्शबंदिया

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० अपने मक्तूबात में लिखते हैं कि इमामे मेहदी जब तशरीफ़ लाएंगे तो उनका सीना भी निस्बते नक़्शबंदिया के नूर से भरा होगा। और यह भी फ़रमाते हैं कि मुझे आलमे कश्फ़ में अल्लाह तआला ने नक़्शबंदी तरकीत के साथ निस्बत रखने वाले क़यामत तक जितने भी लोग आने थे उन सबकी ज़ियारत करवा दी है।

तालिब इल्म के एक-एक क़दम की फ़ज़ीलत

ताहम अल्लाह तआला के यहाँ इल्म की बड़ी फ़ज़ीलत है। हदीस पाक में आता है कि जब कोई तालिब इल्म अपने उस्ताद के पास चलकर जाता है तो अल्लाह तआला उसके हर क़दम पर उसको एक साल की इबादत का सवाब अता फ़रमाते हैं। जन्नत में उसके लिए हर क़दम के बदले एक शहर आबाद किया जाता है और ज़मीन के जिन टुकड़ों पर उसके क़दम लगते हैं ज़मीन के वे टुकड़े उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं।

इल्म की फ़ज़ीलत

इमाम ग़ज़ाली रह० ने भी एक रिवायत नक़ल की है कि तालिब इल्म जब चलता है तो अल्लाह तआला के फ़रिश्ते बरकत के हासिल करने के लिए उसके पाँव के नीचे पर बिछाते हैं। अल्लाह तआला के यहाँ उसकी बहुत क़दर है। इसलिए फ़रमाया कि जो आदमी इल्म की तलब में निकला उसके बदन पर जो गुब्बार पड़ती है और जहन्नम का धुंवा या जहन्नम की आग ये दोनों एक जगह कभी इकट्ठे नहीं हो सकते।

सैय्यदना सुलेमान अलैहिस्सलाम और इल्म

अल्लाह तआला ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को इख़्तियार दिया था कि आप चाहें तो आपको हम इल्म दें या आपको शाही अता कर दें या आप कहें तो हम आपको माल अता कर दें। उन्होंने अल्लाह तआला से इल्म मांगा। अल्लाह तआला ने इल्म की बरकत से मुल्क और माल उनको ख़ुद अता फ़रमा दिए।

एक हज़ार रहमतें

बल्कि उल्मा ने किताबों में लिखा है कि रोज़ाना अल्लाह तआला की एक हज़ार रहमतें नाज़िल होती हैं जिनमें से नौ सौ निन्नानवें उलमा और तलबा को दी जाती हैं और बाक़ी आम लोगों में बांट दी जाती हैं। इसलिए हदीस पाक में आता है तुम आलिम बनो या तालिब इल्म बनो या उनकी बातें सुनने वाले बनो या उनसे मुहब्बत करने वाले बनो कोई और चीज़ मत बनना।

इल्म और मक़ामे इल्लिय्यीन

इल्म के तीन हर्फ़ है। ऐन से इल्लिय्यीन कि जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पास जाएगा तो उसकी बरकत से अल्लाह तआला उसको मक़ामे इल्लिय्यीन अता फ़रमाएंगे।

इल्म और मुहब्बते इलाही

और इल्म की वजह से इंसान की तबियत में लताफ़त पैदा हो जाती है। सोच में लताफ़त आ जाती है, कसाफ़त ख़त्म हो जाती है और जितना इल्म होगा अल्लाह तआला की मारिफ़त का उतना

हिस्सा होगा। फिर उसके अंदर अल्लाह तआला की मुहब्बत ज़्यादा होती है। इल्म वह चीज़ है कि जिससे इंसान के अंदर लताफ़त पैदा होती हो, अल्लाह तआला की मुहब्बत हो और जब वह दुनिया से जाए तो अल्लाह तआला उसको मक़ामे इल्लिय्यीन अता फ़रमाएं।

आलिम के इकराम का फल

एक रिवायत में आता है कि जब कोई आदमी किसी आलिम को सहारा देता है, बीमार है, बुढ़ापा है, कमज़ोर है, थके हुए हैं, जब कोई आदमी किसी आलिम को सहारा देता है तो अल्लाह तआला हर क़दम के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब अता फ़रमाते हैं और अगर कोई आदमी मुहब्बत व अक़ीदत की वजह से किसी आलिम के माथे या सर को चूमता है तो अल्लाह तआला हर बाल के बदले में उसकी नेकी और अज्र अता फ़रमाते हैं।

आलिम का साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ

'तंबिहुल ग़ाफ़िलीन' में एक रिवायत यह भी नक़ल की गई। फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० ने नक़ल किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जिसने आलिम की ज़ियारत की उसने मेरी ज़ियारत की, जिसने आलिम से मुसाफ़ा किया उसने मुझसे मुसाफ़ा किया। और जिसने आलिम के साथ उठना बैठना किया उसने मेरे साथ उठना बैठना किया और जिसने दुनिया में मेरे साथ उठना बैठना किया अल्लाह तआला जन्नत में भी उसको मेरा साथी बना देंगे।

क़यामत के दिन उलमा का इकराम

इसीलिए एक रिवायत में आता है कि क़यामत के दिन उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे जमा होगी तो उम्मत के जितने भी लोग प्यासे होंगे। उन प्यासों को फ़रिश्ते नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म पर हौज़े कौसर से प्याले भर-भर कर पिलाएंगे लेकिन जो इस उम्मत के उलमा होंगे, उन उलमा को अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हाथों से हौज़े कौसर का जाम पिलाएंगे। ये वारिस हैं अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम के।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत

साईं तवक्कुल शाह अंबालवी रह० बड़े बुज़ुर्ग थे। अल्लाह तआला ने उनको ज़ाहिर में भी बहुत दिया था। यह दुनिया अल्लाह वालों के क़दमों में आती है। लोग हसद करते है कि ऐसा क्यों है। वे इससे रुख़ फेर लेते हैं लेकिन यह फिर भी पीछे आती है। उनका दस्तरख़्वान बड़ा फैला हुआ था और ऐलान था कि जो आदमी ग़रीब हो, नादार हो, मुसाफ़िर हो, लाचार हो वह उनके दस्तरख़्वान पर आकर खाना खाए। सैंकड़ों लोग रोज़ खाना खाते थे। ख़ानक़ाह चल रही थी। लोगों के मज़े थे लोग आते खाना खाते। बहुत अरसे उनका यही मामूल रहा।

एक बार उनको ख़्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो बड़ी ख़ुशी हुई। मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, तवक्कुल शाह! तुम अल्लाह तआला की दावत तो रोज़ाना करते हो और

हमारी दावत तुमने कभी नहीं की। आँख खुली तो बड़े परेशान हुए। कई दिन तक अल्लाह तआला के हुज़ूर रोते रहे, मांगते रहे, कि परवरदिगार! इसका क्या मतलब है? आख़िर अल्लाह तआला ने दिल में बात डाली कि मैंने जो यह दस्तरख़्वान खोल रखा है यह अल्लाह तआला की मख़्लूक़ के लिए, अल्लाह के वास्ते कि अल्लाह! तेरे बंदे हैं, ग़रीब हैं और कोई बेरोज़गार है, तेरी निस्बत से लोग आते हैं, खाते हैं लेकिन नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वारिस तो आलिम, हाफ़िज़ और क़ारी हैं। मैंने उनकी कभी दावत नहीं की इसलिए मुझे फ़रमाया गया है। लिहाज़ा उन्होंने पूरे शहर के उलमा, हाफ़िज़ और क़ारियों की दावत की। गोया यह दावत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हो गई।

इल्म का मफ़हूम

जो आलिम अपने इल्म पर अमल न करे तो उस बेअमल के लिए ये बशारतें नहीं हैं। इल्म पर अमल होना ज़रूरी है। इस आजिज़ को मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह० की ज़ियारत नसीब हुई और उनकी सोहबत में बैठने का शर्फ़ हासिल हुआ। एक बार उन्होंने तलबा से पूछा कि बताओ इल्म का क्या मफ़हूम है? किसी ने कहा जानना, किसी ने कहा मानना, किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। हज़रत ख़ामोश रहे। आख़िर एक तालिब ने अर्ज़ किया, हज़रत आप ही बता दीजिए। आप ने इर्शाद फ़रमाया, इल्म वह नूर है कि जिसके हासिल होने के बाद उस पर अमल किए बग़ैर चैन नहीं आता। अगर यह कैफ़ियत है तो इल्म है वरना तो वबाले जान है। इसलिए जो बेअमल आदमी होगा और आलिम भी

अपने आपको कहलाएगा तो क़यामत के दिन इसकी पूछताछ होगी।

बुरे उलमा के पेट की बदबू

एक रिवायत में आता है कि जहन्नम के फ़रिश्ते अल्लाह तआला से शिकवा करेंगे कि ऐ अल्लाह! दो चीज़ों की बदबू ने बहुत परेशान किया हुआ है एक काफ़िरों के जिस्मों से जो बदबू आ रही है और दूसर बुरे उलमा के पेट से जो बू आ रही है उसने हमें परेशान कर रखा है।

ख़िंज़ीर के गले में मोती

इब्ने सीरीन रह० के सामने किसी ने ख़्वाब बयान किया कि मैं ख़िंज़ीर के गले में मोती डाल रहा हूँ। आपने फ़रमाया कि नालायक़ों को इल्म मत सिखाया करो, नाक़दरों को यह चीज़ न दिया करो। यह क़दर करने वाली चीज़ है।

इमाम बुख़ारी रह० और इल्म की क़दर

इमाम बुख़ारी रह० के हाँ इल्म की क़दर थी। जो आज अल्लाह तआला ने उनको यह इज़्ज़त अता फ़रमाई, यह शर्फ़ अता फ़रमाया। वक़्त के हाकिम ने कहा था कि घर आकर मेरे बच्चों को पढ़ाओ। उन्होंने फ़रमाया कि यह इल्म की तौहीन है और मैं इल्म की तौहीन नहीं कर सकता। उसने कहा, शहर छोड़ना पड़ेगा। फ़रमाया, शहर तो छोड़ दूंगा मगर कभी इल्म की तौहीन नहीं करूंगा। देखा अल्लाह तआला ने आज उनको क्या इज़्ज़त अता फ़रमाई।

चमेली के फूल से मिसाल

एक आदमी ने इब्ने सीरीन रह० से आकर ख़्वाब बयान किया कि हज़रत! मैंने देखा है कि एक कबूतर है और वह चमेली के फूल खा रहा है। उन्होंने फ़रमाया कि इसकी यह ताबीर है कि कुछ उलमा जल्दी मौत आ जाएगी। लिहाज़ा अगले कुछ दिनों के अंदर अंदर बीस बड़े बड़े उलमा इस दुनिया से रुख़्सत हो गए। तो ख़्वाब में चमेली के फूल को देखना इस ताबीर उलमा हुआ करते हैं। इसलिए कि इल्म वालों की अपनी शान होती है। उनके दिल में अल्लाह तआला का यक़ीन होना चाहिए, मुहब्बत होनी चाहिए, तवक्कुल होना चाहिए।

आलिम और जाहिल में फ़र्क़

फ़ुक़्हा ने मस्अला लिखा कि अगर आलिम और जाहिल दोनों एक वक़्त में गिरफ़्तार हो जाएं और एक आदमी को क़ुदरत ऐसा इख़्तियार दे कि वह दोनों में से एक को आज़ाद कराए तो जाहिल को आज़ाद करवा ले। इसलिए कि आलिम के अंदर दीन की ख़ातिर तकलीफ़ें सहन करने का ज़्यादा मलका होता है, अल्लाह पर ज़्यादा भरोसा है। वह उन तकलीफ़ों में भी रहेगा तो ज़बान से कोई ऐसी बात नहीं निकालेगा। हो सकता है कि जाहिल मुसीबतों की वजह से कुफ़्र का कोई ऐसा कलिमा ज़बान से निकाल बैठे तो जाहिल को निकलवाकर आलिम को रहने दो।

मगर दूसरा मस्अला यह लिखा है कि अगर हमाम में या किसी जगह एक आलिम नहा रहा था और दूसरे हमाम में ज़ाहिल नहा रहा था और किसी ने कपड़े चुरा लिए। अब दोनों के बदन

पर कपड़े नहीं है और एक आदमी के पास एक ही कपड़ा है तो फ़रमाया कि अब देने वाले को चाहिए कि वह आलिम के जिस्म को पहले ढांपे इसलिए कि आलिम की निगाह शरिअत व सुन्नत की वजह से जाहिल के जिस्म पर नहीं पड़ेगी लेकिन जाहिल की निगाह आलिम के जिस्म पर पड़ सकती है। तो इल्म के तक़ाज़े हैं। शरिअत उम्मीद करती है कि इस बात की जब यह इल्म अता हो तो अब उस पर अमल भी हो।

उलमा उम्मत का आईना

हारून रशीद उलमा का बड़ा क़द्रदान था। एक दफ़ा उलमा भी बैठे थे कि हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० ने हारून रशीद को नसीहत की, फ़रमाने लगे कि देखो दरिया का पानी साफ़ होता है तो नहरों में साफ़ पानी आया करता है और जब दरियाओं का पानी गंदा होता है तो फिर नहरों में गंदा पानी आया करता है। इसी तरह उलमा के दिलों के अंदर अगर दीन की तड़प होगी तो आम लोगों के दिलों में भी यही चीज़ मुन्तक़िल होगी और अगर उलमा के दिलों में दुनिया बसेगी तो आम लोगों से गिला करने से कोई फ़ायदा नहीं।

बुरे उलमा और सही उलमा का किरदार

इमाम मालिक रह० से पूछा गया कि हज़रत! इस उम्मत की तबाही जब भी आएगी वह किस वजह से आएगी? तो फ़रमाया उलमा की वजह से। फिर पूछा कि हज़रत! इस उम्मत की डूबती किश्ती को सहारा कौन देगा? तो फ़रमाया, उलमा। उसने कहा कि हज़रत! यह क्या, डुबोएंगे भी उलमा और तैराएंगे भी उलमा।

फ़रमाया कि जो बुरे उलमा होंगे, वे डूबने का सबब बनेंगे और जो उलमाए हक़ होंगे वे किश्ती के तैरने का सबब बन जाएंगे।

गुमराही के रास्ते

तो इसलिए आलिम वही है जो अपने इल्म पर अमल करता है। इस इल्म के ज़रिए इंसान को हक़ का रास्ता मिलता है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया :

﴿وما يستوى الاعمى والبصير ولا الظلمت ولا النور﴾

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि 'आमा' से जाहिल मुराद हैं और 'बसीर' से आलिम मुराद है। उनसे किसी ने सवाल किया कि अगर यह मुराद लें तो ﴿ولا الظلمت ولا النور﴾ में ﴿ظلمت﴾ का लफ़्ज़ तो जमा का लाया गया है और नूर का लफ़्ज़ वाहिद लाया गया है और नूर का लफ़्ज़ एक बार लाया गया है। उन्होंने फ़रमाया कि इसलिए कि गुमराही के रास्ते तो कई होते हैं और हक़ का रास्ता हमेशा एक हुआ करता है।

इल्म और अंबिया अलैहिमुस्सलाम

इसी इल्म की वजह से अल्लाह तआला ने अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम को शर्फ़ अता किया। देखिए हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मस्जूद मलाइका बने। अल्लाह तआला ने उनको अस्मा का इल्म दिया था ﴿وعلم آدم الاسماء كلها﴾ तो उनको अल्लाह तआला ने इल्मुल-अस्मा, इल्मुल-अशिया दे दिया था जिसकी वजह से मस्जूद मलाइका बना दिया गया तो यह फ़ज़ीलत उनको किस लिए मिली? इल्म की वजह से मिली थी।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को जो अल्लाह तआला ने मलिका बिलक़ीस के ऊपर ग़लबा अता किया था उसकी बुनियाद क्या चीज़ बनी? उनको अल्लाह तआला ने परिन्दों की बोली समझने का इल्म अता किया था।

﴿ياايها الناس علمنا منطق الطير.﴾

दाऊद अलैहिस्सलाम को सलतनत क्यों मिली थी? इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनको एक फ़न दे दिया था। ﴿وعلمنه صنعة لبوس﴾ और हमने उनको अता कर दिया था ज़िरह बनाने का इल्म कि वे कड़ियों को एक तर्तीब के साथ जोड़ते चले जाते थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को जो जेल से निजात मिली थी वह उनके इल्म की वजह से थी कि अल्लाह तआला ने उनको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म दिया था। यह भी एक इल्म है। दो बंदों ने ख़्वाब देखा था। उन्होंने तावील की थी और उनमें से एक उनकी रिहाई का सबब बन गया ﴿وعلمتنى من تاويل الاحاديث.﴾।

तकवीनी उलूम में हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत

बल्कि एक ग़ैर नबी वली एक नबी के उस्ताद बनने का शर्फ़ पा गए। इल्मे शरिअत में नहीं बल्कि तकवीनी उलूम में। कुछ तशरीई उलूम हैं जिन्हें हम शरिअत कहते हैं और एक इस निज़ामे काएनात को चलाने के लिए अल्लाह तआला की सरकारी जमात होती है। फ़रिश्तों की और बंदों की जो काम कर रही होती है। जैसे आप तो यहाँ मजमे में बैठे हैं और एक ख़िदमत की जमात लगी हुई है। कोई रोटी पका रहा है और कोई पानी ला रहा है।

मगर मज़े की बात यह है कि अगर दिल में यह रहा कि चाय न मिली तो क्या बनेगा तो अल्लाह तआला आपको चाय तो दे देंगे मगर बातिन की नेमत से अल्लाह तआला आपको महरूम करके भेज देंगे। अपने मक़सद को ठीक रखें। अगर सोना था तो तो घर में बिस्तर बड़े नरम थे, अगर खाना था तो घर में बीवी के हाथों का पका खाना बड़ा अच्छा था, घर में चाय बहुत अच्छी मिलती थी, हर सहूलत घर में थी मगर यहाँ तो आप किसी और मक़सद के लिए आए थे। और वह है अल्लाह तआला की रज़ा। अब ख़िदमत की जमात दिन व रात लगी हुई है ख़िदमत करने में। अगर कुछ कमी कोताही हो जाए तो माफ़ करें बल्कि उनके लिए अल्लाह तआला से दुआ करें क्योंकि वे अपने रात व दिन लगाकर आपके लिए यहाँ इत्मिनान से बैठना आसान बना रहे हैं। शैतान कई दफ़ा ग़ल्ती करवा देता है।

इसलिए मक़सद सामने रहे। हम चाय के लिए नहीं चाव के लिए आए हैं। चाव किसे कहते हैं, मुहब्बत को। तो यहाँ चाय के लिए नहीं आए चाव के लिए आए हैं। अल्लाह तआला अपना चाव नसीब फ़रमा दे, अपनी मुहब्बत अता फ़रमा दे।

एक वली को अल्लाह तआला ने एक नबी के उस्ताद होने का शर्फ़ अता किया। वह वली कौन थे? हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उनके पास भेजा गया।

﴿فوجدا عبدا من عبادنا اتينه رحمة من عندنا وعلمنه من لدنا علما.﴾

अल्लाह तआला ने उन्हें इल्मेलदुन्नी अता किया था।

दो बूढ़ों में मुहब्बत इलाही

हमारे हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० की ख़ानक़ाह

पर बिछाने के लिए दस्तरख़्वान नहीं होता था। कभी रोटी ख़ुश्क पानी के साथ खा लेते थे, कभी लस्सी के साथ खा लेते, कभी गुड़ मिल जाता तो उस दिन सालिकीन के लिए ईद हो जाती थी कि आज हमें गुड़ से रोटी खाने का मौक़ा नसीब हो गया। उन्होंने इस हाल में 'अल्लाह' 'अल्लाह' सीखा मगर इस क़ुर्बानी की वजह से अल्लाह तआला ने उनके सीने में ऐसी मुहब्बत भर दी थी कि एक बार मजमे में दो बूढ़े बैठे आपस में लड़ रहे हैं। एक ने एक का गिरेबान पकड़ा, दूसरे ने उसका पकड़ा। यह उसके लगा रहा है वह इसके लगा रहा है। एक आदमी ने कहा कि ये दोनों ज़ाकिर शाग़िल हैं, क्यों लड़ रहे हैं। तो जब क़रीब होकर देखा तो पता चला कि दोनों पर एक हाल और मुहब्बत की कैफ़ियत थी। उनमें से एक कह रहा है, 'अल्लाह मैडा है' यानी अल्लाह मेरा है। अब दूसरे को ग़ैरत आई वह इसका गिरेबान पकड़कर झंझोड़ता है कि नहीं अल्लाह मेरा है। यह कहता है कि अल्लाह मेरा, वह कहता है कि नहीं अल्लाह मेरा है। इस बात पर दोनों झगड़ रहे हैं और दोनों ही जानते थे कि अल्लाह तआला उन दोनों का था। मुजाहिदों से सीखते थे तो मुहब्बत ऐसी होती थी कि दिल कहता था कि अल्लाह मेरा है बस।

ऊलुल इल्म में आम लोगों को दाख़िल करना

एक रिवायत में आता है कि रोज़े महशर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने महबूब को फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे महबूब! अपनी उम्मत के उलमा को बुला लीजिए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी उम्मत को बुला लेंगे। जब पूरी उम्मत को बुलाएंगे तो अल्लाह तआला पूछेंगे, ऐ मेरे महबूब मैंने तो कहा था कि

आप उलमा को बुलाएं और आपने पूरी उम्मत को बुला लिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्ज़ करेंगे, ऐ अल्लाह! आपने मेरी उम्मत के हर फ़र्द के इल्म की गवाही खुद दी हुई है। पूछेंगे, मेरे महबूब! वह कैसे? तो आप क़ुरआन पाक की आयत पढ़ेंगे :

﴿شهد الله انه لا اله الا هو والملٰئكة واولو العلم قائما بالقسط.﴾

कि जिस बंदे ने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा होगा। यह कहने वाले कौन होते हैं यह ऊलुल इल्म होते हैं। 'ला इलाहा इलल्लाह' की बरकत से अल्लाह तआला अपने महबूब की पूरी उम्मत को उलमा में शामिल कर लेंगे।

तीसरी बड़ी नेमत

इल्म हो मगर अदब न हो तो रंग नहीं चढ़ता, सीना रोशन नहीं होता। इंसान ज़रबा-यज़रिबू की गर्दानें करता रहता है और उसको पता नहीं होता कि शैतान मुझको मुक्के मार रहा होता है। उसको नहीं पता होता कि शैतान मुझको कहाँ-कहाँ भटका रहा है। वह अपनी ख़्वाहिशों पर अमल करता है और ख़्वाहिशात को भी दीन का रंग देने की कोशिश करता है।

हज़रत अक़्दस थानवी रह० का इर्शाद

इसलिए हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने फ़रमाया कि आलिम का शैतान भी आलिम और मुफ़्ती का शैतान भी मुफ़्ती होता हैं बड़ी तावालें सिखाता है। जाहिल गुनाह करेगा तो एहसासे नदामत के साथ करेगा लेकिन आलिम गुनाह करेगा तो किसी तावील के

साथ जिसकी वजह से फिर तोबा की भी तौफ़ीक़ नसीब नहीं होती।

इसलिए जहाँ फ़ज़ाइल बहुत होते हैं वहाँ एहतियात भी बड़ी करनी पड़ती है। हीरे और मोती की क़ीमत बड़ी होती है इसलिए कितना एहतियात से रखते हैं कि जी यह क्रिस्टल से बनी हुई चीज़ है एहतियात से रखें। तो जहाँ फ़ज़ाइल बड़े हो तो वहाँ पर तक़ाज़े भी बड़े होंगे। तो इल्म इंसान हासिल करे अमल की ख़ातिर और अमल के साथ अदब भी अल्लाह तआला से मांगे। यह तीसरी बड़ी नेमत है।

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० और अदब

अगर किसी इंसान के अंदर इल्म की कमी होगी तो वह अदब से पूरी हो जाएगी मगर अदब की कमी इल्म की वजह से पूरी नहीं हुआ करती। अल्लाह तआला बेअदबी माफ़ नहीं फ़रमाते, बड़े ग़य्यूर हैं। अदब का अल्लाह तआला इतना लिहाज़ फ़रमाते हैं। इमामे रब्बानी मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० फ़रमाते हैं कि मैं बैठा हुआ था हदीसें लिख रहा था। क़लम नहीं चल रहा था तो मैंने अपने हाथ के अंगूठे से क़लम को ज़रा सही किया तो स्याही लग गई। इसी हाल में मुझे तक़ाज़ा महसूस हुआ बैतुलख़ला जाने का। जब मैं वहाँ बैठने लगा तो बैठते ही मेरी नज़र अंगूठे पर पड़ी तो मैंने स्याही देखी, दिल में ख़्याल आया कि अगर तक़ाज़े से फ़ारिग़ हुआ तो हाथ धोएंगे और पानी की वजह से यह स्याही जो मैं लिखने में इस्तेमाल करता हूँ इस गंदे पानी में शामिल हो जाएगी जो अदब के ख़िलाफ़ है। मैंने तक़ाज़े को दबाया और बैतुलख़ला से बाहर आया और आकर मैंने स्याही को साफ़ जगह पर धोया।

जैसे ही मैंने धोया उसी वक़्त इल्हाम हुआ कि अहमद सरहंदी! हमने जहन्नम की आग को तेरे ऊपर हराम कर दिया तो इल्म भी हो और अदब भी हो तो सोने पर सुहागा हुआ करता है।

क़िब्ला रुख़ बैठने की फ़ज़ीलत

मैंने एक किताब में वाक़िआ पढ़ा है कि एक दोस्त फ़रमाते थे कि मेरे दो तालिबे इल्म थे और दोनों क़ुरआन पाक याद करने वाले थे। एक की बैठक ऐसी थी कि जिसका रुख़ क़िबले की तरफ़ था और दूसरे की पीठ क़िबले की तरफ़ थी। वह फ़रमाते हैं कि जिसका रुख़ क़िबले की तरफ़ होता था वह दूसरे से एक साल पहले हाफ़िज़ बन गया। इसलिए हमारे बड़े भी अपने रुख़ को क़िबले की तरफ़ रखने की पाबंदी फ़रमाया करते थे। हर जगह मुमकिन नहीं होता लेकिन जहाँ मुमकिन हो इंसान कोशिश करे।

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० का अदब

मुफ़्ती-ए-हिंद हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह० ने एक बार पढ़ने वालों से पूछा कि बताओ अनवर शाह, 'अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह०' कैसे बने। अब जिसको तफ़्सीर के साथ ज़्यादा लगाव था उसने कहा कि बड़े मुफ़स्सिर थे, जिसे हदीस के साथ ज़्यादा लगाव था उसने कहा मुहद्दिस थे, जिनको अशआर के साथ ज़्यादा दिलचस्पी थी उसने कहा कि उनका कलाम बड़ा आला था। हज़रत ख़ामोश रहे। तलबा ने कहा हज़रत! आप ही बता दीजिए। उन्होंने फ़रमाया, मैं क्या बताऊँ, यह सवाल ख़ुद उनसे पूछा गया कि हज़रत! आप अनवर शाह

कश्मीरी रह० कैसे बने? तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्म के और किताब के अदब की वजह से अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी बना दिया और अदब कितना फ़रमाते थे कि अगर हदीस पाक की किताब पड़ी है और पढ़ रहे हैं और हाशिया पढ़ रहे तो हाशिए का रुख़ बदल कर और खुद बैठकर हाशिए को नहीं बदलते थे बल्कि उठकर दूसरी तरफ़ आते और फिर हाशिये का मुताला किया करते थे और फ़रमाते थे कि मैंने कभी किसी किताब को बे वुज़ू हाथ भी नहीं लगाया। हदीस की किताब को भी बेवुज़ू हाथ नहीं लगाते थे और फ़रमाते थे कि मैं किताबों के रखने में भी ख़्याल करता था। कभी मैंने क़ुरआन पाक के ऊपर तफ़सीर नहीं रखी, तफ़सीर के ऊपर हदीस की किताब नहीं रखी, हदीस की किताब के ऊपर फ़िक़ह की किताब को नहीं रखा, फ़िक़ह की किताब के ऊपर तारीख़ की किताब नहीं रखी। मैं किताबों के रखने में भी उनके दर्जात का ख़्याल रखता था। इस अदब की वजह से परवरदिगार ने क़ुबूलियत अता फ़रमाई।

जादूगर और अदब

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले में सत्तर हज़ार जादूगर थे। अल्लाह तआला ने उनको ईमान लाने की तौफ़ीक़ अता कर दी। कुछ लम्हे पहले काफ़िर थे और कुछ लम्हे बाद सज्दे में गिर गए और मोमिन बन गए, क्या वजह थी? उसकी वजह यह थी कि उनके अंदर अदब था। एक तो वक़्त के नबी साथ मुशाबहत थी और दूसरी वजह किताबों में लिखा है कि मुक़ाबले से पहले

उन्होंने आपस में मशवरा किया था कि क्या करें? उनमें से एक अंधा जादूगर था। उसने कहा भाई देखो दो सूरतें हैं या तो हमारे मुक़ाबले पर जो है वह वाक़ई सच्चा है और अल्लाह का नबी है या फिर हमारी तरह जादूगर है। लिहाज़ा मैं तुम्हें मशवरा देता हूँ कि तुम इसका अदब करो। अगर अदब करेंगे और वह जादूगर हुआ और हम जीत गए तो हमें नुक़सान कोई नहीं और अगर वह हम पर ग़ालिब आ गया तो हमने क्योंकि उसका अदब किया होगा इसलिए उसका अदब हमारे लिए फ़ायदे और नफ़े का सबब बन जाएगा। उन्होंने पूछा कि हम उसका अदब क्या करें? उस अंधे ने मशवरा दिया (उसके बातिन में अल्लाह तआला ने रोशनी दे दी होगी) और कहा कि अदब यह है कि तुम मुक़ाबला करने से पहले पूछ लेना कि जनाब आप डालना चाहते हैं अपनी किसी चीज़ को या हम डालकर दिखाएं। यह जो हम पूछेंगे यह हमारा पूछना इज़्न और अदब बन जाएगा और इस अदब की वजह से हमें यह नफ़ा मिलेगा और वाक़ई जब उन्होंने ﴿القوا ما انتم ملقون﴾ कहा वाक़ई अल्लाह तआला ने मेहरबानी फ़रमा दी कि अल्लाह तआला ने इस अदब की वजह से ईमान की दौलत नसीब फ़रमा दी।

हमारे सज्दों की कैफ़ियत

अब यहाँ एक नुक्ता है कि उन जादूगरों ने एक सज्दा किया था और उस एक सज्दे से वे अल्लाह तआला के इतने क़रीब हो गए थे कि उनके ईमान की बशारतें ख़ुशख़बरियाँ अल्लाह तआला ने क़ुरआन में दीं। ऐ मोमिन! तू दिन में चालीस सज्दे करता है

तो तुझे अल्लाह तआला का क़ुर्ब क्यों हासिल नहीं होता। मालूम हुआ कि हमारे सज्दे की वह कैफ़ियत नहीं है। उनका एक सज्दा हमारी ज़िंदगी के इन सज्दों से ज़्यादा बेहतर था इसलिए वे ज़्यादा क़ुर्ब का मुक़ाम पा गए। तो सज्दा करें इस मुहब्बत के साथ कि सज्दे में भी मज़ा आए और कैफ़ियत यह हो कि ﴿الٰهی سجد لك سوادی وخیالی﴾ ऐ अल्लाह! मेरा जिस्म, मेरी जान, मेरी रुह तुझे सज्दे कर रही है। ऐसे सज्दे का मज़ा आता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अदब

उलमा ने तफ़्सीर में एक नुक्ता लिखा है। तलबा के लिए समझना आसान है। फ़रमाते हैं कि जब मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा था कि आज हम मारे गए, पकड़े गए तो मूसा अलैहिस्सलाम ने जल्दी में जवाब दिया था कि ﴿ان معی ربی سیهدین﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त मेरे साथ है और वह रहनुमाई फ़रमाएगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहनुमाई में सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु घबरा रहे थे कि कहीं काफ़िर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को देख न लें और तकलीफ़ न पहुँचाएं। अपनी घबराहट नहीं थी, महबूब के लिए घबराहट थी तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या फ़रमाया था ﴿ان الله معنا﴾। अब यहाँ मुफ़स्सिरीन ने एक नुक्ता लिखा है कि मूसा अलैहिस्सलाम की ज़बान से निकल गया था ﴿ان معی ربی﴾ उन्होंने 'मइया' का लफ़्ज़ पहले कह दिया और 'रब्बी' का लफ़्ज़ बाद में कहा था जबकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ﴿ان الله معنا﴾ में "अल्लाह" लफ़्ज़ पहले लिया था "मअना" का लफ़्ज़ बाद में लिया। इसलिए अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की

उम्मत में शिर्क के लिए रास्ता फिर भी खुला रखा कि बाद में वे शिर्क में मुब्तला हो गए थे और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के नाम को पहले रखा इसलिए अल्लाह तआला ने आपकी उम्मत पर शिर्क के दरवाज़ों को बंद कर दिया। लिहाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि आज के बाद इस जगह और इस शहर में शैतान की इबादत क़यामत तक कभी न की जाएगी।

एक अजीब वाक़िआ

एक किताब में इस आजिज़ ने एक अजीब वाक़िआ पढ़ा। एक ख़तीब ख़ुश नवीस कातिब थे जो क़ुरआन पाक लिखा करते थे। उन्होंने अपना मुशाहिदा बयान किया है कि मैं जब भी क़ुरआन पाक लिखा करता था तो हर दफ़ा लिखने के लिए जब मैं क़लम उठाता तो कोई न कोई मक्खी क़लम के साथ आकर स्याही चूसने के लिए बैठती। वह कहते हैं कि मैंने साठ क़ुरआन पाक शुरू से लेकर आख़िर तक लिखे हैं लेकिन एक बात मेरे मुशाहिदे में आई कि क़ुरआन पाक की हर आयत पर स्याही में से मक्खी ने हिस्सा लिया लेकिन जब मैं यह आयत लिखता था ﴿لا تقربوا مال اليتيم﴾ कि *"यतीम के माल के क़रीब भी न जाओ।"* जब मैं इसके लिए स्याही लेता था तो साठ क़ुरआन पाक लिखते हुए कभी मक्खी ने उसमें से हिस्सा न लिया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के इस हुक्म का एक मक्खी जैसे जानदार में भी इतना अदब हालाँकि यह हुक्म इंसान को हो रहा है लेकिन इसको लिखने के

लिए जो स्याही ली जा रही है, मक्खी भी उस स्याही को चूसना पसंद नहीं करती।

अदब हासिल करने का तरीक़ा

इंसान अदब अपने आप नहीं सीख सकता बल्कि किसी की सोहबत में आकर, किसी के पास बैठकर, किसी की डांट खाकर और तर्बियत पाकर फिर इंसान को यह हासिल होता है। आप जो इज्तिमा में तशरीफ़ लाए तो इसलिए नहीं आए कि आपकी तारीफ़ें की जाएं बल्कि इसलिए आए कि आपकी इस्लाह की जाए। इस्लाह के लिए मुहब्बत प्यार भी होता है और डांट-डपट भी होती है। और इससे इंसान को अदब मिलता है। तो अल्लाह तआला से जहाँ और दुआऐं मांगे तो वहाँ यह भी दुआ मांगिए। अजीब बात है कि आज के दौर में यह दुआ मांगने वाले भी कम हैं कि ऐ अल्लाह! हमें अदब सिखा और अदब अता फ़रमा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

﴿ادبنی ربی فاحسن تادیبی﴾

मेरे रब ने मुझे अदब सिखाया ओर बेहतरीन अदब सिखाया।

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया :

ادبو النفس ایها الاصحب   طرق العشق کلها آداب

ऐ दोस्तो! अपने नुफ़ूस को अदब सिखाओ इसलिए कि इश्क़ के जितने रास्ते हैं वे सब आदाब ही हैं।

ख़शियते इलाही किसे कहते हैं?

जब ये तीन चीज़ें मिल जाएं, अक़्ले सलीम भी, इल्मे नाफ़े भी

और अमल भी तो फिर उनका मजमूआ ख़शियते इलाही कहलाता है। इसीलिए क़ुरआन पाक की जो आयत पढ़ी :

﴿انما يخشى الله من عباده العلماء﴾

इसमें ख़शियत से मुराद यही है। ख़शियत दिल की एक कैफ़ियत का नाम है जिसकी वजह से इंसान अल्लाह तआला से मुहब्बत में आमाल करता है और उसके दिल में हर वक़्त ख़्याल रहता है कि मैंने क़यामत के दिन अपने रब को जवाब देना है, मैंने अपने रब से मुलाक़ात करनी है और मुलाक़ात का दिन जब उसे याद होता है तो फिर वह कोई छोटा काम भी अल्लाह तआला के हुक्मों के ख़िलाफ़ कर नहीं सकता।

माइय्यते इलाही

देखें एक होता है किसी चीज़ का पता होना, इल्म होना और एक होता है उस चीज़ का इस्तेहज़ार होना यानी वह चीज़ तबियत में हाज़िर होना। यह जो इस्तेहज़ार है यह हर वक़्त नहीं रहता। उसकी मिसाल यूँ समझ लीजिए कि एक आदमी अगर डाक्टर के पास बैठा काम कर रहा है और सर में दर्द है तो हर बंदा कहेगा कि जी दवाई ले लो और अगर वही बंदा उलमा की महफ़िल में बैठा है कि जी मेरे सर में दर्द हो रहा है तो आप कहेंगे जी दम करवा लो। यहाँ दम का ख़्याल आया और वहाँ गोली का ख़्याल आया। जैसा माहौल था सोच वैसी ही ग़ालिब आ जाती है। किसी चीज़ का ध्यान होना यह एक अजीब चीज़ है। अब किसको नहीं पता कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जहाँ तीन होते हैं तो चौथा अल्लाह तआला होता है और जहाँ चार होते हैं वहाँ वह

पाँचवां होता है ﴿وهو معكم اينما كنتم﴾ वह तुम्हारे साथ होता है तुम जहाँ कहीं होते हो। तो इल्मी एतिबार से हर बंदे को इसका पता होगा लेकिन इसका इस्तेहज़ार किसी किसी को हासिल होगा। तो मालूम हुआ कि–इल्म कोई और चीज़ है उसका हर वक़्त इस्तेहज़ार रहना और चीज़ है। यहाँ जो ज़िक्र के लिए आते हैं वे इसलिए कि हमें इस इल्म का इस्तेहज़ार हासिल हो जाए। अल्लाह तआला की इस माइय्यत का इस्तेहज़ार हासिल हो जाए। हर वक़्त हमारी यह कैफ़ियत रहे। और जो तन्हाई में बैठकर ज़िक्र करवाते हैं और ज़र्बे लगवाते हैं उसकी बुनियादी वजह यही है।

मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा और माइय्यते इलाही

एक दलील सुन लीजिए। हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के पैग़म्बर हैं। आप तबलीग़ के लिए चले गए। पीछे बीबी मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा अकेली थीं। वक़्त ज़्यादा लग गया, आपके दिल में ख़्याल आया कि कहीं खाने की चीज़ें कम न हो गई हों। इसलिए वापस तशरीफ़ लाए और जल्दी से मेहराब में दाख़िल हुए। ﴿كلما دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا﴾ जब दाख़िल हुए तो देखा कि मरयम के पास तो बेमौसम के फल पड़े हैं। हैरान हो गए क्योंकि आलमे असबाब में मेहनत करते आए थे, लोगों से मिलते आए थे तो सोच भी असबाब के मुताबिक़ थी। पूछा ﴿انى لك هذا﴾ मरयम तुझे ये फल कहाँ से मिल गए? मरयम क्योंकि तख़लिए की हालत में थी और अल्लाह तआला के साथ तार जुड़ी हुई थी, तवज्जेह अल्लाह तआला की तरफ़ थी। मरयम ने फ़ौरन जवाब दिया कि ﴿قالت من عند الله﴾ कहने लगी यह अल्लाह की

तरफ़ से है ﴿ان اللّٰہ یرزق من یشآء بغیر حساب﴾ अब जब उसने यह बात की तो हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम की तवज्जेह इस तरफ़ हुई तो आपके दिल में बात आई ऐ अल्लाह! आप मरयम को बेमौसम फल दे सकते हैं तो इस बुढ़ापे मे क्या मुझे आप बेटा अता नहीं फ़रमा सकते।

﴿ھنالک دعا زکریا ربہٗ رب ھب من لدنک ذریۃ طیبۃ﴾

उन्होंने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मुझे बेटा अता फ़रमा ﴿فنادتہ الملئکۃ﴾ लिहाज़ा अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए से खुशख़बरी दे दी कि अल्लाह तआला ने आपको बेटा अता फ़रमा दिया। हज़रत ज़क्रिया अलैहिस्सलाम का ध्यान असबाब की तरफ़ गया और यह कोई बुरी चीज़ नहीं। इंसान की तबियत पर असबाब का, माहौल का असर होता है।

अंबिया किराम पर असबाब का असर

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वक़्त के नबी हैं लेकिन साँप को देखा तो ख़ौफ़ तारी हो गया। यह मक़ामे नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं हुआ करतीं बल्कि तबई चीज़ें होती हैं। वक़्त के नबी हैं और जा रहे हैं और दुआएं मांग रहे हैं ﴿رب نجنی من القوم الظلمین﴾ अब यह कोई मक़ामे तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। यह एक तबई चीज़ है, फ़ितरी चीज़ है। इसलिए कि शुएब अलैहिस्सलाम ने उनको तसल्ली दी ﴿نجوت من القوم الظلمین﴾ बहरहाल असबाब के असरात होते हैं। हम आलमे असबाब में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसलिए हम पर भी असरात होते हैं।

मौलाना इलयास साहब रह० का इर्शाद

इसलिए मौलाना इलयास साहब रह० ने फ़रमाया तुम एक छंटाक मेहनत अगर मख़्लूक़ पर करो तो एक मन मेहनत अपने और अल्लाह तआला के ताल्लुक़ पर किया करो और जब कभी बाहर वक़्त लगाने जाते थे तो वापस आकर ऐतिकाफ़ में बैठा करते थे। वह एतिकाफ़ क्या चीज़ थी? उसी ऐतिकाफ़ के लिए हम ख़ानक़ाहों में बिठाते हैं। इससे तवज्जेह अल्लाह की तरफ़ बनती है।

मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर असबाब का असर

वह मरयम जो तन्हाई में बैठी हुई थीं और जिनका ताल्लुक़ अल्लाह तआला के साथ कामिल था। अब उसी मरयम ने जब घर में ज़िंदगी गुज़ारनी शुरू कर दी तो उनका अपना क्या हाल बना कि जब ग़ुस्ल के लिए पूरब की तरफ़ गयीं तो जिब्रील अलैहिस्सलाम पहुँच गए अल्लाह तआला के हुक्म से। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿فتمثل لها بشرا سويا﴾ हमने उसे भरपूर जवान की शक्ल में भेजा। अब जब हज़रत बीबी मरयम ने देखा कि एक ग़ैर-मर्द है तो फ़ौरन डर गयीं और कहने लगीं ﴿انی اعوذ بالرحمٰن منك ان كنت تقيا﴾ मैं रहमान की पनाह मांगती हूँ जब जिब्रील अलैहिस्सलाम ने देखा कि डर गई है तो उन्होंने कहा ﴿انما انا رسول ربك﴾ मैं आपके रब का भेजा हुआ नुमाइंदा हूँ ﴿لاهب لك غلما زكيا﴾ ताकि आपको सुथरा बेटा, नेक बेटा मिले। अब मरयम और परेशान हो गई कि इसका आना एक मुसीबत थी, इसका अगली बात कहना उससे बड़ी मुसीबत है कि मैं अभी शादी-शुदा नहीं मेरा बेटा कैसे हो

सकता है। मरयम क्योंकि असबाब की ज़िंदगी गुज़ार रही थीं इसलिए वह जानती थीं कि बेटा पैदा होने के दो सबब हो सकते हैं या तो निकाह के ज़रिए या ज़िना के ज़रिए और ये दोनों सबब मौजूद नहीं तो फ़रमाने लगीं कि मेरा बेटा कैसे हो सकता है तो अब वह मरयम कहती हैं कि ﴿انی یکون لی غلم﴾ मेरे बेटा कैसे हो सकता है? ﴿ولم یمسسنی بشر﴾ किसी बशर ने मुझे छुआ नहीं यानी निकाह नहीं हुआ ﴿ولم اک بغیا﴾ और न मैंने कोई बग़ावत की यानी ज़िना नहीं किया। दोनों बातें नहीं, दोनों सबब नहीं पाए जाते, मेरा बेटा कैसे हो सकता है? ﴿قال کذلک﴾ फ़रिश्ते ने मोहर लगा दी कि मरयम जैसे आप कह रही हैं आप ऐसी ही पाकदामन हैं न कोई निकाह हुआ न कोई गुनाह हुआ। अल्लाह तआला ने आपको पाकदामनी की ज़िंदगी अता कर दी। क़ुरआन पाक ने ﴿کذلک﴾ की मोहर लगा दी मगर साथ ही कहा ﴿قال ربک هو علی هین﴾ कहा आपके रब ने कि मेरे लिए यह बेटा देना आसान है। तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उस वक़्त यह कहा कि यह बेटा किसी ज़ुल्फ़ों वाली सरकार नहीं देना, यह रब परवरदिगार ने देना है। तो अब देखिए कि जो बे मौसम के फल खाती थी जब घर की ज़िंदगी गुज़ारी तो अपनी तवज्जेह असबाब की तरफ़ पलट आई। तो क़ुरआन पाक से दलाइल मिले। इसीलिए फ़रमाते हैं कि हर आलिम के लिए तन्हाई इख़्तियार करना लाज़मी है। और अल्लाह तआला अपने महबूब को क्या फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे महबूब! ﴿فاذا فرغت فانصب والی ربک فارغب﴾।

अल्लाह से लौ लगा लो

अब यह रब की तरफ़ रग़बत के लिए वक़्त क्यों निकालते हैं,

इसी को तो हम मामूलात और तख़लिया कहते हैं और इसी के लिए वक़्त मांगते हैं कि रोज़ाना कुछ वक़्त फ़ारिग़ कर लो। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़रमाते थे ﴿لِی مَعَ اللّٰہِ وَقْتٌ﴾ कि मेरा अल्लाह के साथ एक वक़्त होता है कि जब कोई नबी मुरसिल और मलाइका को वहाँ पर दख़ल की इजाज़त नहीं होती तो वह अल्लाह तआला के साथ ऐसा वक़्त गुज़ारा करते थे। हम भी ऐसा वक़्त गुज़ारें, अल्लाह तआला के साथ तार जोड़कर बैठा करें, मुहब्बत से याद किया करें। अरे जाहिल याद करता है, जिहालत की बातें करके। उसकी जिहालत की बातें अल्लाह तआला को पसंद आती हैं और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को हुक्म होता है कि आपने उसकी तार क्यों काटी?

तू बराए वस्ल करदन आमदी
ने बराए फ़स्ल करदन आमदी

अगर जाहिल का तख़लिऐ (तन्हाई) में बैठकर अल्लाह से लौ लगाना इतना पसंद आया, अगर कोई साहिब इल्म बैठकर अल्लाह से लौ लगाएगा तो अल्लाह तआला को कितना पसंद आएगा। तो हम दिन का कुछ वक़्त अपने लिए फ़ारिग़ कर लें। तहज्जुद का वक़्त बेहतरीन वक़्त है। जब दुनिया सोई हुई होती है उस वक़्त उठें और नफ़्लें पढ़कर अल्लाह तआला से लौ लगाकर बैठें। फिर बैठे बैठे दिल की कैफ़ियत क्या बनेगी कि—

कि मुझ को अपना होश न दुनिया का होश
बैठा हूँ मस्त हो के तुम्हारे जमाल में
तारों से पूछ लो मेरी रुदादे ज़िंदगी
रातों को जागता हूँ तुम्हारे ख़्याल में

फिर देखना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से कैसी रहमतें आती हैं फिर इश्क़े इलाही मिलेगा। मुहब्बत की शराब पिलाई जाएगी, फिर दिल के अंदर सोज़ पैदा कर दिया जाएगा और यह सोज़ आपको तड़पा देगा। शायर ने कहा था–

लुत्फ़े मय तुझसे क्या कहूँ ऐ ज़ाहिद!
हाय कंबख़्त तूने पी ही नहीं

तो मैं इसको बदलता हूँ

लुत्फ़े मय तुझ से क्या कहूँ ऐ दोस्त!
हाय बे इल्म तूने पी ही नहीं

कभी मय का लुत्फ़ पा लेते तो फिर देखते बात क्या बनती है। यह दिलों को ऐसा तड़पाती है जैसे अंदर कोई अलार्म अल्लाह तआला ने फ़िट कर दिया हो, अपने आप आँख खुलती है।

दो नंबर मजनूँ

और आज पूछें कि जी मामूलात करते हैं तो जवाब मिलता है कि जी वक़्त नहीं मिलता। यह तो ऐसा ही है कि मजनूँ साहब से पूछें कि लैला को याद करते हो तो वह कहे कि वक़्त नहीं मिलता। अजीब बात है कि मजनूँ को लैला को याद करने का वक़्त नहीं मिलता। आज वैसे तो हर चीज़ तो थी ही नंबर दो, मजनूँ भी नंबर दो हो गए। कई वैसे तो सालिक हैं लेकिन मामूलात के लिए वक़्त नहीं मिलता और फिर कहते हैं कि जी हज़रत जी असर नहीं होता, इतने साल से बैअत हैं। इसके कुछ तक़ाज़े हैं उन्हें पूरा कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तआला दिलों की हालत को बदलते कैसे हैं।

ख़शियते इलाही अल्लाह तआला से मुलाक़ात का ध्यान रहना है

तो ख़शियते इलाही एक दिल की कैफ़ियत का नाम है जिसकी वजह से इंसान हर वक़्त यह महसूस करता है कि मैं अपने रब के सामने खड़ा हूं, मुझे क़यामत के दिन अपने रब के सामने पेश होना है। मुझे अपने रब को जवाब देना है। इसलिए क़ुरआन पाक में जो ख़शियत की तारीफ़ की गई है वह क्या थी? फ़रमाया यह नमाज़ भारी है सिवाए उन लोगों के जिन लोगों के दिलों में ख़शियत होती है और ख़शियत किन लोगों के दिलों में होती है? ﴿الذين﴾ वे लोग ﴿يظنون﴾ जो यह यक़ीन करते हैं ﴿انهم ملقوا ربهم﴾ उन्होंने अल्लाह से मुलाक़ात करनी है ﴿وانهم اليه راجعون﴾ और उन्होंने अपने रब की तरफ़ लौटकर जाना है।

अस्लाफ़ (बुज़ुर्गों) में ख़शियते (ख़ौफ़े) इलाही

हमारे पिछले अस्लाफ़ में ख़शियते इलाही कैसी थी, सुब्हानअल्लाह।

मौलाना हुसैन अली और ख़शियते इलाही

हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत मौलाना हुसैन अली वाँफिजरां वाले। हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० से ख़िलाफ़त पाई हालाँकि हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन उनके

शागिर्द थे, उनसे पढ़ते थे। यह भी खुलूस देखिए। हमारे बड़ों में इख़्लास की इससे बड़ी क्या मिसाल होगी कि जिसको किताबें पढ़ा रहे हैं खुद उसी से बैअत हो रहे हैं सुलूक सीखने के लिए। बड़ों के छोटों से फ़ैज़ पाने की बेहतरीन मिसाल इस दौर में इससे बड़ी नहीं मिल सकती। उनसे ख़िलाफ़ पाई लेकिन अल्लाह तआला ने मुक़ाम बड़ा दिया था। हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि के शागिर्द थे, बड़ी निस्बत थी, बड़े भारी आलिम थे लेकिन जब उनका आख़िरी वक़्त आया तो हज़रत की यह कैफ़ियत थी कि जो भी उनसे मिलने आता वह उससे मुसाफ़ा करते और मुसाफ़ा करके हालचाल पूछते और हालचाल पूछने के बाद फ़रमाते कि देखो! मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है, आपने भी तैयारी करनी होगी, मैंने भी तैयारी करनी है। अच्छा फिर मिलेंगे और रुख़्सत कर देते। फिर दूसरा आता मुलाक़ात करते उसका हाल पूछते और फिर यही फ़रमाते मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है मैंने भी तैयारी करनी है आपने भी तैयारी करनी होगी, अच्छा फिर मिलेंगे। कई महीने उनका यही मामूल रहा। शौक़ और इश्तियाक़ इतना बढ़ गया था। सुब्हानअल्लाह जब कोई परिन्दे को आज़ाद करने लगे ना और परिन्दा देखे कि दरवाज़ा खुलने लगा है तो परिन्दा फड़कता है, ऐसी उनकी कैफ़ियत और हालत थी कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है। हम ने कभी इस अंदाज़ से सोचा कि मेरा अल्लाह तआला से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है।

आख़िरत का जहेज़

देखें एक माँ जिस दिन बेटी को जन्म देती है तो उस दिन से

सोचना शुरू कर देती है कि मुझे बेटी के लिए जहेज़ बनाना है, एक दिन इसकी शादी करनी है। और कुछ औरतें तो सारी ज़िंदगी जहेज़ बनाती हैं क्योंकि अगर बेटी जहेज़ के बग़ैर शौहर के पास चली गई तो शौहर के पास उसको इज़्ज़त नहीं मिलेगी। ऐ माँ! तेरी बेटी खिलौनों में खेल रही है और तू इस बेटी का जहेज़ तैयार करती फिर रही है। और तू सोचती है कि जब बड़ी होकर शादी होगी, शौहर के पास बग़ैर जहेज़ के जाएगी तो उसे इज़्ज़त नहीं मिलेगी। अपने बारे में क्यों नहीं सोचती, तेरे बाल सफ़ेद हो गए, क़ब्र में तेरी टांगे पहुँच गयीं तूने भी अपने रब के सामने जाना है ﴿جئتمونا كما خلقنكم اول مرة﴾ तो क़ुरआन कह रहा है कि एक-एक करके अल्लाह के हुज़ूर में पेश कर दिए जाओगे अगर अल्लाह तआला ने पूछ लिया मेरी बंदी मेरे पास नेकियों का आमालनामा और जहेज़ लाई या नहीं? सोचिए कि वहाँ फिर हमारा क्या बनेगा? अपने लिए नेकियों का जहेज़ बनाओ। यह दुनिया का जहेज़ न भी हो तो क्या फ़र्क़ पड़ता है। बिला वजह की बनी हुई चीज़ें होती हैं लेकिन अगर अल्लाह तआला के सामने नेकियों का ज़ख़ीरा न हुआ तो फिर इंसान बे सर व सामान ख़ाली हाथ खड़ा होगा फिर कहेगा :

﴿يليتنى اتخذت مع الرسول سبيلا يويلتى ليتنى لم اتخذ فلانا خليلا.﴾

काश! कि मैं नबियों के साथ चला होता और फ़लां को दोस्त न बनाया होता। इसलिए ख़ुशू अपने दिलों में लाने के लिए तख़लिये को लाज़िम कर लीजिए, ज़िक्र को लाज़िम कर लीजिए, अपने मशाइख़ की सोहबत को लाज़िम कर लीजिए क्योंकि मशाइख़ की सोहबत से अदब मिलता है, इल्म मिलता है, एक

चुंबकपना होता है जो सीनों से सीनों में मुन्तक़िल होता है और दिलों को रोशन कर देता है। फिर इंसान के लिए अल्लाह तआला की मुहब्बत के साथ अमल करना आसान होता है।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर में ख़ुदा का ख़ौफ़

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु जिनके बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने सबके एहसानों को बदला दे दिया लेकिन अबू बक्र के एहसानों का बदला अल्लाह देगा। ऐसी ज़िंदगी थी। उनके बारे में आता है कि वह दुआ मांगते थे कि ऐ काश! मैं किसी मोमिन के बदन का बाल होता, ऐ काश! मुझे मेरी माँ ने जना ही न होता, ऐ काश! मैं कोई घास का तिनका होता। किस लिए कहते थे? इसलिए कि कहीं क़यामत के दिन मुझे अल्लाह तआला के सामने खड़ा न होना पड़ जाए। इससे डरते थे कि अल्लाह तआला के सामने कैसे खड़ा हूँगा। उनके अंदर ख़ुदा का ख़ौफ़ था।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु में ख़ुदा का ख़ौफ़

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल के अंदर ख़ुदा का ख़ौफ़ इतना था कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछ रहे हैं कि मैं आपसे मुनाफ़िक़ों के नाम नहीं पूछता लेकिन इतना बता दो कि कहीं उमर का नाम तो उनमें शामिल नहीं। और जब वफ़ात होने लगी तो वफ़ात के वक़्त क्या कहा, अल्लाहु अकबर! अजीब बात कही। वफ़ात के क़रीब एक सहाबी को बुलाया और एक वसीयत फ़रमाई कि जब मेरी रूह निकल जाए तो मुझे दफ़न करने में जल्दी करना। उसने पूछा, अमीरुल मोमिनीन! जल्दी करेंगे मगर

इतनी ताकीद क्यों कर रहे हैं? तो आपने फ़रमाया, इसलिए कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इरादा मेरे साथ ख़ैर का है तो तुम ख़ैर की तरफ़ मुझे पहुँचाने में जल्दी करना और अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इरादा मेरे साथ शर का है तो तुम मेरे बोझ को अपने ऊपर से जल्दी उतार देना और उसके अंजाम को तो अल्लाह ही बेहतर जानता है।

यह होता है ख़ौफ़े ख़ुदा। डर रहे होते हैं, कांप रहे होते हैं, पता नहीं हमारा क्या होगा? पता नहीं अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँचेंगे तो क्या मामला होगा? कहीं पूछताछ होनी शुरू हो गई तो फिर क्या बनेगा? इसलिए अल्लाह वाले डर रहे होते हैं कि पता नहीं कि क़यामत के दिन क्या मामला पेश आएगा। उनकी ज़िंदगी अल्लाह तआला से डरते-डरते गुज़र जाती है।

मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० में अल्लाह का ख़ौफ़

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० वफ़ात के बाद किसी को ख़्वाब में नज़र आए। उसने कहा, हज़रत! आगे क्या बना? फ़रमाया, अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश हुआ, अल्लाह तआला ने फ़रमाया, अहमद अली लाहौरी तू मुझसे इतना डरता था और हर वक़्त रोता रहता था। हज़रत बहुत कसरत से रोया करते थे। हर वक़्त रोता रहता था, डरता रहता था, तो जब अल्लाह तआला ने पूछा कि तू हर वक़्त रोता रहता था, डरता रहता था। फ़रमाने लगे, मैं तो और डर गया कि अब तो नाराज़ हो रहे हैं। तो अल्लाह तआला फ़रमाने लगे, अहमद अली! तू अब

भी डर रहा है। मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मैं आपकी शान और बुलंदी मुक़ाम से अब भी डर रहा हूँ। फ़रमाया, अब डरने का वक़्त ख़त्म हो गया, हम तुझे बशारत देते हैं कि तुम्हें जिस क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया है, तुम्हारी बरकत से उस क़ब्रिस्तान के सब मुर्दों को हमने माफ़ फ़रमा दिया। यह होता है डरने वालों का मक़ाम। अल्लाह तआला से ख़ौफ़ खाने वालों का मुक़ाम ﴿ولمن خاف مقام ربه جنتن﴾ उनको डबल-डबल जन्नतें मिलती हैं, अल्लाह तआला के हुज़ूर उनको मुक़ाम मिलता है।

एक मुहद्दिस में अल्लाह का ख़ौफ़

एक मुहद्दिस हदीस का दर्स दे रहे थे। उनका रंग पीला हो रहा था। चेहरे पर ख़ौफ़ था, बड़ी मुश्किल से दर्स ख़त्म किया। किसी ने पूछा, हज़रत! मैं आपकी कैफ़ियत देख रहा था, क्या आज आपको कोई तकलीफ़ थी? फ़रमाया, नहीं। उसने कहा, हज़रत! चेहरे पर ख़ौफ़ के कुछ अजीब से असरात थे। फ़रमाया, तुमने नहीं देखा? उसने पूछा, क्या? फ़रमाया, मेरे ऊपर उस वक़्त बादल आ गया था और मैं डर गया था कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे ऊपर पत्थरों की बारिश बरसा दी जाए। पहली उम्मतों पर भी इसी तरह बादल आते और वह उनको नहीं समझते थे और उन पर पत्थरों की बारिश कर दी जाती थी, अल्लाहु अकबर।

फ़िक्र की घड़ी

हम अगर इल्म हासिल करेंगे और काम नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला दीन का काम किसी और से ले लेंगे। वह मक्खी से काम ले लेता है, मच्छर से ले लेता है, मकड़ी से ले लेता है। जिससे

चाहे वह अपने दीन का काम ले लेता है।

क़ुरआन पाक की एक आयत याद रहे। परवरदिगार फ़रमाते हैं:

﴿وان تتولو يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا امثالكم.﴾

अगर पीठ फेरेंगे और हटेंगे, दीन वाले काम से तो अल्लाह तआला बदल देंगे किसी क़ौम से और वह क़ौम फिर हमारे जैसी नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी करने वाली होगी। तो हमें अपने फ़र्ज़े मंसबी को पूरा करना है। ऐसा न हो कि क़यामत के दिन हम से पूछा जाए कि तुमने क्या काम किया और हम उसका जवाब न दे सकें। कहने को आलिम हो और ज़िंदगी उसकी ऐसी हो जैसे किसी ज़ालिम की होती है। उसको हलाल और हराम की तमीज़ न हो। वह अपने रब की पूजा करने के बजाए अपने नफ़्स की पूजा करता फिर रहा हो। यह कैसे हो सकता है। इसलिए जब इल्म रंग लाता है तो इंसान के अंदर फिर अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा होता है। यह अल्लाह तआला से मांगने की चीज़ है। अल्लाह तआला से मांगिए कि अल्लाह तआला हम को भी अपना ख़ौफ़ अता फ़रमा दे।

क़ुरआन मजीद के आईने में हमारी तस्वीर

अगर हम ज़रा क़ुरआन के आइने में अपनी शक्ल देखें तो क़ुरआन पाक की एक आयत में अपनी तस्वीर नज़र आती है। और वह क्या आयत है कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ضرب الله مثلا عبدا مملوكا﴾ और अल्लाह तआला मिसाल बयान करता है एक बंदे की जो गुलाम था ﴿لا يقدر على شيء﴾ किसी चीज़ पर

उसको क़ुदरत नहीं थी ﴿وهو كل على مولاه﴾ अपने मौला पर बोझ बना हुआ था ﴿اينما يوجهه لا يأت بخير﴾ कि जिधर जाता था कोई ख़ैर ख़बर न लाता था। कहीं ऐसा न हो कि कह दिया जाए तुम्हारी ज़िंदगी ऐसी थी। यह न कहीं कह दिया कि तुम्हारा काम तो उस औरत की तरह ﴿كالتي نقضت غزلها من بعد قوة انكاثا﴾ कि वह औरत जो सारी ज़िंदगी सूत कातती रही और आख़िर पर काते हुए सूत को अपने हाथ से तोड़ डाला। आठ साल चटाईयों पर बैठकर पढ़ते रहे और जब बाहर निकले तो बाहर ही निकल गए। फिर कहीं ऐसा न हो। इसलिए अपने दिल में इस बात को बिठा लीजिए कि अल्लाह तआला के हाँ मर्तबे भी ज़्यादा हैं लेकिन मर्तबा पाने के लिए मेहनत करने की ज़रूरत है सिर्फ़ इल्मे ज़ाहिरी की बात हो तो कयामत के दिन शैतान की बख़्शिश हम से पहले हो जाएगी। इसलिए कि वह हम से बड़ा आलिम है। मालूम हुआ कि नहीं सिर्फ़ अल्फ़ाज़ व हर्फ़ों की बात नहीं कुछ और भी चीज़ है। उसी को सोज़े इल्म कहते हैं, मुहब्बते इलाही कहते हैं। जब इल्म के साथ मुहब्बते इलाही मिल जाती है तो अमल आ जाते हैं। फिर इंसान की ज़िंदगी में अल्लाह तआला के साथ ख़ुशू पैदा होता है। फिर वह आमाल करता है डरते हुए। एक-एक नमाज़ ऐसी पढ़ता है जिस पर उसके पिछले गुनाहों की बख़्शिश के वादे हैं। फिर अल्लाह तआला उस बंदे को क़ुबूल कर लेते हैं। अल्लाह तआला उस बंदे को दुनिया में भी क़ुबूलियत अता फ़रमा देते हैं और आख़िरत में भी।

चटाइयों की इज़्ज़त

हो आलिम और तज़किरा करे कि मेरे लिए रिज़्क़ की तंगी है।

हज़रत! दुआ करो मैं माली मुश्किलात में फंसा हुआ हूँ, क़र्ज़ों में जकड़ा हुआ हूँ। अरे अल्लाह तआला से तवक्कुल कहाँ गया? अल्लाह तआला से यक़ीन कहाँ गया? एक आलिम आकर कहने लगे कि हज़रत! आप बताएं कि मैं कोई कारोबार न कर लूँ। मैंने कहा आलिम होकर यह बात करता है कि मैं कोई कारोबार क्यों न कर लूँ। मैंने कहा अगर आठ साल लगाने के बाद फिर बंदा यह सोचे कि मैं कारोबार न कर लूँ तो फिर उसने इल्म की क्या क़द्र की। इससे तो फिर मर जाना बेहतर था क्यों वक़्त लगाया था इन चटाईयों पर, उन चटाईयों की इज़्ज़त तो रख लेते।

असलाफ़ का अल्लाह पर तवक्कुल

हमारे बुज़ुर्गों को खाने को नहीं मिलता था। भागकर फ़ाक़े काट लेते थे। अंग्रेज़ उनके क़दमों में माल व दौलत डालते थे, ठोकरें लगाते थे दुनियादार आकर माल पैसे पेश करते थे मगर वे ठुकरा दिया करते थे। एक-एक लाख रुपए का चैक आया करता था। वापस भेज दिया करते थे। उनको अपने रब पर तवक्कुल हुआ करता था कि परवरदिगार खिलाएगा और फिर परवरदिगार ने उनको रिज़्क अता किया। अल्लाह तआला हमें भी रिज़्क अता करेंगे।

इल्म का तक़ाज़ा

लिहाज़ा इल्म का यह तक़ाज़ा है कि हम अल्लाह तआला के साथ अपना यक़ीन अच्छा कर लें, परवरदिगार के पास हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं :

﴿وان من شیء الا عندنا خزائنہ وما ننزلہ الا بقدر معلوم﴾

इसलिए मैं अपने मोहतरम उलमा से कहा करता हूँ कि आप इमामत को मलामत न बनाया करना अगर इमामत को इमामत बनाएंगे फिर अल्लाह तआला दुनिया में आपको इमाम बनकर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएंगे अगर अमल होगा और खुशू होगा तो दुनिया आकर क़दम पकड़ेगी और आपके हाथ को चूमा करेगी। इल्म की वजह से अल्लाह तआला आपको इज़्ज़तें देंगे लेकिन जब खुद ही अमल नहीं करेंगे तो फिर हम क्यों शिकायत करते हैं कि इल्म के बाद हम फ़लां परेशानी में मुब्तला हैं। अल्लाह तआला हमें अपने आपको इस रंग में रंगने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं, आमीन।

अल्लाह के बंदों की तलाश

मेरे दोस्तो! यह आजिज़ दर-ब-दर की ठोकरें इसलिए खाता फिरता है कि अल्लाह तआला ने अपने एक मक़्बूल बंदे के ज़रिए इस आजिज़ के सर पर एक बोझ रखवा दिया। यह आजिज़ इस क़ाबिल नहीं, अब भी नहीं, न उस वक़्त था मगर काम भी अपने हज़रत के हुक्म से शुरू किया। हज़रत पूछा करते थे कि तुम से अब तक कितने लोग सिलसिले में दाख़िल हुए? मुझे झिझक हुआ करती थी मगर हज़रत बुला बुलाकर पूछते थे। किस लिए? इसलिए उनको पता था कि बोझ रख दिया है। अब उसने मेरी दी हुई नेमत को कहाँ कहाँ पहुँचाना है। हम तो एक डाकिया बनकर इस नेमत को दूर दूर तक पहुँचाते फिरते हैं। यह भी अल्लाह तआला की रहमत है, हम चाहते हैं कि यह नेमत दूर-दूर तक सीनों में फैले। हर बंदा इस निस्बत को हासिल करने वाला बन जाए मगर क्या करें बर्तन नापाक नज़र आता है तो दूध भरने को

किसी का दिल नहीं करता। जब दिल साफ़ नज़र नहीं आता फिर तवज्जेहात कहाँ तक असर करेंगी। कुछ खुद भी मेहनत कीजिए, अपनी नीयत ठीक कर लीजिए फिर तवज्जेहात के असरात होंगे।

हाले दिल जिससे मैं कहता कोई ऐसा न मिला
बुत के बंदे तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

कहाँ हैं वे बंदे जिनके दिल में ख़ौफ़े खुदा हो, जिनका अमल सुन्नत नबवी के मुताबिक़ हों, जो रब को तन्हाईयों में याद करते हों, अपने सर को झुकाते हों, अपने मौला को मनाते हैं ऐसे बंदे अगर हों तो निस्बत तो है ही उनके लिए। फिर देखिए अल्लाह तआला ऐसे बंदे को दुनिया और आख़िरत में कैसी सआदतें अता फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला हमें इस निस्बत के नूर से मुनव्वर फ़रमाए और क़यामत के दिन अल्लाह तआला हमें अपने मशाइख़ के सामने रुसवा और शर्मिन्दा न फ़रमाए, हमारे लिए क़यामत के दिन ख़ैर के फ़ैसले फ़रमाए और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने हम कहीं रुसवाई का सबब न बन जाएं। इसलिए दुआ करें कि परवरदिगार हमारा यहाँ आना बैठना क़ुबूल फ़रमा ले और यहाँ से वापस जाते हुए ज़िंदगियों के रुख़ को तब्दील फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

हुक़ूक़ुल इबाद

الحمد لله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم ٥ بسم الله الرحمٰن الرحيم ٥
ولا تستوى الحسنة ولا السيئة. ادفع بالتى هى احسن فاذا الذى
بينك وبينهٗ عداوة كانهٗ ولى حميم. سبحن ربك رب العزة عما
يصفون ٥ وسلام على المرسلين ٥ والحمد لله رب العالمين ٥

बीच की राह

दीन इस्लाम एक कामिल ज़िंदगी गुज़ारने के तरीक़े का दूसरा नाम हैं। लिहाज़ा दीन पर अमल करने वाले लोगों की ज़िंदगी हमेशा मुतावज़िन होती है। कमी ज़्यादती से हटकर एतिदाल की राह में अल्लाह तआला ने ख़ैर रखी है। लिहाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿خير الامور اوسطها.﴾

मियाना रवी (दर्मियानी चाल) बेहतरीन हिक्मते अमली है।

दो क़िस्म के हुक़ूक़

इंसान पर दो तरह की ज़िम्मेदारियाँ आती हैं। एक तो अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करना दूसरा उसके बंदों के हुक़ूक़ अदा

करना। जो आदमी दोनों क़िस्म के हुक़ूक़ अदा करे वही दूसरों के लिए मॉडल (नमूना) हो सकता है। अल्लाह के महबूब ने अपनी ज़िंदगी में दोनों क़िस्म के हुक़ूक़ अदा करके दिखाए। लिहाज़ा आपकी मस्जिद की ज़िंदगी देख लीजिए और आपके घर के रहन-सहन को भी देख लीजिए। पूरे-पूरे हुक़ूक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अदा करके दिखाए।

वे भी मरीज़ ये भी मरीज़

आज के दौर में देखा गया है कि कुछ लोग इबादत पर बहुत ध्यान देते हैं मगर यह ख़्याल नहीं करते हमारी बात से लोगों का दिल जलता है, हमारे अमल से लोगों को तकलीफ़ होती है, हम बात करते हैं तो लोगों के दिलों पर छुरी फेर रहे होते हैं। हम दूसरों को दुख दे रहे होते हैं, हम मुसलमान भाई को दूसरों के सामने ज़लील कर रहे होते हैं। कई ऐसे हैं कि ख़ुश अख़्लाक़ी के बड़े नारे लगाते हैं कि आदमी को ऐसा अच्छा करना चाहिए और ऐसा अच्छा होना चाहिए मगर नमाज़ की फ़ुर्सत नहीं, तिलावत के लिए वक़्त नहीं। वे भी मरीज़ और ये भी मरीज़। एक ने हुक़ूक़ुल्लाह का लिहाज़ न किया तो दूसरे ने हुक़ूक़ुल इबाद का लिहाज़ न किया। ये लोग अगर अच्छे होते तो दोनों हुक़ूक़ का ख़्याल करते। इसलिए अल्लाह तआला से यह दुआ मांगनी चाहिए कि वह हमें अल्लाह के हुक़ूक़ और बंदों के हुक़ूक़ दोनों अदा करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे।

रोज़े महशर अल्लाह तआला का ऐलान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रह० फ़रमाते हैं कि रोज़े महशर

अल्लाह तआला पुकारकर फ़रमाएंगे कि मैं इंसाफ़ वाला बादशाह हूँ, कोई जन्नती जन्नत में और कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में उस वक़्त तक नहीं जा सकता जब तक हक़ वालों को हक़ न दिला दिए जाएं।

बनी इस्राईल को तंबीह

बनी इस्राईल में सात साल तक क़हत रहा यहाँ तक कि लोगों ने मुर्दार और बच्चे भी खा लिए। पहाड़ों पर जाते और गिड़गिड़ाकर इल्तिजा करते लेकिन दुआ क़ुबूल न होती। आख़िर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर 'वही' नाज़िल हुई कि उन्हें कह दो कि वे इबादत करते करते ख़ुश्क कोड़े की तरह भी हो जाएं तो भी मैं उनकी दुआ क़ुबूल नहीं करूंगा जब तक कि लोगों के हक़ वापस न करेंगे।

दो इंसानों में इख़्तिलाफ़

समाज में रहते हुए इंसानों से ग़ल्ती हो सकती है। रसोई में बर्तन धोते हुए बर्तन एक दूसरे से टकरा भी सकते हैं, दो आदमी बड़े तजुरिबेकार ड्राइवर हैं फिर भी उन दोनों की गाड़ियों का एक्सीडेंट हो सकता है। तो अगर तजुरिबेकार और माहिर ड्राइवरों से एक्सीडेंट हो सकता है तो दो अच्छे इंसानो का आपस में इख़्तिलाफ़ करना भी मुमकिन है। मगर होना यह चाहिए कि ऐसी सूरत में माफ़ करने और दरगुज़र का मामला किया जाए। हदीसे पाक में आया है कि जो आदमी दुनिया में दूसरों की ग़ल्तियों को जल्दी माफ़ कर देता है अल्लाह तआला भी क़यामत के दिन उस इंसान की ग़ल्तियों को जल्दी माफ़ फ़रमा देंगे।

सीना-बे-कीना का मतलब

कोशिश किया करें कि दूसरों की ग़ल्तियों को माफ़ कर दिया करें। बात दिल से ही निकाल दिया करें। इसलिए कि दिल से रंजिश दूर कर देने से इंसान के सीने में कीना नहीं रहता। जो रंजिशें बाकी रह जाती हैं तो यही तो कीना बन जाती हैं। दीन की नज़र में कीना बहुत बुरी चीज़ है। सीना-बे-कीना ऐसा सीना है जिसमें किसी के ख़िलाफ़ नफ़रत न हो, किसी के ख़िलाफ़ दिल में ग़ज़ब व ग़ैज़ न हो। मोमिनों के बारे में दिल में कीना नहीं रखना चाहिए। अल्लाह तआला से सीना-बे-कीना मांगा करें। अगर किसी से तकलीफ़ भी पहुँचे तो दिल से उसको माफ़ कर देना यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी माफ़ फ़रमा दिया करते थे बल्कि उम्मत के औलिया अल्लाह ने तो माफ़ी की ऐसी ऐसी मिसालें क़ायम कर दीं कि इंसान हैरान हो जाता है।

एक आशिक़े रसूल का वाक़िआ

एक बुज़ुर्ग हज के सफ़र पर गए। एक जगह से गुज़र रहे थे। उनके हाथ में एक थैला था। उसमें कुछ पैसे थे। एक चोर उनके हाथ से वह थैला छीनकर भाग गया। काफ़ी दूर निकलकर उसकी आँखों की रोशनी अचानक ख़त्म हो गई। उस चोर ने रोना शुरू कर दिया। लोगों ने पूछा भाई क्या हुआ? कहने लगा, मैंने एक आदमी का थैला छीना है। वह कोई बड़ा अल्लाह का क़रीबी बंदा लगता है। बड़ा अच्छा बंदा लगता है। मेरी आँखों की रोशनी चली गई। खुदा के लिए मुझे उसके पास पहुँचाओ ताकि मैं उससे

माफ़ी मांग सकूँ। लोगों ने पूछा कि बताओ यह क़िस्सा कहाँ पेश आया? कहने लगा फ़लाँ नाई की दुकान के क़रीब पेश आया। लोग उसको उस दुकान के पास लेकर गए और नाई से पूछा बताओ कि इस तरह का आदमी यहाँ से गुज़रा है? आप उसे जानते हो? उसने कहा मुझे उसका घर तो पता नहीं, हाँ नमाज़ों के लिए वह आते जाते हैं। अगली नमाज़ के लिए फिर आएंगे। ये लोग इन्तिज़ार में बैठ गए। वह बुज़ुर्ग अपने वक़्त पर तश्रीफ़ लाए। लोग उस चोर को उनके पास ले गए तो उस चोर ने जाकर उनके हाथ पकड़ लिए, पाँव पकड़ लिए कि मुझसे ग़लती हुई, गुनाह हुआ, मैं नादिम हूँ, शर्मिन्दा हूँ, मेरी आँखों की रौशनी छिन गई। आप अपने पैसे वापस ले लीजिए और मुझे माफ़ कर दीजिए ताकि अल्लाह तआला मेरी आँखें ठीक कर दे। वह बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने तो तुझे पहले ही माफ़ कर दिया है। यह बात सुनकर चोर बड़ा हैरान हुआ। कहने लगा हज़रत मैं तो आपका थैला छीनकर भागा और आप कहते हैं कि माफ़ी मांगने से पहले ही मुझे माफ़ फ़रमा दिया। वह फ़रमाने लगे हाँ मेरे दिल में कोई बात आ गई थी। फ़रमाने लगे मैंने एक हदीस पढ़ी जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब मेरी उम्मत का हिसाब पेश किया जाएगा तो मैं उस वक़्त तक मीज़ान के क़रीब मौजूद रहूँगा जब तक कि मेरे आख़िरी उम्मती का फ़ैसला नहीं हो जाता। मेरे दिल में यह बात आई कि अगर मैंने इस चोर को माफ़ नहीं किया तो क़यामत के दिन यह मुक़दमा पेश होगा और जितनी देर मेरे मुक़दमे का फ़ैसला होने में लगेगी अल्लाह के नबी को उतनी देर जन्नत से बाहर रहना पड़ेगा। इसलिए मैंने माफ़ कर दिया कि न तो

मुक़दमा पेश होगा, न ही मेरे महबूब को जन्नत में जाने में देर लगेगी। वह जल्दी जन्नत में तशरीफ़ ले जाएंगे।

शुक्रिया अदा करने की अहमियत

अगर कोई भला करे तो उसका शुक्रिया अदा किया करें। आज के दौर में मालूम नहीं हम मुसलमानों को क्या हो गया। हम किसी का शुक्रिया तो अदा करते ही नहीं कुछ को छोड़कर हालाँकि हमें फ़रमाया गया :

﴿من لم يشكر الناس لم يشكر الله﴾

जो इंसानों का शुक्र अदा नहीं करता वह अपने अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता।

हमें तो तालीम इतनी दी गई थी मगर हम इस तरफ़ ध्यान ही नहीं करते। बंदों के हक़ पर भी पूरा ध्यान रखा जाए ताकि इंसान एक सही ज़िंदगी गुज़ारने वाला बने।

गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत

अगर कभी किसी से तकलीफ़ पहुँचे तो यूँ समझिए कि उसने कोताही कर ली। चलो मैं माफ़ करता हूँ। इसके बदले में अल्लाह तआला मुझे माफ़ फ़रमा देंगे। अगर कभी किसी की बात पर गुस्सा आए तो गुस्से के घूंट को पी लिया करें। यह कढ़वा घूंट होता है मगर एक हदीस पाक में आया है कि जिस बंदे ने अपने गुस्से के घूंट को पिया जबकि वह गुस्से को पूरा करने की हालत में था यानी उसके पास ऐसे वसाइल थे कि वह चाहता तो गुस्सा उतार सकता था, उसका बदला ले सकता था मगर उसने अल्लाह

के लिए उस ग़ुस्से के घूंट को पी लिया। अल्लाह तआला क़यामत के दिन हर हर घूट के बदले में उस बंदे को अपना मुशाहिदा अता फ़रमा देंगे। वह परवरदिगार के जलवे देखेगा। अब देख लीजिए कि कौन सा सौदा अच्छा है। दुनिया में ग़ुस्से दिखा देना या अल्लाह तआला के हुस्न व जमाल का दीदार करना?

अक़्ल की ज़कात

मोमिन जब इन बातों को सामने रखता है तो फिर उसके अंदर हिल्म पैदा हो जाता है। हिल्म कहते हैं दूसरा नादानी से कोई बात कर भी ले तो बंदा उसे माफ़ कर दे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि नादानों की बात पर तहम्मुल मिज़ाजी से इंसान की अक़्ल की ज़कात अदा हुआ करती है। लिखे पढ़े अक़्लमंद लोगों को चाहिए कि छोटी-छोटी बातों के ऊपर दिलों में रोग न पाल लिया करें। दूसरे की ग़ल्ती को माफ़ कर देना और तकलीफ़ बर्दाश्त कर लेना इंसान की अक़्ल की ज़कात है। अगर अल्लाह तआला ने अक़्लमंद बनाया है तो अक़्ल की ज़कात भी तो दिया करो। मगर आज देखा गया है कि आदमी ख़ुद तो चाहता है कि मेरे बड़े-बड़े क़ुसूरों को माफ़ कर दिया जाए मगर दूसरों की छोटी-छोटी ग़ल्ती को भी माफ़ करने के लिए तैयार नहीं होता।

इंसानों की दो क़िस्में

इंसान दो क़िस्म के होते हैं। कुछ शहद की मक्खी की तरह होते हैं और कुछ गंदी मक्खी की तरह होते हैं। शहद की मक्खी तो शहद बनाती है मगर गंदी मक्खी गंदगी पर बैठी होती है। उन

दोनों के अंदर एक बुनियादी फ़र्क़ है। गंदी मक्खी के दिमाग़ में गंदगी की बू होती है। यह गंदी चीज़ों की तलाश में होती है। जहाँ गंदगी देखेगी वहीं बैठेगी। जिस्म पर भी बैठी तो जहाँ पर ज़ख़्म होगा, पीप होगी, यह वहाँ बैठेगी। लिहाज़ा गंदी मक्खी की सोच गंदी, उसकी तलाश गंदी, उसकी पसंद गंदी। वह हर गंदी चीज़ के आसपास ही घूमती फिरती है। वहीं उसका डेरा और बसेरा होता है जबकि शहद की मक्खी के दिमाग़ में ख़ुशबू रची होती है। वह ढूंढती है तो फूल को, वह बैठती है तो फलों पर, वह अगर चूसती है तो फलों के जूस को, शहद की मक्खी चमन को ढूंढेगी, गुलिस्तान को ढूंढेगी, फल और फूलों को ढूंढेगी। उसकी सोच अच्छी होती है और यह हर वक़्त अच्छी और ख़ुशबूदार चीज़ों की तलाश में रहती है।

इस मिसाल को सामने रखकर सोचें तो इंसानों की भी दो क़िस्में होती हैं। कुछ लोग शहद की मक्खी की तरह होते हैं। उनके अपने अंदर भी ख़ैर होती है और वे दूसरे के अंदर भी ख़ैर को तलाश करते हैं, वे दूसरों को ख़ैर की तरफ़ बुलाते हैं, वे दूसरों पर नज़र डालते हैं तो उन्हें दूसरों में ख़ैर नज़र आती है। उनकी नज़र में दुनिया के सब लोग अच्छे होते हैं। इसलिए कि उनके अपने अंदर अच्छाई होती है। और कुछ ऐसे लोग होते हैं कि जिनकी अपनी सोच गंदी होती है। उनके अपने अंदर ख़बासत भरी होती है। वे वहाँ बैठते हैं जहाँ उन्हें गंदे लोगों की महफ़िल नज़र आए। वे ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जो बुरे होते हैं, वे ऐसे लोगों के पास अपना आना जाना रखते हैं जिनमें बुराई ग़ालिब होती है। वे अगर किसी बंदे पर नज़र डालेंगे तो उनकी निगाह बुराईयों को ढूंढेगीं। उनको बंदे की अच्छाई नज़र नहीं

आतीं। उनको बंदे की बुराइयाँ नज़र आती हैं, इसीलिए वह कहेंगे कि आज तो कोई भी अच्छा नहीं है न वे उलमा से राज़ी होंगे न वे पीरों से राज़ी होंगे, न वे हाकिमों से राज़ी होंगे, न माँ-बाप से राज़ी होंगे, दुनिया में वे किसी से राज़ी ही नहीं होते बल्कि कई तो ऐसे मनहूस होते हैं जो अपने परवरदिगार पर भी ऐतिराज़ करते फिरते हैं। कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं नहीं सुनीं और हमारी दुआएं क़ुबूल नहीं कीं। ऐसा बंदा गंदी मक्खी की तरह होता है। यह जहाँ बैठेगा बुरी बातें करेगा, जब भी सुनेगा बुरी बातें सुनेगा, जहाँ उसकी निगाह पड़ेगी यह बुराई की तरफ़ ध्यान करेगा। लिहाज़ा उसके दिमाग़ में हर वक़्त बुराई फैली रहेगी। अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि वह हमें शहद की मक्खी की तरह अच्छा इंसान बना दे ताकि हम अच्छाई की तलाश में रहें।

कमीने आदमी की मिसाल

कमीने आदमी से कभी दोस्ती नहीं करनी चाहिए कि उसकी मिसाल कोयले की तरह होती है। कोयला अगर ठंडा हो तो हाथों को काला करता है और अगर गर्म हो तो हाथों को जला देता है। न ठंडा अच्छा न गर्म अच्छा। इसी तरह कमीने आदमी की दोस्ती भी बुरी और कमीने आदमी की दुश्मनी भी बुरी। ऐसे इंसान से हमेशा अपने को दूर रखने की ज़रूरत है। अच्छे लोगों से ताल्लुक रखने चाहिएं। अगर समाज में रहना है तो दूसरों का अदब एहतिराम भी सीखें। इंसान दूसरों के साथ अच्छे ताल्लुक़ात बनाकर रखे। देखें दीवार का हर पत्थर अपनी क़ीमत रखता है अगरचे वह कितना छोटा क्यों न हो। इसी तरह घर का हर

आदमी अपनी एक हैसियत और क़ीमत रखता है। वह चाहे बड़ा हो या चाहे छोटा हो तो हमें दूसरों की भी क़दर करनी चाहिए और उनकी क़दर व क़ीमत का एहसास रखना चाहिए।

मियाँ से बीवी के शिकवे

आमतौर पर देखा मियाँ-बीवी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो बीवी अपने शौहर से नाराज़ नज़र आएगी, कहेगी, मैंने तेरे घर में देखा ही क्या है, मैं तो डोले में आई थी और चारपाई के ज़रिए तेरे घर से क़ब्रिस्तान चली जाऊँगी और तेरे घर में मुझे मुसीबतें ही देखनी थीं, मुझे तुमने क्या दिया? अगर कुछ करते भी हो तो अपने बच्चों के लिए करते हो, मेरे लिए क्या करते हो? अब यह बेचारी हर वक़्त अपने शौहर के शिकवे करती रहेगी। उसे शौहर में कोई अच्छाई नज़र नहीं आएगी।

मगरमच्छ के आँसू

किसी दिन उसको ख़बर मिल जाए कि एक्सीडेंट से शौहर की वफ़ात हो गई। अब वही बैठी रो रही होगी। दूसरी औरतें रोएंगी कुछ महीने यह रोएगी कई साल। पाँच साल गुज़रने के बावजूद भी याद करके बैठी होगी कि मेरा शौहर बड़ा अच्छा था। ख़ुदा की बंदी! अपने शौहर को जीते जागते ज़िंदगी में क्यों न बताया कि तुम अच्छे बंदे हो, आज मरने के पाँच साल बाद क्यों रो रही हो, मगरमच्छ के आँसू क्यों बहा रही हो? काश! उसकी क़द्र व क़ीमत का एहसास तुम्हें उसकी ज़िंदगी में हो जाता। तेरी अपनी ज़िंदगी भी जन्नत बनती और तेरे शौहर की ज़िंदगी भी जन्नत बनती।

इंसान की क़दर

मगर हम जीते बंदो की क़दर नहीं करते, मरने के बाद क़दर आती है। पंजाबी में कहते हैं कि बंदे की क़दर आती है "मर गयां या टर गयां" जो आदमी चला जाए, जुदा हो जाए तब उसकी क़दर आती है या आदमी मर जाए तब उसकी क़दर आती है। हमें चाहिए कि हम जीते जागते बंदों की क़दर करना सीखें। अपने पास घर में जितने लोग हैं उनमें ख़ैर है, उनमें नेकी है। हम उनकी क़दर अपने दिल में पैदा करें। ऐसा न हो कि हम नाक़दरी करने वाले बन जाएं।

एक अजीब वाक़िआ

मौलाना रोम रह० ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक अत्तार ने एक तोती पाली हुई थी। उसकी दुकान पर जब ग्राहक आते तो उसकी तोती सलाम करती, जैसे मैना सलाम करती है और आने वाले से पूछती कि तेरा क्या हाल है? लिहाज़ा लोग दूर दूर से आते कि हमने इतूर तो लेना ही है, किसी और से लेने के बजाए फ़लां दुकान पर चलते हैं, थोड़ी देर तोती से बातें भी करेंगे, मज़ा भी लेंगे और ख़ुशबू भी ख़रीद लाएंगे। लिहाज़ा उस अत्तार की दुकान पर ग्राहकों का रश ज़्यादा होने लगा। उसके पास दूर दूर से आते। कई दफ़ा बच्चे माँ से ज़िद करके कहते कि वहाँ चलो तो वे बच्चों को लेकर वहाँ आते। इस तरह अत्तार का काम ख़ूब चल रहा था।

एक दिन उस अत्तार ने अपनी दुकान तो बंद कर दी मगर उस तोती को पिंजरे में बंद करना भूल गया। रात को तोती बैठी

हुई थी। कहीं से उसने बिल्ली की आवाज़ सुनी। जब मियाऊँ की आवाज़ सुनी तो तोती पर डर ग़ालिब हो गया। वह फड़फड़ाई, कभी इधर गिरी, कभी उधर गिरी। हर तरफ़ शीशे की चीज़ें और शीशे का सामान रखा हुआ था। शीशियाँ एक दूसरे पर गिरीं तो शोर पैदा होने से तोती और घबराई। उड़ी तो इधर-उधर टकराई तो और शीशियाँ गिरीं तो काफ़ी नुक़सान हुआ। सुबह के वक़्त जब अत्तार ने देखा कि उसकी दुकान का बहुत सा सामान ज़ाए हो गया तो उसे बड़ा अफ़सोस हुआ। उसने तोती को पकड़कर उसके सर पर इतने जूते मारे कि उसके सर के कुछ बाल उतर गए और वह गंजी हो गई।

अब तोती को महसूस हुआ कि इसने तो मुझे बहुत मारा तो तोती चुप हो गई। अत्तार ने अपनी आदत के मुताबिक़ काम शुरू कर दिया। लेकिन अब एक फ़र्क़ था कि जब कोई ग्राहक आता तो अत्तार चाहता कि यह तोती बात करे मगर तोती बातचीत न करती। बड़ा ज़ोर लगाया, बड़ी कोशिश की कि किसी तरह यह तोती बात करे ताकि लोग आएं और यह उनका दिल लुभाए मगर तोती बात ही नहीं करती थी। जब कलाम ही न किया तो कुछ महीनों के बाद लोगों ने आना छोड़ दिया। आहिस्ता-आहिस्ता ग्राहक कम हो गए यहाँ तक कि कारोबार बिल्कुल ठप्प हो गया। अब उसको एहसास हुआ कि ओ हो मुझे इसकी क़दर न थी। मैंने तो ज़रा सी बात पर इसको मारा यहाँ तक कि उसके सर के बाल भी उखड़ गए और यह गंजी हो गई, इसने बोलना छोड़ दिया, मेरा तो कारोबार ही ठप्प हो गया। अब अत्तार नफ़्ल पढ़ता, दुआएं मांगता कि ऐ अल्लाह! तोती को बुला दे, तोती को बुला दे

मगर तोती बोलती नहीं थी। अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गईं खेत।

इस मिसाल को अपनी ज़िंदगी में देखिए। कहीं शौहर अपनी बीवी को तंग करते फिरते हैं। जब वह ज़रा नाराज़ होती हैं तो दिल को कुछ होता है। अल्लाह करे कि बोल पड़े। कई औरतें हैं जो अपने शौहरों को नाराज़ करती हैं। जब वह बोलना बंद कर देता है तो फिर रोती फिरती हैं। तावीज़ लेती फिरती हैं, हज़रत! तावीज़ दें हमारा शौहर हमारे साथ ठीक नहीं है। भाई इस तोती की पहले क़दर क्यों न की। ख़ैर यह तो बीच में बात आ गई। तो मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं कि वह आदमी बड़ी दुआएं मांगता मगर तोती बात ही नहीं करती। इसी तरह वक़्त गुज़रता रहा। अब उसने सबक़ सीखा कि मुझे इस तोती की पहले ही क़दर करनी चाहिए थी, मैंने इसकी नाक़दी की और इस वजह से आज मेरा कारोबार ठप्प हो गया।

एक दिन एक फ़क़ीर आया। जिसके सर पर बाल न थे। तोती ने फ़क़ीर को देखा तो फ़ौरन बोल उठी। कहने लगी आपने भी अपने मालिक के शीशों को तोड़ा था? तो वह तोती अपने ही पर अंदाज़ा करने लगी कि मैंने क्योंकि अपने मालिक के शीशों को तोड़ा और मुझे गंजा बना दिया गया तो यह जो सामने गंजा फ़क़ीर है शायद उसने भी अपने मालिक के शीशों को तोड़ा होगा।

मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं इससे एक सबक़ और मिला कि हर अदमी को दूसरे को अपने ऊपर क़यास करता है। जो अपने दिल में बात होती है वह समझता है कि शायद कि दूसरे के दिल में भी यही बात है और अक्सर आप देखेंगे कि यही चीज़ झगड़े का सबब बन जाती है।

सिफ़ारिश करेंगे और उसकी सिफ़ारिश करने वाला कोई न होगा। इसलिए यह बांझ औरत है। यह गोया तसल्ली के बात कर दी कि जिस औरत का छोटा बच्चा फ़ौत हो दुखः तो उसको भी होता है मगर उसको तसल्ली हो जाती है कि चलो में इस बच्चे को लड़कपन या जवानी नहीं देख सकी लेकिन क़यामत के दिन यह मेरी सिफ़ारिश तो करेगा।

ग़रीब कौन है?

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बताओ कि ग़रीब कौन है? सहाबा किराम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! जिसके पास माल न हो। फ़रमाया नहीं। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आप बता दीजिए। फ़रमाया, ग़रीब वह है जिसने दुनिया में नेकियाँ तो बहुत ज़्यादा की हों मगर किसी को बुरा कहा, किसी को ज़लील कहा, किसी को कमीना कहा, किसी का हक़ दबा लिया, क़यामत के दिन वह ऐसे हाल में खड़ा होगा कि हक़ वाले उससे हक़ मांगेंगे, अल्लाह तआला उनके हक़ के बदले नेकियाँ दिलवाते रहेंगे, दिलवाते रहेंगे यहाँ तक कि नेकियाँ ख़त्म हो जाएंगी लेकिन हक़ लेने वाले अभी भी खड़े होंगे। वे कहेंगे कि हमें भी हक़ दिलवाएं। अल्लाह तआला उन हक़ वालों के गुनाहों को लेकर उस बंदे के सर पर डालना शुरू कर देंगे यहाँ तक कि गुनाहों का पहाड़ उसके सर पर होगा। फ़रमाया, ग़रीब तो वह है कि जिसने नेकियाँ तो बहुत कमायीं मगर बंदों के हक़ का ख़्याल न करने की वजह से क़यामत के दिन नेकियाँ देनी पड़ गयीं और लोगों के गुनाह अपने सर पर लेने पड़ गए। फ़रमाया हक़ीक़त में तो ग़रीब यह इंसान है।

सिफ़ारिश करेंगे और उसकी सिफ़ारिश करने वाला कोई न होगा। इसलिए यह बांझ औरत है। यह गोया तसल्ली के बात कर दी कि जिस औरत का छोटा बच्चा फ़ौत हो दुखः तो उसको भी होता है मगर उसको तसल्ली हो जाती है कि चलो में इस बच्चे को लड़कपन या जवानी नहीं देख सकी लेकिन क़यामत के दिन यह मेरी सिफ़ारिश तो करेगा।

ग़रीब कौन है?

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बताओ कि ग़रीब कौन है? सहाबा किराम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! जिसके पास माल न हो। फ़रमाया नहीं। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आप बता दीजिए। फ़रमाया, ग़रीब वह है जिसने दुनिया में नेकियाँ तो बहुत ज़्यादा की हों मगर किसी को बुरा कहा, किसी को ज़लील कहा, किसी को कमीना कहा, किसी का हक़ दबा लिया, क़यामत के दिन वह ऐसे हाल में खड़ा होगा कि हक़ वाले उससे हक़ मांगेंगे, अल्लाह तआला उनके हक़ के बदले नेकियाँ दिलवाते रहेंगे, दिलवाते रहेंगे यहाँ तक कि नेकियाँ ख़त्म हो जाएंगी लेकिन हक़ लेने वाले अभी भी खड़े होंगे। वे कहेंगे कि हमें भी हक़ दिलवाएं। अल्लाह तआला उन हक़ वालों के गुनाहों को लेकर उस बंदे के सर पर डालना शुरू कर देंगे यहाँ तक कि गुनाहों का पहाड़ उसके सर पर होगा। फ़रमाया, ग़रीब तो वह है कि जिसने नेकियाँ तो बहुत कमायीं मगर बंदों के हक़ का ख़्याल न करने की वजह से क़यामत के दिन नेकियाँ देनी पड़ गयीं और लोगों के गुनाह अपने सर पर लेने पड़ गए। फ़रमाया हक़ीक़त में तो ग़रीब यह इंसान है।

ज़बान की बेअहतियाती

मोहतरम जमात! आज किसी को उल्टी-सीधी बात कह देना आसान है मगर कल क़यामत के दिन उसका जवाब देना मुश्किल काम है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला इतने जलाल में होंगे कि अल्लाह के अंबिया किराम भी थिरकते होंगे, उस दिन नफ़्सा-नफ़्सी का आलम होगा तो अगर ऐसे वक़्त में अगर हम से पूछ लिया गया कि बताओ तुमने फ़लां को तुमने कमीना क्यों कहा था? फ़लां को ज़लील क्यों कहा था? फ़लां को बेईमान क्यों कहा था? तो सोचिए तो सही कि अल्लाह तआला की अदालत में हमें उन बातों की सफ़ाई देनी कितनी मुश्किल होगी? आज ज़बान से ये बोल निकालने आसान हैं मगर कल को उनका जवाब देना बड़ा मुश्किल काम है।

मौत के बाद इंसान के पाँच हिस्से

उलमा ने लिखा है कि मौत के बाद इंसान के पाँच हिस्से बन जाते हैं, एक तो रूह जिसको मलकुल मौत लेकर चला जाता है, दूसरे इंसान का जिस्म कि उसे कीड़े खा जाते हैं, तीसरे उसका माल यह उसके वारिस ले जाते हैं, चौथे उसकी हड्डियाँ कि जिनको मिट्टी खा जाती है और पाँचवां उसकी नेकियाँ कि जिनको उसके हक़दार ले जाते हैं। इसलिए हसरत है उस इंसान पर कि क़यामत के दिन नेकियों के अंबार लाएगा मगर अपनी एहतियात न करने की वजह से नेकियाँ दे बैठेगा और गुनाहों के पहाड़ सर पर लेने पड़ जाएंगे।

हसद का वबाल

हदीस पाक में आया है :

﴾الحسد ياكل الحسنات كما تاكل النار الحطب.﴿

जिस तरह आग लकड़ियों को खा जाती है उसी तरह हसद इंसान की नेकियों को खा जाती है।

मतलब जो नेकियाँ हम कर चुके होते हैं अगर हम किसी के साथ हसद करेंगे तो उसकी वजह से हमारी की हुई नेकियाँ ऐसे बर्बाद हो जाएंगी जिस तरह आग लकड़ियों को खा जाया करती है।

ग़ीबत का वबाल

इसी तरह जब कोई इंसान किसी की ग़ीबत करता है तो जिसकी ग़ीबत हो रही हो उसके गुनाह धुल रहे होते हैं और उसके सर पर वह गुनाह चढ़ रहे होते हैं। तो हम हक़ीक़त में अपने किसी मुख़ालिफ़ की ग़ीबत करके उसको अपनी नेकियाँ दे रहे होते हैं। इसलिए ग़ीबत बहुत ख़तरनाक होती है।

भला चाहना एक पसंदीदा सिफ़्त

एक बार का वाक़िआ है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम अपने लश्कर के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ चींटियाँ चल रही थीं। उनमें से एक चींटी ने दूसरों से कहा :

﴾يا ايها النمل ادخلوا مساكنكم.﴿

ऐ चींटियों! तुम अपने बिलों में घुस जाओ कहीं सुलेमान अलैहिस्सलाम का लश्कर अपनी बेध्यानी में तुम्हें रौंदता हुआ न गुज़र जाए। लिहाज़ा अल्लाह तआला को यह बात इतनी पसंद आई कि इस वाक़िए का ज़िक्र अपने क़ुरआन पाक में भी किया

और चींटी के नाम पर एक सूरत का नाम 'नम्ल' रखा। ऐ मेरे परवरदिगार! अगर एक चींटी दूसरी चींटियों का भला चाहती है तो आप उससे इतना ख़ुश होते हैं कि इस वाक़िए को अपने कलाम पाक का हिस्सा बना लेते हैं तो अगर कोई इंसान दूसरे इंसान की ख़ैरख़्वाही करेगा तो रब्बे करीम आप उससे किस क़दर राज़ी होंगे। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपने मुसलमान भाईयों की ख़ैरख़्वाही करें।

मुसलमानों के हक़ूक़

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि हर मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर तीन हक़ हैं। पहला हक़ यह है कि फ़ायदा न दे सको तो नुक़सान भी न दो, दूसरी बात कही कि अगर किसी मुसलमान को ख़ुशी न दे सको तो उसको रंज भी न दिया करो। अव्वल तो हमें चाहिए कि हम दूसरे को ख़ुशियाँ तक़्सीम करें, ख़ुशियाँ बांटने वाले हों और ख़ुशियाँ बांटना हमारी क़िस्मत में नहीं तो कम से कम दूसरों रंज तो न पहुँचाया करें। आजकल हालत यही है कि ख़ुशी तो हमने क्या देनी, हम तो दूसरे को रंज पहुँचा रहे होते हैं, किसी न किसी को ज़बान से कढ़वी बात करते रहते हैं। तीसरी बात कि अगर तुम उसकी तारीफ़ न कर सको तो फिर उसकी बुराई न किया करो। यह मुसलमान का हक़ है। हक़ तो बनता है कि हम दूसरों की तारीफ़ें करते रहा करें। इस बात को सामने रखते हुए कि यह मेरे महबूब का उम्मती है, यह मेरे मालिक का बंदा है। हम इस बात को सोच कर उनकी तारीफ़ें करते रहा करें और अगर ज़बान से तारीफ़ नहीं निकले तो कम से कम किसी की ग़ीबत तो न किया करें।

दिल जलाने की बातें

आजकल औरतें अक्सर यह कहती हैं मैंने ऐसी बात की कि अब तो फ़लां औरत जलती रहेगी। यह जलाने वाला लफ़्ज़ आजकल की बातचीत में आम होता जा रहा है। ऐ बहन! तू उसे नहीं जला रही होती बल्कि इस बात करने की वजह से तो ख़ुद जहन्नम की आग में अपने जलने का बंदोबस्त कर रही होती है। क़ुरआन पाक में आता है ﴿ويل لكل همزة لمزة.﴾ बर्बादी है हर ऐब जो के लिए और ऐब गो के। यह दो अलग-अलग ख़ामियाँ हैं। लोगों ऐब तलाश करने वाले को "ऐब जो" कहते हैं और जब ऐब का पता चल जाए तो लोगों में बातें करने वाले को "ऐब गो" कहते हैं। ऐब जोई भी गुनाह है, ऐब गोई भी गुनाह है। परवरदिगार आलम ने इस जगह दोनों के बारे में फ़रमाया कि उसके लिए बर्बादी है जो लोगों के ऐबों को तलाश करता फिरे, या लोगों के ऐबों को आगे बताता फिरे। क्योंकि लोगों की ग़ल्तियों और ख़ामियों को ढूंढने और आगे पहुँचाने से लोगों के दिलों को तकलीफ़ होती है। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐस बंदा जो ऐब जो और ऐब गो होगा क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रिश्तों को हुक्म देंगे कि इसको जहन्नम के अंदर आग के बने हुए सतूनों के साथ बांध दिया जाए ताकि यह हिल न सके और फिर जहन्नम की आग को हुक्म होगा कि उसकी लपटें उसकी तरफ़ बढ़ें। उसकी लपटें उसकी तरफ़ बढ़ेंगी और वह इसके दिल को जलाएंगी। फ़रमाया ﴿نار الله الموقدة التى تطلع على الافئدة.﴾ जहन्नम की आग उस बंदे के दिल को जलाएगी जिस तरह वैल्डिंग की आग होती है कि उसको अगर लोहे के ऊपर

कहीं रख दें तो उस जगह को जलाकर सुराख़ कर देती है बिल्कुल इसी तरह जहन्नम की ख़ास आग होती है जो इस आम आग से भी ज़्यादा गर्म होगी और अल्लाह तआला इस आग से जहन्नमी के दिल को जलाएंगे और कहा जाएगा कि ऐ मेरी बंदी! तू दुनिया में अपने मुँह से ऐसी बातें निकालती थी। कहती थी कि मैंने फ़लां औरत को जलाया है, मैंने फ़लां को ख़ूब सड़ाया है, मैंने ऐसी बात की कि वह सड़ती रहेगी। आज देख उसका अज्र, आज देख उसका हश्र, तेरे दिल के ऊपर जहन्नम की आग का क़ब्ज़ा है। आज यह तुझ पर मुसल्लत है, यह तेरे दिल को जलाएगी। तूने लोगों के दिलों को जलाया, अल्लाह तआला कल जहन्नम के अंदर तेरे दिल को जलाएंगे। अब सौदा तो ख़ुद हम देखें कि कौन सा अच्छा है। या तो दुनिया में दूसरों की ग़ल्तियों को माफ़ करें ताकि अल्लाह तआला क़यामत के दिन हमें माफ़ कर दे या फिर दुनिया में लोगों को जलाते फिरें। कल क़यामत के दिन हमारा जिस्म तो जल ही रहा होगा, फिर हमारा दिल भी जलेगा और वहाँ पर कोई फ़रियाद सुनने वाला भी नहीं होगा—

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएंगे

अब पछताए क्या होत

सोचिए तो सही जब वहाँ के सतून के साथ रस्सियों और ज़ंजीरों से बंधे हुए होंगे और दिल जल रहा होगा फिर यह औरत चीख़ेगी, चिल्लाएगी मगर उसके रोने का फ़ायदा न होगा। "अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।" इन गुनाहों की माफ़ी ज़िंदगी में मांगने की ज़रूरत थी, जब ज़िंदगी में न मांगी तो

क़यामत के दिन रोने से क्या फ़ायदा। जहन्नमी रोते रहेंगे परवरदिगार को तरस नहीं आएगा।

दुनिया की शर्मिन्दगी आसान है

लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम जीते जागते अपने झगड़ों को समेट लिया करें। दुनिया में माफ़ी मांगनी आसान है, दुनिया में दो आँसू बहा लेने आसान हैं, किसी के पाँव पकड़ लेने आसान हैं, किसी से माफ़ी मांगने के लिए दो बातें कह लेनी आसान हैं, किसी एक बंदे के सामने शर्मिन्दगी सहन करना आसान है लेकिन अगर हम ने इन झगड़ों को ने समेटा और इसी तरह उनको लेकर क़ब्र में चले गए तो आगे फिर मामला मुश्किल होगा। क़यामत के दिन अदालत में यह मुक़दमे खोले जाएंगे, वहाँ कोई एक देखने वाला नहीं होगा बल्कि सारी इंसानियत देखेगी। अंबिया किराम भी देखेंगे, औलिया भी देखेंगे, आम लोग भी देखेंगे, परवरदिगार भी देखेंगे। जब सब के सामने कच्चा चिठ्ठा खुलेगा तो फिर सोचिए कि उस वक़्त कितनी नदामत होगी। अल्लाह तआला हमें समझ दे। हम अपनी ज़िंदगी में इस क़िस्म के मामलात खुद समेट लें।

ख़ैरख़्वाही का फ़ायदा

हदीस पाक में आया है कि जो आदमी दूसरों का भला चाहेगा अल्लाह तआला उसका भला चाहेगा। मिसाल के तौर पर एक आदमी दूसरों की ख़िदमत में लगा रहता है तो अल्लाह तआला उस बंदे के कामों को संवारने में लगे रहते हैं। यह इंसान दूसरों की मदद कर रहा है तो अल्लाह तआला उसकी मदद फ़रमा रहे हैं। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया :

﴿وَأَمَّا مَا يَنفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ﴾

जो आदमी दूसरे इंसानों की नफ़ा रसानी के लिए ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनको नफ़ा पहुँचाते हैं, अल्लाह तआला उनको ज़मीन में जमा देते हैं। जो ख़ैरख़्वाह लोग होते हैं अल्लाह तआला उनको क़ुबूलियत देते हैं।

अल्लाह वालों से प्यार का मामला

क्या देखते नहीं कि अल्लाह वालों के साथ क्या मामला होता है, उनके दिलों में अल्लाह की मुहब्बत ऐसी होती है कि वह अल्लाह की मख़्लूक़ से मुहब्बत करते हैं और फिर मख़्लूक़ उनके ऊपर क़ुर्बान हुई जाती है। जिस तरह किसी शमा के ऊपर परवाने जान फ़िदा करने को तैयार होते हैं उसी तरह अल्लाह वालों पर सालिकीन अपनी जानें क़ुर्बान करने को तैयार होते हैं। ये अल्लाह तआला पर क़ुर्बान, मख़्लूक़ ख़ुदा उन पर क़ुर्बान, यह अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। लोग उनसे मुहब्बत करते हैं, ये अल्लाह के चाहने वाले बनते हैं, अल्लाह तआला लोगों को उनका चाहने वाला बना देता है। ये अल्लाह तआला की इबादत के लिए अपनी ज़िंदगी बसर करते हैं, लोग इनकी ख़िदमत के लिए ज़िंदगी बसर करते हैं। अल्लाह वालों को अल्लाह तआला वह मुक़ाम अता फ़रमा देते हैं कि वे लोगों की ख़ैरख़्वाही करते हैं, अल्लाह तआला फिर उनकी ख़ैरख़्वाही करवा देते हैं। इसीलिए कई ऐसे लोग भी होंगे जिनको अल्लाह तआला महबूबुल-आलम बना देते हैं। जहाँ जाते हैं मुहब्बतें मिलती हैं, उल्फ़तें मिलती हैं, जहाँ जाते हैं उनको क़ुदरत की तरफ़ से लोगों के दिलों का प्यार मिलता है। वजह

क्या है? उनके दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत इस तरह रच-बस रही होती है कि अल्लाह तआला अपने बंदों के दिलों में उनका प्यार रख देते हैं।

दलील

उसकी दलील हदीस पाक में है कि जब बंदा नफ़्लों के ज़रिए अपने अल्लाह का क़रीबी बंदा बन जाता है ﴿يتقرب الى عبدى بالنوافل﴾ मेरा बंदा नफ़्लों के ज़रिए मेरा इतना क़ुर्ब पा लेता है ﴿حتى احبه﴾ यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करता हूँ, जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो ﴿دع جبريل﴾ अल्लाह तआला जिब्राईल अलैहिस्सलाम को बुलाते हैं और फ़रमाते हैं, जिब्राईल! मैं फ़लां बदें से मुहब्बत करता हूँ। जिब्राईल अलैहिस्सलाम आसमान के फ़रिश्तों में ऐलान कर देते हैं कि ऐ फ़रिश्तो! अल्लाह तआला फ़लाँ बंदे से मुहब्बत करते हैं। लिहाज़ा सारे फ़रिश्ते उस बंदे से मुहब्बत करने लग जाते हैं। फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम ज़मीन पर आते हैं और एक जगह खड़े होकर ज़मीन में ऐलान करते हैं, ऐ लोगो! अल्लाह तआला फ़लां बंदे से मुहब्बत करते हैं :

﴿ثم يوضع لهٗ القبول فى الارض.﴾

यह हदीस पाक के अल्फ़ाज़ हैं कि अल्लाह तआला उस बंदे के लिए दुनिया में क़ुबूलियत रख देते हैं।

वह जहाँ जाता है मक़्बूल बनता है, वह जहाँ जाता है लोग उस से मुहब्बत करते हैं, प्यार करते हैं, वह दुश्मनों में चला जाए तो वह दोस्त बन जाएं, वह ग़ैरों में चला जाए लोग अपने बन जाएं, वह जंगल में चला जाए वहाँ मंगल का समां बन जाए। सुब्हानअल्लाह

जिसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत होती है अल्लाह तआला उसको ज़िंदगी में भी यूँ मुहब्बतें अता फ़रमा देते हैं।

मुहब्बते इलाही में कमी का वबाल

आज क्योंकि दिलों में मुहब्बते इलाही की कमी है इसलिए आज का एक आम इंसान यूँ समझता है कि फ़लां मुझसे नफ़रत करता है, बहू समझती है कि सास मुझसे नफ़रत करती है, सास समझती है कि बहू मुझसे नफ़रत करती है, लड़की समझती है कि फ़ला मेरी कज़न मुझसे नफ़रत करती है, फ़लां मेरी नन्द मुझसे नफ़रत करती है, फ़लां मेरी ख़ाला ज़ाद मेरे ऊपर अमल करती है। ये सब इस क़िस्म की बातें हैं। हक़ीक़त यह है कि अपने दिल में मुहब्बत इलाही की कमी होती है। जिसकी वजह से उसके अंदर यह ख़्याल होता है कि लोग मुझे अच्छा नहीं समझते, लोग मेरी ग़ीबत करते होंगे, फ़लां ने फ़लां को बिगाड़ा होगा, फ़लां मेरा बुरा चाहने वाला है, उसको सब बुराई चाहने वाले नज़र आते हैं। काश! हम अपनी सोच को बदल लेते, अपने दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत को भर लेते। फिर अल्लाह तआला मख़्लूक़ के दिल में हमारी मुहब्बतों को भर देते हैं और ज़िंदगी कितनी अच्छी गुज़रती—

फ़ुर्सते ज़िंदगी कम मुहब्बतों के लिए
लाते हैं कहाँ से वक़्त लोग नफ़रतों के लिए

नफ़रत हो तो कुफ़्फ़ार से

मालूम नहीं कि लोग इस मुख़्तसर सी ज़िंदगी में नफ़रत के लिए कहाँ से वक़्त निकाल लेते हैं। फ़लां से नफ़रत, फ़लां से

नफ़रत, फ़लां से नफ़रत। नहीं ख़ुदा के बंदे अगर नफ़रत हो तो कुफ़्फ़ार से हो, नफ़रत हो अल्लाह के दुश्मनों से हो लेकिन जो ईमान वाले हैं, जो कलिमा गो हैं उनके साथ मुहब्बत होनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें अपनी भी मुहब्बत नसीब फ़रमा दे और अपनी ज़िंदगी में दूसरों की ख़ैरख़्वाही करने की रब्बे करीम तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे और जो हम अब तक गुनाह कर चुके हैं अल्लाह तआला मौत से पहले पहले उनकी माफ़ी मांगने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे।

दिल की पुकार

आज की औरतें अक्सर कहती हैं कि जी क्या करें हमारे लिए दुआ करें, अल्लाह तआला तो हमारी सुनता ही नहीं। मेरी बहन! अल्लाह तआला सुनते तो सब की हैं मगर बात यह है कि अल्लाह तआला दिल की पुकार को सुनते हैं, तू ज़बान से पुकारती है। इसलिए तेरी पुकार वहाँ पहुँचती नहीं। अगर तेरा दिल कलाम करता तो रब तो दिल की बातें सुनते हैं। तेरा दिल ख़ामोश, तेरा दिल पत्थर, तेरा दिल स्याह, फिर तेरी ज़बान से निकली हुई बातें वहाँ तक कैसे पहुँचेंगी। याद रखें कि परवरदिगार सब की सुनते हैं मगर लोगों के दिल गूंगे होते हैं, उनके दिल बातें नहीं करते, अगर तेरा दिल गूंगा न होता, तेरा दिल अल्लाह से बातें करता तो तुझे कभी शिकवा न होता कि परवरदिगार तो मेरी सुनते नहीं। वे जिनके दिल अपने अल्लाह से बातें करते हैं, अपने अल्लाह की याद में रहते हैं, उनको शिकवों की कोई ज़रूरत नहीं होती, उनके दिल से दुआएं निकलती हैं, फिर परवरदिगार क़ुबूल कर लेते हैं। तू रब का शिकवा क्यों करती है, अपने दिल के गूंगे होने का

शिकवा क्यों नहीं करती? यह पत्थर बन गया है, बेजान बन गया, आज इसके अंदर वह कैफ़ियत नहीं जो होनी चाहिए थी—

हम इल्ज़ाम उनको देते हैं क़ुसूर अपना निकल आया

हम अपने अंदर भी तो झांककर देखें कि हमारे दिल की हालत क्या बनी हुई है। यह हमारे गुनाह हैं जिनकी वजह से ज़ुलमतें होती हैं, दिलों के अदंर सख़्ती आ जाती है।

अपनी सीरत को ख़ूबसूरत बनाएं

आज की औरतें जितना वक़्त रोज़ाना अपने ज़ाहिरी जिस्म को ख़ूबसूरत बनाने के लिए लगाती हैं, काश! कि इससे आधा वक़्त अपने बातिन को ख़ूबसीरत बनाने के लिए ख़र्च कर देतीं तो मेरे अंदाज़े से जहन्नम से बचकर जन्नत की हक़दार बन जातीं। अपने ज़ाहिर को ख़ूबसूरत बनाने के लिए हर वक़्त सोचती फिर रही होती हैं मगर अपने बातिन की शक्ल क्या है? जिसको परवरदिगार देखता है उसकी तरफ़ ग़ौर नहीं होता।

वह सरापा जिस पर बंदों की नज़रें पड़नी हैं, मेरी बहन तू उसे इतना संवारती फिरती है जबकि तेरे दिल पर तेरे रब की निगाहें पड़ती हैं, तुझे संवारने की फ़िक्र नहीं। जिस घर के अंदर तेरे दुनिया के मेहमान आते हैं तूने उसको नगीने की तरह चमका रखा है और तेरे दिल में तेरा परवरदिगार मेहमान बनकर आता है और तुझे इस घर की परवाह नहीं होती। वहाँ ख़्वाहिशें होती हैं, शहवतें होती हैं, वहाँ निजासत की बदबू होती है और हमें परवाह नहीं होती कि हमारे दिल की क्या हालत बन गई। लिहाज़ा अपने जिस्म को ज़रूर ख़ूबसूरत बनाएं मगर इससे भी ज़्यादा अपनी

सीरत को ख़ूबसूरत बनाइए। अल्लाह तआला की नज़र इंसान की सीरत पर होती है।

मेरी बहन! मेरी बातें ज़रा दिल की तवज्जेह से सुन लेना। याद रखना क़द बग़ैर ऊँची हील के भी नज़र आ सकता है अगर इंसान की अपनी शख़्सियत बुलंद हो, इंसान की आँखें बग़ैर सुरमे के भी ख़ूबसूरत लग सकती हैं अगर उन आँखों में हया हो, इंसान की पलकें बग़ैर मसकारें के भी दिलफ़रेब बन सकती हैं अगर वे पलकें शर्म से झुकी हुई हों, इंसान की पेशानी बग़ैर बिंदियों के भी ख़ूबसूरत लगती हैं अगर उस पर सज्दों के निशान हों तो क्यों न तू अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे। रब के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल कर ले, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तुझे लोगों में महबूबियत अता फ़रमा देंगे, लोग तेरे सामने बिछते फिरेंगे, तुझे दुनिया में भी इज़्ज़त मिलेगी। रब्बे करीम हमें इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी नसीब फ़रमा दे। हमारी कोताहियों को माफ़ फ़रमाकर हमें अपने पसंदीदा बंदों में शामिल फ़रमा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

❋ ❋ ❋

इल्म, अमल और इख़्लास

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم ○ بسم الله الرحمن الرحيم ○

يرفع الله الذين امنوا منكم والذين اوتوا العلم درجت. وقال الله

تعالى فى مقام اخر انما يخشى الله من عباده العلماء. وقال رسول

الله صلى عليه وسلم اطلبوا العلم من المهد الى اللحد او كما قال

عليه الصلوة والسلام. سبحن ربك رب العزة عما يصفون ○

وسلام على المرسلين ○ والحمد لله رب العالمين ○

हर इंसान दुनिया में इज़्ज़त की ज़िंदगी गुज़ारना चाहता है। इस इज़्ज़त की तलाश में उसे दिन रात मेहनत करना पड़े तो भी नहीं घबराता, अपने आराम को क़ुर्बान करना पड़े तो भी पीछे नहीं हटता।

इज़्ज़त मिलने के दो ज़रिए

उसके दिल में एक तड़प और तमन्ना होती है कि मुझे इज़्ज़त की ज़िंदगी नसीब हो। दुनिया में इज़्ज़त दो तरह से मिलती है। एक माल के ज़रिए और दूसरे नेक आमाल के ज़रिए। मगर दोनों इज़्ज़तों में फ़र्क़ है। माल जिस तरह ख़ुद वक़्ती चीज़ है, ढलती छाँव है, इससे मिलने वाली इज़्ज़त भी नापाएदार होती है।

जो शाख़ नाज़ुक पे आशियाना बनेगा नापाएदार होगा

नेक आमाल, क्योंकि बाक़ी रहने वाले होते हैं, बाक़ियातुस्स-सालिहात में से होते हैं तो यह पक्की बात है कि इल्म को माल पर कई वजूहात की वजह से फ़ज़ीलत हासिल है। इल्म से इंसान अमल करता है और आमाल की वजह से उसे दुनिया व आख़िरत में इज़्ज़तें मिलती हैं। इसलिए जो इज़्ज़त इंसान को नेकी की वजह से मिलती है वह हमेशा की इज़्ज़त हुआ करती है। फ़रमायाः

﴿ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين.﴾

इज़्ज़त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए, उसके रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है।

इल्म की फ़ज़ीलत माल पर

1. इल्म अंबिया किराम की मीरास है और माल क़ारून की मीरास है।
2. इल्म के हासिल होने से इंसान के दोस्त बढ़ते हैं और माल के हासिल होने से इंसान के हासिद बढ़ते हैं।
3. इल्म को चोरी का ख़तरा नहीं होता और माल को कभी अमन नसीब नहीं होता।
4. इल्म तो सीने का नूर है इंसान जहाँ जाएगा साथ होगा जब कि माल तो तिजोरी में होता है हर वक़्त साथ नहीं होता।
5. इल्म जितना भी पुराना हो उतना गहरा होता है, उसका मुक़ाम और मर्तबा बढ़ता चला जाता है और माल जितना

पुराना हो यह अपनी क़ीमत घटा बैठता है। आज से पचास साल पहले रुपए की जो क़ीमत थी आज आपके रुपए की आधी क़ीमत भी नहीं मिलेगी।

6. इल्म की मुहब्बत से इंसान करीम हुआ करता है जबकि माल की मुहब्बत से इंसान बख़ील हुआ करता है।
7. इल्म को जितना ख़र्च किया जाए उतना बढ़ता ही चला जाता है और माल को जितना ख़र्च किया जाए वह उतना घटता चला जाता है।
8. इल्म की मुहब्बत दिल में हो तो इंसान के दिल में नूर आता है जबकि माल की मुहब्बत दिल में हो तो इंसान के दिल में अंधेरा आता है।
9. इल्म इंसान की हिफ़ाज़त करता है जब कि माल की हिफ़ाज़त इंसान को करना पड़ती है।
10. इल्म से इंसान माल तो कमा सकता है मगर माल से इंसान इल्म को नहीं ख़रीद सकता।
11. माल की ज़्यादती की वजह से फ़िरऔन ने कहा था ﴿انا ربكم الاعلى﴾ यानी ख़ुदाई का दावा किया था। माल ने उसमें तकब्बुर पैदा कर दिया था जबकि इल्म की कसरत की वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने फ़रमाया :

﴿ما عبدناك حق عبادتك وما عرفناك حق معرفتك.﴾

इल्म ने आजिज़ी और तवाज़े पैदा कर दी।

माल की बेसबाती

आमतौर पर तास्सुर पाया जाता है कि माल होगा तो सब

काम संवर जाएंगे। कहावत मशहूर है कि माल हो तो इंसान शेरनी का दूध भी ख़रीद सकता है। यह सिर्फ़ धोका है। माल से बहुत सारे काम ठीक हो जाते हैं मगर हर काम ठीक नहीं होता। आप ख़ुद सोचिए कि :

1. माल से इंसान ऐनक तो ख़रीद सकता है, बीनाई तो नहीं ख़रीद सकता।
2. माल से इंसान किताब तो ख़रीद सकता है, इल्म तो नहीं ख़रीद सकता।
3. माल से इंसान नरम बिस्तर तो ख़रीद सकता है मीठी नींद तो नहीं ख़रीद सकता।
4. माल से इंसान अच्छे कपड़े तो ख़रीद सकता है, हुस्न व जमाल तो नहीं ख़रीद सकता।
5. माल से इंसान घर में नौकर तो ला सकता है, नेक बेटा तो नहीं ला सकता।
6. माल से इंसान दवाएं तो ख़रीद सकता है, अच्छी सेहत तो नहीं ख़रीद सकता।
7. माल से इंसान ख़िज़ाब तो ख़रीद सकता है, शबाब तो नहीं ख़रीद सकता।
8. माल से इंसान को लोगों की ख़ुशामद ख़रीद सकता है, किसी के दिल में मुहब्बत तो नहीं ख़रीद सकता।
9. माल से हर काम दुनिया में भी नहीं होते और रोज़े महशर तो माल बिल्कुल ही काम नहीं आएगा।

अल्लाह तआला का इर्शाद है, फ़रमाया :

﴿يوم لا ينفع مال ولا بنون الا من اتى الله بقلب سليم﴾

रोज़े महशर न माल काम आएगा और न ही बेटा मगर जो शख़्स संवरा हुआ दिल लाया वह दिल उसके काम आएगा।

इल्म और जिहालत का मुक़ाबला कुरआन पाक की रोशनी में

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿قل هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون.﴾

आप फ़रमा दीजिए कि क्या इल्म वाले और बेइल्म बराबर हो सकते हैं? बल्कि कुरआन मजीद में सात चीज़ों को कहा गया है कि वे सात चीज़ों के बराबर नहीं हो सकतीं। जैसे इस आयत में इल्म के बारे में फ़रमाया गया कि इल्म वाला और बेइल्म बराबर नहीं हो सकते।

दूसरी जगह फ़रमाया ﴿قل لا يستوى الخبيث والطيب﴾ कि पाकीज़ा चीज़ और नापाक चीज़ बराबर नहीं हो सकती।

फ़रमाया ﴿لا يستوى اصحاب النار واصحاب الجنة.﴾ जन्नत वाले और आग वाले बराबर नहीं हो सकते।

﴿وما يستوى الاعمى والبصير.﴾ बीना (आँखों वाले) और नाबीना (अंधे) बराबर नहीं हो सकते।

﴿ولا الظلمت ولا النور.﴾ ज़ुलमत (अंधेरा) और रोशनी बराबर नहीं हो सकती।

﴿ولا الظل ولا الحرور.﴾ धूप और छाँव बराबर नहीं हो सकती।

﴿وما يستوى الاحياء ولا الاموات.﴾ ज़िंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते थे कि इन आयतों में सात चीज़ों से मुराद इल्म है और उनके मुक़ाबले की सात चीज़ों से मुराद जिहालत है। लिहाज़ा इल्म, तैय्यब, जन्नत, बसारत, नूर, धूप और हयात सारे के सारे अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला ने इल्म के लिए इस्तेमाल फ़रमाए और दूसरे अल्फ़ाज़ अल्लाह तआला ने जिहालत के लिए इस्तेमाल फ़रमाए।

इल्म की फ़ज़ीलत क़ुरआन मजीद से

इस दुनिया में असली इज़्ज़त मिली अंबियाए किराम को और वह हमेशा की इज़्ज़त थी। और ये वे लोग थे जो अल्लाह तआला के पसंदीदा और चुने हुए लोग थे। जिनकी ज़िंदगी इंसानियत के लिए नमूना थी। दुनिया दारुल असबाब है, सबब की ज़रूरत होती है। अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को दुनिया में इज़्ज़तें मिलने का जो सबब भी बना वह इल्म बना। आइए क़ुरआन पाक से हम कुछ मिसालें देखें।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने मस्जूदुल मलाइका बनाया, मलाइका को हुक्म दिया कि तुम आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करो मगर इस सज्दा करने का सबब इल्म बना। फ़रमाया ﴿وعلم آدم الاسماء كلها﴾ और हमने आदम अलैहिस्सलाम को तमाम अस्मा का इल्म अता कर दिया। तो जो चीज़ सबब बन रही है वह ऐसा इल्म था जो फ़रिश्तों को नहीं

मालूम था। लिहाज़ा फ़रमाया तुम सज्दा करो। तो जब चीज़ों के इल्म होने की वजह से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मस्जूदुल मलाइका बने तो यहाँ आरिफ़ीन ने एक नुक्ता लिखा, ऐ इंसान! जब चीज़ों के नामों का इल्म हो तो इंसान मस्जूदुल मलाइका बन जाता है तो जिस इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नामों का इल्म और उसकी मारिफ़त होगी फिर उसके मुक़ामात कितने बुलंद कर दिए जाएंगे।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने दुनिया में बड़ी सलतनत अता फ़रमाई। इसका सबब क्या बना? क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया ﴿وعلمناه صنعة لبوس لكم﴾ और हमने उनको लोहे की ज़िरह बनाने का इल्म अता कर दिया था। ﴿وعلمنه﴾ और हमने अता कर दिया था, निस्बत अपनी तरफ़ फ़रमाई और हमने उनको लोहे की ज़िरह बनाने का इल्म अता कर दिया था। इस बिना पर अल्लाह तआला ने दुनिया में उनको बड़ी सलतनत अता कर दी थी।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत सुलमान अलैहिस्सलाम को दुनिया की भी शाही मिली और दीन की शाही भी। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया कि उन जैसी दुनिया की शाही न पहले कभी किसी को मिली थी न फिर मिलेगी। ऐसी शाही मिली कि इंसानों के भी बादशाह, जिन्नों के भी, परिन्दों के भी, हैवानों के भी, दरिन्दों के भी, ख़ुश्की की मख़्लूक़ के भी और तरी की मख़्लूक़ के भी बादशाह बने। अल्लाह

तआला ने हर चीज़ पर उनको शाही अता फ़रमाई थी। अल्लाह तआला ने उनको मलिका सबा पर ग़लबा अता किया। अब उनकी फ़तेह और ग़लबे का वाक़िआ क़ुरआन मजीद में बयान किया तो उसकी वजह क्या बताई गई? उन्होंने फ़रमाया :

﴿ياايها الناس علمنا منطق الطير.﴾

ऐ इंसानो! मुझे अल्लाह तआला ने परिन्दों की बोली को समझने का इल्म अता कर दिया।

दुनिया के अंदर ऐसी शाही मिलने और ग़लबा नसीब होने का सबब उनका इल्म बना।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ग़ुलामी की हालत से निकलकर तख़्त के ऊपर बिठाया। फ़र्श पर थे अर्श पर बिठा दिए गए। एक वक़्त वह भी था कि जब मिस्र के बाज़ार में बिक रहे थे, उनके भाव और दाम लग रहे थे और लोग ख़रीदने के लिए आ रहे थे। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिए क़ीमतें लगा रहे थे लेकिन यह इल्म के हासिल होने से पहले का वक़्त था। फ़रमायाः

﴿فلما بلغ اشده اٰتينه حكما و علما.﴾

देखिए अब इल्म अता हो रहा है और फिर इल्म के बाद अल्लाह तआला ने उनको शाही अता फ़रमाई। उनको दुनिया का तख़्त मिला, ख़ज़ाने की चाबियाँ मिलीं। फ़रमाया ﴿اجعلنى علٰى خزائن الارض.﴾ मुझे ख़ज़ानों का वाली बना दो। अब यह जो चाबियाँ उनके हवाले हो रही हैं उसका सबब 'ख़्वाब की ताबीर' का इल्म

बना। बादशाहे वक़्त ने ख़्वाब देखा, कोई ताबीर देने वाला न था। लिहाज़ा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास पहुँचा और कहा गया कि आप ताबीर बताइए। क़ुरआन पाक में है :

﴾وكذلك يجتبيك ربك ويعلمك من تاويل الاحاديث.﴿

और अल्लाह तआला ने मुझे ख़्वाब की ताबीर का इल्म अता कियां। आपने ख़्वाब की ताबीर दी। बादशाह ने सोचा कि यही हस्ती हमें इस फ़क़्र व फ़ाक़े और तंगदस्ती से बचा सकती है। लिहाज़ा उसने ख़ज़ानों की चाबियाँ उनके हवाले कर दीं। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के लिए दुनिया की बादशाही नसीब होने का सबब इल्म बना।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दुनिया में अपनी वालिदा से इल्ज़ाम को दूर किया अपने इल्म की वजह से। क़ुरआन गवाही देता है :

﴾ويعلمه الكتب والحكمة والتورة والانجيل.﴿

देखिए उनको भी इल्म अता किया गया।

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम की मिसाल

हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम के बारे में मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि औलिया में सबसे बड़ा मुक़ाम रखने वाले हैं। उन्हें एक नबी अलैहिस्सलाम का उस्ताद बनने का शर्फ़ नसीब हुआ और नबी भी कितनी शान वाले कि कलीमुल्लाह ﴾كلم الله موسى تكليما﴿ उनको उस्ताद बनने का जो मुक़ाम नसीब हुआ उसकी वजह

उनका इल्म बना। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿فوجدا عبدا من عبادنا اتينه رحمة من عندنا وعلمنه من لدنا علما﴾

हमने उसे अपने पास से इल्म अता कर दिया। इल्म सबब बन रहा है एक वली के लिए कि वह अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त के पैग़ंबर का भी उस वक़्त उस्ताद बने।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिसाल

नबी अलैहिस्सलाम को अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त ने कौनैन की शाही अता फ़रमाई थी। सैय्यदुल अव्वलीन वल आख़िरीन बनाया और उनको भी अल्लाह तआला ने इल्म में मुमताज़ फ़रमाया।

﴿وعلمك مالم تكن تعلم وكان فضل الله عليك عظيما﴾

और आपको वह इल्म दिया जो आपके पास न था और आप पर अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल हुआ।

इन तमाम हस्तियों के लिए दुनिया में इ़ज़्ज़तें, शराफ़तें और ग़लबे मिलने का सबब जो चीज़ बन रही है वह उनका इल्म है। मालूम हुआ कि इल्म से जो इ़ज़्ज़तें मिलती हैं वे हमेशा की हुआ करती हैं और माल के ज़रिए जो इ़ज़्ज़तें मिलती हैं वे वक़्ती हुआ करती हैं। सुबह के वक़्त तख़्त पर होते हैं और शाम के वक़्त तख़्ते पर हुआ करते हैं, रात को वज़ीर हैं सुबह को असीर (क़ैदी) हैं, रात को सदर हैं सुबह को मुल्क बदर (बाहर) हैं, रात को अमीर हैं सुबह को फ़क़ीर हैं। माल से मिलने वाली ऐसी वक़्ती इ़ज़्ज़त से क्या फ़ायदा।

अक़्लमंद इंसान

अक़्लमंद इंसान वह है जो अपने आपको इल्म के ज़ेवर से सजाए। जो अपने दिल को इल्म के नूर से मुनव्वर करे ताकि वह दुनिया के अंदर इज़्ज़तों वाली ज़िंदगी और कामयाबियों वाली ज़िंदगी अपना सके।

अनमोल बातें

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० एक बड़े फ़क़ीह (आलिम) गुज़रे हैं। फ़रमाया करते थे कि अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से अफ़ज़ल कोई नहीं होता। सच्ची बात यही है कि जिस घर में कोई अहले इल्म न हो तो वह घर जानवरों का दड़बा होता हैं ﴿اولـئك كالانعام بل هم اضل﴾ वह तो जानवर हैं बल्कि उनसे भी बद्तर ﴿اولـئك هم الغافلون.﴾ यह भी हकीक़त है क अगर इंसान रास्ते से वाक़िफ़ हो तो वह अपने लंगड़े गधे को भी मंज़िल पर पहुँचा लेता है और जिसको रास्ते का पता न हो उसका मोटा ताज़ा गधा भी रास्ते में खड़ा होता है। मालूम हुआ कि अगर इल्म हो तो इंसान अपनी ज़िंदगी में मंज़िले मक़सूद पर पहुँच जाया करता है। इल्म की अहमियत इस लिहाज़ से बहुत ज़्यादा है।

अमल की ज़रूरत

एक नुक्ता समझिए कि जिस तरह चिराग़ जले बग़ैर रोशनी नहीं देता इसी तरह इल्म भी अमल के बग़ैर फ़ायदा नहीं देता। अमल के बग़ैर इल्म मालूमात कहलाता है। इसीलिए तो क़ुरआन मजीद में बनी इस्राइल के बेअमल पीरों को कुत्तों से तश्बीह दी

गई है और बे अमल उलमा को गधों के साथ तश्बीह दी गई। बलअम बाओर के बारे में फ़रमाया गया ﴿فمثله كمثل الكلب﴾ उसकी मिसाल कुत्ते की सी है और बेअमल उलमा के बारे में फ़रमाया ﴿كمثل الحمار يحمل اسفارا﴾ यह तो गधे हैं जिनके ऊपर बोझ लादा हुआ है। इसलिए इल्म का फ़ायदा भी तभी नसीब होता है जब इंसान उसको अमल की शक्ल में ढाल लेता है। इसीलिए कहावत है कि इल्म अमल का दरवाज़ा खटखटाता है, खुल जाए तो मौजूद रहता है वरना हमेशा के लिए चला जाता है।

इख़्लास की ज़रूरत

इल्म के बाद एक क़दम और है जिसको इख़्लास कहते हैं। ये तीन चीज़ें जब इकट्ठी हो जाती हैं (इल्म, अमल और इख़्लास) तो फिर यह एक क़ुव्वत बन जाती है एक ताक़त बन जाती है। जिस इंसान के अंदर इल्म भी होगा, अमल भी होगा और इख़्लास भी होगा तो अब ये अल्फ़ाज और हर्फ़ नहीं बल्कि अब यह एक ताक़त है, एक क़ुव्वत है। और इस क़ुव्वत की वजह से उसे अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़तें देते हैं। इसलिए हमें अपने अंदर इख़्लास पैदा करने की ज़रूरत है।

आसिफ़ बिन बर्ख़िया के इल्म, अमल और इख़्लास की बरकत

देखिए दुनिया के अंदर भी इंसान ऐसे काम कर दिखाता है जो जिन्न भी नहीं कर पाते। पढ़िए क़ुरआन पाक कि जब मलिका बिल्क़ीस का तख़्त मंगवाना था तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

ने अपनी पार्लियामेंट के मेम्बरों को कहा था ﴿یاایها الملاء﴾ ऐ मेरे अमीरो! सलाहकारो! वज़ीरो! ﴿ایکم یاتینی بعرشها قبل ان یاتونی مسلمین.﴾ तुममें से कौन है जो मलका बिल्क़ीस का तख़्त मुझ तक ले आए इससे पहले कि बिल्क़ीस मुझ तक आ पहुँचे। ﴿قال عفریت من الجن﴾ जिन्नों में से एक इफ़रीत ने कहा (इफ़रीत कहते हैं बड़े जिन्न को, जिन्नों में से भी पहलवान जिन्न को) ﴿انا اتیک به قبل ان تقوم من مقامک﴾ मैं उसे आपके पास ला सकता हूँ इससे पहले कि आप अपनी जगह से खड़े हों। आपने फ़रमाया यह तो बड़ी देर है कि मज्लिस ख़त्म होने से पहले लाओगे, मुझे इससे पहले चाहिए। अब वहाँ पर जिन्न भी बेबस हो गए। अल्लाह का एक नेक बंदा आसिफ़ बिन बर्ख़िया उस वक़्त खड़ा होता है। कहता है ﴿انا اتیک به قبل ان یرتد الیک طرفک﴾ मैं उसे ला सकता हूँ इससे पहले कि आप अपनी पलक झपकें। भला यह कौन था? क़ुरआन मजीद में इसके बारे में फ़रमाया ﴿قال الذی عنده علم من الکتب﴾ कहा उसने जिसके पास किताब का इल्म था। सुब्हानअल्लाह, सुब्हानअल्लाह। जहाँ इफ़रीत भी कोई काम करने से बेबस हो जाते। वहाँ एक इल्म वाला खड़ा होता है :

﴿قال الذی عنده علم من الکتب انا اتیک به قبل ان یرتد الیک طرفک.﴾

और जब उन्होंने पलक झपक कर देखा ﴿فلما راه مستقرا عندهٗ قال هذا من فضل ربی.﴾ फ़रमाया यह तो मेरे रब का फ़ज़्ल है। इसलिए इल्म, अमल और इख़्लास जब तीन चीज़ें जमा हो जाएं तो फिर यह क़ुव्वत और ताक़त बन जाया करती हैं। फिर यह ईमानी क़ुव्वत और ताक़त इंसान को दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़तें दिया करती है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्म, अमल और इख़्लास की बरकतें

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इल्म, अमल और इख़्लास से मिलने वाली क़ुव्वत और ताक़त मौजूद थी और उसी क़ुव्वत औरत ताक़त की वजह से अल्लाह तआला ने दुनिया के हाकिमों और बादशाहों के ताज उनके क़दमों में लाकर डाल दिए। फ़क़ीराना ज़िंदगी थी लेकिन वक़्त की बड़ी-बड़ी सुपर पावर वाले बादशाह क़ैसर व किसरा भी थर्राया करते थे। नाम सुनकर काँपते थे, लरज़ जाया करते थे। इसलिए कि उनके पास इल्म, अमल और इख़्लास की क़ुव्वत मौजूद थी।

हवा पर हुक्म

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिंबर पर खड़े होकर फ़रमाया ﴿يا سارية الجبل﴾ ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ़ से ध्यान रखना। हवा उनका यह पैग़ाम को ज़बान से लेकर अमीरे लश्कर तक पहुँचा देती है। यह उनका हवा पर हुक्म चल रहा है।

ज़मीन पर हुक्म

किताबों में लिखा है कि एक बार मदीना मुनव्वरा में ज़लज़ला आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़मीन पर ऐड़ी मारी, फ़रमाया, ऐ ज़मीन तू क्यों हिलती है? क्या उमर ने तेरे ऊपर इंसाफ़ क़ायम नहीं किया? ज़मीन का ज़लज़ला उसी वक़्त रुक जाता है।

आग पर हुक्म

एक बार मदीना के बाहर एक आग निकलती है और मदीना तैय्यबा की तरफ़ बढ़ना शुरू कर देती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी को बुलाकर हुक्म देते हैं कि इस आग को पीछे इसके निकलने की जगह की तरफ़ धकेल दीजिए। वह अपनी चादर को कोड़े की तरह बनाकर उस आग की तरफ़ मारना शुरू करते हैं। आग हटते-हटते जहाँ से निकली थी वहाँ पर वापस चली जाती है। सुब्हानअल्लाह! आग पर हुक्म चल रहा है, हवा पर हुक्म चल रहा है, ज़मीन पर हुक्म चल रहा है। दरियाओं के पानी पर हुक्म चल रहा है।

पानी पर हुक्म

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक बार मिस्र के अमीर लश्कर ने लिखा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! दरियाए नील के पानी जारी होने के लिए हर एक साल एक जवान लड़की की क़ुर्बानी दी जाती है। आपने जवाबी ख़त लिखा कि उसे दरिया में डाल दो। उस ख़त में लिखा था ऐ नील! अगर तू अपनी मर्ज़ी से चलता है तो मत चल लेकिन अगर तू अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म से चलता है तो अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब तुझे हुक्म देता है कि तू चलना शुरू कर। दरियाए नील का पानी आज भी चल रहा है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़मतों के फरेरे लहरा रहा है।

बैतुलमुक़द्दस कैसे फ़तेह हुआ

बैतुल मुक़द्दस को जीतने का मस्अला है। मुसलमानों ने वहाँ

पर चढ़ाई की। वहाँ के लोगों ने कहा कि आप अपने ख़लीफ़ा को हमारी तरफ़ भेजिए। हमारे पास उनकी निशानियाँ हैं, हम देखेंगे कि अगर वे निशानियाँ मौजूद हुईं तो बग़ैर किसी लड़ाई के हम चाबियाँ उनकी झोली में डाल देंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ाहिरी ज़िंदगी यह थी कि अपने कुर्ते पर भी चमड़े के पेवंद लगे हुए हैं। अद्ल व इंसाफ़ इतना कि अगर ग़ुलाम साथ है तो कुछ फ़ासले पर ख़ुद सवारी पर बैठते और वह पैदल चलता और कुछ फ़ासला आप पैदल चलते हैं और उसको सवारी पर बिठाते हैं और जब आख़िरी वक़्त आया तो वह मंज़िल आपके पैदल चलने की थी और ग़ुलाम के सवारी पर बैठने की थी। मुसलमानों का अमीरुल मोमिनीन! इस हाल में दुश्मन के सामने पेश होता है कि उसने ऊँट की मुहार पकड़ी हुई है, ग़ुलाम ऊपर बैठा हुआ है, कपड़े में पेवंद लगे हुए हैं मगर उनके चेहरे पर वह जाह व जलाल था, वह हैबत थी। अल्लाह तआला ने रौब के ज़रिए उनकी ऐसी मदद की कि जब काफ़िरों ने देखा तो उनके पित्ते पानी हो गए। कहने लगे, यह वही हस्ती है जिसकी निशानियाँ किताबों में हैं। बैतुल मुक़द्दस की चाबियाँ उनकी झोली में डाल दी जाती हैं। यह इज़्ज़तें कैसे मिल रही हैं? सिर्फ़ क़ुव्वते ईमानी के सबब जो इंसान को इल्म, अमल और इख़्लास की वजह से नसीब होती हैं।

चिराग़े इल्म जलाओ

तो आज इस बात की ज़रूरत है कि वह पढ़ने वाली बच्चियाँ जो सनदें लेकर फ़ारिग़ हुई हैं और जिनको अल्लाह तआला ने यह ख़ुशी का मौक़ा दिया कि इल्म की निस्बत नसीब हुई वे इस इल्म

पर अमल करके ख़ुद भी नेक बनें और जहाँ रहें वहाँ भी इल्म की रोशनी को फैलाएं।

चिराग़ इल्म जलाओ बड़ा अंधेरा है

आज ज़रूरत है इस बात की जहाँ-जहाँ जो बच्ची जाए वह इल्म के चिराग़ को जलाएं ताकि उम्मत के अंदर जो जिहालत का अंधेरा आ चुका यह रोशनी में तब्दील हो जाए और यह रोशनी मीनाराए नूर बन जाए और लोगों की ज़िंदगियों को मुनव्वर करने लग जाए। नबी अलैहिस्सलाम ने जो दीन की मेहनत की और दीन हम तक पहुँचाया उस दीन की हिफ़ाज़त करने वाली जमात में आप भी शामिल हो जाएं। जब आप इल्म पर अमल करेंगी और इसकी रोशनी फैलाएंगी तो आप इस दीन की हिफ़ाज़त करने वालों के गिरोह में और जमात में शामिल हो जाएंगे।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेहतरीन दुआ

अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

﴿نضر الله امرء سمع مقالتی فوعاها واداها کما سمعها﴾

अल्लाह तआला उस आदमी के चेहरों को तर व ताज़ा रख कि जिसने मेरी बात को सुना, उस पर अमल किया फिर उसको महफ़ूज़ किया और लोगों तक उसको ऐसे पहुँचाया जैसे उसको सुना। ऐ बेटी! अगर अल्लाह के महबूब फ़रमाते हैं, अल्लाह उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखे, कितनी प्यारी दुआ दी। मालूम हुआ

कि जो बच्ची दीन का काम करेगी अल्लाह तआला उसकी शक्ल व सूरत पर भी ऐसा नूर देंगे जो उसके चेहरे की ख़ूबसूरती होगा, चेहरे पर जाज़िबयत होगा। क्योंकि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखे। इसलिए अल्लाह तआला उसको परेशानियों से, ग़मों से ख़ुद बचाएंगे ताकि उसके चेहरे पर कभी शिकन न आए, किसी परेशानी की वजह से किसी ख़ौफ़ की वजह से उसके चेहरे पर असरात न होंगे। इसलिए दीन के काम की बरकत की वजह से अल्लाह तआला रिज़्क़ की तंगी से बचाएंगे और दुनिया की ज़िल्लत व रुसवाई से बचाएंगे और उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखेंगे। अल्लाह तआला हमें ज़िंदगी की वक़्तों की क़दर व क़ीमत करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

फ़िक्र की घड़ी

आज भी जो इंसान चाहे कि मुझे ये इज़्ज़तें नसीब हों तो रास्ता वही है कि इल्म हासिल करे। उसको अमली जामा पहनाए और अमल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करे। अपने अंदर अमल को पैदा कर लीजिए फिर देखिए अल्लाह तआला दुनिया में कैसी इज़्ज़तें अता फ़रमा देते हैं। हम गुनाहों की ज़िंदगी गुज़ारकर इज़्ज़तों के तलबगार बनते फिरते हैं। यह कैसे मुमकिन है कि हम नफ़्स व ख़्वाहिशात वाली ज़िंदगी गुज़ारें और फिर सोचें कि इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी मिलेगी। इसलिए इज़्ज़त वाली ज़िंदगी उस इंसान को मिलती है जिसकी ज़िंदगी की बुनियाद सच पर होती है। याद रखिए एक गुनाह को छिपाने के लिए झूठ बोलना पड़ेगा और एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलना पड़ेंगे।

कभी-कभी झूठ पर ज़िंदगी की बुनियाद होती। इसलिए तालिबात अपने दिलों में झांककर देखें कि उन्होंने इल्म की जो निस्बत पाई, क्या सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए है। अगर सारी दुनिया हमें नेक कहती रही मगर अल्लाह तआला के यहाँ नेकों में शुमार न हुआ तो यह दुनिया की तारीफ़ें किस काम की और अगर सारी दुनिया हमें बुरा कहती रही लेकिन अल्लाह तआला के हाँ हम नेक लोगों में गिने गए तो हमें दुनिया वालों का बुरा कहना क्या नुक़सान पहुँचा सकेगा

लोग समझें मुझे महरूम ओ क़ार ओ तमकीं
वह न समझें कि मेरी बज़्म के क़ाबिल न रहा

अगर अल्लाह तआला के दफ़्तर में हमारा नाम झूठा लिखा गया कि यह झूठा है, बात-बात में झूठ बोलना, बात बदल के करना, अल्फ़ाज़ बदल कर बोलना, बात कुछ थी अंदाज़ किसी और में पेश करना, हर एक के सामने उसी तरह बातें। जब झूठ हमारी ज़िंदगी की बुनियाद होगा तो भला इंसान को सकून कैसे मिल सकता है। याद रखिए गुनाह इंसान को किसी न किसी सूरत परेशान ज़रूर रखता है। कोई इंसान ऐसा न मिलेगा जो गुनाहों वाली ज़िंदगी गुज़ारे और उसका दिल आपको मुतमइन नज़र आए, उसका दिल हमेशा परेशान होगा। यहाँ तक कि कामयाबी से गुनाह करने वाले जिन्होंने अपने क़रीबी अज़ीज़ों की आँखों पर पट्टियाँ बांधीं, उनकी आँखों में धूल झोंक दी, किसी को पता न चलने दिया। इस तरह कामयाबी से गुनाह करते रहने वाले के दिल को झांक कर देखें उनके दिलों में भी बेसुकूनी पाएंगे। वह मुजरिम होते है। अल्लाह तआला के भी और अपने ज़मीर के भी। उनका

ज़मीर उन्हें हर दिन में मलामत कर रहा होता है। वे आँखें बंद करते हैं तो अपने आपको मुजरिम खड़ा पाते हैं। जैसे ज़मीर की अदालत के कटहरे में खड़े हैं और उन्हें ज़मीर पुकार कर कह रहा है कि तुम अपनी अवक़ात को पहचानो, दुनिया तुम्हें क्या समझती है और तुम अपने मन में झांककर देखो तुम्हारी अवक़ात क्या है? हक़ीक़त क्या है? तुम अल्लाह को क्या चेहरा दिखाओगे?

कितनी अजीब बात है कि सुबह बिस्तर से उठते हैं। मुँह बग़ैर धोए लोगों के सामने नहीं जाते कि मैला मुँह लेकर कैसे जाएंगे। अरे! जिस चेहरे को दुनिया ने देखा उसको धोए बग़ैर तुम सामने नहीं जाते, जिस चेहरे को परवरदिगार ने देखना है जब उस पर गुनाहों का मैल लग गया तो फिर परवरदिगार को वह चेहरा कैसे दिखाएंगे।

गुनाहों की माफ़ी किस तरह मांगे

हम अब तक ज़िंदगी में जो गुनाह कर चुके हैं हमें चाहिए कि आज की इस महफ़िल में अल्लाह तआला से पक्की माफ़ी मांगे, दिल में इरादा करें। रब्बे करीम! जो हो चुका वह तो गुज़र चुका, हम उस पर नादिम हैं, शर्मिन्दा हैं, रब्बे करीम! जो वक़्त ज़िंदगी का आइंदा बाक़ी है उसमें नेकोकारी की ज़िंदगी नसीब फ़रमा दे। ऐ अल्लाह! आपने हमें दुनिया में इल्म की निस्बत दे दी, अल्लाह! इस निस्बत को निभाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। ऐसा न हो कि हम इल्म की बदनामी का सबब बनें, इल्म के नाम पर बट्टा लगने का सबब बन जाएं। कहीं ऐसा न हो कि कोई ऐसी कोताही कर बैठें, कोई ऐसा गुनाह कर बैठें, कोई ऐसी ग़ल्ती कर बैठें कि लोग यूँ कहें कि देखो इल्म पढ़ने वालों की ज़िंदगी ऐसी होती है। अरे

इल्म वाले तो बड़ी शान वाले गुज़रे हैं। उनकी ज़िंदगियाँ तो बिल्कुल पाकीज़ा ज़िंदगियाँ थीं जिन पर फूलों की पाकीज़गी भी क़ुर्बान कर दी जाए। उनके दामन इतने साफ़ होते थ। आज हमें अल्लाह तआला ने अगर आज के दौर में इल्म की यह निस्बत अता की तो हमें भी अपने दामन को गुनाहों से बचाकर ज़िंदगी गुज़ारनी है, पाकदामनी की ज़िंदगी, परहेज़गारी की ज़िंदगी, नेकोकारी की ज़िंदगी, जब इस तरह एहतियात की ज़िंदगी गुज़ारेंगे तो अल्लाह तआला की रहमतें बरसेंगी। अल्लाह तआला हम पर मेहरबानी फ़रमाएंगे।

आप अपने गुनाहों की अल्लाह तआला से ख़ूब माफ़ी मांगे। ज़िद्द के साथ, तकरार के साथ, बार-बार इल्तिजा करके माफ़ी मांगिए। एक छोटा बच्चा माँ से कुछ मांगता है, माँ इंकार कर देती है, बच्चा बाज़ नहीं आता वह फिर मांगता, माँ झिड़क भी देती है, वह फिर पीछे नहीं हटता, बच्चा छोटा सही मगर इस राज़ को जानता है कि बार बार मांगने से मेरा काम बनेगा और आख़िर अम्मी मुझे चीज़ दे देगी। कभी तो माँ उसको थप्पड़ भी लगा देती है वह रो भी पड़ता है मगर माँ की तरफ़ लपकता है। जब एक छोटा बच्चा माँ के सामने इतने जमाव के साथ खड़ा हो जाता है और उसकी तरफ़ बढ़ाता है तो माँ को भी प्यार आता है, बच्चे को उठाकर वह सीने से लगा लिया करती है। हम भी इसी तरह अल्लाह तआला के दर को पकड़ लें। माफ़ी मांगी और बार-बार मांगे, अपनी नदामत का इज़्हार करें, अपने दिल के अंदर अपने आपको मुजरिम समझते हुए गुनाहगार समझते हुए अल्लाह तआला से सच्चे दिल से माफ़ी मांगें। रब्बे करीम! हम पर मेहरबानी फ़रमा कि हमें तूने इल्म की निस्बत अता फ़रमाई,

अल्लाह! इस निस्बत की लाज रख लेना—

अमल की अपने असास क्या है
बजुज़ नदामत के पास क्या है
रहे सलामत तुम्हारी निस्बत
मेरा तो बस आसरा यही है

अल्लाह तआला ने जिस तरह ज़ाहिर में इल्म के साथ यह निस्बत दी, अल्लाह तआला क़यामत के दिन भी तलबा, उलमा के क़दमों में जगह अता फ़रमा दे। यही हमारे लिए मग़फ़िरत का सबब बन जाएगी।

अपनी ''मैं'' को मिटा दीजिए

कभी कभी इंसान की ''मैं'' उसके रास्ते की रुकावट बन जाती है। इस ''मैं'' को मिटा दीजिए। नफ़्स को अल्लाह के लिए पामाल कर दीजिए और मिटकर अल्लाह के दीन का काम कीजिए। ﴿من تواضع لله رفعه الله﴾ जो अल्लाह के लिए तवाज़ो इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसे इज़्ज़तें अता फ़रमाते हैं।

रब्बे करीम का दरवाज़ा

हम सच्चे दिल से माफ़ी मांगे, बार-बार परवरदिगार का दरवाज़ा खटखटाएं। जो इंसान बार बार दरवाज़ा खटखटाता है आख़िर उसके लिए वह दरवाज़ा खोल दिया जाता है। मगर दिल के अंदर पक्का यक़ीन हो कि हमें रहमतें मिलनी हैं तो इसी दरवाज़े से मिली हैं, मग़फ़िरत मिलनी है तो इसी दरवाज़े से, हमें बख़्शिशें मिलनी है तों इस दरवाज़े से, इज़्ज़तें मिलनी हैं तो इसी

दरवाज़े से। अल्लाह के महबूब ने हमें यह दर दिखाया और साथ ही बता दिया कि इस दर के सिवा कोई दर नहीं है।

अल्लाह को राज़ी कर लें

अल्लाह तआला को उस वक़्त तक मनाना है जब तक वह राज़ी न हो जाए। इस दरवाज़े को पकड़े रहिए, दिन रात दुआएं कीजिए, तहज्जुद पढ़कर, नफ़्ल पढ़कर अपनी तन्हाईयों में बैठकर अल्लाह के सामने सर झुकाकर, सज्दे में सर डालकर माफ़ियाँ मांगिए। उस रब को मनाने की कोशिश कर लीजिए। ऐ अल्लाह! तू राज़ी तो सारा जग राज़ी। अगर परवरदिगार राज़ी हो गए तो इंसान को दुनिया में भी इज़्ज़तें मिलेंगी। इस दरवाज़े के ऊपर जमाव के साथ जमे रहिए यहाँ तक कि अल्लह तआला हमारे लिए ख़ैर के फ़ैसले फ़रमा दे।

एक देहाती की अजीब दुआ

मुझे एक देहाती की बात याद आई। देहात के रहने वाले थे। सहाबी थे। आ गए मस्जिदे नबवी में, दुआ मांगते हैं और क्या कहते हैं :

﴿اللهم اغفر اللهم اغفر فانك لا تغفر فاغفر.﴾

ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे और अगर तूने मेरी मग़फ़िरत नहीं भी करनी तो फिर भी मग़फ़िरत फ़रमा दे।

बार-बार यही दुआ कर रहे थे। सोचिए कि जब कोई इतनी आजिज़ी के साथ, इतनी इन्किसारी के साथ अल्लाह तआला से

दुआ मांगेगा कि ऐ अल्लाह मेरी बख़्शिश फ़रमा दे, अगर बख़्शिश नहीं भी करनी तो परवरदिगार! फिर भी बख़्शिश फ़रमा दे। अल्लाह तआला की रहमत जोश में क्यों नहीं आएगी। फिर अल्लाह तआला मेहरबानी फ़रमाते हैं। क़ुरआन हमें पुकार रहा है :

﴿قل يا عبادی الذين اسرفوا على انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله.﴾

मेरे बंदों से कह दो जो गुनाहों में डूबे फिरते हैं कि तुम मेरी रहमत से मायूस न होना।

﴿ان الله يغفر الذنوب جميعا.﴾

सुब्हानअल्ला अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी रहमत फ़रमाए, हमारी ज़िंदगी की कोताहियों से दरगुज़र फ़रमाए और जो वक़्त बाक़ी है अल्लाह तआला उसको इल्म, अमल और इख़्लास के साथ गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

दिल पज़ीर नसीहत

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم ○ بسم الله الرحمن الرحيم ○

اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ○وقال الله تعالىٰ

في مقام اخر اعلموا انما الحيوة الدنيا لعب ولهو وزينة وتفاخر

بينكم وتكاثر في الاموال والاولاد ○ سبحن ربك رب العزة عما

يصفون ○ وسلام على المرسلين ○ والحمد لله رب العالمين ○

इंसानी ज़िंदगी में तीन दिनों की अहमियत

﴿اقترب للناس حسابهم﴾ इंसानों के हिसाब का दिन क़रीब आ गया ﴿وهم في غفلة معرضون.﴾ और वे अपनी ग़फ़लत में रूगरदानी करते फिर रहे हैं। इंसानी ज़िंदगी के तीन दिन बड़े अहम होते हैं। एक दिन वह जब इंसान इस दुनिया में आता है। उस दिन उसके बारे में कुछ बातें तय कर दी जाती हैं। उसे दुनिया में कितना रहना है, कितना रिज़्क़ पाना है, वह शक़ी होगा या सईद। अल्लाह तआला अपने अज़ली इल्म की वजह से उसको पहले ही लिखवा देते हैं। अल्लाह करे कि वह दिन ज़िंदगी का अच्छा दिन हो कि हर आने वाला बच्चा अच्छे नसीब लेकर दुनिया में आए। दूसरा दिन वह है जब इंसान दुनिया से क़ब्र में जाएगा, ज़मीन के ऊपर

से ज़मीन के नीचे चला जाएगा। वह दिन इंसान की ज़िंदगी का बड़ा अहम दिन है। तीसरा वह दिन है जब इंसान अपने परवरदिगार के सामने खड़ा होगा यानी क़यामत का दिन। अल्लाह तआला उस दिन को हमारी ज़िंदगी के दिनों में से बेहतरीन दिन बना दे। इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह दुआ मांगी–

﴿والسلام علی یوم ولدت ویوم اموت ویوم ابعث حیا.﴾

सबसे बड़ा धोका

ज़िंदगी एक मोहलत है जो हमें आख़िरत की तैयारी के लिए दी गई है। हम आख़िरत की तैयारी करने के बजाए दुनिया के ग़म और ख़ुशी में उलझ जाते हैं और इस इंतिज़ार में रहते हैं कि हमें ऐसा वक़्त मिले जब हमारे ऊपर कोई ग़म और कोई परेशानी न हो। हर काम मर्ज़ी के मुताबिक़ चल रहा हो फिर हम सकून और तसल्ली से इबादत करेंगे। इसी को क़ुरआन मजीद की ज़बान में धोका कहा गया है। और यह धोका सिर्फ़ जाहिल को ही नहीं आलिम को भी लगता है। सोचते रहते हैं कि नेक बनेंगे और अच्छे काम करेंगे, अच्छे वक़्त के इंतिज़ार में रहते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वक़्त हाथों से निकला जा रहा होता है। हम मौत को भूल जाते हैं लेकिन मौत हमें नहीं भूलती। हमारी ज़िंदगी का हर आने वाला दिन हमें अपनी मौत के क़रीब से क़रीब कर रहा होता है। जो कर गुज़रने वाले होते हैं वे इसी ज़िंदगी के इसी वक़्त में कर लिया करते हैं।

उलझे सुलझे इसी का कल में गिरफ़्तार रहो

ग़म हो या ख़ुशी हर हाल में आख़िरत की तैयारी करते रहें।

ख़ुशी की घड़ियाँ हों तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और ग़म की घड़ियाँ हों तो सब्र करें। शुक्र करने वाला भी जन्नती और सब्र करने वाला भी जन्नती।

उम्र के मौसम

इंसान की ज़िंदगी की अलग-अलग मंज़िलें होती हैं, अलग-अगले मौसम होते हैं जिन्हें 'मवासिमुल उम्र' कहते हैं। जब इंसान बच्चा होता है तो उसे खेलने का शौक़ होता है। उसका सारा का सारा वक़्त खेलकूद में गुज़रता है। उम्र बढ़ने के साथ- साथ उस की कैफ़ियतें अलग-अलग होती रहती हैं। नज्मुद्दीन नस्फ़ी रह० ने लिखा है कि हर आठ साल के बाद बंदे की कैफ़ियत बदलती रहती है। पहले आठ साल ﴿لعب﴾ फिर ﴿لهو﴾ फिर ﴿زينت﴾ उसके बाद ﴿وتفاخر بينكم﴾ और फिर ﴿وتكاثر في الاموال والاولاد﴾ ये पाँच मवासिमुल उम्र हैं। आठ-आठ साल अगर ये हों तो चालीस साल का अरसा गुज़र गया और वाक़ई चालीस साल के बाद फिर इंसान को होश आती है कि दुनिया में आया किस लिए था।

कामयाब इंसान

जो लोग ज़िक्र व सुलूक की ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनको हर जगह यही तालीम दी जाती है कि एक हाथ में क़ुरआन और दूसरे हाथ में नबी अलैहिस्सलाम के फ़रमान को लाज़िम पकड़ो। जिसने अपनी ज़िंदगी उन दो चीज़ों के तहत गुज़ारी वह इंसान कामयाब इंसान होगा।

जन्नत दो क़दम

जिस आदमी का पहला क़दम उसके नफ़्स पर जाएगा उस बंदे

का दूसरा क़दम जन्नत में पहुँचेगा। अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ को सवाब के लिए पैदा किया है, अज़ाब के लिए नहीं। वह चाहते हैं कि मेरे बंदे नेक आमाल करें और मुझसे मेरी नेमतों को पाएं लेकिन हमारी ज़िंदगी का तर्ज़ बदल जाता है। कुछ इसी दुनिया में सब कुछ मांगते हैं और कुछ ऐसे होते हैं कि आख़िरत में मांगते हैं :

﴿منكم من يريد الدنيا ومنكم من يريد الآخرة.﴾

बुरे लोगों की निशानी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रावी हैं कि नबी अलैहस्सलाम ने एक बार इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें वह आदमी न बताऊँ जो सबसे ज़्यादा बुरा हो। अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के नबी ज़रूर बताइए। इर्शाद फ़रमाया, जो अकेला खाए और अपने ग़ुलाम को मारे। अकेला खाने से मुराद यह कि मिल जुलकर रहने की आदत न हो और अपने मातहतों पर सख़्ती करने वाला हो। फिर उसके बाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक आदमी बताऊँ जो उससे भी बुरा हो? अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के नबी! वह भी बता दीजिए। इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी लोगों से बुग़्ज़ रखे और लोग उससे बुग़्ज़ रखें। ऐसा आदमी उससे भी बुरा है। फिर फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक आदमी बताऊँ जो इससे भी ज़्यादा बुरा हो? अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के नबी! बता दीजिए। फ़रमाया, ऐसा बंदा कि न उससे नेकी की उम्मीद हो और न उसके शर से बंदे को अमन हो। फिर उसके बाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक और ऐसा बंदा बताऊँ जो इससे भी ज़्यादा बुरा हो। अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के नबी! कौन है? फ़रमाया कि

जो किसी की ग़लती से दरगुज़र न करे और किसी भी बंदे की माज़रत को क़ुबूल न करे। यह मामला तो परवरदिगार ने अपने हाथ में रखा अगर इंसानों के बस में बात होती तो यह तो जीते जागते बंदे को जहन्नम में फेंक देते।

मुहब्बत हो तो ऐसी

मख़्लूक़ में से माँ वह हस्ती होती है जो अपने बदकार और गुनाहगार बच्चे से भी मुहब्बत करती है। औलाद नेक बने फिर भी मुहब्बत है और औलाद नेक न बने तो उसको फिर भी मुहब्बत है। वह मुहब्बत के हाथों मजबूर होती है और अपने नेक और बद हर तरह के बच्चे से मुहब्बत करती है। और एक अल्लाह की ज़ात है जिस बंदे ने भी कलिमा पढ़ लिया अल्लाह तआला उस बंदे से मुहब्बत करते हैं क्योंकि वह रहमान भी है रहीम भी, हन्नान भी मन्नान भी, जव्वाद भी है और करीम भी। इंसान की नेकी में बढ़ने वाला हो या बहुत ज़्यादा गुनाहगार हो फिर भी उससे नफ़रत नहीं फ़रमाते, फिर भी उसको अपने दर से मायूस नहीं करते। इसलिए बुराई से नफ़रत होनी चाहिए, बुरों से नहीं होनी चाहिए—

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है
मज़ा तो तब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

सबसे बुरा शख़्स

एक हदीस पाक में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी आएंगे जो रंग-बिरंग के खाने खाएंगे, तरह-तरह की चीज़ें पिएंगे, तरह-तरह के कपड़े

पहनेंगे और ख़ूब बातें बनाएंगे। वे मेरी उम्मत के सबसे बुरे लोग होंगे।

आज जिस इंसान को ख़ुशी का वक़्त मिल गया वह दूसरे आदमियों को अपने से हक़ीर समझता है। इस बात को भूल जाता है कि आज़माइश मेरे ऊपर भी आ सकती है। दिन बदलते देर नहीं लगती।

इतनी सख़्त वईदें

हदीस पाक में है कि जो आदमी किसी मुसलमान की मुसीबत पर ख़ुश हो अल्लाह तआला उसको उस वक़्त तक मौत नहीं देते जब तक वह ख़ुद उस मुसीबत में गिरफ़्तार नहीं हो जाता। एक दूसरी हदीस पाक में आया है कि अगर इंसान ने कोई गुनाह किया लेकिन अल्लाह तआला के हुज़ूर में सच्ची तोबा कर ली। अब तोबा करने के बाद भी अगर कोई आदमी उसको उस गुनाह का ताना देता है तो अल्लाह तआला उसको उस वक़्त तक मौत नहीं देते जब तक ख़ुद उस गुनाह में फांस नहीं देते। किसी को परेशानी और मुसीबत में देखकर ख़ुश हुए तो ज़रा ध्यान से, और किसी बंदे की ग़ल्ती और ऐब का पता चले तो उसको ताना न दे मुमकिन है वह अपने दिल में सच्ची तोबा कर चुका हो।

तहज्जुद की नमाज़ से महरूमी की वजह

सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाया करते थे कि मैंने एक गुनाह किया जिसकी वजह से मुझे पाँच महीने के लिए तहज्जुद की नमाज़ से महरूम कर दिया गया। किसी ने पूछा, हज़रत! कौनसा गुनाह किया था? फ़रमाया, एक आदमी बैठा दुआ मांगते हुए रो

रहा था। मैंने अपने दिल में समझा कि यह रियाकार है। मेरी इस बदगुमानी के गुनाह की वजह से अल्लाह तआला ने पाँच महीने के लिए तहज्जुद की नमाज़ से महरूम कर दिया। जिनका काम ही सुबह शाम बदगुमानी हो, जिनका काम ही सुबह व शाम बदज़बानी हो तो ऐसी हालत में फिर अपने ईमान की ख़ैर मनानी चाहिए।

अपनी फ़िक्र कीजिए

मोहतरम जमात! उस रात को याद कीजिए जिसकी सुबह को क़यामत का दिन होगा। जब हमें अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश होना होगा ﴿كل امرء بما كسب رهين﴾ हर बंदा अपने आमाल के बदले में रहन रखा हुआ है। अपने-अपने अमलों का हर बंदे को हिसाब देना होगा। हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम फ़रमाया करते थे, "अपनी पोई ते पराई भल विंजी" और आज हमें अपनी फ़िक्र नहीं होती दूसरों के पीछे पड़े हुए होते हैं, आँखें खुली रहती हैं, गर्दन तनी रहती है, निगाहें दूसरों के चेहरों पर पड़ती हैं और अपने मन में झांक कर नहीं देखते कि हमारे अपने अंदर क्या कुछ मौजूद है।

ज़िक्रे इलाही की अहमियत

ज़िक्र की कसरत से इंसान में फ़िक्र की गंदगी दूर होती है। यह बात दिल में बिठा लीजिए कि फ़िक्र की गंदगी हमेशा ज़िक्र से दूर होती है। जो लोग शैतानी वसवसों, ज़हनी उलझनों और परेशानियों का शिकार हों वे इस बात को पल्ले बांध लें कि हमारी इन परेशानियों का हल अल्लाह तआला की याद में मौजूद है।

﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب.﴾

जान लो कि अल्लाह तआला की याद के साथ दिलों का इत्मिनान वाबस्ता है।

एक इल्मी नुक्ता

हदीस पाक में आया है कि नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया जब कोई परिन्दा ज़िक्र से ग़ाफ़िल होता है तो शिकारी उसको अपना निशाना बना लेता है, उसका शिकार कर लेता है। अब यहाँ तलबा के लिए नुक्ता है अगर परिन्दा ग़ाफ़िल हुआ, उसको अल्लाह तआला ने शिकारी के हाथ पहुँचा दिया तो अगर कोई बंदा अल्लाह से ग़ाफ़िल होगा तो अल्लाह तआला उसको जहन्नम के फ़रिश्तों के हाथ पहुँचा देंगें। मक़सद यही है कि हम यहाँ कुछ दिन गुज़ारकर अपने दिलों में अल्लाह की याद को बसाएं। रोज़ाना की बातचीत में हम ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किया करें कि जिनसे हमारे दिलों में अल्लाह तआला की याद रहे।

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम के मआरिफ़

'बिस्मिल्लाह' को तस्मिया कहते हैं। यह हर छोटे बड़े को याद है लेकिन हम अपने हर काम से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ने की आदत नहीं होती।

इंसानी सतर का पर्दा

हदीस पाक में आया है कि अगर कोई आदमी अपने कपड़े बदलना चाहे, पहले उतार कर दूसरे पहनना चाहे तो अगर वह बिस्मिल्लाह पढ़ ले तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों के ऊपर और

उसके बीच आड़ बना देते हैं। जिन्नात हों या फ़रिश्ते हों वे इस इंसान के बदन को बेलिबास नहीं देख सकते। अब यहाँ एक नुक्ता मिला कि बिस्मिल्लाह का पढ़ना जिन्नात और फ़रिश्तों के बीच आड़ बन जाता है तो अगर हम अपनी ज़िंदगी के हर काम में बिस्मिल्लाह पढ़ने की आदत डालेंगे तो यह जहन्नम के फ़रिश्तों और हमारे बीच आड़ बन जाएगी।

जहन्नम से बचने का मतलब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के उन्नीस हरूफ़ हैं और जहन्नम के फ़रिश्ते भी उन्नीस हैं। उनको दारोगा कहा जाता है। उन्नीस हरूफ़ बिस्मिल्लाह के और उन्नीस फ़रिश्ते जहन्नम के निगरान। हर-हर हर्फ़, हर-हर फ़रिश्ते से बचने का सबब बन जाएगा। इसलिए बिस्मिल्लाह को अक्सर पढ़ने की आदत डालिए।

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम यह चार अल्फ़ाज़ हैं और चार ही तरह के गुनाह होते हैं या तो इंसान ज़हिर में करता है या छिपकर करता है या दिन में करता है और या रात में करता है। हर-हर लफ़्ज़ मुख़्तलिफ़ गुनाहों के के लिए कफ़्फ़ारा बनेगा।

तीन क़िस्मों के गुनाहों से निजात

बिस्मिल्लाह के अंदर अल्लाह तआला ने अपने तीन नाम इस्तेमाल फ़रमाए। एक नाम अल्लाह, दूसरा रहमान और तीसरा रहीम और तीन ही गुनाहों के दर्जात या अक़्साम हैं।

पहली क़िस्म कुफ़्र और शिर्क से बचना और ईमान क़ुबूल

करना, दूसरी क़िस्म कबीरा गुनाहों को छोड़कर अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी की ज़िंदगी अपनाना और तीसरी क़िस्म कि वसवसों से निजात पाकर यकसूई के साथ अल्लाह तआला की इबादत करना। लिहाज़ा जो बंदा अपने हर काम कि इब्तिदा बिस्मिल्लाह से करेगा अल्लाह तआला तीनों गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देंगे।

अल्लाह तआला की रज़ा की दलील

जब कोई आदमी किसी को ख़त लिखता है तो ख़त की इब्तिदा से ही पता चल जाता है कि उस बंदे की तबियत कैसी थी, क्या यह राज़ी था या नाराज़ था। तो ख़त की शुरूआत के अल्फ़ाज़ उस बंदे की रज़ा या नाराज़गी पता देते हैं। क़ुरआन मजीद की इब्तिदा में बिस्मिल्लाह लिखी हुई है। अब यह बिस्मिल्लाह की आयत ही हमें बता रही है कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हैं। वह यूँ भी फ़रमा सकते थे कि ﴿بسم الله الواحد القهار﴾। वह इसमें अपने क़ह्हार और जब्बार होने का लफ़्ज़ भी शामिल कर सकते थे मगर परवदिगार आलम ने अपने सिफ़ाती नामों को शामिल नहीं किया। अगर क्या तो किन नामों को किया? वे नाम जो रहमत की दलील हैं यानी अर्रहमान और अर्रहीम। तो मालूम हुआ कि किताबुल्लाह की इब्तिदा हमें बता रही है कि अल्लाह तआला का इरादा हमारे बारे में ख़ैर का है। वह बंदे को अज़ाब नहीं देना चाहते, वह बंदे को सवाब देना चाहिते हैं। अज़ाब तो हम अपने हाथों से ख़रीदते हैं, उसको दावत देते हैं अपनी तरफ़। इसलिए अपने हर काम की शुरूआत में

बिस्मिल्लाह कहने की आदत डालिए, अल्लाह तआला हर काम में बरकत अता फ़रमाएंगे।

नेमतों की क़द्रदानी

﴿الحمد لله﴾ अलहम्दुलिल्लाह मुख़्तसर सा लफ़्ज़ है। अपनी बातचीत में इसको कहने की आदत डालिए। अल्लाह तआला की नेमतों पर जिसने अलहम्दुलिल्लाह कह दिया उसने गोया नेमत का शुक्र अदा कर दिया। एक उसूली बात है याद रखिए कि नेमतों की क़द्रदानी के लिए नेमतों के छिन जाने का इंतिज़ार न किया करें। अक्सर लोगों को देखा, मियाँ-बीवी ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं तो आपस में झगड़े, शौहर मर गया, अब वही औरत बैठी रो रही है और अपने शौहर की सिफ़्तें बयान कर रही है। जो शोहर हर वक़्त बीवी से नाराज़ था उसकी बीवी मरी अब उसको बीवी की ख़ूबियाँ समझ में आ रही हैं। भाई के साथ ज़िंदगी में दुश्मनी का मामला था, अब भाई मर गया तो उसका एहसान याद आ रहा है। तो याद रखिए कि नेमतों की क़द्रदानी के लिए नेमतों छिन जाने का इंतिज़ार न किया करें। इससे पहले पहले उनकी क़द्र कर लिया करें।

अलहम्दुलिल्लाह कहने पर ईनामात

जो इंसान अपनी ज़िदगी में अलहम्दुलिल्लाह कसरत से कहता है उलमा ने लिखा है कि अल्लाह तआला उसको दो ईनाम अता फरमाते हैं। पहला ईनाम यह मिलता है कि अल्लाह तआला उसके लिए सख़्ती में से आसानी निकाल दिया करते हैं, मोहताज हो तो

अल्लाह तआला उसको ख़ुशहाली अता फ़रमाते हैं, दुनिया से निजात अता फ़रमा देते हैं। इसलिए अपने अक्सर कामों को शुरू करते हुए बिस्मिल्लाह और फिर आख़िर में अलूहम्दुलिल्लाह कहने आदत डालिए। अलूहम्दुलिल्लाह के अंदर आठ हर्फ़ हैं और उलमा ने लिखा कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। गोया हर हर हर्फ़ जन्नत के हर दरवाजे की कुंजी की तरह होगा। तो जिस बंदे को अलूहम्दुलिल्लाह कसरत से कहने की आदत होगी अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़ों को खोल देंगे।

कलिमा तैय्यबा में छः नकात

'ला इलाहा इल्लल्लाह' यह कलिमा है जिसको पढ़कर इंसान कुफ़्र व शिर्क से तोबा करता है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के पसंदीदा बंदों में शामिल हो जाता है। अक्सर अपनी ज़बान पर इसका ज़िक्र रखें। हमारे सिलसिला आलिया नक़्शबंदिया में 'ला इलाहा इल्लल्लाह' तो एक मुस्तक़िल सबक़ है जिसको 'तहलीले लिसानी' कहते हैं। इसमें 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की कसरत की जाती है, चलते-फिरते उठते-बैठते, 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का सबक़ दिया जाता है। यह अल्फ़ाज़ अजीब हिकमतों भरे और बरकतों भरे हुए होते हैं।

पहला नुक्ता

'ला इलाहा इल्लल्लाह' के हर्फ़ों को अगर आप गिनें तो 12 हर्फ़ बनते हैं और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के हर्फ़ गिनें तो वे भी 12 बनेंगे तो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का जो ज़िक्र कसरत से करेगा

उसके 12 हर्फ़ बंदे के लिए 12 महीनों के गुनाहों की बख़्शिश का ज़रिया बनेंगे।

दूसरा नुक्ता

दिन रात के अंदर 24 घंटे होते हैं ﴿لا اله الا لله محمد رسول الله﴾ 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' के भी 24 हर्फ़ हैं तो अल्लाह तआला हर-हर घंटे के गुनाहों को माफ़ फ़रमाएंगे।

तीसरा नुक्ता

इस कलिमे के अंदर 7 अल्फ़ाज़ हैं। ﴿لا الـه الا للّٰـه محمد رسول الـلّٰـه﴾ 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' ये सात अल्फ़ाज़ बनते हैं और इंसान सात आज़ा से ही गुनाह करता है। आँख से, कान से, ज़बान से, हाथ से, पाँव से, शर्मगाह से और पेट में खा के। जो इंसान इन सात अल्फ़ाज़ का ज़िक्र कसरत से करेंगे तो सातों आज़ा के गुनाहों को अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देंगे और जहन्नम के भी सात दरवाज़े हैं ﴿ولها سبعة ابواب﴾ तो मालूम हुआ कि ﴿لا الـه الا لـلّٰـه محـمد رسول الـلّٰـه﴾ 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का एक-एक लफ़्ज़ जहन्नम के हर-हर दरवाज़े से बचाओ का सबब बन जाएगा।

चौथा नुक्ता

इस कलिमे के अंदर अजीब हिकमतें हैं कि आपको कोई भी लफ़्ज़ नुक़्ते वाला नहीं मिलेगा। यह दलील है कि अल्लाह तआला इसमें वहदानियत का पैग़ाम दे रहे हैं कि मेरे दरबार में शिर्क की गुंजाइश नहीं।

पाँचवा नुक्ता

हर्फ़ ही ऐसे इस्तेमाल किए कि जो नुक़्तों से पाक थे तो इसलिए यह कलिमा हमें तौहीद की दावत देता है।

छटा नुक्ता

एक नुक्ता जो पढ़ने वालों के लिए कि इसमें अल्लाह तआला ने तमाम वे हर्फ़ इस्तेमाल किए जो जौफ़े दहन से निकलते हैं। हर्फ़ मुख़्तलिफ़ तरह के होते हैं, कुछ हर्फ़ हल्क़ी कहलाते हैं, वे हलक़ से निकलते हैं। कुछ शफ़वी कहलाते हैं कि होंटों से निकलते हैं, कुछ जौफ़े दहन से निकलते हैं यानी मुँह का दर्मियान वाला हिस्सा है उससे निकलते हैं। परवरदिगार आलम ने ﴿لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ﴾ 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का जो पहला हिस्सा था उसमें तमाम हर्फ़ वही रखे जो हर्फ़ जौफ़े दहन से निकलते हैं। मक़सद यह था कि जिस तरह हर्फ़ तुम्हारे मुँह के अंदर से निकल रहे हैं उसी तरह यह कलिमा तुम्हारे दिल के अंदर से निकले तब अल्लाह तआला के यहाँ क़ुबूल होगा। तो हम इन ज़िक्रों को कसरत के साथ करें। जो मसनून दुआए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़ल किए गए हैं और शिजरे के अंदर दी गयीं उनको अपना मामूल बना लें।

मसनून दुआओं के दो बड़े फ़ायदे

दो बातें ज़हन में रखिए। जो आदमी मसनून दुआओं को अपने वक़्त पर पढ़ने की आदत बनाएगा, अल्लाह तआला उसके लिए वक़ूफ़ क़ल्बी का रखना आसान फ़रमा देंगे। कुछ लोगों को

निस्बत का नूर इसी तरह मिला कि वे मसनून दुआओं को अपने वक़्त पर पाबंदी से पढ़ा करते थे। उनको और कोई मुजाहिदा नहीं था सिर्फ़ मसनून दुआओं के एहतिमाम से अल्लाह तआला ने दिल में इतना नूर अता फ़रमा दिया कि वे लोग साहिबे निस्बत बन गए। दूसरी बात कि जो आदमी मसनून दुआओं को पढ़ने की आदत बनएगा उस आदमी को फिर किसी दम, तावीज़ और इस क़िस्म के अमल की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी। परवरदिगार ख़ुद उसका मुहाफ़िज़ बन जाएगा और हर तरह की परेशानियों से उसको महफ़ूज़ फ़रमाएगा। इसलिए दुआ मांगनी चाहिए :

﴿اللهم انا نسئلك المعافات فى الدنيا والاخرة.﴾

ऐ अल्लाह! मैं दुनिया और आख़िरत में तुझसे आफ़ियत का तलबगार हूँ।

आफ़ियत का मतलब

आफ़ियत कहते हैं कि इंसान को पुरसकून ज़िंदगी मिल जाए। हमारे मशाइख़ ने आफ़ियत की तीन निशानियाँ बताई हैं। पहली बात तो यह है कि उस बंदे की ज़िंदगी ऐसी हो कि उसको हाकिम के पास जाने की ज़रूरत महसूस न हो। दूसरी बात उसको तबीब और डाक्टर के पास जाने की ज़रूरत महसूस न हो और तीसरी बात कि वह अपनी ज़िंदगी में अपने किसी भाई का मोहताज न हो। तो आदमी हाकिम, तबीब और भाई की मदद से बेनियाज़ हो गया गोया अल्लाह तआला ने उसको आफ़ियत की ज़िंदगी अता फ़रमा दी। बाज़ ने कहा जिस आदमी को अल्लाह तआला ने घर अता कर दिया, रोज़ी अता कर दी और अल्लाह ने

नेक बंदी थीं। उनका मामूल यह था कि वह दो दिन रोज़ा रखती थीं और तीसरे दिन इफ़्तार किया करती थीं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि वह एक दिन रोज़ा रखा करते थे और एक दिन इफ़्तार किया करते थे। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत मुबारका थी कि आप हर महीने अय्यामे बीज़ (13, 14, 15) तारीख़ के रोज़े रखा करते थे। यह रोशन दिन कहलाते हैं कि चाँद की भी पूरी रोशनी के दिन होते हैं और उन दिनों में रोज़ा रखने वाले के दिल को भी अल्लाह तआला रोशन फ़रमा देते हैं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अय्यामे बीज़ के रोज़े

हदीस पाक में आया है कि जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा तो अपनी भूल के ग़म की वजह से उनका चेहरा स्याह हो गया था। अब अल्लाह तआला ने उनको महीने के तीन रोज़े के बारे में फ़रमाया तो उन तीन दिनों के रोज़े रखने की वजह से उनके चेहरे की स्याही उनके चेहरे के नूर में तब्दील हो गई। लिहाज़ा जो इंसान अय्याम बीज़ के रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखेंगे।

हज़रत अबू दुजाजा रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

हमें हर काम शरिअत सुन्नत के मुताबिक़ करना चाहिए चाहे वह काम छोटा हो या बड़ा। सहाबा किराम इतने एहतियात करने

वाले थे कि हज़रत अबू दुजाजा एक सहाबी हैं। वे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते और पढ़ने के बाद जल्दी अपने घर चले जाते। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महफ़िल में नहीं बैठते। किसी ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि अबू दुजाजा पता नहीं किस हाल में है कि जल्दी चला जाता है। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुम जल्दी क्यों चले जाते हो? तो वह कहने लगे ऐ अल्लाह के नबी! मेरे हमसाए के घर में एक पेड़ है जिस पर फल लगे हुए है उसकी कुछ शाख़ें मेरे घर पर भी आती हैं और जब रात होती है तो शाख़ों से फल मेरे घर में गिर जाते हैं। मैं फ़ज्र की नमाज़ पड़कर जल्दी जाता हूँ कि उन फलों को उठाकर उस आदमी के घर में वापस डाल दूँ। ऐसा न हो कि मेरे बच्चे जाग जाएं और बिला इजाज़त दूसरे के फल खाने का गुनाह कर लें। इतनी छोटी सी बात में शरिअत का ख़्याल रखते थे।

ख़ैरख़्वाही की अहमियत

हर काम में दूसरों की ख़ैरख़्वाही करें। ﴿الدين النصيحة﴾ दीन सरासर ख़ैरख़्वाही है। याद रखना कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का बुरा चाहने वाला बन गया तो फिर दीन न बचा। दीन की धज्जियाँ उड़ गयीं। याद रखें कि मोमिन हमेशा ख़ैरख़्वाह होता है।

ख़ैरख़्वाही की एक उम्दा मिसाल

एक बार दो आदमियों ने कोई साझे में कोई काम किया। एक बूढ़े थे और दूसरे जवान थे। जब वे अपनी चीज़ों को बांटते तो

नेक बंदी थीं। उनका मामूल यह था कि वह दो दिन रोज़ा रखती थीं और तीसरे दिन इफ़्तार किया करती थीं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि वह एक दिन रोज़ा रखा करते थे और एक दिन इफ़्तार किया करते थे। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत मुबारका थी कि आप हर महीने अय्यामे बीज़ (13, 14, 15) तारीख़ के रोज़े रखा करते थे। यह रोशन दिन कहलाते हैं कि चाँद की भी पूरी रोशनी के दिन होते हैं और उन दिनों में रोज़ा रखने वाले के दिल को भी अल्लाह तआला रोशन फ़रमा देते हैं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अय्यामे बीज़ के रोज़े

हदीस पाक में आया है कि जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा तो अपनी भूल के ग़म की वजह से उनका चेहरा स्याह हो गया था। अब अल्लाह तआला ने उनको महीने के तीन रोज़े के बारे में फ़रमाया तो उन तीन दिनों के रोज़े रखने की वजह से उनके चेहरे की स्याही उनके चेहरे के नूर में तब्दील हो गई। लिहाज़ा जो इंसान अय्याम बीज़ के रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखेंगे।

हज़रत अबू दुजाजा रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

हमें हर काम शरिअत सुन्नत के मुताबिक़ करना चाहिए चाहे वह काम छोटा हो या बड़ा। सहाबा किराम इतने एहतियात करने

वाले थे कि हज़रत अबू दुजाजा एक सहाबी हैं। वे फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते और पढ़ने के बाद जल्दी अपने घर चले जाते। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महफ़िल में नहीं बैठते। किसी ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि अबू दुजाजा पता नहीं किस हाल में है कि जल्दी चला जाता है। जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुम जल्दी क्यों चले जाते हो? तो वह कहने लगे ऐ अल्लाह के नबी! मेरे हमसाए के घर में एक पेड़ है जिस पर फल लगे हुए है उसकी कुछ शाख़ें मेरे घर पर भी आती हैं और जब रात होती है तो शाख़ों से फल मेरे घर में गिर जाते हैं। मैं फ़ज्र की नमाज़ पड़कर जल्दी जाता हूँ कि उन फलों को उठाकर उस आदमी के घर में वापस डाल दूँ। ऐसा न हो कि मेरे बच्चे जाग जाएं और बिला इजाज़त दूसरे के फल खाने का गुनाह कर लें। इतनी छोटी सी बात में शरिअत का ख़्याल रखते थे।

ख़ैरख़्वाही की अहमियत

हर काम में दूसरों की ख़ैरख़्वाही करें। ﴿الدين النصيحة﴾ दीन सरासर ख़ैरख़्वाही है। याद रखना कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का बुरा चाहने वाला बन गया तो फिर दीन न बचा। दीन की धज्जियाँ उड़ गयीं। याद रखें कि मोमिन हमेशा ख़ैरख़्वाह होता है।

ख़ैरख़्वाही की एक उम्दा मिसाल

एक बार दो आदमियों ने कोई साझे में कोई काम किया। एक बूढ़े थे और दूसरे जवान थे। जब वे अपनी चीज़ों को बांटते तो

का साथ इख़्तियार करेंगे तो अल्लाह तआला हमारे लिए भी ख़ैर का फ़ैसला फ़रमा देंगे।

मुहब्बते इलाही में एक एहतियात

जिस इंसान के दिल में अल्लाह तआला की शदीद मुहब्बत होती है वह इंसान ख़ुशनसीब है। ख़ासतौर पर जो हज़रात सिलसिले में दाख़िल हैं और अल्लाह तआला की मुहब्बत के तलबगार हैं वे हर वक़्त इस चीज़ को अपने ज़हन में देखते हैं कि ऐसा तो नहीं कि दिल में किसी ग़ैर की मुहब्बत आ रही है, उसकी तरफ़ झुकाव बढ़ रहा है या तवज्जेह हो रही है। अगर ऐसा है तो अल्लाह तआला उसको अपनी मुहब्बत से महरूम फ़रमा देंगे। इसकी कई मिसालें क़ुरआन व हदीस में मिलती हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुहब्बते इलाही में मुक़ाम

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम को अपने हाँ बेटा होने की बड़ी चाहत थी जिसके लिए अक्सर दुआएं मांगते थे। आख़िर अल्लाह तआला ने बेटा अता फ़रमा दिया। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को एक दफ़ा उन्होंने मुहब्बत भरी नज़र से देखा। अब मुक़र्रिबीन का यूँ मुहब्बत भरी नज़र से किसी को देखना अल्लाह तआला को अच्छा नहीं लगता क्योंकि मुहब्बत का रिश्ता होता ही बड़ा नाज़ुक है। लिहाज़ा मुहब्बत की नज़र बेटे पर डालना अल्लाह तआला को अच्छा न लगा। इसलिए हुक्म दिया कि ऐ मेरे इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! आप अपने बेटे को ज़िब्ह कर

दीजिए। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे को ज़िब्ह करने की तैयारी कर ली। जब देखा कि बेटे को ज़िब्ह करने के लिए तैयार हैं तो साबित हो गया कि बेटे की मुहब्बत ग़ालिब नहीं है बल्कि मुहब्बत मेरी ही ग़ालिब है। लिहाज़ा बाप ज़िब्ह करना चाहता है मगर अल्लाह तआला ने बेटे को महफ़ूज़ फ़रमा लिया क्योंकि ज़िब्ह करवाना नहीं चाहते थे, मक़सद तो यह था कि देखें कि बेटे की मुहब्बत ज़्यादा है या हमारी मुहब्बत ज़्यादा है।

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का मुहब्बते इलाही में मुक़ाम

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मुहब्बत की नज़र से देखते थे। परवरदिगार आलम ने उनके बेटे को कुँए में डलवा दिया। बाप बेटा जुदा हो गए और बाप की आँखों की रोशनी को ले लिया। बेटा भी जुदा और रोशनी भी गई। एक वक़्त आया कि अपने बेटों को यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तलाश करने के लिए भेजते थे लेकिन बेटे की ख़बर नहीं दी गई। एक बार तलाश करने गए तो उन्होंने आकर कहा कि आपका बेटा अब आपको मिल सकता है। यह सुनकर उन्होंने कहा ﴿فصبر جميل﴾ कि मैं तो अब सब्र कर लेता हूँ। जब हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने सब्र करने के अल्फ़ाज़ अदा कर लिए तो अब पता चल गया कि बेटे की मुहब्बत दिल से निकल गई फिर अल्लाह तआला ने रोशनी भी अता फ़रमा दी, बेटा भी अता फ़रमा दिया और मुलाक़ात भी करवा दी।

एक उसूली बात

उसूल याद रखें कि मुहब्बत के इस रास्ते में इंसान के लिए ग़ैर की तरफ़ थोड़ा सा झुकाव भी बहुत ज़्यादा नुक़सान देने वाला होता है। आम लोगों की इन चीज़ों पर कोई पकड़ नहीं होती। इसलिए कि उनसे तो उम्मीद ही नहीं की जाती लेकिन जो मुहब्बत के मैदान में क़दम बढ़ाने वाले हों और वे परवरदिगार से उसकी मुहब्बत के तलबगार हों, अब अगर उनके दिल ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह होंगे तो महबूब बड़ा ग़ैरत वाला है। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया कि मैं सबसे ज़्यादा ग़य्यूर हूँ, मुझसे ज़्यादा ग़ैरत वाला कोई नहीं। जब इंसान पसंद की और चाहत की नज़र किसी ग़ैर पर डालता देता है तो अल्लाह तआला उसको इबादत की लज़्ज़त से महरूम फ़रमा देते हैं। इसलिए इस रास्ते में इसका बहुत ख़्याल रखें कि दिल को अल्लाह तआला की मुहब्बत से लबरेज़ फ़रमा लीजिए। असल में हमारे सामने अल्लाह के हुस्न व जमाल के जलवे नहीं खुले जिसकी वजह से मख़्लूक़ की तरफ़ ध्यान चला जाता है वरना जो लोग अल्लाह तआला की मुहब्बत का मज़ा पा लेते हैं फिर उनके सामने दुनिया की शक्लें और सूरतें बेमायने बन जाती हैं। फिर वे उनमें नहीं उलझते, उनका मामला इससे बुलंद हो जाता है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और दीदारे इलाही

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से मुहब्बत थी। चाहते थे कि दीदार मिले और कह भी दिया ﴿ربی ارنی انظر اليك﴾ ऐ अल्लाह! मैं आपकी ज़ियारत करना चाहता हूँ। फ़रमाया

﴿لن ترانی﴾ तू मुझे नहीं देख सकता। अब फ़रमाया कि तुम इस पहाड़ की तरफ़ देखो। अल्लाह तआला ने पहाड़ पर सत्तर हज़ार पर्दों में से तजल्ली डाली। सत्तर हज़ार पर्दों में से इतना नूर था कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने देखा तो बेहोश होकर गिर गए। अब बताइए कि जब किसी चीज़ पर अल्लाह तआला तजल्ली डाले, बंदा उस चीज़ को देखने की ताब नहीं ला सकता तो इस दुनिया में अल्लाह तआला का दीदार कैसे कर सकते हैं? हम उसके हुस्न व जमाल के जलवे इस दुनिया में नहीं देख सकते मगर अल्लाह तआला ने आख़िरत में दीदार का वादा फ़रमा दिया है।

एक इल्मी नुक्ता

एक नुक्ता याद रखिए कि जब अल्लाह तआला के महबूब मेराज से वापस आ रहे थे तो हदीस पाक में आया है कि तमाम अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम ने बैतुलमुक़द्दस में अल्लाह के महबूब के पीछे नमाज़ पढ़ी थी। वापसी में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इंतिज़ार में थे कि अल्लाह के महबूब कब वापस तशरीफ़ लाएंगे और मैं उनसे मुलाक़ात करूंगा, बात करूंगा। यहाँ उलमा ने एक नुक्ता लिखा है कि वापसी में बाक़ी अंबियाए किराम में से तो किसी से मुलाक़ात नहीं हुई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हुई। तो आख़िर वजह क्या थी? फ़रमाते हैं कि इसलिए कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दीदार के तलबगार थे, दुनिया में उनको दीदार न मिल सका। जब उन्हें पता लगा कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को दीदार के लिए बुलाया है तो वापसी पर रास्ते में इंतिज़ार में बैठे थे कि मैं अल्लाह तआला का दीदार खुद तो नहीं कर सका, जो दीदार

करके आ रहे हैं काश कि मैं उनका दीदार हासिल कर लूँ। इसलिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उनको बार-बार दीदार नसीब हुआ। वह बताते रहे कि नमाज़ें घटा दीजिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाज़िर होते, फिर वापस आते तो उन्होंने अल्लाह का दीदार करने वालों का बार-बार दीदार किया।

तौहीद का सबक़

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मुझे तो एक औरत ने तौहीद सिखा दी। किसी ने पूछा कि हज़रत वह कैसे? फ़रमाने लगे कि मेरे पास एक औरत आई जो पर्दे में थी। कहने लगी कि मेरा ख़ाविंद दूसरी शादी करना चाहता है। आप फ़त्वा लिखकर दें कि उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं है। उन्होंने समझाया कि अल्लाह बंदी! अगर वह अपनी ज़रूरत के तहत दूसरी शादी करना चाहता है तो शरिअत ने चार तक की इजाज़त दी है। मैं कैसे लिखकर दे सकता हूँ? फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह कहा तो उस औरत ने ठंडा साँस लिया और कहने लगी कि हज़रत! शरिअत का हुक्म रास्ते में रुकावट है वरना अगर इजाज़त होती और मैं आपके सामने चेहरा खोल देती और आप मेरे हुस्न व जमाल को देखते तो आप इस बात के लिखने पर मजबूर हो जाते कि जिसकी बीवी इतनी ख़ूबसूरत हो उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं है। फ़रमाते हैं कि वह तो चली गई मगर मेरे दिल में यह बात आई कि ऐ अल्लाह! आपने औरत को आरज़ी हुस्न व जमाल अता किया। उसको अपने हुस्न पर इतना नाज़ है कि वह कहती है कि मैं जिसकी बीवी हूँ अब उसको

मुहब्बत की नज़र दूसरी तरफ़ डालने की इजाज़त नहीं तो ऐ परवरदिगार! तेरे अपने हुस्न व जमाल का क्या आलम है। आप कहाँ पसंद करेंगे कि आपके होते हुए बंदो की मुहब्बत की नज़र किसी ग़ैर की तरफ़ उठ सके।

मजनूँ के जज़्बात

किसी शायर ने मजनूँ के जज़्बात की तर्जुमानी करते हुए कहा है—

तर्जुमा : अगर लैला अपने हुस्न व जमाल को खोल देती और उसके जमाल को सब देख लेते तो वह भी मेरी तरह दीवाने बन जाते। मगर लैला ने अपने जमाल को पोशीदा कर लिया। इसलिए लोगों को भी उसके साथ वह ताल्लुक नहीं जो होना चाहिए था।

तो हमारे सामने जब अल्लाह तआला की ज़ात के जमाल और कमाल की तफ़्सील खुलेगी फिर अल्लाह तआला से बेपनाह मुहब्बत होगी। अल्लाह तआला ने बंदे के दिल को अपनी याद के लिए वक़्फ़ कर लिया है।

परिन्दों के अंडे और मआरिफ़त के मोती

यह बात ज़हन में रखिए कि कुछ परिन्दे ऐसे हैं जो अंडे दे देते हैं और फिर दूर चले जाते हैं और अपनी तवज्जेह अंडों की तरफ़ रखते हैं और उनकी तवज्जेह की वजह से अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। मुर्ग़ी की तरह उनको अंडों पर बैठकर गर्मी पहुँचाने की ज़रूरत नहीं। कछवे के बारे में हयातुल हैवान में

लिखा है कि यह अंडे तो देता है मगर अंडों को मुर्ग़ी की तरह सेता नहीं बल्कि अंडों को देखता रहता है। उसके देखने की तासीर की वजह से अंडों से बच्चे निकल आते हैं। अब अगर कछवे ने अंडों को देखा और इसकी वजह से उसमें से बच्चे निकल आए तो अगर अल्लाह तआला किसी बंदे के दिल को मुहब्बत की नज़र से देखेंगे तो क्या उसमें से उलूम व मआरिफ़ के मोती नहीं निकलेंगे। अगर हम अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे तो परवरदिगार हम से मुहब्बत करेंगे।

शैतान से बचने का हथियार

देखिए बैतुल्लाह अल्लाह तआला का घर है। अबरहा ने चाहा था कि उस घर के ऊपर क़ब्ज़ा जमाए मगर अल्लाह तआला ने अबाबीलों को मुसल्लत कर दिया। उन्होंने कंकरियाँ मार-मार कर उसके पूरे लश्कर को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया था। बिल्कुल इसी तरह इंसान का दिल भी अल्लाह तआला का घर है अगर शैतान उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाना चाहे आप 'ला इलाहा इल्लल्लाह' की ज़र्बों से अल्लाह, अल्लाह के अल्फ़ाज़ से उसके ऊपर तीरों की बौछाड़ की कीजिए। फिर देखिए कि अल्लाह तआला आपको शैतान से महफ़ूज़ फ़रमा लेंगे। इसलिए क़ुरआन पाक में फ़रमाया :

﴿ان الذين اتقوا اذا مسهم طائف من الشيطان تذكروا فاذا هم مبصرون.﴾

जो लोग मुत्तक़ी और परहेज़गार हैं जब उन पर शैतान की जमात हमलावर होती है तो वे ज़िक्र करते हैं और अल्लाह तआला ज़िक्र की वजह से उन्हें शैतान से महफ़ूज़ फ़रमा लेते हैं।

दिल की कुंजी

अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया कि मैंने इंसान के नफ़्स को और माल को जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है। अब नफ़्स की क़ीमत तो जन्नत लगा दी, दिल की क़ीमत अल्लाह तआला ने अपना मुशाहिदा रखा। लिहाज़ा जो इंसान अपना दिल रब के हवाले कर देगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको अपना दीदार अता फ़रमाएंगे।

﴿وجوه يومئذ ناضرة الٰى ربها ناضرة.﴾

हदीस पाक में आया है कि क़यामत के दिन कुछ लोग होंगे जो खड़े होंगे। अल्लाह तआला की तरफ़ देखेंगे और देखकर मुस्कराएंगे तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखकर मुस्कराएंगे। ये कैसे ख़ुशनसीब लोग होंगे कि जो क़यामत के दिन अच्छे हाल के अंदर खड़े होंगे। अल्लाह तआला ने जन्नत को बनाया तो उसकी कुंजी रिज़वान (जन्नत के निगरान फ़रिश्ते) को दे दी, जहन्नम को बनाया तो उसकी कुंजी अल्लाह तआला ने मालिक (जहन्नम के निगरान फ़रिश्ते) को दे दी। अल्लाह तआला ने बैतुल्लाह को अपना घर बनाया और उसकी कुंजी बनी शैबा के हवाले फ़रमा दी कि उनके पास रहेगी किसी और के पास नहीं जा सकती। इस तरह अल्लाह तआला ने इंसान का दिल बनाया मगर उसकी कुंजी अपने दस्ते क़ुदरत में रखी। वही दिलों को फेरने वाले हैं। वह जिसे चाहते हैं उलट फेर देते हैं। गोया हमारे दिल का ताला अगर खुल सकता है तो अल्लाह तआला की रहमत के साथ खुल सकता है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि अल्लाह के हुज़ूर दुआएं मांगा करें, अल्लाह तआला से तलब किया करें और फ़रियाद किया करें

कि रब्बे करीम! जब हमारे दिलों का मामला आपकी दो उंगलियों के दर्मियान है तो दिल के ताले को खोल दीजिए ताकि हम भी आपकी मुहब्बत भरी ज़िंदगी को इख़्तियार कर सकें।

मुहब्बते इलाही का ग़लबा

कुछ ऐसे भी लोग दुनिया में गुज़रे जिनको अल्लाह तआला ने अपनी ऐसी मुहब्बत अता कर दी थी कि वह दुनिया के अंदर किसी ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह ही नहीं होते थे। ऐसी उनको अल्लाह तआला ने मुहब्बत अता की थी। इसलिए हमारे अकाबिरीन उलमाए देवबंद में से एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनको अल्लाह तआला ने ज़िक्र का ऐसा ग़लबा अता कर दिया था कि उनका दामाद आता तो वह पूछते अरे मियाँ! तुम कौन हो? वह कहता हज़रत! मैं अल्ला बंदा हूँ। उसका नाम अल्लाह बंदा था। हज़रत फ़रमाते, भाई सब ही अल्लाह के बंदे हैं। तुम कौन हो? वह कहता, हज़रत मैं आपका दामाद, अल्लाह बंदा हूँ। फिर वह फ़रमाते, अच्छा, अच्छा। कुछ दिनों के बाद फिर सामने से गुज़रता पूछते, अरे मियाँ! तुम कौन हो? अर्ज़ करते, हज़रत! मैं अल्लाह बंदा हूँ। हज़रत फिर फ़रमाते, अरे मियाँ! सब ही अल्लाह के बंदे हैं, तुम कौन हो? अर्ज़ करते, हज़रत! मैं आपका दामाद अल्लाह बंदा हूँ। एक नाम ने दिल पर ऐसा ग़लबा कर लिया था कि अब किसी दूसरे के नाम की गुंजाइश न रही थी।

हज़रत मारूफ़ करख़ी रह० पर मुहब्बते इलाही का ग़लबा

किताबों में लिखा है कि सिर्री सिक़्ती रह० ने एक बार ख़्वाब

देखा और उन्हें क़यामत का मंज़र दिखाया गया। उन्होंने देखा कि क़यामत का दिन है। लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर में खड़े हैं और उनमें एक आदमी है जो अल्लाह की मुहब्बत में मस्त और दीवाना है और दीवानों की तरह अल्लाह की याद में लगा हुआ है। पूछा गया कि यह कौन है? तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया, ऐ अहले मौक़फ़! ऐ यहाँ खड़े होने वाले लोगो! तुम इस बन्दे को हैरान होकर देख रहे हो। यह मेरा बन्दा मारूफ़ करख़ी है। इस पर मेरी मुहव्वत का जज़्बा तारी है। इसको उस वक़्त तक सकून नहीं मिलेगा जब तक मेरा दीदार नहीं कर लेगा। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको अपना दीदार अता फ़रमाएंगे तब उनके जिस्म को सकून होगा।

बरकतों वाला नाम

हम अल्लाह तआला की मुहब्बत को अपने लिए लाज़िम कर लें फिर देखिए उसके असरात ज़िंदगी में क्या होते हैं। याद रखिए हमारा मशाइख़ की सोहबत में आने का मक़सद अल्लाह तआला का ज़िक्र सीखना और पाबंदी के साथ करना है। अल्लाह का नाम बड़ी बरकतों वाला है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿تبارك اسم ربك﴾ बरकत वाला नाम है तेरे रब का। लिहाज़ा जो आप तीन दिन यहाँ गुज़ारेंगे या उलमा जो बक़िया दिन गुज़ारेंगे। इस दौरान सियासत की या दुनियादारी की कोई बात ज़बान पर न हो। हालाते हाज़िरा पर तब्सिरा मत कीजिए बल्कि इन दिनों को आप अमानत समझिए, अपने वक़्त को अल्लाह की याद में लगा लीजिए। हर वक़्त दिल में अल्लाह का ध्यान हो और मुराक़्बा

कीजिए, अपने वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जेह रखने की कोशिश कीजिए ताकि इन दिनों में अल्लाह तआला हमारे दिल की गिरह को खोल दें और वापस जाने से पहले-पहले अल्लाह तआला हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत अता फ़रमा दें।

"अलिफ़" और "बा" के मारिफ़

एक इल्मी बात अभी ज़हन में आई, तलबा के लिए फ़ायदे मंद है। देखिए "अलिफ़" के बारे में कहते हैं कि खड़ी खड़ी होती है "बा" के बारे में कहते हैं कि लेटी लेटी होती है। "अलिफ़" खड़ी खड़ी थी और "बा" लेटी लेटी थी लेकिन यहाँ से किसी आरिफ़ ने दो नुक्ते निकाले हैं। उसने कहा अलिफ़ जो खड़ी होती है वह ख़ाली होती है, उस पर नुक़्ता नहीं होता अलिफ़ ख़ाली होती है तो उसमे नुक्ता निकाला कि जिस बंदे की ज़िंदगी के अंदर तकब्बुर होगा वह उलूम व मारिफ़ से ख़ाली रह जाएगा। 'बा' के बारे में कहते हैं कि यह लेटी लेटी होती है और लिखा भी ऐसा ही जाता है लेकिन एक अजीब बात है कि जब 'बा' को बिस्मिल्लाह में लिखते हैं तो आपने देखा कि 'बा' को ज़रा ऊँचा करके लिखते हैं, बिस्मिल्लाह की शुरू की 'बा' के लिखने का अंदाज़ बदल जाता है, वह लेटी लेटी नहीं होती बल्कि इस्म के साथ 'बा' लगी तो अल्लाह तआला ने 'बा' के हर्फ़ की शान बढ़ा दी ओर उसको बुलंदी अता फ़रमा दी। ऐ मोमिन! अगर तेरे दिल को अल्लाह के नाम के साथ निस्बत होगी फिर अल्लाह तआला तुझे क्यों नहीं बुलंदी अता फ़रमाएंगे। लेटा हुआ हर्फ़ अगर

अल्लाह के नाम के साथ लग जाता है अल्लाह उसको बुलंदी दे देते हैं तो हम भी आजिज़ मिस्कीन बंदे हैं अगर अल्लाह तआला के नाम के साथ नत्थी हो जाएंगे तो अल्लाह तआला हमें भी बुलंदी अता फ़रमाएंगे। दुआ है कि आपका जितना वक़्त भी यहाँ है अल्लाह तआला आपको ज़िक्र व अज़्कार में गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं। एक दूसरे के साथ कम से कम बात कीजिए, कोशिश कीजिए कि आपका वक़्त ज़िक्र व अज़्कार में गुज़रे।

❁ ❁ ❁